सुधारक

पुनन्तु मा देवजनाः॥

वर्ष ४ | अङ्क १

गुरुकुल झज्जर (रोहतक) भाद्रपद २०१३ वि०
सितम्बर १९५६ दयानन्दाब्द १३२

वार्षिक मूल्य २)
एक प्रति ≡)

* राष्ट्र सन्तति के शिक्षण में राजा का उत्तरदायित्व *

राजा को योग्य है कि सब कन्या और लड़कों को उक्त समय से उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रखके, विद्वान् कराना। जो कोई इस आज्ञा को न माने तो उसके माता-पिता को दण्ड देना अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लड़का वा लड़की [illegible] पावें, किन्तु आचार्य कुल में रहें, जब तक समावर्त[illegible] तक विवाह न होने पावे।

संसार में जितने दान हैं अर्थात् जल, अन्न, गौ, पृथिवी, वस्त्र, तिल, सुवर्ण और घृतादि इन सब दानों से वेदविद्या का दान अति श्रेष्ठ है। इसलिये जितना बन सके उतना प्रयत्न, तन, मन, धन से विद्या की वृद्धि में किया करें। जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभाग्यवान होता है।

[illegible]हर्षि दयानन्दः
([illegible]प्रकाश ३ समुल्लास)

संस्थापक व सम्पादक—ब्र० भगवान्देव आचार्य
गुरुकुल झज्जर

सह-सम्पादक—ब्र० वेदव्रत भाष्याचार्य
सिद्धान्तवाचस्पति

व्यवस्थापक—ब्र० सुदर्शनदेव भाष्याचार्य
सिद्धान्तवाचस्पति

सह-व्यवस्थापक—ब्र० महावीर भाष्याचार्य

विषय-सूची

सुधारक के नियम

१—सुधारक अंग्रेजी महीने की १० ता० को डाकखाने में डाला जाता है। यदि २० ता० तक न मिले तो अपने पोस्ट आफिस में पूछ-ताछ करनी चाहिये। फिर भी न मिले तो हमें लिखने पर और भेज दिया जायेगा।

२—छोटे लेख सारगर्भित तथा कागज के एक ओर सुन्दर और सुगम लिखे हुये हों।

३—लेख में उचित परिवर्तन करना, प्रकाशित करना या न करना सब सम्पादक के आधीन है। अस्वीकृत लेख पोस्टेज भेजने पर ही वापिस लौटाया जा सकेगा।

४—वेद विरुद्ध लेखों का प्रकाशन सुधारक में न हो सकेगा।

५—सिद्धान्त विरुद्ध, अश्लील और मिथ्या विज्ञापनों के लिये "सुधारक" में स्थान नहीं है। इतना होते हुये भी विज्ञापन की सत्यता का उत्तरदायित्व हम पर नहीं है

६—व्यवस्थापक सम्बन्धी सब पत्र व्यवहार तथा मनीआर्डर आदि "व्यवस्थापक-सुधारक" के नाम से भेजने चाहियें, किसी व्यक्ति के नाम न भेजें। साथ ही ग्राहक अपनी संख्या अवश्य लिखे

७—एजन्टों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है और ५ से कम की एजेन्सी नहीं दी जाती। विज्ञापन का धन अगाऊ भेजना आवश्यक है।

८—सब पत्र व्यवहार हिन्दी तथा संस्कृत में ही करें। उर्दू, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में पत्र व्यवहार न करें। पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड भेजें।

विज्ञापन दर

	पूरा पृष्ठ	आधा पृष्ठ	चौथाई पृष्ठ
एक बार	१६)	९)	५)
तीन बार	४०)	२४)	१३)
छः बार	७५)	४५)	२५)
१ वर्ष तक	१३०)	७५)	४५)

टाईटिल अन्तिम १५% अधिक।

टाईटिल तृतीय १०% अधिक।

विशेषांक में सवाया। कम से कम ४)।

सम्पादकीयम्

विश्व में विद्यमान समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा है। जो मधुर, सब प्रकार के दोषों से रहित, अतिललित, पवित्र तथा वैज्ञानिक भाषा है। वेद, शास्त्र, उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत आदि सभी भारतीय संस्कृति के ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं, जो कि मानव जीवन के चरम लक्ष्य (मोक्ष प्राप्ति) के साधक हैं। अतः जिस मनुष्य ने संस्कृत भाषा का अध्ययन नहीं किया अथवा यूं कहिये कि जिसने भारतीय संस्कृति के मूलभूत वेदादि सत्य शास्त्रों के अध्ययन का सौभाग्य प्राप्त नहीं किया, वह भारतीय, भारतीय कहलाने के योग्य नहीं है। अतः प्रत्येक भारतीय को अपनी भारती=संस्कृत भाषा का अध्ययन अवश्य करना चाहिये।

कुछ एक पाश्चात्य सभ्यता के रङ्ग में रंगे हुये महानुभावों का विचार हैं कि संस्कृत भाषा एक मृत भाषा है। मृत वस्तु को गले लगाना व्यर्थ भारवहन करना है। उसका तो अपने से पृथक्करण ही श्रेयस्कर है। भला उन भोले जनों से पूछना चाहिये कि जन्म से लेकर मरण पर्यन्त संस्कार आदि सब धार्मिक कृत्य जिस संस्कृत भाषा में ही प्राचीन काल से आज तक होते चले आ रहे हैं, और जो भाषा आज भी लगभग ३६०००००००० (छत्तीस करोड़) मनुष्यों के जीवन में ओत-प्रोत हो, और करोड़ों मनुष्य प्रातः सायं दोनों समय अपने इष्ट देवों की जिस भाषा में हृदय से आराधना करते हों, और जिसका साहित्य भी अन्य सभ्य मानी जाने वाली भाषाओं से किसी भी दृष्टि से कम न हो, और जो भाषा कभी अपने काल में राष्ट्रभाषा रह चुकी हो, भला वह किस प्रकार मृतभाषा कहला सकती है। संस्कृत भाषा को मृत भाषा कहना एक घोर अन्याय करना है।

आजकल जन साधारण की यह भी एक मिथ्या धारणा बनी हुई है कि संस्कृत भाषा एक अति कठिन भाषा है। बिना रटे उसका ज्ञान प्राप्त करना सर्वथा असम्भव है, किन्तु यह धारणा सर्वथा मिथ्या है। कोई भी संसार में ऐसी नहीं जिस भाषा के अध्ययन में सामान्यतः रटने का कार्य विद्यार्थी को न करना पड़ता हो।

आजकल संस्कृताध्ययन की कई पद्धतियां हमें दृष्टिगोचर होती हैं। किसी पद्धति में 'रट्टा प्रधानम् खलु योग्यतायाः" को ही सर्वोच्च स्थान दिया जाता है, जो सर्वथा अवाञ्छनीय है। यह पद्धति सिद्धान्तकौमुदी आदि अनार्ष ग्रन्थों के द्वारा संस्कृताध्ययन में अपनाई जाती है, जो कि नितान्त निन्दनीय है। केवल सिद्धान्त कौमुदी द्वारा संस्कृताध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को सारे जन्म में भी संस्कृत भाषा का ज्ञान भली भाँति नहीं हो पाता। आर्ष पद्धति ही संस्कृत अध्ययन करने का सरल एवं सुगम तथा सुन्दर मार्ग है। आर्ष पद्धति से केवल ४ वर्ष में संस्कृत भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे परीक्षण से प्रत्यक्ष कर सकते हैं। यह बात परीक्षण द्वारा सिद्ध हो चुकी है।

हमारी सरकार का भी ध्यान इस संस्कृताध्ययन-अध्यापन की सुन्दर पद्धति की ओर नहीं है, और न ही वह संस्कृताध्ययन को कोई विशेष प्रोत्साहन ही दे रही है। जबकि अन्य विदेशी लोग संस्कृत भाषा को सब भाषाओं की जननी मानते हुये बड़ी रुचि के साथ इसका अध्ययन कर रहे हैं।

रूस में बच्चों को संस्कृताध्ययन मातृभाषा के ज्ञान के बिना ही करवाया जाता है। मास्को, लेनिन, तिबीलसी आदि विश्वविद्यालयों में संस्कृत का पठन-पाठन बड़े उत्साह के साथ होता है। आजकल रूसी विद्वान् २७ खण्डों में संस्कृत के एक बड़े भारी कोष का सम्पादन कर रहे हैं। इसका अभिप्राय यह है कि रूस संस्कृत के पठन पाठन में दत्तचित्त है और वह संस्कृत का सर्वत्र प्रचार भी चाहता है।

कुछ समय पूर्व जब श्री डा० लुई रेणु महोदय रूस से भारत पधारे तब उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा था कि "मुझे केवल एक ही दुःख है कि हम जिस संस्कृत भाषा

को अति रुचि से पढ़ते हैं और जिस भाषा को अमर समझते हैं उस भारती (संस्कृत भाषा) को भारतीय मृत भाषा नाम से पुकारते हैं, और भारतीयों के लिये यह भी दुर्भाग्य की बात है कि उनके शिक्षा मन्त्री महोदय संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ हैं" ।

इसी प्रकार अमेरिका भी संस्कृत भाषा पर लट्टू है । अमेरिका के "अमेरिका कांग्रेस पुस्तकालय" में ६७००(छः हजार सात सौ) संस्कृत भाषा के हस्तलिखित ग्रन्थ आज भी भारत के गौरव का गुणगान कर रहे हैं, और सारे जगत् में प्रकाशित होने वाले संस्कृत साहित्य का सूचिपत्र भी आप वहां से प्राप्त कर सकते हैं ।

अमेरिका के हार्वर्ड, येब, कोलम्बिया, कोर्नेल, शिकागो, वाशिंगटन आदि विश्वविद्यालयों में संस्कृत भाषा अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है । दुर्भाग्य है भारत का कि हमारे स्वतन्त्र भारत के विद्यालयों में आज भी विकल्प है ।

अभी कोई लगभग ३० वर्ष की बात है । उत्तरीय अमेरिका के दक्षिणी भाग में मैक्सिको और पनामा राज्य की सीमा का अन्वेषण किया गया । वहां एक मनुष्य जाति मिली जो किसी अपनी ही भाषा में बोलती थी । उनकी उस भाषा का नाम भाषा शास्त्रियों ने Broken Sanskirt (टूटी फूटी संस्कृत) रखा । यह घटना भी संस्कृत के महत्त्व का सिर ऊंचा करती है ।

केवल इतना ही नहीं अपितु रूस तथा अमेरिका के अतिरिक्त जर्मन, अफगानिस्तान, थाईलैंड, सीलोन, हालैण्ड, मिश्र, इटली, इङ्गलैण्ड, चीन आदि देशों में भी संस्कृत का महत्त्व कोई कम नहीं है ।

इस प्रकार हमने जाना कि संस्कृत भाषा एक विश्व-व्यापी भाषा है, पुनरपि भारत सरकार इस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दे रही, सरकार की ओर से संस्कृत भाषा को अधिक से अधिक प्रोत्साहन मिलना चाहिये । विद्यालयों में भी अनिवार्य रूप से इसका अध्ययन-अध्यापन होना चाहिये । प्रत्येक भारतीय को भी अपनी भारती (संस्कृत भाषा) का अध्ययन अवश्य करना चाहिये और यत्न करना चाहिये कि निकट भविष्य में ही संस्कृत भाषा राष्ट्र भाषा बने । तभी हम भारत के भाषा सम्बन्धी प्रान्तीयता आदि के कलह को दूर भगा सकते हैं और तभी हम संसार में सच्ची विश्वशान्ति की स्थापना कर सकते हैं ।

संगठन

[ब्र० विश्वनाथ गुरुकुल घटकेश्वर, हैदराबाद]

आज राष्ट्र को संगठन की आवश्यकता है । क्या हमें संगठित होकर रहने में कोई हानि है ?

कदाचित् नहीं, वेद में कहा है—संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।

अर्थ—सब मिलकर चलो, मिलकर बोलो, सबके मन एक हों । वेद ठीक कहता है यदि हम एकता को धारण न न करें तो हमारा सर्वनाश हो जाता है । इतिहास को उठाकर देखने से हमें मालूम होता है कि हमारे देश में संगठन न होने के कारण देश को बहुत सी हानियां पहुँचीं । उदाहरणतः पृथ्वीराज और जयचन्द की आपसी फूट के कारण जयचन्द ने मुहम्मद गौरी को बुलाकर पृथ्वीराज को हरा दिया । इस प्रकार उन दोनों की आपसी फूट के कारण मुहम्मद गौरी को भारत का राज्य मिला ।

वेद ने कहा है कि—

"मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । मा विद्विषावहै ।"

हम सबको मित्र की दृष्टि से देखें, हम किसी से द्वेष न करें । यदि हम एक दूसरे से द्वेष करेंगे तो वह हमें मारने की चेष्टा करेगा और हम उसे मारने की चेष्टा करेंगे, इससे हमें शान्ति नहीं मिल सकती । हम आपस में प्रेम करेंगे तो वह हमें न मारेगा और हम उसे न मारेंगे । इससे हमें शान्ति मिलेगी । किसी कवि ने कहा है—

"सदा एक से दो मिलें यही नीति का सार ।
अच्छा होता काम यदि दो जन करें विचार ।।"

अर्थात् नीति का सार है कि सबको मिलकर (संगठन) से रहना चाहिये ।

परिपक्व हवि का बलिदान

उत्तिष्ठत अवपश्यत इन्द्रस्य भागमृत्वियम् ।
यदि श्रातं जुहोतन यद्यश्रातं ममत्तन ।।
ऋ० १०-१७९-१

शब्दार्थ

(उत्तिष्ठत) उठो, खड़े होग्रो। (अवपश्यत) और सावधानी से देखो। (इन्द्रस्य) इन्द्र के। (ऋत्वियं) ऋतु २ के अनुकूल समय २ पर दिये जाने वाले। (भागं) हवि के बलिदान के भाग को देखो। (यदि) यदि (श्रातं) यह हवि पक चुकी है तो। (जुहोतन) इसका हवन कर दो और। (यदि) यदि (अश्रातं) पकी नहीं है तो (ममत्तन) ठहरो, मत दुःखी होवो। प्रसन्न होकर इसे पकाते जाओ।

विनय

हे मनुष्यो! उठो देखो कि इस समय इन्द्र की कौनसी आहुति का समय है। यह काल-इन्द्र समय २ पर संसार से भारी आहुतियां मांगता है और इसी से यह संसार उन्नत होता है। यह देश-इन्द्र समय २ पर बड़े बड़े बलिदान चाहता है और इस बलिदान को पाकर ही यह अपने एक बड़े अभ्युत्थान के पग को आगे उठा सकता है। और हम इस जीवात्मा इन्द्र के लिये समय समय पर आत्मबलिदान करते हुए, ऋतु ऋतु के अनुकूल इसका यजन हवन करते हुए बल्कि एक दिन के भी भिन्न २ समयों पर उस उस समय के अनुकूल उसको उसके अन्न ज्ञान आदि हवि का भाग प्रदान करते हुए चलते हैं, तभी हम आत्मोन्नति को पा सकते हैं, इसलिये हमें सदा खड़ा रहना चाहिये। जागते रहना चाहिये और खड़े होकर सावधानी से देखते रहना चाहिये कि कहीं किसी आहुति का समय तो नहीं आ गया है, कहीं संसार को देश का या अपने आत्मा को हमारे किसी बलिदान की जरुरत तो नहीं आ गई है। देखना यदि हम प्रमोद के कारण समय को चूक जायेंगे, जिस समय बलिदान करना चाहिये उस समय बलिदान न कर सकेंगे तो हम न केवल उन्नति से वञ्चित रह जायेंगे किन्तु बहुत पिछड़ जायेंगे, पतित हो जायेंगे। अवनति के गर्त में गिर जायेंगे। अतः उठो और देखते रहो कि कहीं इन्द्र का भाग देने की ऋतु तो नहीं आ गई है।

परन्तु आहुति सदा पकी हुई देनी चाहिये। कच्ची आहुति से कुछ फल नहीं होता किन्तु हानि ही होती है जैसे कि वृक्ष से बिना पका हुआ फल किसी काम नहीं आता बल्कि खाने वाले को नुकसान पहुँचता है। उसी तरह अपने आपको बिना पकाये जो यूं ही जोश में आकर बलिदान कर दिया जाता है उससे कुछ नहीं बनता। बल्कि बहुत बार वह आत्मघात रूप होता है अतः यदि आहुति पकी हुई हो तब तो उसका हवन कर दो, यदि न पकी हो तो ठहर जाओ, इसके लिये दुखी भी मत होओ। यदि तुम आहुति के समय तक इसे नहीं पका सके तो अब दुखी होने से क्या फायदा। अब तो प्रसन्न होकर इसे फिर पकाओ, पकाते जाओ, जिससे कि अगले आहुति काल में तो तुम इसे जरूर दे सको। अगले बलिदान के समय तक जरूर पके हुए होओ।

(वैदिक विनय से)

त्याग पूर्वक उपभोग करो

—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति—

भगवद्गीता में 'त्यक्तेन भुञ्जीथाः' इस श्रुतिवाक्य का अर्थ इस कारिका द्वारा स्पष्ट किया गया है —

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ।।

इस कारण हे अर्जुन, तुम आसक्ति को छोड़कर, अपने कर्तव्यों कर्मों के पालन में लगे रहो। जो मनुष्य लिप्त न होकर कर्म करता है वह ईश्वर को प्राप्त कर लेता है। इसे भगवद्गीता में अनासक्ति-योग के नाम से कहा गया है। अच्छे कर्म करते रहो, उनके जो फल प्राप्त हों, उनका संयम-पूर्वक उपभोग करो, परन्तु उनमें लिप्त न हो, उनके पीछे पागल न हो, उनकी लालसा में न फंसो। यदि भोग करते हुए तुम सीमाओं का ध्यान न रखोगे, तो कर्तव्य के मार्ग से गिर जाओगे, तुम्हें वासनाएं खेंच कर पाप के गढ़े में ले जाएंगी।

भोजन की सर्व सामान्य भौतिक इच्छा से प्रारम्भ करके चक्रवर्ती राज्य की उत्कृष्ट मानवीय इच्छा तक, यदि वह सीमा के अन्दर रहे, और लालसा के रूप में परिणत न हो तो उचित कही जा सकती है। उसे पूरा करना पाप नहीं, परन्तु छोटी से छोटी इच्छा यदि सीमा को पार कर गई तो शरीर और मन के लिए दुःखदायक और आत्मा के लिये गिरावट का कारण बन जाती है।

कुछ लोग लोभ और वासना के बुरे परिणामों को देखकर इतने खिन्न हो जाते हैं, कि संसार की सब वस्तुओं से विमुख होने में ही कल्याण मानने लगते हैं। वैदिक धर्म में ऐसे निरीह जीवन का विधान नहीं है। वेदों में सभी श्रेष्ठ और सुखकारी वस्तुओं की प्राप्ति के लिए प्रार्थनाएं विद्यमान हैं। वैदिक प्रार्थनाओं की व्यापकताओं पर दृष्टि डालिये—

मृडा सुक्षत्र मृडय। ऋ० ७.८९.१।

हे सबके रक्षक ईश्वर, मुझ पर अनुग्रह कीजिये।

अप नः शोशुचदघम्। ऋ० १.९७.१।

हमारा पाप नष्ट कीजिये।

त्वं विश्वस्य धनदा असि। ऋ० ३२.१७।

हे भगवन् आप सब को धन देने वाले हो।

वयं जयेम त्वया प्रजा। ऋ० १.१०२.४।

हे सर्वशक्ति सम्पन्न प्रभो, तुम्हारी कृपा से हम शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें।

रयिन्दा। ऋ० १०.४७.४।

आप हमें धन दीजिये।

ऋषयो भद्रां मेधां यां
विदुस्तां मेधामावेशयामसि। अ० ६.१०८।

जिस मेधा को ऋषि जानते हैं उसे मैं अपने अन्दर स्थापित करूं।

रन्धय शासदव्रतान्। ऋ० १.४.१०.८।

पापियों को दण्डरूप में समूल नष्ट कर दो।

सेयं नः काममापृण गोभिरश्वैः शतक्रतो।
ऋ० ११. १.३१.६।

हे प्रबल शक्ति वाले प्रभो, आप गौ, अश्व आदि पशु धन देकर हमारी कामनाओं को पूर्ण करो।

उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः।
अथा अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः।।
य. ३. ४३।

हे जगदीश्वर गाय, बकरी, भेड़ आदि पशुओं से तथा अन्न के संग्रह की हमारे गृहों में कमी न रहे।

यजुर्वेद के निम्नलिखित मन्त्र में, ईश्वर से आत्मा, मन और शरीर से सम्बन्ध रखने वाली सब विभूतियों की प्राप्ति के लिये प्रार्थना की गई है—

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यो-
ऽतिव्याधिर्महारथो जायताम्।
दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुसप्तिः:
पुरन्धिर्योषा, जिष्णूरथेष्ठा सभेयो
युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्।
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु

फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् ।
योगक्षेमो नः कल्पताम् ।

इन प्रार्थनाओं से स्पष्ट हो रहा है कि संसार की भौतिक हों या आध्यात्मिक—सभी उत्तम और सुखदायक वस्तुएं मनुष्य के भोगने योग्य हैं। यदि उनका सदुपयोग किया जाय, सीमा का अतिक्रमण न हो, और 'मा गृधः कस्य स्विद्धनम्' इस आदेश का पालन करते हुए अन्य किसी के अधिकारों पर आक्रमण या हस्तक्षेप न हो और उनके भोग में आसक्ति न हो।

मा गृधः कस्य स्विद्धनम्

किसी अन्य के धन को लेने की अभिलाषा मत करो।

इस पद में जो धन शब्द आया है, उसका अभिप्राय केवल रुपया पैसा आदि चल अथवा जमीन जायदाद आदि अचल सम्पत्ति से नहीं है। यहां धन शब्द का बहुत व्यापक अर्थ में प्रयोग होता है। एक मनुष्य को जो कुछ प्रिय है, जिसे वह चाहता है, और जिससे उसे सुख मिलता है, वह उसका धन है। प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है कि वह अपने धन का उपभोग करे। वह धन अधिकारों के रूप में हो या सम्पत्ति के रूप में। जो न्यायपूर्वक उसका है, वह उसका धन है, उसे संयमपर्वक भोगने का उसे पूरा अधिकार है।

परन्तु इस व्यवस्था के चलाने के लिये एक नियम का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। वह नियम यह है कि जहां प्रत्येक व्यक्ति अपने धन का उपभोग करने में स्वतंत्र हो, वहां उसे यह अधिकार न हो कि वह दूसरे के धन को छीनने, या हड़पने की इच्छा या यत्न करे। यदि सब मनुष्यों को यह अधिकार मिल जाये कि वे दूसरों के धन को छीन लें, तो किसी का धन भी सुरक्षित नहीं रह सकता। हम सुख का उपभोग करें, इसकी यह सीमा है कि हमारे सुखभोग से दूसरों की सुख सामग्री का व्याघात न होना चाहिये। मनुस्मृति में धर्म का चौथा साक्षात् लक्षण 'स्वस्य च प्रियमात्मनः' को बतलाया है। उसका अभिप्राय यह है कि यदि हम यह जानना चाहते हैं कि दूसरे के साथ किया हुआ कोई व्यवहार भला है या बुरा, तो अपनी आत्मा से पूछ कर देखें कि यदि हमारे साथ कोई वैसा व्यवहार करे, तो हम उसे भला समझेंगे या बुरा? यदि हमें अपनी आत्मा से यह उत्तर मिले कि यदि कोई अन्य व्यक्ति हमारे धन को चुरा ले तो हमें बुरा लगेगा तो समझ लो कि दूसरे के धन को चुराना बुरा है, अतः पाप है। उस पर अनुचित प्रतिबन्ध लगे तो उसे बुरा मानता है। इससे स्पष्ट है कि जो व्यक्ति दूसरो की स्वाधीनता का अपहरण करता है, वह बुरा काम करता है। यही पाप और पुण्य को पहिचानने का सबसे सरल और प्रत्यक्ष उपाय है। महाभारत में व्यास मुनि ने निम्नलिखित श्लोक में पाप पुण्य की इस कसौटी को बहुत सरल ढंग से समझाया है—

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषान्न समाचरेत् ॥

धर्म का सार सुनो, और सुनकर उस पर विचार करो। जो व्यवहार तुम्हारी आत्मा को अप्रिय मालूम होता है, वह दूसरों के साथ मत करो। व्यवहार की यह सरल से सरल कसौटी है। तुम नहीं चाहते कि कोई दूसरा व्यक्ति तुम्हें गाली दे, तुम दूसरे को गाली मत दो। यदि कोई आदमी तुम्हारी किसी वस्तु पर अधिकार करना चाहे तो तुम दुःखी होते हो, बस समझ लो कि तुम्हें भी दूसरों की किसी वस्तु पर अधिकार न जमाना चाहिये। 'मा गृधः कस्य स्विद्धनम्' का यही अभिप्राय है,

अपने धन की रक्षा करो

तुम दूसरों के धन की अभिलाषा मत करो, इसके अन्तर्गत यह तात्पर्य भी आ जाता है कि अपने धन की रक्षा करो। इस ऋचा के पहले पद में कहा है कि जगत् की वस्तुओं का निर्लेप हो कर उपभोग करो। उपभोग तभी हो सकता है, जब हम उन्हें परिश्रम से प्राप्त करें, और प्राप्त करने के अनन्तर उनकी रक्षा करें। अपनी वस्तुओं की रक्षा न करें और दूसरों की वस्तुओं पर हाथ डालने का विचार भी न करें, तो प्रश्न यह है कि उपभोग किसका करें। यदि वैदिक कर्मशास्त्र के आधार इस 'ईशावास्य' मन्त्र का सार सरल शब्दों में बतलाना हो तो हम कहेंगे कि ईश्वर के बनाये, और ईश्वर द्वारा नियन्त्रित इस जगत् को अपने परिश्रम से कमाई हुई मूल्यवान् वस्तुओं का आसक्ति से रहित होकर उपभोग करो। इस उपभोग की मस्ती में आकर दूसरों की वस्तुओं

को अपनाने का यत्न न करो. और अपनी वस्तुओं की यत्नपूर्वक रक्षा करो।

जो विचारक 'त्यक्तेन भुञ्जीथाः' का यह अभिप्राय समझते हैं, कि मनुष्य का कल्याण जगत् के सर्वथा त्याग में है, वे धर्म के मर्म को नहीं जानते। दर्शनकार ने धर्म का यह लक्षण किया है—'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयसिद्धिः स धर्मः' जिससे इस जीवन में 'अभ्युदय' सफलता और विभूति प्राप्त हों, और उसके पश्चात् 'निश्रेयस' अर्थात् मोक्ष मिले, वह धर्म है। जब 'अभ्युदय' का साधन धर्म है तो 'अभ्युदय' पाप कैसे हो सकता है। जीवन की दैनिक और प्रारम्भिक आवश्यकताओं से लेकर चक्रवर्ती राज्य तक अभ्युदय शब्द के अन्तर्गत हैं। धर्मानुसार उन सब उत्तम और सुखदायी वस्तुओं को प्राप्त करके उनका उपलब्ध करना न केवल उचित है, अपितु कर्तव्य धर्म है शर्तें केवल दो हैं, उनका उपभोग करते हुए उनमें लिप्त न हों, और उन्हें प्राप्त करते समय यह ध्यान रक्खो कि कहीं तुम किसी दूसरे के अधिकार या पदार्थ पर हाथ तो नहीं डाल रहे हो।। यदि ये दो दोष न हों तो जगत् की किसी अच्छी वस्तु को प्राप्त करना या उसका उपभोग करना अपराध नहीं है, प्रत्युत धर्म है।

'जीवो जीवस्य भोजनम्' का सिद्धान्त

'जीवो जीवस्य भोजनम्' महाभारत के इस वाक्य का यह अभिप्राय है कि इस संसार में बड़ा जीव छोटे को खा जाता है। यह संसार की वस्तुस्थिति का वर्णन है। यदि हम यह कहें कि जल की भांति मनुष्य में भी प्रायः नीचे की ओर बहने की प्रवृति होती है तो यह वस्तुस्थिति का वर्णन अवश्य है, परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि वह कर्तव्याकर्तव्य-शास्त्र का कोई सिद्धांत है। बुद्धिहीन जीवों में यह प्रवृत्ति है कि वे एक दूसरे को खा जाते हैं—जो बलवान् होगा वह निर्बल को खा जायेगा। वे जीव पशु पक्षी हों या मनुष्य देह धारी—यदि वे विवेक से काम नहीं लेते तो वे 'जीवो जीवस्य भोजनम्' के पाशविक सिद्धांत पर चलते हैं, परन्तु मनुष्य की सोचने की शक्ति इसलिये दी गई है कि वह भले और बुरे में विवेक कर सके। मनुष्य और पशु में यही भेद है।

ईसा की उन्नीसवीं सदी में एक समय आया था; जब योरोप के विचारकों ने विकासवाद की बाढ़ में बहकर अपनी बुद्धि का संतुलन खो दिया था। उन्होंने देखा कि सृष्टि के संघर्ष में आकर प्रायः वे ही बच पाते हैं, जो बलवान् और योग्यतम होते हैं, जो निर्बल हों वे नष्ट हो जाते। उन्होंने इससे यह परिणाम निकाला कि इस संसार में आज वे ही जीवित हैं, जो हर प्रकार से श्रेष्ठतम हैं और भविष्य में भी ऐसा ही रहेगा। यदि इस युक्ति शृङ्खला को मान लिया जाय तो हम इस नतीजे पर पहुँच जायेंगे कि मनुष्य जाति की उन्नति के लिये आवश्यक है कि मनुष्यों और जातियों का संघर्ष निरन्तर जारी रहे, "मैं दूसरे के अधिकार पर आक्रमण न करूं" यह भावना नष्ट हो जाए, ताकि बलहीन मनुष्य या मनुष्यसमूह को नष्ट करके बलवान् और भी अधिक बलवान् होते जाँय। विकासवाद और विज्ञान के चमत्कारों की चकाचौंध से बन्द आंखों वालों ने एक ऐसे भविष्य की कल्पना की जिसमें योरोप की 'विकसित' जातियां सारे भूखंड पर छा जायेंगी, क्योंकि वे योग्यतम होंगी। गोरों की गाड़ी पीलों और कालों को रोंदती हुई सारी पृथ्वी पर छा जायगी। ऐसी कल्पनाओं ने 'योग्यतम का बचाव' 'निर्बलों का नाश' 'जीवन संघर्ष, जैसे वाक्यों को सिद्धांतों का रूप दे दिया, जो वस्तुतः अन्धी प्रकृति की प्रवृत्तियों का वर्णन करने वाले थे। सहानुभूति और विवेक जो मनुष्य के विशुद्ध गुण हैं, उन्हें भुलाकर केवल पाशविक प्रवृत्तियों को संसार की उन्नति का साधन मान लेने के परिणामों को हम स्पष्ट देख रहे हैं। गत ५० वर्षों में निरन्तर 'संघर्ष' द्वारा योरोप ने न केवल अपना अपितु संसार भर का जो विनाश किया है, इतिहास में उसकी उपमा मिलनी कठिन है। खंड प्रलय के समान विनाशकारी युद्धों का इतना लम्बा अनुभव प्राप्त करके अब भी पश्चिम ने पूरी तरह 'निरन्तर संघर्ष' जैसी कल्पनाओं की निःसारता और भीषणता को समझा या नहीं, यह कहना कठिन है।

इस प्रकार की सब कल्पनाओं के आधारभूत जो भ्रान्तवाद हैं 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम्' यह श्रुति वाक्य उन सब का एक उत्तर है। प्रत्येक मनुष्य और जाति का यह धर्म है कि वह अपने अधिकारों तथा पदार्थों का संयमपूर्वक उपभोग करे, परन्तु दूसरों के अधिकारों तथा पदार्थों की अभिलाषा भी न करे। मनुष्य जाति के कल्याण का एक यही उपाय है।

(गुरुकुल पत्रिका से सादर प्रकाशनार्थ प्रेषित)

समुद्र मन्थन

[रामप्रसाद आर्य अध्यापक प्राइमरी स्कूल भेडण्टी, महेन्द्रगढ़]

१—प्रत्येक कार्य में जिसे हम कर रहे हैं या करने की इच्छा है, सफलता की तभी प्राप्ति होगी जब कि हम उसके होने वाले भावी परिणाम जो हमारा तात्पर्य है, स्पष्ट रूप से विचार करलें ।

२—मानव में दानव की शक्ति का होना बुरा नहीं, बुरा तो उसका उपयोग करना है ।

३—चरित्र के निर्माण में संलग्न रहना ही सबसे श्रेष्ठ गुण तथा उत्तम आदत है ।

४—ज्ञान का उद्देश्य सत्य प्राप्त करना है ।

५—शिष्टाचार में व्यय कुछ नहीं होता । पर यह प्रत्येक वस्तु को बिना मूल्य के ही खरीद लेता है ।

६—जीवन में पदार्पण होने पर जीवन पथ का पहला ही पग यात्रा की दिशा और लक्ष्य को बता देता है ।

७—अतृप्त तृष्णाओं का नाम ही दुःख है । इच्छाओं की पूर्ति का नाम सुख है ।

८—सम्पत्ति और सहृदयता में वैर है । (प्रेमचन्द)

९—सदाचारी के मित्र बहुत होते हैं, दुराचारी को शत्रुओं की कमी नहीं ।

१०—अपनी बुद्धि और परिश्रम से तो सभी प्रसन्न हैं । परन्तु भाग्य से कोई ही सन्तुष्ट होता है । परन्तु भाग्य तो परिश्रम और बुद्धिमत्ता का परिणाम ही है ।

———

यौवनं भारभूतम्

(श्री पं० सत्यदेव जी वासिष्ठ ब्रह्मचर्याश्रम भिवानी)

पाठं पाठं जगति विपुलं ग्रन्थराशिं प्रयत्नात्,
सेवं सेवं सकलयत्नान्निर्मलान्तःक्रियाश्च ।
भ्रामं भ्रामं विविधसरणीर्वृत्तिमालब्धुकामो
वृत्त्याभावे वदति युवको "यौवनं भारभूतम्" ॥१॥
एको धीमान् क्षपयति वपुः पोषणायात्मवर्गं
नानाभावोद्भवमतिजुषो भिन्नमार्गान् व्रजन्तः ।
याचन्ते ते विविधवचसा स्वाभिलाषाप्तयेत्थं
स्वान्तः खिन्नो वदति युवको "यौवनं भारभूयम्" ॥२॥

उपरिलिखित श्लोकों द्वारा पण्डित जी ने आधुनिक नवयुवक की अवस्था का वर्णन किया है । संस्कृतानभिज्ञ पाठकों के लाभार्थ यहां साथ भावार्थ दिया जाता है ।

(सम्पादक)

आज का नवयुवक नौकरी के लिये प्रयत्न से विपुल ग्रन्थ राशि को पढ़ता है, पूर्ण प्रयत्न से निर्मल अन्तः क्रियाओं का सेवन करता है, वृत्ति प्राप्ति के लिए नानाविध मार्गों का अवलम्बन करता है, किन्तु जब नौकरी नहीं मिलती, तब कहता है—यौवनं भारभूतम्" ।।१।।

इसी प्रकार कुछ लोग अपने कुटुम्ब के पालन पोषण के लिये ही अपने जीवन को व्यतीत करते हैं, विविध वासना और विचारों के कारण भिन्न-भिन्न मार्गों पर चलते हुये अपनी अभिलाषा की पूर्ति के लिने लोगों के सन्मुख विविध वचनों द्वारा याचना करते हैं, किन्तु जब अभिलाषा पूर्ण नहीं होती तब दुःखी होकर कह उठते हैं कि—"यौवनं भारभूतम्" ।।२।।

———

हिन्दी में विधि-साहित्य-निर्माण की पंचवर्षीय योजना

श्री हरिहरनिवास द्विवेदी सम्पादक 'भारती' ग्वालियर

भारत के संविधान ने हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया है और संघ का यह कर्तव्य निर्धारित किया है कि वह हिन्दी भाषा की प्रसार वृद्धि करे तथा उसका विकास करे। गत ६ वर्षों में हिन्दी के विकास के जो प्रयास किये गये हैं उनमें किसी योजना का अथवा समन्वय का अभाव है। संविधान के आदेशों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न कराना संघ शासन का पवित्र कर्तव्य है। भाषा के सम्बन्ध में संविधान के निर्देशों की ओर जैसा चाहिये वैसा ध्यान नहीं दिया गया।

संविधान के अनुच्छेद ३४४ के अन्तर्गत राष्ट्रपति ने संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिये उत्तरोत्तर अधिक प्रयोग के विषय में प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के आशय से श्री बा० ग० खेर की अध्यक्षता में एक आयोग का निर्माण किया है। हम चाहते हैं कि इस दिशा में योजनाबद्ध एवं समन्वित कार्य करने का प्रतिवेदन यह आयोग करे और इसी हेतु हम कुछ विचार आयोग द्वारा केन्द्रीय शासन तक पहुँचा देना चाहते हैं। हिन्दी को संघ की राजभाषा पूर्णतया कब से बनाया जाय, इस प्रश्न पर यहाँ विचार करने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु वह समय जब से आना हो उसके पूर्व हिन्दी में वांछनीय साहित्य का निर्माण करा लेने के विषय में दो मत नहीं हो सकते। यदि हम इस दिशा में सतर्क प्रयास नहीं करेंगे तो निश्चय ही राजभाषा का प्रश्न सदा वैसा ही अनिश्चित बना बना रहेगा जैसा सन् १९५० में था अथवा आज है।

संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिये जिस शब्दावली की प्रधानतः आवश्यकता है वह राजनियम अथवा विधि सम्बन्धी, प्रशासन सम्बन्धी एवं संसदीय प्रक्रिया सम्बन्धी हैं। संघ शासन का सम्पर्क वैसे तो जीवन के सभी पहलुओं से आता है, उसे वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों से भी व्यवहार करना ही पड़ता है, परन्तु वह अपेक्षाकृत कम ही है। ऐसी दशा में प्रधानतः राजनियम अथवा विधि सम्बन्धी एवं संसदीय प्रक्रिया सम्बन्धी साहित्य की ओर ही ध्यान देने की आवश्यकता है।

इस सम्बन्ध में यहां भूतपूर्व ग्वालियर राज्य में इस दिशा में हुये प्रयोगों का उल्लेख करना हम आवश्यक समझते हैं। ग्वालियर राज्य ने सन् १९४० के प्रारम्भ में यह निश्चय किया कि राज्य के राजनियमों की भाषा हिन्दी कर दी जाए और प्रशासकीय व्यवहार में भी उसका उपयोग हो, जुलाई सन् १९४० में इस आशय से न्याय विभाग में एक उपविभाग संगठित किया गया था जिसमें केवल पाँच व्यक्ति थे, चार अनुवादक और एक कोडीफिकेशन अधिकारी। उनके वेतन मान अत्यन्त अल्प, ७५) रुपये से १७५) रुपये थे तथा भविष्य के लिए भी कोई आशा नहीं थी। इसके अतिरिक्त दिन-रात चारों ओर से विरोध और प्रपञ्च चलते ही रहते थे। इन परिस्थितियों में भी चार वर्ष के समय के भीतर ही तीन सौ विधान (अधिनियम) हिन्दी में प्रचलित कर दिये गये थे जिनमें विधि और प्रक्रिया के समस्त विधान सम्मिलित थे। विधान प्रचलित होते गये और साथ ही साथ कार्यालयों एवं न्यायालयों में उनकी भाषा को अपनाना भी प्रारम्भ कर किया गया और चार वर्ष पूर्ण होते होते न्यायालयों और कार्यालयों से फारसी शब्दावली बिदा ले चुकी थी। ग्वालियर राज्य के हाईकोर्ट द्वारा अत्यन्त पेचीदा और उलझे हुये मामलों में वाद-विवाद हिन्दी में होते थे और निर्णय भी हिन्दी में दिये जाते थे।

परन्तु ग्वालियर राज्य की परिस्थितियाँ कुछ भिन्न थीं। इस राज्य की जनता की मातृभाषा हिन्दी थी और अरबी-फारसी प्रेमी कुछ पुराने कर्मचारी और अधिकारी तथा वकील थे। वहाँ झगड़ा भी अंग्रेजी से न होकर अरबी-फारसी शब्दावली तथा शैली से था। इस विभेद के अतिरिक्त मौलिक तत्त्व एक ही था, वह था जनसाधारण

की वाणी की न्यायालयों और शासकीय कार्यालयों में प्रतिष्ठा ।

आज भारत संघ में समस्या थोड़ी भिन्न है । ग्वालियर राज्य में जो अंग्रेजी पढ़े लिखे नये कर्मचारी अथवा अधिकारी आते थे वे अरबी फ़ारसी की अपेक्षा हिन्दी से अधिक परिचित थे । भारत संघ में आज न्यायालयों एवं प्रशासन में जो व्यक्ति अधिकारारूढ़ हैं वे हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं से कुछ दूर हैं और अंग्रेजी के व्यवहार से अधिक परिचित हैं । वे किसी भी दशा में यह नहीं चाहते कि वे हिन्दी में उतनी ही क्षमता प्राप्त करने का कष्ट करें । दक्षिण भारत के उच्च अधिकारियों की यह कठिनाई कुछ सीमा तक वास्तविक भी है । ऐसी दशा में निश्चित ही एक ऐसी योजना बनानी होगी जिसके आधार पर चलकर हिन्दी के विधि-साहित्य का विकास अधिकतम हो सके और उसमें एकरूपता भी आ सके । एकरूपता के अभाव में अहिन्दी भाषी राज्यों की कठिनाइयां और भी बढ़ जायेंगी । यह कार्य सम्पादित हो जाने पर साधन का अभाव न रहेगा, प्रश्न केवल इच्छा और उपयुक्त समय का रह जायेगा ।

सर्व प्रथम हम भाषा की एकरूपता को लेते हैं । सन् १९४०-४४ के बीच ग्वालियर राज्य ने हिन्दी में प्रचुर और पर्याप्त विधि-साहित्य तैयार किया था । उसकी भाषा ४० लाख नागरिकों में प्रचलित भी हो गई थी । हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने तथा अन्य विद्वानों ने जो कोष, ग्रन्थ बनाये उनमें उस शब्दावली को ग्रहण भी किया । परन्तु जब केन्द्र में यह कार्य प्रारम्भ हुआ तब पिछले गत वर्षों में प्रचलित इस कार्य की उपेक्षा की गई । कहीं कहीं तो पूर्व व्यवहृत शब्दों अथवा वाक्यों को अधिक सुन्दर और शुद्ध कर दिया गया और कहीं उसे अत्यन्त भ्रष्ट भी कर दियां गया । अंग्रेजी के 'वायड' शब्द के लिये ग्वालियर में 'व्यर्थ' शब्द का प्रयोग किया गया था, परन्तु संविधान में उसके लिये 'शून्य' लिखा गया है । संविधान के आदेशों के विपरीत नियम 'व्यर्थ' होंगे वे शून्य कैसे हो सकते हैं । 'एक्ट' के लिये विधान प्रचलित था, अब अधिनियम कर दिया गया है । कठिनाई यह है कि मध्यभारत में आज भी विधान ही प्रयुक्त होना है और केन्द्र में तथा मध्यप्रदेश में अधिनियम । अंग्रेजी के 'पार्टनरशिप' शब्द को 'साझेदारी' शब्द का प्रयोग किया था । केन्द्र ने इसके स्थान पर 'भागिता' शब्द का प्रयोग किया है । 'साझेकारी' शब्द गाँव-गाँव में प्रचलित है । हिन्दी शब्द सागर में उसका अर्थ "साझेदार होने का भाव । हिस्सेदारी । शराकत ।" दिया हुआ है (प्रथम संस्करण, पृष्ठ ३५०३) । फिर यह 'भागिता' शब्द किस प्रकार और क्यों गढ़ लिया गया, यह समझ सकना कठिन है । हिन्दी के नाम पर व्यक्तिगत सनकें नहीं चलने दी जा सकतीं । यदि इस अराजकता को रोका न गया तो निश्चय ही हिन्दी की प्रगति को हानि पहुँचेगी । अतएव पहली आवश्यकता तो इस बात की है कि एक ऐसे तन्त्र की स्थापना की जाय जो कुछ मूलभूत शब्दों पर नियन्त्रण कर सके और यत्रतत्र व्यक्तिगत धारणाओं के अनुसार किये गये प्रयोगों को रोक सकें । इसके लिए अनेक ओर से केन्द्रीय शासन में राजसभा के लिये पृथक् मन्त्रालय निर्मित करने का जो सुझाव आया है वह कुछ सीमा तक उपयोगी है । तदि यह सम्भव न हो तो यह कार्य एक राज्य को सौंपा जा सकता है । इसके उपयुक्त मध्यभारत या भावी मध्यप्रदेश से अधिक अन्य राज्य नहीं हो सकता ।

हिन्दी के विकास के लिए पंचवर्षीय योजना बनाना अत्यन्त आवश्यक है । इसके अधीन पांच वर्ष के भीतर विधि सम्बन्धी समस्त साहित्य का निर्माण हो ही जाना चाहिये । इस साहित्य को तीन विभागों में बांटा जा सकता है:—

(१) समस्त केन्द्रीय विधानों (अधिनियम) का अनुवाद ।

(२) फेडरल कोर्ट तथा सुप्रीम कोर्ट के निर्णयों का अनुवाद ।

(३) विधि शास्त्र (जूरिस प्रूडेन्स) इक्विटी, संसदीय प्रक्रिया, सम्पत्ति हस्तान्तरण, अनुबन्ध आदि के मौलिक सिद्धान्तों की पुस्तकों के अनुवाद अथवा स्वतन्त्र पुस्तकों का प्रणयन ।

केन्द्र के समस्त प्रचलित विधानों का संग्रह लगभग १० हजार पृष्ठों का है । इतने ही पृष्ठ फेडरल कोर्ट तथा सुप्रीम कोर्ट के निर्णयों के हैं और यही परिमाण तीसरे

वर्ग की पुस्तकों का होगा। इस प्रकार ३० हजार पृष्ठों का साहित्य प्रस्तुत करने के पश्चात् निश्चय ही हिन्दी में समग्र विधि साहित्य का अस्तित्व हो जायेगा।

यदि इस कार्य को चार वर्षों में बांट दिया जाय तब सात हजार पृष्ठ प्रति वर्ष प्रस्तुत करना आवश्यक होंगे।

उसके अतिरिक्त चालू वर्षों का भी बहुत कुछ कार्य साथ साथ करना होगा। भारत की सुप्रीम कोर्ट प्रति वर्ष लगभग एक हजार पृष्ठों का निर्णय देती हैं। उनका अनुवाद साथ साथ ही चलना चाहिये।

इस कार्य की एक अन्य शाखा भी है। प्रत्येक राज्य के उच्च न्यायालय के निर्णय भी साथ साथ अनुवादित होते रहने आवश्यक हैं। अहिन्दी भाषी राज्यों के उच्च न्यायालयों के निर्णयों के अनुवाद हिन्दी तथा उस राज्य की भाषाओं में होना आवश्यक हैं। यह अनुवाद-साहित्य लगभग तीन हजार पृष्ठ का होगा। इस प्रकार ग्यारह-बारह हजार पृष्ठों का प्रतिवर्ष अथवा एक हजार पृष्ठ प्रतिमास अनुवाद करना आवश्यक होगा।

ग्वालियर राज्य भारत का सौवां भाग था। इस ग्वालियर राग्य ने लगभग दो सौ पृष्ठ प्रतिमास के औसत से अनुवाद प्रस्तुत किये थे। व्यक्ति भी केवल पाँच थे। उन पांच में से भी प्रस्तुत लेखक की अधिकांश शक्ति विरोध और घात प्रतिघात सहने में नष्ट हो जाती थी। दो अनुवादकों की नियुक्ति कार्यक्षमता के कारण नहीं, किसी न किसी की सिफारिश के कारण हुई थी। तात्पर्य यह है कि वह कार्य २॥ व्यक्तियों का था। भारत संघ अत्यन्त महान् है, यदि इच्छा और संकल्प हो, तो साधनों का भी अभाव नहीं।

आज शब्दावलियों के निर्माण की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। परन्तु शब्दावलियां भाषा को प्रगति नहीं दे सकतीं। उनके उपयोग की सीमा है। वास्तविक परिणाम तो इस प्रकार के साहित्य-प्रणयन से ही प्राप्त हो सकता है। कोष और व्याकरण भाषा निर्माण के पश्चात् ही निर्मित होते हैं। परन्तु आज हम कोषों और शब्दसंग्रहों से भाषा का निर्माण करना चाहते हैं। यह मार्ग उलटा है।

अहिन्दी भाषी राज्यों के उच्च न्यायालयों के निर्णयों के हिन्दी और स्थानीय भाषाओं में साथ-साथ अनुवाद प्रस्तुत करने में एक बहुत बड़ा लाभ और होगा। संविधान की अष्टम अनुसूची में उल्लिखित असमिया, उड़ीया, (उर्दू) ? कन्नड, काश्मीरी, गुजराती, तामिल, तेलगू, पंजाबी, बंगाली तथा मराठी तथा साथ ही हिन्दी में अनुवाद होने से वह शब्दावली अनायास हाथ आ जायगी जो इन सभी भाषाओं में समान है। उसके प्रयोग पर बल देने से देश की भाषा एकता की ओर अग्रसर होगी।

देखने को तो यह योजना बड़ी दीखती है, परन्तु भारत संघ के लिये वह बड़ी नही है। ग्वालियर राज्य में यह कार्य हुआ था, उससे इसका परिमाण केवल चौगुना है, यद्यपि भारत उस राज्य से सौगुना है।

यह कार्य पूरा करा लिया जाना आवश्यक है। फिर जब भी समस्त देश विदेशी शासन की लांछनीय निशानी-अंग्रेजी भाषा—को तिलांजलि देने की इच्छा करेगा और उसके अनुकूल राजनीतिक परिस्थितियां उत्पन्न हो जाएँगी, उस समय सम्बन्धित साहित्य का अभाव शेष नहीं रह जायेगा। इस योजना को कार्यान्वित न करने का एक ही आशय माना जा सकता है कि हम ईमानदारी से न आज हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा बनाना चाहते हैं और न आगे कभी विचार है। यह सत्य नही है, नहीं होना चाहिये, और इस कारण हमें इस दिशा में सोचना होगा।

———

प्राचीन शिक्षा-प्रणाली ही क्यों ?

(श्री महावीर गुरुकुल झज्जर)

आज हमारा देश स्वतंत्र है । अंगरेजी अनुशासन हमारे ऊपर से सर्वथा उठ चुका है । देश की बागडोर पूर्ण रूप से हमारे हाथों में आ चुकी है । हम ही आज अपने देश के सर्वेसर्वा हैं । परन्तु क्या कारण है कि आज भी हम वेशभूषा, आचार-विचार और रहन-सहन की दृष्टि से अंगरेजों का ही अनुकरण कर रहे हैं । क्या कारण हैं कि भारतीय होकर भी हम अपनी प्राचीन-भारतीय सभ्यता के अनुसार ब्रह्मचर्य, ईश्वर विश्वास, सादा रहन सहन, गोपालन, सत्यवादिता और परोपकार आदि उत्कृष्ट गुणों को न अपना कर सर्वथा इनके विरुद्ध आचरण कर रहे हैं और यदि सारांश लिखूं तो क्या कारण है कि शारीरिक दृष्टि से स्वतन्त्र होते हुये भी मानसिक तथा बौद्धिक दृष्टि से हम अंगरेजों के दास हैं ।

यदि गम्भीरता से देखा जाय तो इन सबका एकमात्र मूल कारण आधुनिक शिक्षा प्रणाली ही है जो अंगरेजों के चले जाने पर भी उनके प्रतिनिधि के रूप में सब भारतीयों के शिर पर शासन कर रही है और उनको पाश्चात्य सभ्यता के ही स्वप्न दिखलाती रहती है । जैसे घोड़े की लगाम जिस किसी के भी हाथ में हो तो घोड़ा भी उसी के वश होता है, इस प्रकार हमारा मन जो कि इन्द्रिय रूपी घोड़ों के लिये लगाम माना जाता है, पाश्चात्य शिक्षा के हाथ में होने से हम भी उसके अधीन है । जिस प्रकार की सामग्री ग्रामोफोन के रिकार्ड में भरी हुई होती है, वह वैसे ही बोलता भी है, हमारे मस्तिष्क रूपी रिकार्ड में भी अंग्रेजी सामग्री भर जाने से हम भी उसी के अनुसार बोल रहे तथा आचरण कर रहे हैं ।

वास्तव में अंगरेज बड़े नीति-निपुण थे । वे जानते थे कि यदि किसी जाति को नष्ट करना हो अथवा यदि किसी जाति पर चिरकाल पर्यन्त शासन करना हो तो उस जाति के साहित्य अर्थात् शिक्षा को नष्ट करके अपने ढङ्ग के विचार या अपनी शिक्षा उन लोगों को देनी चाहिये । क्योंकि किसी जाति का साहित्य उस जाति का प्राण होता है । जैसे प्राण-रहित शरीर मुर्दा होता है ऐसे ही स्व-साहित्य,हीन जाति भी मृतवत् होती हैं । इतिहास से यह बात भली भांति जानी जा सकती है कि जब कभी किसी राजा अथवा जाति ने दूसरी जाति को नष्ट करना चाहा या वहां के लोगों पर शासन करना चाहा तो सर्वप्रथम उसके साहित्य को नष्ट किया, और जब कभी किसी जाति ने उठना चाहा तो वह उठी भी स्वसाहित्य निर्माण से ही । आर्य जाति को नष्ट करने के लिये अंगरेजों ने भी इसी नीति का आश्रय लिया, जिसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिली ।

इस बात की पुष्टि एतत् शिक्षा प्रवर्तक लार्ड मैकाले के उस वाक्य से हो जाती है जो उसने सन् १८३५ में अपने पिता को पत्र लिखते हुये लिखा था कि "We want to form a class Indian in blood and colour but English in taste and opinion." अर्थात् हम भारतवर्ष में एक ऐसा वर्ग बनाना चाहते हैं जो रङ्ग तथा रक्त की दृष्टि से तो भारतीय हो परन्तु उसके आचार विचार अंगरेजों ढङ्ग के हों । इसके अतिरिक्त इस शिक्षा का एक प्रयोजन यह भी था कि उस समय अंगरेजों को कुछ ऐसे क्लर्कों की आवश्यकता थी जो इनकी भाषा को जानते हों । इस प्रयोजन की सिद्धि के लिये भी उन्होंने भारतीयों को ही क्लर्क बनाने के लिये यह शिक्षा चालू की थी ।

जिस शिक्षा पद्धति का सूत्रपात ही भारतीयों को दास बनाने के लिये हुआ हो अर्थात् जिस शिक्षा प्रणाली की आधार शिला ही आर्य जाति को समूल नष्ट करने के लिये रक्खी गई हो, उस शिक्षा के भारत के लिए फिर ऐसे दुष्परिणाम निकलें जो आज देखने में आ रहे हैं या यूं भी कह सकते हैं कि उस शिक्षा से शिक्षित मनुष्य

शेष पृ० १६ पर

भारत में बेकारी की समस्या-उसका निदान

[श्री श्यामलाल सि० शास्त्री प्रभाकर डी. ए. वी. हाई स्कूल समयपुर बादली]

यह एक सैद्धान्तिक एवं अनुभूत तथ्य है कि मनुष्य जीवन कर्मप्रधान है। अकर्मण्य एवं निकम्मे मनुष्य से सब लोग घृणा करते हैं। अतएव विश्व में शान्ति एवं सुख फैलाने के लिए यह परम आवश्यक है कि संसार के प्रत्येक मनुष्य को करने के लिए कोई न कोई काम मिले। वैसे भी ऐसा मनुष्य जो कि कोई भी कार्य नहीं करता, दूसरों पर बोझ ही होता है तथा अधिक नहीं तो कम से कम रोटी, कपड़ा और मकान प्राप्त करने के लिये तो प्रत्येक मनुष्य को धन की अवश्य ही आवश्यकता पड़ती है जो बिना कार्य किये प्राप्त होना अति कठिन है। अतः आवश्यक है कि संसार का प्रत्येक मनुष्य प्रथम तो कोई न कोई कार्य करने के योग्य बने तथा तदुपरांत प्रत्येक मनुष्य को करने के लिये काम मिले।

परन्तु आज दशा इसके सर्वथा विपरीत है। संसार के अधिकांश देशों में कम या अधिक मात्रा में बेकारी की समस्या है। परन्तु भारतवर्ष में यह समस्या अपने युवा रूप में वर्तमान है।

प्रत्येक मनुष्य इस बात को स्वीकार करेगा कि रोग की चिकित्सा आरम्भ करने से पूर्व रोग की उत्पत्ति के कारणों का ज्ञान प्राप्त करना अति आवश्यक है। क्योंकि बिना कारण जाने चिकित्सा आरम्भ करना मूर्खता है। अतः यह अनिवार्य है कि पहले हम उन कारणों को जानें जिन से कि भारतवर्ष में बेकारी की समस्या उत्पन्न हुई। साधारणतया इसके निम्नलिखित कारण हैं—

बेकारी उत्पन्न होने के कारण

(१) उद्योगीकरण—दूसरों की नकल करना मनुष्य का स्वभाव होता है। यह नकल करना कभी तो लाभकर सिद्ध होता है और कभी हानि कर देता है। सन् १९४७ ई० में भारत स्वतंत्र हुआ। देश के नेताओं ने अन्धाधुन्ध अमेरिका की नकल करके तथा यह समझ कर कि इससे हमें भी लाभ होगा, प्रत्येक बात में अमेरिका अथवा योरूप का अनुकरण आरम्भ कर दिया। इसका थोड़ा सा बीज अंगरेजी शासन में ही बो दिया गया था। फल यह हुआ कि पहले जिन कामों को हम हाथ से कर लिया करते थे, उनको मशीनों से आरम्भ किया जाने लगा। लाखों रुपयों के मूल्य से विदेशों से नये नये प्रकार की मशीनें आने लगीं। हलों और बैलों का स्थान ट्रैक्टर ने लिया और जिस भूमि को १० आदमी और २० बैल जोतते थे, उसको केवल २ ट्रैक्टर और ४ आदमी करने लगे और इस प्रकार ६ आदमी बेकार हो गये। शेष देश पर भारस्वरूप हो गये। उद्योगीकरण सफल हो सकता था, परन्तु उस अवस्था में जब कि हम उसी अनुपात में उन शेष छः या पांच के योग्य कोई अन्य उपयोगी काम दे सकते। अमेरिका तथा योरूप के अन्य देश ऐसा करने में सफल हुये। इसके विपरीत भारत अपनी भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों वश ऐसा न कर सका। अतः भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में उद्योगीकरण का परीक्षण असफल सिद्ध हुआ और लाभ की अपेक्षा हानि हुई। अर्थात् देश में बेकारी बढ़ गई।

दूषित शिक्षा प्रणाली—किसी भी देश की शिक्षा उस देश में सुख एवं शान्ति फैलाने का मुख्य साधन होती है। अतः भिन्न-भिन्न देशों की परिस्थितियों के अनुसार पृथक्-पृथक् शिक्षा प्रणालियां होती हैं। शिक्षा प्रणाली के चुनाव में स्वतंत्र भारत ने भूल की है। स्वतंत्रता के पूर्व जो शिक्षा तथा शिक्षा प्रणाली थी, वह दूषित थी, हमारे वातावरण के विपरीत थी। उसको न बदला गया तथा उसका फल अब हम भोग रहे हैं। पूर्वानुसार ऐसे शिक्षितों की संख्या बढ़ती जा रही है जो कि केवल कलम घिसाई का कार्य (क्लर्की) कर सकते हैं तथा जो केवल इसी योग्य हैं कि प्रतिदिन ६ घंटे कुर्सियां तोड़ीं तथा रात को गंदे चित्रपटों में रुपया लुटा कर सो रहे। वास्तव में उनकी यह स्थिति दयनीय है। दूसरी ओर राज्य के पास इतने ढेर भर कलमघसीटों

(क्लर्कों) को नौकरी देने के लिये स्थान नहीं हैं। परिणाम यह होता है कि दिन प्रति दिन बेकार बढ़ते जाते हैं।

(३) असंयम, बालविवाह, पुनर्विवाह इत्यादि सामाजिक दोष—पूर्व की अपेक्षा उपरोक्त दोष यद्यपि कम हो गए हैं परन्तु अब तक वह दशा नहीं आई है जो कि अभीष्ट है। इसलिये प्रतिवर्ष देश में जनसंख्या की वृद्धि होती जाती है। जब कि इसके साथ साथ कार्यों की मात्रा उस अनुपात से अधिक नहीं होती। फलस्वरूप बेकारी अधिक होती जाती है।

(४) सरकार की उपेक्षा—देश में बहुत से स्थान अब भी ऐसे हैं जिन पर भारतीय भी उतनी ही योग्यता से कार्य कर सकते हैं जितनी योग्यता से विदेशी, (विशेषकर अंगरेज तथा अमरीकन) काम कर रहे हैं। क्या सरकार भारतीयों को उन पदों पर नियुक्त नहीं कर सकती? कर सकती है, परन्तु फिर भी नहीं कर रही, यह उपेक्षा या पक्षपात नहीं तो क्या है? इससे भारत में कुछ योग्य नागरिक उन पदों पर नियुक्त होने के अधिकारों से वञ्चित रह जाते हैं।

(५) दूषित प्रचार, गंदा वातावरण इत्यादि—आजकल हमारे देश में सिनेमे आदि जो कि मनोरञ्जन के साधन माने जाते हैं, उनमें कुछ इस प्रकार का अभारतीय प्रचार होता है जिससे मनुष्य अपने कार्यों से घृणा करने लगता है तथा उन को छोड़कर दूसरे कार्यों की तरफ जिनको प्राप्त करने में वह असमर्थ है भागने लगता है। उदाहरणार्थ आज के वातावरण में पला हुआ एक चमार का लड़का यह पसन्द नहीं करेगा कि वह भी पिता के समान चमड़े का कार्य करे। इसमें वह अपनी मान हानि समझता हैं। चाहे उसने केवल दसवीं ही पास क्यों न की हो, फिर भी उसकी विचारधारा इस रूप से प्रवाहित होगी:—

कोट, पैंट टाई लगाकर जाऊंगा में आफिस आज,
सण्डे को मैं जाऊं सिनेमा सजा सजा कर नूतन साज।
और कोई तो चाह नहीं है; है तो केवल एक ही चाह,
बस इतना ही कमा सकूं कि मिल जाए प्रतिदिन चाय।।
इत्यादि।

यह सर्वथा निंदनीय हैं। ऐसी प्रवृत्ति जहां हमें अपने सांस्कृतिक जीवन से पृथक् करती है वहां साथ-साथ बेकारी की विभीषिका भी हो जाती है।

उपर्युक्त सब दोषों के कारण हमारे देश में बेकारी की समस्या विकटतर होती जा रही है तथा यदि यही दशा रही तो विकटतम हो जायेगी। दिन प्रति दिन बेकारों की संख्या में वृद्धि हो रही है। प्रतिवर्ष भिन्न-भिन्न प्रान्तों से कई लाख विद्यार्थी मैट्रिक पास की उपाधि लिये अथवा यों कहें कि बेकारी का बिना पैसों का परवाना लिये निकलते हैं। उनमें से अधिक से अधिक २० प्रतिशत उच्च शिक्षा में चले जाते हैं, १० प्रतिशत को नौकरी मिल जाती तथा १० प्रतिशत अपने घरों के पैतृक कामों में लग जाते हैं तथा शेष ६० प्रतिशत अपना सा मुंह लिये रह जाते हैं। इधर-उधर सरकारी दफ्तरों, ऐम्पलायमेण्ट ऐक्सचेञ्जस् के दरवाजों को खटखटाते, टाइपशुदा प्रार्थना पत्रों को पैंटों की जेब में डाले फिरते हैं। कहीं किसी अफसर की जेब गरम करते हैं तो कहीं किसी अपने ही जैसे क्लर्क को चाट, तथा सिनेमे का लोभ देते हैं। इतना सब कुछ करने पर भी परिणाम वैसा ही रहता है। वही 'ढाक के तीन पात' वाली कहावत चरितार्थ होती है। कितना भीषण संहार मानव का और उसकी नैतिकता का हो रहा है।

अब देश के प्रत्येक नेता को इसकी चिंता होने लगी है तथा वे इसको दूर करने के उपाय ढूंढ़ रहे हैं। परन्तु मस्तिष्क अब भी उनका योरुपीय साधनों में चक्कर काट रहा है। क्यों नहीं वे सीधे से तरीके से सोचते? रोग को दूर करने के लिये साधारण सा नियम होता है कि जिन बुराइयों या भूलों के कारण वह रोग उत्पन्न हुआ है, उन कारणों को दूर करदें। वह रोग स्वयं ही भाग जायेगा। यही दशा इस सामाजिक रोग बेकारी की है। जिन कारणों से यह उत्पन्न हुई तथा दिन प्रति दिन बढ़ रही है उन कारणों को दूर कर दो। समस्या स्वयं ही हल हो जायगी। साधारणतया हम इसके लिये निम्न उपाय कर सकते हैं—

बेकारी दूर करने के उपाय

(१) उद्योगीकरण के स्थान पर देश में घरेलू उद्योगों, घरेलू दस्तकारियों को प्रोत्साहन दिया जाये। जो लोग इन में रुचि रखते हैं, उनको आर्थिक संकट की सम्भावना से

मुक्त करने के लिये उन चीजों की विक्री का आवश्यक क्षेत्र तैयार किया जाए। इसका प्रबन्ध शिक्षा संस्थाओं में किया जाये तथा शिक्षा पाठ्यक्रम में किसी न किसी उद्योग को अनिवार्य किया जाये। बालकों की अपने पैतृक कामों को सीखने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया जाये।

(२) राज्य का यह कर्तव्य है कि वह तुरन्त वर्तमान शिक्षा तथा शिक्षा प्रणाली में आमूल चूल परिवर्तन करे। प्रारम्भिक कक्षाओं में बालकों पर अधिक भार नहीं डालना चाहिये जिससे उनके मस्तिष्क स्वभावतः विकसित हों। प्रारम्भिक कक्षाओं में केवल अक्षर ज्ञान, पढ़ने लिखने का अभ्यास तथा साधारण ज्ञान कराया जाय। माध्यमिक कक्षाओं में बालकों के चुनाव अनुसार एक, दो अथवा अधिक से अधिक तीन विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिये। साथ साथ बालक को कर्तव्य अकर्तव्य का ज्ञान कराने के लिये धार्मिक शिक्षा यथा आत्मनिर्भर होने के लिये दस्तकारी की शिक्षा सबके लिये अनिवार्य होनी चाहिये। माध्यमिक शिक्षा समाप्ति पर विद्यार्थी जो उच्च शिक्षा में जावें, उनके लिये यह नियम होना चाहिये कि वे केवल वही विषय ले सकें जिसे कि उन्होंने माध्यमिक कक्षाओं में पढ़ा है। जिससे वह उस विषय में प्रवीण हो जावें। तात्पर्य यह है कि दसवीं कक्षा पास करने के उपरान्त विद्यार्थी केवल दो ही कार्य कर सके। आगे उच्च शिक्षा ले या कोई घरेलू दस्तकारी का कार्य या दस्तकारी आरम्भ करके अपना निर्वाह आरम्भ करे। कुछ वर्षों तक तो विद्यार्थियों में क्लर्की करने का विचार तक नहीं आना चाहिये।

(३) हमारे देश में शिक्षा का बड़ा अभाव है। राज्य का यह कर्तव्य है कि वह शीघ्र से शीघ्र देश के प्रत्येक भाग में आवश्यक शिक्षा का विस्तार करे। उन पाठशालाओं में योग्य एवं सच्चरित्र अध्यापकों को नियुक्त करे। इससे बेकारी की समस्या पर्याप्त मात्रा में हल हो सकती है।

(४) देश में प्रचार द्वारा और कानून द्वारा शीघ्रातिशीघ्र यह अवस्था हो कि कम मनुष्य उत्पन्न हों। यह तभी हो सकता है जब कि हम प्रचार द्वारा मनुष्यों में संयम और ब्रह्मचर्य के विचार उत्पन्न करें, शिक्षा द्वारा नवयुवकों में अधिक काल तक ब्रह्मचारी रहने की प्रवृत्ति को बढ़ा तथा कानून द्वारा लड़के का २५ वर्ष से कम का तथा कन्या का १६ वर्ष से कम का विवाह अवैध और दण्डनीय ठहरावें। ऐसा करने से जनसंख्या कम होगी और बेकारी की समस्या स्वयं ही हल हो जायेगी।

(५) राज्य को चाहिये कि उन सरकारी पदों पर जिन पर विदेशी नियुक्त हैं भारतीयों को नियुक्त करे तथा सरकारी दफ्तरों में स्त्रियों को नियुक्त न किया जाये। स्त्रियों का काम तो वास्तव में घर के अन्दर ही है।

इसके अतिरिक्त और भी कई छोटे छोटे उपाय किए जा सकते हैं। यदि हम उपर्युक्त उपायों पर चलें तथा राज्य इन साधनों को कार्य में परिणत करने की व्यवस्था करें तो हमारा देश शीघ्र ही बेकारी के भूत से छुटकारा पा सकता है। अन्यथा जो आज दशा है वह और भी विकट हो जायेगी और थोड़े दिनों में सब स्थानों पर बेकार ही बेकार दिखाई देंगे।

(शेष पृ० १३ का)

वर्ग भारतीयता को छोड़कर ऐसी पाश्चात्य तरङ्ग में झकोले खाने लगें जो भ्रष्टाचार, शृङ्गार, विषयवासना, माता पिता और गुरु की आज्ञा भङ्ग तथा उच्छृंखलता आदि जलकणों से मिलकर बनी है और अज्ञानवायु जिस को क्षुब्ध कर रही है, इसमें सन्देह तथा विवाद की बात ही कौनसी है! वर्तमान शिक्षा के इन सब परिणामों को पहले ही देख कर सन् १८५३ में ट्रेवोलियन ने कहा था "Educated in the same way they become more English than Hindus" अर्थात् इस प्रकार अंगरेजी शिक्षा पाये हुये वे (भारतीय) हिन्दू होने की अपेक्षा अंगरेज अधिक बनते हैं। इनके इस कथन को आज हम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। पाश्चात्य शिक्षा पाया हुआ नवयुवक न ईश्वर पर विश्वास रखता है, न माता पिता और गुरुजनों की आज्ञा ही मानता है और न ही अपने धर्म पर विश्वास रखता है। देश में जिधर भी आंख उठा कर देखते हैं उधर ही स्कूल तथा कालिज रूपी अंगरेजी कारखानों में ढली हुई मूर्तियां दृष्टिगोचर हो रही हैं, जो दुर्व्यसन बेकारी और बीमारी इन तीन धातुओं (Materials) को मिलाकर घड़ी गई हैं।

(क्रमशः)

हे राष्ट्रपति ! क्यों हमको काटा जाता ?

आदरणीय श्री राष्ट्रपति की सेवा में गायों की ओर से रक्षासूत्र समर्पित
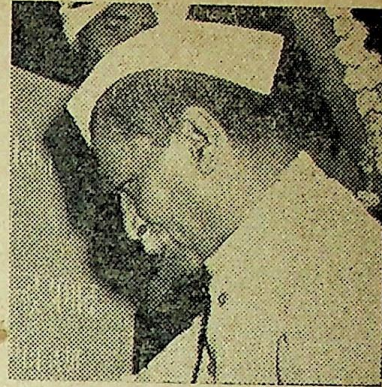
हे गणपति ! हे राष्ट्रपति ! हे भारत भाग्य विधाता ।
आज तुम्हारे शासन में क्यों हमको काटा जाता ?
हम खातीं धरती का चारा, पीतीं प्रभु का पानी ।
दूध खाद में बदल उसे, देना ही सेवा जानी ॥
कहो जगत में कौन मशीनें ऐसा दूध बनावेंगी ?
और न जनता वैज्ञानिक से खाद ही ऐसा पावेंगी ?
नकली दूध बनाओ तुम नकली घी का उपभोग करो।
और नहीं है चाह हमारी तो तुम हमको मुक्त करो।
नदियां तट, जंगल, चरागाह पर फिर तुम मत अधिकार करो ॥
विचरेंगी झुन्ड बनाकर हम फिर अपनी रक्षा करलेंगी ।
फिर भी मरने पर हाड़ चर्म हम सब जनता को दे देंगी ॥
यदि हम लूली लंगड़ी हैं तो है कर्मों का दोष ।
किन्तु बनाती खाद घास की, करो न हम पर रोष ॥
यदि हम दुबली पतली हैं, है दूषित अर्थ व्यवस्था ।
गांधी मार्ग पर चले तभी, बदलेगी शीघ्र अवस्था ॥
यदि मांस, मुलायम चमड़े के खातिर ही काटी जाती हैं।
तो क्षणिक स्वार्थ के आगे निश्चय हानि राष्ट्र को होती है ॥
जो मांस हमारा खाते हैं, वह भी रोगी बन जाते हैं।
क्यों कि हमारा मांस हानि कर वैद्य सभी बतलाते हैं ॥
करो सभी सत् धर्म यही बस धर्म रखो मानवता ।
यही अहिंसा धर्म जियो, जीने दो, हरो दानवता ॥
यदि चाह है तुम्हें हमारी, तो तुम रक्षा कार्य करो ।
भेज रही हैं रक्षा बन्धन, चाहो तो स्वीकार करो ॥

गायों की ओर से,

रतन सिंह बांठिया बी० कोम० विशारद
मालादेवी पाड़ा, बाराँ, जिला कोटा (राजस्थान)

(बोधन से उद्धृत)

संस्था समाचार

२६ अगस्त ५६ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभावसर पर श्रीयुत डा० कालूलाल जी श्रीमाली उप शिक्षामन्त्री भारत सरकार के करकमलों द्वारा गुरुकुल में आयुर्वेद महाविद्यालय तथा आतुरालय का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

आयुर्वेद महाविद्यालय का उद्घाटनोत्सव बड़ी सज-धज के साथ मनाया गया, जिसमें अनेक राष्ट्रिय नेता तथा विद्वानों के भाषण हुए। जिनमें निम्नलिखित महानुभावों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं—श्री डा० कालू लाल, श्री माली उप शिक्षामन्त्री भारत सरकार, श्री प्रो० शेरसिंह जी सिंचाई तथा विद्युन्मन्त्री पंजाब सरकार, श्री चौ० निहालसिंह जी तक्षक भू० पू० अर्थमन्त्री पेप्सु, श्री चौ० माड़ूसिंह जी एम० एल० ए०, श्री चौ० बदलू राम जी एम० एल० ए०, श्री चौ० उदयसिंह जी मान एम० एल० सी०, श्री पं० शिवकरण जी आचार्य हिन्दी महाविद्यालय दादरी, श्री पं० रघुवीर सिंह जी शास्त्री, स्वामी नित्यानन्द जी प्रचारक।

इसी अवसर पर श्री प्रो० शेरसिंह जी ने बिजली का उद्घाटन किया। अब आयुर्वेद महाविद्यलय का उद्घाटन विधिपूर्वक हो चुका है, छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। प्रवेशार्थी १५०) अपने साथ अवश्य लेते आवें। विवरण के लिये प्रवेशनियम मंगवा सकते हैं। इस समय केवल २५ विद्यार्थी ही प्रविष्ट किये जा सकेंगे।

ईश्वर की कृपा से, जनता के सहयोग से और श्री आचार्य भगवान् देव जी के पुरुषार्थ से गुरुकुल दिन प्रति दिन उन्नति करता जा रहा है। इसमें श्री प्रो० शेरसिंह जी का प्रयत्न भी विशेष सराहनीय है। इनकी कृपा से गुरुकुल में बिजली पहुंच चुकी है और नहर का पानी भी पृथक् मोरी लग जाने के कारण यथेष्ट मिल रहा है। हमें आशा है कि प्रो० साहब का सहयोग इसी प्रकार सदा बना रहेगा। जल और विद्युत से गुरुकुल और अधिक उन्नति कर सकेगा।

अभी तक गुरुकुल में आने-जाने के लिये मार्ग अच्छा नहीं है, इसके कारण गुरुकुल निवासी तथा बाहर से आने वाले महानुभाव पर्याप्त कष्ट अनुभव करते हैं। हमारी सरकार इस ओर भी ध्यान दे रही है और गुरुकुल से पक्की सड़क तक सड़क बनाने के लिये चिन्ह (निशान) लग चुके हैं, आशा है यह कार्य भी शीघ्र ही सम्पन्न हो जायगा।

इस शुभावसर पर १७२६) दान प्राप्त हुआ। विवरण इस प्रकार है—

१०००) चौ० प्रियव्रत जी ठेकेदार तथा चौ० प्रतापसिंह जी सुपुत्र चौ० लखीराम जी, खेड़ी आसरा (रोहतक) निवासी ने गुरुकुल के मुख्य द्वार के निमित्त प्रदान किये।

१०१) ग्राम मल्हामाजरा (सोनीपत) तथा
१००) चौ० बलवन्त सिंह जी मकड़ोली और
८१) ईश्वर सिंह जी बी० ए० बी० टी० भदानी ने यज्ञ-शाला के निमित्त दान दिये।

आयुर्वेद महाविद्यालयार्थ दान

३०१) चौ० मोलड़ सिंह जी सांखोल
२०) ग्राम सुरहती
१२३) विभिन्न सजन्नों से प्राप्त

१७२६) सर्वयोग

कन्या गुरुकुल नरेला (देहली)
का
वार्षिकोत्सव

कन्या गुरुकुल नरेला (देहली) का वार्षिकोत्सव १-२ सितम्बर १९५९ को समारोह पूर्वक मनाया गया। १ तारीख को स्वामी आत्मानन्द जी महाराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के करकमलों द्वारा ध्वजोत्तोलन हुआ और स्वामी वेदानन्द जी महाराज अध्यक्ष विरजानन्द वैदिक संस्थान का उपदेश हुआ। श्रीमती सुशीला नायर अध्यक्ष देहली राज्य विधान सभा ने यज्ञकुण्ड में आहुतियाँ डालकर संस्था के नव निर्मित भवन का उद्घाटन किया। अपने भाषण में सुशीला जी ने महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये कहा कि "स्त्री जाति के कल्याण का जो ऐतिहासिक कार्य महर्षि ने किया है उसके लिये स्त्री जाति सदैव कृतज्ञ रहेगी।" उन्होंने वैदिक शिक्षा प्रणाली की प्रशंसा करते हुये गुरुकुल के अधिकारियों की भावना एवं मनोवृत्ति का अभिनन्दन किया और कहा कि 'इस युग की मांग है कि कन्याओं को विलासिता के वातावरण से दूर इसी प्रकार के ब्रह्मचर्याश्रमों में रख सरलता एवं अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाय।" संस्था की ओर से स्वागताध्यक्ष चौधरी हीरासिंह जी चेयरमैन डिस्ट्रिक्ट बोर्ड देहली ने सुशीला जी की सेवा में अभिनन्दन पत्र समर्पित किया।

२ तारीख को प्रोफेसर शेरसिंह जी सिंचाई तथा विद्युत् मन्त्री पंजाब पधारे। चौधरी हीरासिंह जी ने उनकी सेवा में अभिनन्दन पत्र प्रस्तुत किया। प्रोफेसर साहिब का शिक्षा विषय पर सारगर्भित भाषण हुआ और उन्होंने संस्था के सञ्चालकों को पूर्ण सहयोग का आश्वासन किया। इसी दिन श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री का गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर प्रभावशाली भाषण हुआ जिसमें उन्होंने प्राचीन गुरुकुलों की शिक्षा-पद्धति तथा ब्रह्मचर्य के महत्व का बड़ा ही सुन्दर चित्र उपस्थित किया। रात्रि को वैदिक विद्वान् श्री पं० जगदेवसिंह जी शास्त्री 'सिद्धान्ती' का वैदिक सिद्धान्तों पर मनोहर प्रवचन हुआ। दोनों दिन श्री म० प्यारेलाल आर्य मन्त्री गुरुकुल झज्झर, म० ब्रह्मानन्द जी, तथा स्वामी नित्यानन्द जी आदि के मधुर भजन होते रहे। आस-पास देहात के स्त्री-पुरुषों के अतिरिक्त देहली नगर से भी अनेक आर्य स्त्री-पुरुष उत्सव में पधारे, जिनमें श्रीमती माता सत्यभावां जी धर्मपत्नी दानवीर स्वर्गीय लाला दीवानचन्द जी ठेकेदार, डा० विद्यासागर जी थापर तथा देवराज जी चड्ढा,: श्री अजीतसिंह जी एम. एल. ए., श्री प्रभुदयाल जी एम. एल. ए. श्री मित्रसेन जी एम. एल. ए. आदि महानुभाव थे।

इस अवसर लगभग २५००) नकद तथा ५०००) के वचन दान प्राप्त हुआ। आचार्य भगवान्देव जी ने ८० बीघे भूमि पहले ही प्रदान कर दी थी जिसमें संस्था के विशाल भवनों का निर्माण आरम्भ हो गया है, चार बड़े कमरे बन चुके हैं। आचार्य जी ने ४० बीघा भूमि और दान कर दी है। साथ ही कई सौ रुपया और अपनी ८००) की बन्दूक भी दान दे दी। आचार्य जी के चाचा चौधरी नेकीराम ने उत्सव में आगन्तुक विद्वानों को भोजन कराया और १३००) दान दिया। लाला जगन्नाथ स्याही वाले देहली निवासी ने ११००) दान दिया। संस्था के सञ्चालक स्वामी व्रतानन्द जी की अपील पर एक धन संग्रह समिति स्थापित की गई और चार मास में १॥ लाख रुपया संग्रह करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

संस्था का स्थान देहली नगर से १८ मील दूर ग्रांड ट्रंक रोड से नरेला को जाने वाली पक्की सड़क पर बहुत ही सुन्दर है। स्वामी व्रतानन्द जी तथा आचार्य भगवान्देव जी के अतिरिक्त देहली जिला बोर्ड के अध्यक्ष चौधरी हीरासिंह, वैद्य कर्मवीर आर्य तथा सूबेदार धीरजसिंह जी आदि महानुभावों का कार्य भी अति प्रशंसनीय है।

(निज संवाददाता द्वारा)

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला (रजि०) गुरुकुल झज्जर की
* अचूक औषधियाँ *

१—च्यवनप्राश

इसी ऋतु के ताजे आंवले से तैयार किया गया स्वादिष्ठ सुमधुर और एक दिव्य रसायन (टानिक) है। जिसका सेवन प्रत्येक ऋतु में, स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खाँसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक, सभी हृदय रोगों की अद्वितीय औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातु क्षीणता तथा अन्य सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका (निरन्तर) सेवन समूल नष्ट करता है। यह निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषधि है। मूल्य १ पाव २), आध सेर ३।।।), एक सेर ७)।

२—बलदामृत

इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय उतनी ही थोड़ी है। हृदय और उदर रोगों में रामवाण है। इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आजाता है। पीनस (सदा रहने वाले जुकाम और नजले) की महौषधि है। वीर्यवर्द्धक, कास (खांसी) नाशक, राजयक्ष्मा (तपेदिक) श्वास (दमा) के लिए लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करती तथा अत्यन्त रक्तवर्द्धक है। निर्बलों को बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ट बनाती है। यह अपने ढंग की एक ही औषधि है। बड़ी शीशी ५) छोटी २)

३—नेत्र ज्योति सुर्मा

लगाइये और नेत्र ज्योति पाइये। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंख दुखना, खुजली, लाली, जाला फोला, रोहे, कुकरे, पास का कम दीखना (शोर्ट साइट), दूर का कम दीखना (लांगसाइट), प्रारम्भिक मोतियाबिन्द आदि दूर हो जाते हैं। आंखों के सब रोगों की रामबाण औषधि है। यही नहीं किन्तु लगातार लगाने से दृष्टि (बीनाई) को तेज तथा आँखों को कमल की तरह साफ स्वच्छ रखता है। बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। प्रतिदिन जिसने भी लगाया उसी ने मुक्तकण्ठ से इस सुर्मे की प्रशंसा की है।

सेवन विधि-पहले सुलाई को शुद्ध जल से धोकर पोंछ लें। फिर सुर्मे में भर कर, झाड़कर लगाना चाहिए। मूल्य ।।) शीशी

४—ज्वरामृत

यह नए पुराने सभी प्रकार के ज्वरों की रामबाण औषधि है। बिगड़े हुए मलेरिया, विषमज्वर को दूर करने में अद्वितीय औषधि है। कुनेन इसके आगे तुच्छ औषधि है। कुनेन का सेवन सिरदर्द, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है। किन्तु यह औषधि सब दोषों को दूर करती है तथा ज्वर की प्रत्येक अवस्था में दी जा सकती है। मलेरिया काल में सेवन की हुई मलेरिया को नहीं आने देती। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, सेवन करें और लाभ उठावें। —मूल्य बड़ी शीशी ५) छोटी शीशी २)

५—सुगन्धित हवन सामग्री

ऋतु अनुसार तैयार की हुई शुद्ध हवन सामग्री। मूल्य १।) सेर

६—व्रणामृत

भयंकर फोड़े, फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा अनेकों वर्षों के नासूर (सरह) आदि रोगों की अद्वितीय औषधि है। दिनों का काम घण्टों में, घण्टों का काम मिनटों में करती है।—मूल्य एक शीशी १)

७—स्वास्थ्यवर्धक चाय

यह चाय स्वदेशी, ताजी एवं शुद्ध जड़ी-बूटियों से तैयार की गई है। वर्तमान चाय की भांति यह नींद और भूख को न मारकर खांसी, जुकाम, नजला सिरदर्द, खुश्की, अजीर्ण, थकान सर्दी आदि रोगों को दूर भगाती है। मस्तिष्क एवं दिल को शक्ति देती है। मूल्य १ छटांक ।=)

८—दन्तरक्षक मंजन

दांतों से खून वा पीप का आना, दांतों का हिलना, दांतों के कृमिरोग, सब प्रकार की दांतों की पीड़ा तथा रोगों को दूर भगाता है और दांतों को मोतिया के समान चमकाता है।—मूल्य एक शीशी ।।)

९–सञ्जीवनी तैल

मूर्च्छित लक्ष्मण को चेतना देनेवाली इतिहास प्रसिद्ध बूटी से तैयार किया गया यह तैल घावों के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुये घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भरकर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घन्टों और घन्टों का काम मिन्टों में पूरा कर देता है। मूल्य ३)

सेवन विधि—फाये में भर कर बार-बार चोट आदि पर लगायें।

१०–स्वप्नदोषामृत रस

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषध इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे पीछे या बीच में वीर्य आने को बन्द कर देती। मूल्य ५) रुपये

सेवन विधि—प्रातः सायं एक-एक गोली गोदुग्ध या शीतल जल के सथ विशेष—यदि स्वप्नदोष को रोगी अत्यन्त दुर्बल हो तो दूध के साथ और हृष्ट-पुष्ट हो तो जल के साथ सेवन करें ब्रह्मचारी को जल के साथ सेवन करना चाहिये।

११–स्वप्नदोषामृत चूर्ण

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषधि इस रोग के दूर करने में बहुत लाभ दायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात मूत्र में आगे-पीछे या बीच में वीर्य के आने को बन्द कर देती है।

मू० २) एक मास

सेवन विधि—६ माशे प्रातः-सायं दूध या पानी के साथ।

१२–कर्णरोगामृत

कान से पीप आना, बहरापन और प्रत्येक प्रकार की कर्ण पीड़ा को दूर करने के लिये यह अति उत्तम औषध है। प्रतिदिन सेवन करने से कानों का कोई रोग नहीं होता और मस्तिष्क की शुष्कता दूर होती है। मूल्य एक शीशी १)

१३–बाल रोगामृत

बालकों के हरे पीले दस्त, अपच, अजीर्ण (कब्ज अरुचि,) दांत निकलते समय के रोग, सूखिया (मसान) रोग, वमन, निर्बलता, ज्वर आदि सभी रोगों को दूर कर बालकों को मोटा करता है। अतः प्रत्येक गृहस्थी घर में रखें।

मूल्य ५) बड़ी शीशी २) छोटी शीशी

१४–पाचनामृत

मन्दाग्नि, अरुचि, अजीर्ण (कब्ज), पेट का फूलना, पेट का भारीपन, शूल, जी मिचलाना, वमन, खट्टी डकार, आदि पेट के सभी रोगों को नष्ट कर भूख को बढ़ाता है। आंतों के सब रोगों को दूर कर पाचन शक्ति को बल देता है। पुराने से पुराने तिल्ली जिगर की अचूक औषधि हैं।

मूल्य एक शीशी ५)

१५—नेत्रामृत

लाली, कड़क, धुन्ध ढलकवा, गरदोगुब्बार, रोहे तथा भयकरता से दुखती आंखों के लिये जादू भरा विचित्र योग है।

मूल्य बड़ी शीशी ।।=) छोटी शीशी ।=)

पता—आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला पो० गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक (पंजाब)

स्वाध्यायोपयोगी उत्तम साहित्य

१. सत्यार्थप्रकाश ।।।≡)
२. ऋग्वेदादिभाष्य भूमि २।।)
३. संस्कारविधि ।।।=)
४. दयानन्द दिग्विजयम् ६)
पूर्वार्द्ध ४ रु०, उत्तरार्द्ध ५ रु०
५. महर्षि दयानन्द का प्रामाणिक जीवन चरित्र २ भागों में १२)
६. दयानन्दायन (हिन्दी पद्य काव्य ४)
७. दयानन्द दिव्य दर्शन ।।)
८. महर्षि दयानन्द चरित ।।=)
९. दयानन्द लहर ।।)
१०. आर्योद्देश्य रत्नमाला -)
११. गोकरुणानिधि =)
१२. पञ्चमहायज्ञ विधि ≡)
१३. वेदाङ्गप्रकाश १४ भाग ८।।=)
१४. अष्टाध्यायी भाष्य २ भाग ७)
१५. सन्ध्या अष्टाङ्ग योग ।।।)
१६. विरजानन्द चरित हिन्दी ।।)
१७. आदर्श ब्रह्मचारी ।)
१८. ब्रह्मचर्यशतकम् ≡)
१९. कन्या और ब्रह्मचर्य ।।=)
२०. वैदिक धर्म परिचय ।।=)
२१. छात्रोपयोगी विचारमाला ।।=)
२२. आसनों के व्यायाम सचित्र ।।)
२३. सिद्धान्तकौमुदी की अन्त्येष्टि ।)
२४. वैदिक गीता ३)
२५. राष्ट्रनिर्माण में गुरुकुल का स्थान ।।)
२६. संस्कृत भाषा क्यों पढ़ें ? ।।)
२७. मनोविज्ञान और शिवसंकल्प २।।)
२८. विरजानन्द चरितम्
(सानुवाद संस्कृत पद्यकाव्यम्) १)
२९ प्रकृति सौन्दर्यम् (नाटकम्) १।)
३०. नाडी तत्त्वदर्शनम ४)
३१. ऋग्वेदसंहिता ६)
३२. यजुर्वेद संहिता २।।)
३३. सामवेद संहिता २)
३४. अथर्ववेद संहिता ४)
३५. चारों वेदों का भाष्य सम्पूर्ण सैट १४ भागों में ८४)
३६. पातञ्जलमहाभाष्यम् ४०)

आचाय भगवान्देव जी द्वारा लिखित साहित्य

१. ब्रह्मचर्य साधन भाग १, २ ।-)
२. " " दन्तरक्षा ३ भाग ≡)
३. " " व्यायाम सन्देश ४ भाग १)
४. " " सन्ध्या यज्ञ ५ भाग ।=(
५. " " सत्संग-स्वाध्याय ७, ८ भाग ।।=)
६. " " भोजन १० भाग ।।=)।।
७. ब्रह्मचर्यामृत =)
स्वप्नदोष की चिकित्सा =।।)।।
९. बाल विवाह से हानियाँ -)
१०. व्यायाम का महत्त्व ≡)
११. रामराज्य कैसे हो ? ≡)
१२. पापों की जड़ शराब ।-)
१३. हमारा शत्रु तम्बाकू का नशा =)।।
१४. नेत्र रक्षा ≡)
१५. बिच्छू विष चिकित्सा =)
१६. सर्प विष चिकित्सा (प्रेस में) ।=)

विशेष परिचय के लिये हमारा सूचिपत्र मंगवा कर पढ़ें, ग्राहक को उचित कमीशन भी दिया जाता है।

पता—'विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय' पो० गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक।

रजि० नं० ई० पी० ५०

सुधारक पर सम्मति

सुधारक के विशेषांक बहुत ही उत्तम हैं और उपयोगी हैं। विशेषांकों में सत्संग स्वाध्यायाङ्क विशेष लाभप्रद है। मैंने इसको पढ़ा तो मेरे दिल में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई और यह अङ्क चरित्र निर्माण में बहुत सहायक है। मैं आशा करता हूँ कि सम्पादक महोदय विद्यार्थियों को इसी प्रकार के अङ्क देकर कृतार्थ करते रहेंगे।

बलवीरसिंह

गवर्नमेन्ट हाईस्कूल न्योताना।

———

सुधारक, झज्जर के तीन अंक मिले। परम धन्यवाद। मैंने तीनों अंक आद्योपांत देखे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसी प्रकार यह अंक निकलता रहा तो युवक और युवतियों को पर्याप्त लाभ पहुँचेगा और उनका ज्ञान बढ़ेगा। भगवान् आपके पत्र को चिरस्थायी और समृद्ध बनावे।

सु... कुमार गुप्त

संयोजक

अध्यक्ष संस्कृत विभाग

एन० आर० ई० सी० कालिज

खुर्जा (यू० पी०)

पता

ग्राहक संख्या

सेवा श्री प० धर्मदेवजी विद्या...

मु० % श्रद्धानन्द प्रतिष्ठान

पो० गुरुकुल काङ्ड़ी

जि० हरद्वार (सहारनपुर)

सुधारक

मासिक पत्र का मार्च-अप्रैल का संयुक्तांक ब्रह्मर्षि 'विरजानन्द चरिताङ्क'। इस अङ्क का मूल्य १२ आने। साधारण अङ्क का मूल्य ३ आने। वार्षिक मूल्य २ रुपये। पता—गुरुकुल झज्जर, रोहतक (पूर्व-पञ्जाब)।

२४ पृष्ठों की उक्त लघु पत्रिका गत तीन वर्षों से प्रकाशित हो रही है। हर एक अङ्क के लेख उत्तम रहते हैं। उक्त विशेषांक में आचार्य मेधाव्रत जी कविरत्न द्वारा विरचित स्वामी विरजानन्द-चरित दस सर्गों में प्रकाशित किया गया है। संस्कृत श्लोकों के साथ उनका हिंदी अर्थ भी दिया गया है। आचार्य जी ने संस्कृत के दस-बारह ग्रन्थों की रचना की है। प्रत्येक ग्रन्थ संस्कृत की गुण-गरिमा एवं माधुरी से परिपूर्ण है। तदनुसार व्याकरण शास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित ब्रह्मर्षि स्वामी विरजानन्द के अज्ञात जीवन को रोचक रूप में प्रकाश में लाने में आचार्य जी सफल हुए हैं। हम पत्र की सफलता चाहते हैं।

(सम्पादक 'श्री वेङ्कटेश्वर समाचार' बम्बई)

प्रकाशक आचार्य भगवान्देव गुरुकुल झज्जर ने सम्राट प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली में मुद्रक जगदेवसिंह शास्त्री 'सिद्धान्ती' के प्रबन्ध से छपवाया।

वर्ष ४ अङ्क ११ | गुरुकुल झज्जर (रोहतक) आषाढ़ २०१४ वि० जुलाई १९५७, दयानन्दाब्द १३३ | वार्षिक मूल्य २) एक प्रति बीस नये पैसे

आदर्श-सुधारक स्व० स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज
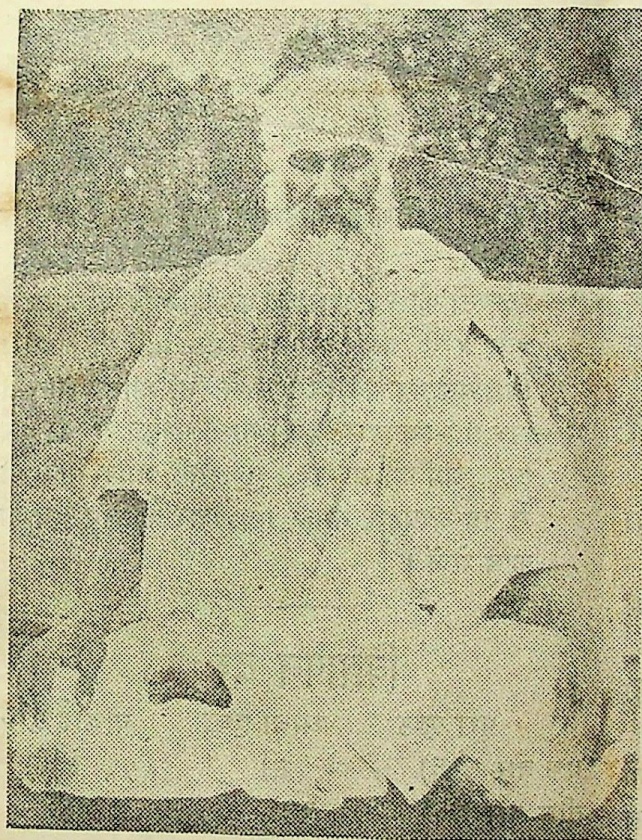
स्वामी ब्रह्मानन्द जी

स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज अतीव सौम्य स्वभाव के वीतराग संन्यासी थे। जब लाला लाजपतराय के देश निर्वासन के समय विशेषतया रोहतक जिले के आर्यों पर गोरे हाकिमों का प्रकोप था। क्या तुम आर्य हो ? इस प्रकार पूछ पूछ कर आर्यों को तङ्ग किया जाता था। उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आप को रोहतक जिले में प्रचारार्थ भेजा। स्वामी जी महाराज ने लगभग १६ वर्ष तक यहां प्रचार किया। इस सङ्कट के समय में भी दश हजार नये आर्यसमाजी बनाये। लगभग २५ हजार रुपये गुरुकुल काङ्गड़ी, मटिण्डू, भैंसवाल और गुरुकुल झज्जर में भिजवाये तथा लगभग २५ हजार रुपये आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब के वेदप्रचार कोष में भेजे। १७ फरवरी १९२५ को महर्षि दयानन्द जन्मशताब्दी के अवसर आपने स्वामी श्रद्धानन्द जी से संन्यास ग्रहण किया। तत्पश्चात् भी आप प्रचार कार्य में संग्लन रहे और साथ साथ गुरुकल झज्जर और भैंसवाल आदि के आचार्य और अधिष्ठाता का भी कार्य करते रहे। इस प्रकार मृत्युपर्यंन्त आर्य समाज के प्रचार कार्य में ही लगे रहे। आप का जीवन अनुकरणीय था।

संस्थापक व सम्पादक—ब्र० भगवान्देव आचार्य गुरुकुल झज्जर
सह-सम्पादक—ब्र० वेदव्रत भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति
व्यवस्थापक—यज्ञदेव शास्त्री भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति
सह-व्यवस्थापक—ब्र० महावीर भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति

विषय-सूची

सुधारक के नियम

१—सुधारक अंग्रेजी महीने की १० ता० को डाकखाने में डाला जाता है। यदि २० ता० तक न मिले तो अपने पोस्ट आफिस में पूछ-ताछ करनी चाहिए। फिर भी न मिले तो हमें लिखने पर और भेज दिया जायेगा।

२—छोटे लेख सारगर्भित तथा कागज के एक ओर सुन्दर और सुवाच्य लिखे हुये हों।

३—लेख में उचित परिवर्तन करना, प्रकाशित करना या न करना सब सम्पादक के आधीन है। अस्वीकृत लेख पोस्टेज भेजने पर ही वापिस लौटाया जा सकेगा।

४—वेद विरुद्ध लेखों का प्रकाशन सुधारक में न हो सकेगा।

५—सिद्धांत विरुद्ध, अश्लील और मिथ्या विज्ञापनों के लिए "सुधारक" में स्थान नहीं है। इतना होते हुये भी विज्ञापन की सत्यता का उत्तरदायित्व हम पर नहीं है।

६—व्यवस्थापक सम्बन्धी सब पत्र-व्यवहार तथा मनीआर्डर आदि "व्यवस्थापक-सुधारक" के नाम से भेजने चाहियें, किसी व्यक्ति के नाम से न भेजें। साथ ही ग्राहक अपनी संख्या अवश्य लिखें।

७—एजेण्टों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है और ५ से कम की एजेन्सी नहीं दी जाती। विज्ञापन का धन अगाऊ भेजना आवश्यक है।

८—सब पत्र-व्यवहार हिन्दी तथा संस्कृत में ही करें उर्दू, अंग्रेजी मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में पत्र व्यवहार न करें। पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड भेजें।

विज्ञापन दर

	पूरा पृष्ठ	आधा पृष्ठ	चोथाई पृष्ठ
एक बार	१६)	९)	५)
तीन बार	४०)	२४)	१३)
छः बार	७५)	४५)	२५)
१ वर्ष तक	१३०)	७५)	४५)

टाईटिल अन्तिम १५% अधिक।
टाईटिल तृतीय १०% अधिक।
विशेषांक में सवाया। कम से कम ४।।)

सोम वालो ! हिंसा मत करो

मा स्रेधत सोमिनो दक्षता महे कृणुध्वं राय आ तुजे ।
तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवाः कवत्नवे ॥
ऋ० ।३२।९

हे (सोमिनः) सोमवालो ! (मा) मत (स्रेधत, हिंसा करो, (महे) महत्त्व के लिए (दक्षत) उत्साहित होओ । (आतुजे) सर्वविध बल के लिये (राये) धन के लिये (कृणुध्वम्) उद्योग करो । क्योंकि (तरणिः) विपत्तियों को पार करने वाला, रक्षक ही (जयति) जीतता है और (क्षेति) वास करता और (पुष्यति) पुष्ट होता है । (देवाः) विद्वान् लोक अथवा प्राकृतिक शक्तियाँ (कवत्नवे) कुत्सित आचार व्यवहार के लिए (न) नहीं होते ।

यद्यपि वेद में राजा के कर्त्तव्यों में अन्यायी, आततायी, अत्याचारी मनुष्यों को मृत्युदण्ड देने तक का विधान है, तथापि अहिंसा वेद का एक प्रधान विषय है । 'मा स्रेधत' [मत हिंसा करो] यह स्पष्ट आदेश है । उत्तरार्ध में इसका हेतु दिया है—

'तरणिरिज्जयति' रक्षक ही जीतता है । मनुष्य विजय पाने के लिए हिंसा करता है, मारकाट करता है, किन्तु उससे उसे अक्षय विजय आज तक नहीं मिला । इतिहास में उन महापुरुषों के नाम आदर सत्कार से स्मरण किये जाते हैं जिन्होंने प्राणियों की रक्षा की, रक्षा का उपदेश किया । उनके नाम लोगों की जिह्वा और हृदय में रहते हैं । मारकाट करने वालों के नाम इतिहास के पन्नों में भले ही अंकित हों, किन्तु लोगों की दिल की दीवाल पर उन्हें कोई न लिख सका । संसार कसाई का आदर नहीं करता, वरन् उस भक्त का आदर करता है जो प्रातः घर से निकल कर मूक प्राणियों को अन्न देने जाता है ।

हिंसा से महत्त्व नहीं मिलता । तुम 'दक्षता महे' महत्त्व के लिये उत्साह करो ।

तुम अपने उत्साह को मारकाट में व्यय न करो, वरन् उस उत्साह के द्वारा महत्त्व प्राप्त करो ।

सामान्य संसार शरीर को ही सब कुछ समझता है । शरीर के सुख देने वाले उपकरणों में धन प्रधान है अतः "कृणुध्वं राय आतुजे" धन और सर्वविध बल की प्राप्ति के लिये उद्योग करो । उद्योगेनैव सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथैः

उद्योग से ही कार्य सिद्ध होते हैं न कि केवल मनोरथों से । आज तक मनोरथ-लड्डुओं से किसी का पेट भरना तो दूर रहा जीभ भी मीठी नहीं हुई । अतः उद्योग करो । उद्योग का फल धन और बल होना चाहिये, उसका परिणाम महत्त्व होना चाहिये । वह लोक रक्षा से प्राप्त होगा । अर्थात् अपने धन, तन को जनरंजन में लगा दो । तरणिरित्सिषासति वाजं पुरन्ध्यायुजा (ऋ० ७। ३२।२०)

रक्षक ही विशाल बुद्धियोग के कारण दान और बल का दान करना चाहता है । उसे ज्ञात है कि दान से इनका नाश नहीं होता । अतः तरणि जहाँ विजय प्राप्त करता है, वहीं साथ ही 'क्षेति पुष्यति च' रहता और फलता फूलता भी वहीं है । विजय के साथ समृद्धि' फलना फूलना तो आनुषङ्गिक है । हिंसा को निन्दित मानकर वेद कहता है 'न देवा कवत्नवे' देव कुत्सित आचार व्यवहार के लिये नहीं ।

अर्थात् हिंसादि कुकर्म करने वाले को दैवी सम्पत्ति नहीं मिल सकती ।

(स्वाध्याय सन्दोह से)

सम्पादकीयम् —

सत्याग्रह

पाठकवृन्द ! गत मास मैंने निवेदन किया था कि हिन्दी रक्षा-समिति सद्भावना यात्रा द्वारा पंजाब में राष्ट्रभाषा हिन्दी को उचित स्थान दिलाना चाहती है, किन्तु सद्भावना सज्जनों के साथ होती है, यहाँ तो सत्याग्रह की आवश्यकता है । हुआ भी यही, जब स्वामी रामेश्वरानन्द जी के द्वितीय जत्थे पर कैरों सरकार ने घोलपोष गुण्डों द्वारा अमानुसिक अत्याचार करवाया तब उसको देख और सुनकर कौन सहृदय व्यक्ति होगा, जिसका चित्त विक्षुब्ध न हुआ होगा ? "यस्मिन् यथा वर्तते योमनुष्यस्तस्मिन् तथा वर्तितव्यं स धर्मः" के अनुसार सद्भावना यात्रा के प्रथम सर्वाधिकारी स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने सद्भावना-यात्रा की समाप्ति और सत्याग्रह आरम्भ करने की घोषणा कर दी ।

अब घोषणा के उपरान्त सत्याग्रह का घण्टा बज चुका है हमारे अग्रणी का नेता स्वामी आत्मानन्द जी ने हम सभी आर्यों एवं हिन्दी-प्रेमियों सत्याग्रह की रणभूमि में आह्वान किया है । तन मन धन से अपने नेता के आदेश पर सर्वस्व बलिदान करना हमारा प्रत्येक का कर्तव्य है। अब पीछे हटना, अथवा प्रारम्भ किये हुए शुभ कर्मों को पूरा न करना अनार्यत्व का परिचायक होगा । क्योंकि प्रारम्भ किये हुए शुभ कार्यों को पूरा न करना आर्यों अथवा श्रेष्ठ जनों का काम नहीं । सन् १९३८ में निजाम के अत्याचारों के विरोध में आर्यों ने हैदराबाद में सत्याग्रह किया था और तब तक पीछे न हटे जब तक पूर्ण सफलता न मिली । सैकड़ों बलिदान देकर भी अपनी परम्परा आर्यों ने बनाये रखी । इसी प्रकार सिन्ध हैदराबाद में भी सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास पर लगाये गये प्रतिबन्ध को हटवाने के लिये आर्यों ने सत्याग्रह किया और सफलता प्राप्त की । हमारे इतिहास में ऐसा दृष्टान्त ही नहीं मिलता कि कभी आर्य पुरुषों ने बढ़ाये हुए पांव को पीछे लौटाया हो । भर्तृहरि जी लिखते हैं—

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः ।
विघ्नैः सहस्रगुणितैरपि हन्यमानाः
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥

नीच, भीरू, अधम अर्थात् जो हिजड़े होते हैं वे मार्ग में आने वाले विघ्नों से भयभीत होकर किसी शुभ कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते । ऐसे व्यक्ति तो सदा ही दूसरों के दास बने रहते हैं । और जो मध्यम कोटि के व्यक्ति होते हैं वे शुभ कार्यों का श्री गणेश तो कर देते हैं किन्तु आपत्तियों से घबराकर कार्य को अधूरा ही छोड़ बैठते हैं । किन्तु 'उत्तम-जन' अर्थात् आर्य प्रारम्भ किए कार्य को, चाहे हजारों विघ्न-बाधायें आयें, लाखों यातनायें सहन करनी पड़ें, अधूरा कभी नहीं छोड़ते, पूरा अवश्य ही करते हैं । प्रारम्भ किये कार्य को प्राणार्पण से भी पूर्ण करना उनकी एक मात्र धारणा होती है । 'कार्यं वा साधयेयं, देहं वा पातयेयम्" का सिद्धान्त उनके प्रत्येक रक्तकण में विद्यमान् रहता है । वे आपत्तियों से घबराना जानते ही नहीं । जैसे अग्नि की भट्टी में तपाने से सुवर्ण और अधिक कान्तिमान् होता है इसी प्रकार आर्य सत्याग्रही भी जितने तपाये जायेंगे उतने ही अधिक चमकेंगे । कष्ट और अत्याचारों से घबराकर रुकने वाले नहीं । देखते हैं कि सरकार कब तक मोटरों में भर-भर छोड़ आने वाला आँख मिचौनी का बच्चों वाला खेल खेलती रहेगी ।

छोटे-छोटे मतभेदों को भुलाकर सभी हिन्दी प्रेमी सज्जनों ने संगठित होकर राष्ट्रभाषा एवं मातृ-

भाषा हिन्दी को उचित स्थान दिलवाने के लिये सीधा सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया है। अब तो सरकार को सूचना दिये बिना ही हजारों और लाखों की संख्या में सत्याग्रही अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए चण्डीगढ़ पहुंचकर पंजाब सरकार के नाक में दम कर देंगे और मुख्यमन्त्री कैरों की नींद हराम कर देंगे तथा यह प्रत्यक्ष सिद्ध कर दिखलायेंगे कि अभी तक पंजाब के हिन्दू वा हिन्दी प्रेमी सप्राण हैं, जीवित हैं। उन को निष्प्राण एवं मुर्दा समझने वाली, अकालियों की कठपुतली, सत्ता के मद से मदमत्त, पक्षपाती अत्याचारी, क्रूर और अन्धी कैरों सरकार की भी दो आँखें हो जायेंगी। संन्यासी साधु महात्माओं का सताना, मारना, पीटना तथा उनका निरादर करना कितना मंहगा पड़ेगा यह तो निकट भविष्य बतलावेगा।

अये आर्यवीरो! हे हिन्दू भाइयो! अत्याचार, क्रूरता और बर्बरता पराकाष्ठा पर पहुंच चुकी है, उठो जागो और सत्याग्रह के लिये प्रस्थान करो, अब समय आ गया है मातृभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी को उचित स्थान दिलवाने का, अब समय है अपने धर्म संस्कृति और प्राचीन गौरव की रक्षा करने का अब समय है आर्यत्व का परिचय देने का, अब सुअवसर है हिन्दुत्व की रक्षा करने का, अब सुन्दर प्रभात है अपने आपको सदा के लिये अमर बनाने का और अधिकार पूर्वक गौरवमय जीवन व्यतीत करने का, अब समय है प्रति पक्षियों के दान्त खट्टे करने का तथा अन्धों को आंख करने का। ऐसे अवसर कभी कभी ईश्वर की कृपा और भाग्य से आया करते हैं और ऐसे स्वर्णावसरों से चूकने वाला व्यक्ति वा समाज सदा के लिये समाप्त हो जाता है। अब अवसर हाथों से निकल गया तो—"गया अवसर फिर हाथ आना नहीं" फिर रोने-धाने से और प्रस्ताव पास कर-कर भेजने से, कागजी घोड़े दौड़ाने से, हवाई किले बनाने से कुछ न बन सकेगा। किसी भी कार्य की सफलता का, किसी भी वस्तु के पनपने का, किसी भी आन्दोलन को सफल बनाने का, अवसर होता है अवसर। अपनी-अपनी हवि को पकाओ, खूब पकाओ, यदि पक गई, आत्म-बलिदान के लिये तैयार है, तो आहुति डाल दो और यदि कुछ कच्चापन और प्रतीत हो तो पुनः पकाओ, फिर तैयारी करो,ध्यान रहे सफलता पकी हुई आहुति से ही होगी। वेद भी यही कहता है—

उत्तिष्ठताव पश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम्।
यदिश्रातो जुहोतन यद्यश्रातो ममत्तन॥
(ऋ० १०।१७९।१)

अभी तक कैरों सरकार हम हिन्दी प्रेमियों को निस्तेज समझे बैठी है। वह समझती है कि यह सौ पचास व्यक्ति ही हैं जो आन्दोलन चला रहे हैं, इनका दमन करदो, आन्दोलन समाप्त हो जायेगा। इसीलिये अन्धी सरकार अत्याचार करने पर तुली हुई है। मैं स्पष्ट कहता हूँ कि देश का बच्चा-बच्चा मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिए तैयार है, सौ पचास व्यक्तियों के दमन से, उन पर अत्याचार करने से भयङ्कर क्रांति होगी और उस क्रान्ति में अत्याचारी सरकार की समूल समाप्ति होगी, वह दिन भी अब बहुत निकट आ गया है। यदि राज्यधिकारी अपना और देश का भला चाहते हैं तो, समय से पूर्व सचेत हो जायं, आँख और कान खोलकर जनता की उचित माँगों को देखें और सुनें तथा स्वीकार करें।

सत्याग्रहियों को हतोत्साह करने के लिए, उनका दमन करने के लिए सरकार क्या क्या मनमाना अत्याचार कर रही है इसके लिए एक उदाहरण दैनिक वीर अर्जुन की सूचना के रूप में पढ़ें—

"चण्डीगढ़ १८ जून। कल यहां हिन्दी रक्षा समिति के सत्याग्रहियों पर पुलिस के अत्याचार चरम सीमा पर पहुँच गये जब कि घरोंडा गुरुकुल के आचार्य स्वामी रामेश्वरानन्द के नेतृत्व में सचिवालय की ओर जाने वाले ४४ सत्याग्रहियों को पुलिस ने धूप से तपती सड़क पर घसीट कर मुक्कों, घूसों और लातों से पीटा और उन्हें टांगों से खींच-खींचकर चारों ओर से बन्द लारियों में धकेल दिया।

एक सत्याग्रही को पेट पर इतनी चोट लगी कि उसे रक्तवमन हुआ।

सत्याग्रहियों को जिन लारियों में डाला गया उनमें से 'पानी' 'पानी' की आवाजें आ रही थीं। इस पुलिस कार्यवाही में भाग लेने वाले सिपाहियों की संख्या लगभग दो सौ थी। जब शान्ति पूर्ण सत्याग्रहियों के विरुद्ध क्रूरता का चक्कर चल रहा था उस समय कई विधान सभाई भी वहाँ पहुंच गये। एक कांग्रेसी विधान सभाई श्री हंसराज कपूर यह अत्याचार देखकर हाय-हाय कह उठे।"

आज यह दुर्दिन न देखना पड़ता, यदि हमारे नेता आर्यों को सीधा राजनीति में भाग लेने की आज्ञा दे देते। राज्य में बहुत से आर्यसमाजी अधिकारी हैं तथा विधानसभा के सदस्य हैं किन्तु वे कांग्रेसी चोला पहने हुए होने के कारण अपने सिंह स्वरूप में गर्जते हुए भयभीत होते हैं। और सब बीभत्स अत्याचारों को देख रहे है। किन्तु अत्याचार करने वाले से अत्याचार सहन करने वाला अधिक पापी होता है। भले ही प्रत्यक्ष में वर्तमान काल में किन्हीं पूर्वकृत सुकृतों के कारण पाप का फल दिखाई न दे, चाहे उन्नति ही क्यों न प्रतीत हो, किन्तु जब पाप का घड़ा भर जाता है तब समूल नष्ट हो जाता है। मनुस्मृति में लिखा है—

अधर्मेणैधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति॥

अये आर्यवीरो उठो, पाप का भाण्डा फूटना चाहता है, अत्याचारी समूल नष्ट होने वाले हैं उठो, अपने स्वरूप को पहचानो और अपने पूर्वजों की मान-मर्यादा की रक्षा करो। यास्कमुनि ने "आर्य-ईश्वरः पुत्रः" आर्य को ईश्वर का पुत्र बतलाया है और वेद में ईश्वर स्वयं आदेश देता है।

"अहं भूमिमददामार्याय"
(ऋग्वेद मं० ४ सू० २६ मं० २)

मैंने यह भूमि आर्यों को दी है, इसका पालन-पोषण, इस पर शासन करने का अधिकार ईश्वर ने आर्यों को दिया है। यदि कोई अनार्य, असुर, अत्याचारी वा आततायी राज्य करता है तो इसका सीधा-सा अभिप्रायार्थ यह हुआ कि संसार में आर्य नहीं रहे, सच्चा आर्यत्व समाप्त हो गया। अन्यथा वेद के, आदेशानुसार क्या पंजाब और क्या भारत, समस्त भूमण्डल पर आर्यों का अखंड चक्रवर्ती राज्य होना चाहिये, जैसा कि पुराकाल में युधिष्ठिर प्रभृति चक्रवर्ती राजा राज्य करते थे। आर्यों की विद्यमानता में उन पर कोई अनार्य कैसे शासन कर सकता है, और कब तक? सच्चा आर्य गर्भ-दासों की भान्ति कभी दासत्व स्वीकार नहीं कर सकता।

सच्चे आर्यों की परीक्षा

अभी तक ऐसा ही कुछ विधान वा व्यवहार था कि आर्यसमाजी कांग्रेसी बन सकते थे और कांग्रेसी आर्यसमाजी बन सकते थे। इसी के फलस्वरूप बहुत से ऐसे ही राज्यधिकारी हैं जो आर्यसमाजी होते हुए भी कांग्रेस में सम्मिलित हैं। जनसंघी या अन्य कुछ होते हुये भी कांग्रेस में मिले हुए हैं। किन्तु अब कांग्रेस के महामन्त्री श्रीमन्नारायण ने यह घोषणा कर दी है कि "कोई भी संगठित आन्दोलन हिन्दी अथवा पंजाबी के पक्ष में अनावश्यक समस्यायें पैदा करेगा और मन-मुटाव बढ़ायेगा। इसलिये कांग्रेस जनों को हिन्दी रक्षा समिति या पंजाब के हिन्दी आन्दोलन में सहयोग नहीं करना चाहिये।"

इसके अनुसार कोई व्यक्ति कांग्रेसी होते हुए हिन्दी आन्दोलन में भाग नहीं ले सकता। अब देखते हैं कितने सच्चे आर्य हैं और कितने वास्तविक हिन्दी प्रेमी, जो मातृभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिये कांग्रेस से पृथक् होकर हिन्दी आन्दोलन में भाग लेते हैं। जो चमगीदड़ का रूप धारण कर यथावसर उभयत्र स्वार्थ सिद्धि करते थे उन अवसरवादियों की भी परीक्षा हो जायेगी। साथ-साथ त्याग और बलिदान एवं राष्ट्रभाषा और मातृभाषा हिन्दी के प्रति किस की कितनी निष्ठा है इसके परीक्षण का भी अच्छा अवसर है। देखें कौन पहले मैदान में आता है?

सह—सम्पादक

सत्याग्रह

(लेखक—पं० सत्यदेव वासिष्ठ, अध्यक्ष आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल झज्झर)

(लेखक ने सन् १९३८ के हैदराबाद सत्याग्रह के समय निजाम के कारावास में "सत्याग्रह नीति काव्य" की रचना की थी। अभी तक यह शुभ ग्रन्थ अप्रकाशित है। शीघ्र ही प्रकाशित किया जा रहा है। उसी काव्य में से कुछ सुभाषित पाठकों के लाभार्थ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

(—सह सम्पादक)

सत्याग्रह का अधिकारी—

सुकृतीह नरः कश्चिल्लोके सत्याग्रहे क्षमः।

विचलन्ति यतः पापाः, शिश्नोदर-परायणाः ॥ १

किन मनुष्यों को इस दुराराध्य मार्ग की ओर प्रेरित नहीं करना चाहिये—

अशान्त-दुर्दान्त-मनोविकारा,

रुजार्त्त देहा हतसत्यनिष्ठाः।

ये ते न योज्या नृभिराप्तविद्यैः

सत्याग्रहे सत्यजनैरुपास्ये ॥२॥

आर्यपुरुष दुःखातिशय से अपने प्राप्तव्य को नहीं छोड़ते—

नो यान्ति सत्यनिभृते पथिदण्डभीता,

गत्वाऽपि विघ्नविहताः प्रतियन्ति मध्याः।

दण्डैरनेक विधकैरपि हन्यमाना।

गन्तव्यमार्य्यपुरुषा न परित्यजन्ति ॥

यम-नियमों के अभ्यासी आत्मसंयमी जन ही शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित शक्तियों को पराजित करते हैं—

दर्पान्धा भुवि भूरि भूमिपतयः सन्तीह युद्धार्थिनः,

शास्त्रास्त्राणि गवेषयन्त्यनुदिनं

राष्ट्रस्य विध्वस्तये।

किन्त्वाश्चर्यमिदं यदा-

त्मयमिनः, सत्याप्तये स्वायुधं,

निर्धार्य्यैवंविधया यमैश्च

सहिता, युद्धयन्ति कालोचितम् ॥४॥

सत्याग्रही अपना पैर पीछे नहीं उठाता—

प्रपीडितोऽनेक विधैरुपायैः

पदं न पश्चात् कुरुते मनस्वी।

वशीकृतस्यापि वनाधिपस्य

क्षुद्रे न वाञ्छोदयते कदाचित् ॥५॥

कुत्सेयुः कुशलाः स्तुवन्तु

बहु वा, प्राणाः प्रणश्यन्तु वा,

न्यायार्थं समरे प्रदत्तचरणो

धीरो न पश्चाद्व्रजेत्।

निर्दोषं परिषद् व्यवस्यति

तु यं, तं कर्तुमातिष्ठते।

नूनं वारि तरन् यथा मृगपति-

र्यात्येव लभ्यां भुवम् ॥६॥

किराये के मनुष्यों को सत्याग्रह में भाग नहीं लेना चाहिये—

भृतौ निबद्धो नर एति यश्च,

सत्याग्रहं स्वात्मयशोऽस्मिलाषी।

स दूषयत्येव सतां समाजं,

वृत्तिर्धनार्था नियताऽस्ति तस्य ॥७॥

———

हृदय की अग्नि

(ले० — महावीर गुरुकुल झज्जर)

प्रायः मनुष्य अग्नि नाम से सामान्यतया व्यवहृत होने वाली अग्नि को ही समझते हैं जो काष्ठ आदि पदार्थों को जलाने में काम आती है। मेरी भी पहले ऐसी ही धारणा थी। परन्तु इतिहास और अनुभव ने अब मेरे इस विचार को समूल हृदय तल से उखाड़ फैंका है। आज मैं प्रत्यक्ष देखता हूँ कि सामान्य रूप से मानी जाने वाली अग्नि ही अग्नि नहीं है, अपितु एक ऐसी भी अग्नि है जो अन्य पदार्थों को तो दग्ध नहीं कर सकती है। मनुष्य को एड़ी से चोटी तक अवश्य प्रज्वलित कर सकती है। जो दीपक की अर्चिः बन कर तो प्रकाश नहीं दे सकती किन्तु मानव को अवश्य चमका देती है।

पाठकों को इसमें सन्देह करने की आवश्यकता नहीं। यही वह हृदय-अग्नि है जो सामान्य अग्नि से सैंकड़ों गुणा अधिक शक्तिशाली है। यही वह अग्नि थी जो महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी के हृदय में लगी थी, जिसने उन्नति के शिखर पर विहार करने वाले मुगल राज्य के पंखों को जला कर धड़ाम से भूमि पर गिरा दिया। इसी अग्नि ने भारत के वीर क्रान्तिकारियों के हृदय में आश्रय पाकर ब्रिटिश साम्राज्य भस्म अवशेष कर डाला।

आज देश की स्थिति डावांडोल है। लाखों बलिदानों से सींचे गये स्वतन्त्रता-वृक्ष के फलों को स्वार्थी मनुष्य भोले लोगों के हाथ से छीन कर खा रहे हैं। जनता के अधिकारों को धमकियाँ देकर लूट रहे हैं। परन्तु ऐसे टट्टी की आड़ में शिकार खेलने वालों को स्मरण रखना चाहिये कि जिस प्रकार १६ वें लूई के सपत्नीक वध के पश्चात्, फ्राँस के अत्याचारी शासकों के राजनीतिक दल को, वहाँ की जनता के हृदयों में धधकती हुई अग्नि ने अपनी ज्वाला-माला का वाहक बना डाला, वही अवस्था भारतीय शासकों के मुंह की ओर दयनीय दृष्टिपात करने वाली भारतीय जनता के हृदय में अन्याय उत्पन्न अग्नि कर डाले तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं।

भारत सरकार की बात जाने दें, हमारी पंजाब सरकार ने ही कितनी तानाशाही कर रखी है। पंजाब प्रान्त को उसने अनाथ समझ कर दबाना प्रारम्भ कर रखा है। आज से कुछ समय पूर्व बिना ही जनता की सहमति (रजामन्दी) के चार आदमियों ने एक अन्धेरी कोठड़ी में बैठकर सच्चर-फार्मूला की योजना बनाई और उसे पंजाब प्रान्त में लागू करके अपनी नादरशाही का उज्ज्वलन्त उदाहरण उपस्थित किया। वही समय था, जबकि कम से कम पंजाब के सिंह समान विद्यार्थियों को 'हिन्दी भाषा अमर रहे' का नारा लगाते हुये स्कूलों को छोड़ देना चाहिये था। परन्तु अत्यन्त खेद है कि १००० वर्ष की दासता और अंग्रेजी शिक्षा के कारण भारतीय शेर विद्यार्थी आज गधे बन कर बोझ ढोने में लगे हुये हैं। पहिले अंग्रेजों का बोझ ढोया और अब ऐरी गैरी नत्थू खैरी गुरुमुखी जैसी भाषा को पीठ पर लदवा चुके हैं। खेद यहीं पर समाप्त नहीं होता अपितु जब मैं गुरुकुलों के स्वतन्त्र शेर विद्यार्थियों को भी इस विषय में मुनिवृत्ति धारण किये देखता हूँ तो एक लम्बा उष्ण निःश्वास लेकर अपने आपको शान्त करता हूँ।

आज पंजाब प्रान्त में अनेक गुरुकुल हैं, कितनी ही आर्य-कुमार सभायें हैं। परन्तु इस विषय में अभी तक आर्य-कुमार अपने कर्त्तव्य की ओर अग्रसर नहीं हुये हैं। अब भी समय है। आज भी हमारी सरकार ने कई बातों में दुराग्रह मात्र धारण कर रक्खा है। भाषा जैसे प्रश्न को, जो विद्यार्थियों

से घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है, सरकार ने जान-बूझ कर केवल सिक्खों को प्रसन्न रखने के लिये जटिल बना रक्खा है। आर्यकुमारों का कर्त्तव्य है कि अपनी-अपनी सभाओं में, सरकार की इस प्रकार की अन्यायपूर्ण बातों के विरोध में प्रस्ताव पास करके प्रमुख पत्रों में प्रकाशित करवाकर सिंह गर्जना से अपने सिंहत्व का परिचय दें। जिससे उस गर्जना को सुनकर अपने स्वरूप को भूले हुये स्कूलों के विद्यार्थी भी पीठ से भार को फैंक कर शेरों की पंक्ति में आ विराजें। नवयुवक विद्यार्थियों। यह मत सोचो कि अभी हम अल्प शक्ति वाले हैं। स्वदेश भारत तथा जापान जैसे विदेश के दस-दस वर्षीय बालकों का इतिहास हमारे समक्ष है। उन्होंने वे कार्य किये कि जिनको सुनकर बड़े-बड़े वीर भी दांतों तले अंगुली दबा कर रह जाते हैं।

२५ मई को पटियाला में होने वाले पंजाबी महासम्मेलन में पंजाब के मुख्य मन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरो द्वारा दिये गये उस वक्तव्य को पढ़कर मेरे हृदय में चिङ्गारियां छटकने लगी, जिसमें उन्होंने भारतवर्ष के माने हुये संन्यासी नेताओं का, जो हिन्दी रक्षा आन्दोलन चला रहे हैं, उपहास उड़ाते हुये कहा था कि "ये साधु जो एक बार संसार को छोड़ चुके हैं, फिर संसार के झंझटों में क्यों पड़ रहे हैं?

कैरो साहब! क्या आप पिछले इतिहास को भूल गये? यदि गोदावरी नदी के तट पर तपस्या करने वाले, सांसारिक बातों से सर्वथा पृथक् माधोदास नामक साधु को गुरुगोविन्दसिंह यवनों से बदला लेने के लिये क्षात्र धर्म ग्रहण करने को कह सकता है और वह साधु होता हुआ भी धर्म की रक्षार्थ एवं गुरुओं का बदला लेने के लिये 'बन्दा-वैरागी' बन सकता है तो आर्य संन्यासी भी अन्याय और अधर्म को चूर करने के लिये अधर्मियों की छाती पर बैठ सकता है। मन्त्रिन्! यह उपहास तो आपने पहले गुरुगोविन्दसिंह का उड़ाना चाहिये था जिन्होंने एक साधु को क्षात्रवृत्ति धारण करवाने की मूर्खता (आपके के कथनानुसार) की। तत्पश्चात् आपको आर्य संन्यासियों के विषय में यह बात जानने का केवल मात्र अधिकार प्राप्त होता है।

'सद्भावना यात्रा के निमित्त गये हुये दूसरे जत्थे को सरकारी कर्मचारियों ने अपमानित किया तथा पीटा' यह समाचार सुनकर तो हृदय से ज्वालामुखी ही फूट पड़ी। इस विषय में अधिक न लिखता हुआ केवल इतना लिख देना पर्याप्त समझता हूं कि वर्तमान पंजाब सरकार को उसकी यह अखर्ब बर्बरता बड़ी महंगी पड़ेगी।

जिस प्रकार साईमन कमीशन के विरोधक पंजाब केसरी लाला लाजपतराय पर अंग्रेजी सरकार द्वारा किया गया एक एक लाठी चार्ज उसके कफन के लिये खूंटी सिद्ध हुआ उसी प्रकार वर्तमान पंजाब सरकार द्वारा हिन्दी रक्षा आन्दोलकों पर किया हुआ एक-एक प्रहार उनके कफन के लिये एक एक खूंटी सिद्ध होकर रहेगा।

———

(पृष्ठ १२ का शेष)

चलो चण्डीगढ़ की ओर। उठो वीरो! उठो अब प्रतीक्षा का समय नहीं है अत्याचार बहुत सह चुके अब वीर क्षणभर के लिये भी अत्याचार सहन नहीं करेंगे। वीरो! उठो, झूम-झूमकर गाते चलो और और नारे लगाते चलो।

"जिन्दा है आर्यसमाज दुनियाँ को हिला देगें,
पश्चिम का सिरा लेकर पूर्व से मिला देंगे।
हमें देखना है कोई अब कैसे दगा देंगे,
हम बहते हुये पानी में आग लगादेंगे।।"

———

ब्रह्मचारी की मृत्यु पर विजय

[लेखक—कुन्दन लाल शर्मा प्रभाकर ततारपुर खालसा]

आर्यों कुछ याद है कुरुक्षेत्र के मैदान की ।
वृद्ध ब्रह्मचारी पितामह के विजेता बाण की॥

पौने दो सौ वर्ष आयु रक्त में पर जोश था ।
पाँडव दल को वीर योधा कर रहा बेहोश था ॥
अर्जुन ने देखा उधर दृष्टि गई भगवान् की ।॥१॥

युद्ध कौशल देख वृद्ध का वीर सब घबरा उठे ।
हमको बचाओ कृष्णजी अर्जुन भी यूँ चिल्ला उठे ।
कृष्ण ने सोचा तनिक खोली पिटारी ज्ञान की ॥२॥

कहने लगे फिर अर्जुन से यह हैं ब्रह्मचारी पिता ।
जीतना इनसे असम्भव है यह व्रतधारी पिता ।
बोले अर्जुन सोचो कोई योजना कल्याण की ॥३॥

उदार चित्त होते हैं बोले कृष्ण ब्रह्मचारी सदा ।
त्याग कर स्वार्थ रहे हैं ये परोपकारी सदा ।
चिन्ता नहीं करते कभी परमार्थ में निज प्राण की ॥४॥

पूछें उन्हीं से इसलिए चल भेद उनकी हार का ।
देंगे बता हमको तरीका अपने संहार का ।
सोच कर यह बात दोनों ने "नमस्ते" आन की ॥५॥

बोले भीष्म कैसे आए कहो क्या अभिप्राय है ।
कैसे चेहरे पर उदासी दोनों के रही आय है ।
कृष्ण ने सारी कथा फिर इस प्रकार बयान की ॥६॥

घबरा उठे पाँडव सभी लख आपके प्रहार को ।
अब अधिक सह न सकेंगे प्राणनाशक मार को ।
हिम्मत तोड़ी आपने अर्जुन जैसे बलवान् की ॥७॥

पूछना चाहते हैं हम तब मृत्यु का कोई उपाय।
कृपा करके दास जान शीघ्र ही देवो बताय।
लगे बताने भेद भीष्म परवाह न की जान की ॥८॥

पाँडव दल में सुनो कृष्णजी एक शिखण्डी वीर है।
उसके ऊपर ना चले मेरा कभी यह तीर है।
उसको करके सामने कर देना वर्षा बाण की ॥९॥

"धन्य हो ब्रह्मचारी जी तूने कमाल कर दिया।
अपनी मौत बतला कर हमको निहाल कर दिया।"
यह कहकर कृष्ण जा बैठे रथ में जगह रथवान की ॥१०॥

कर शिखण्डी को खड़ा किया युद्ध अर्जुन वीर ने।
छलनी छलनी भीष्म तन किया वीरवर के तीर ने।
शर शय्या पर देह गिरी ब्रह्मचारी विद्वान् की ॥११॥

मृत्यु आई बार बार प्राण हरणार्थ थी।
ब्रह्मचारी के सामने सब शक्तियां हुई व्यर्थ थीं।
ब्रह्मचर्य ने पंख काट बंद थी उड़ान की ॥१२॥

ब्रह्मचारी ने कहा अभी रवि है दक्षिणायन में।
छोड़ूंगा शरीर जब यह जायगा उत्तरायण में।
महीनों उपदेशों से गङ्गा बहाई ज्ञान की ॥१३॥

स्वेच्छा से ब्रह्मचारी फिर अपनी देह छोड़ गए।
इस नश्वर संसार से अपना रिश्ता नाता तोड़ गए।
बढ़ा गए शोभा 'कुन्दन लाल' तेरे गान की ॥१४॥

आर्य्य वीरों उठो

(ले०—ब्र० महादेव गुरुकुल झज्जर)

"उत्तिष्ठत जाग्रत संनह्यध्वम्"

सत्याग्रह का बिगुल बज चुका है। आज आर्यवीरों की परीक्षा का समय आ गया है, परीक्षा, परीक्षा ही नहीं बल्कि अग्नि परीक्षा का समय आ गया है। देखें कौन आर्यवीर इस परीक्षा में उत्तीर्ण होता है? हे आर्यवीरो! समय की मांग है, हिन्दी माता की पुकार है, देवनागरी लिपि का करुणा क्रन्दन है, स्वामी आत्मानन्द जी का आह्वान है, तो क्या आर्यवीरो तुम इस प्रकार की पुकार को नहीं सुनोगे? और क्या अपनी मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी की रक्षा नहीं करोगे?

कौन ऐसा वीर है जो अपनी मातृभाषा की दुर्दशा को देखकर शान्ति का श्वास लेगा? कौन ऐसा वीर है जो अपनी मातृभाषा का अपमान अपने सामने आँखों से देखेगा और सहन करेगा वा अपने माथे पर मातृ द्रोह के कलङ्क का टीका लगवावेगा। यदि हिन्दी को अपनी मातृभाषा समझते हो तो इस की रक्षा के लिए खड़े हो जावो। याद रखना हमारे जगद्गुरु ने कहा है-- अत्याचार के करने से अधिक पापी अत्याचार को सहने वाला होता है। तो क्या आर्यवीरो इस अत्याचार को सहते रहोगे? क्या इस प्रकार पाप में हाथ रंगते रहोगे? क्या तुम अपने होते हुये माता की दुर्दशा को देखते रहोगे? और क्या इस प्रकार अत्याचारी सरकार की नीति को अपनाते रहोगे? कदापि नहीं। कदापि नहीं॥ कदापि नहीं॥।

हे आर्यवीरों! उठो अपनी निद्रा को त्यागो और उठकर शेर के समान गर्जना करो। अपने विरोधियों के दिल को दहला दो। अपनी माता का सच्चा सुपुत्र होने का प्रमाण दो। हे आर्यवीरो! तुम्हारी ललकार से शत्रु इस प्रकार भयभीत हो जायेंगे जिस प्रकार शेर की गर्जना से वन्यजन्तु। वीरो! उठो अपनी शक्ति को पहचानो और वीरता का परिचय दो। तुम्हारा मार्ग सच्चा है, धर्मयुक्त है, इसलिये—"सत्यमेवजयते" के अनुसार वा "यतो धर्मस्ततोजयः" के अनुसार वीरो तुम्हारा विजय अवश्यभावी है। विजय तुम्हारे चरण छूने को तैयार है। परन्तु वीरो! एक बार उठो तो सही और अपनी माँगों से आकाश को गुंजाते हुये चण्डीगढ़ की ओर चलो। पन्तु याद रखना रास्ता कठिन है। जैसे कि कठोपनिषद् में कहा है—

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥ कठ० ३।१४॥ वह मार्ग जिससे चण्डीगढ़ जाना है वह इस प्रकार का कठिन है जिस प्रकार तीक्ष्ण धार वाली तलवार पर चलना। परन्तु आर्यवीरों के आगे क्या कठिन है, वीरों के आगे बड़े-बड़े पर्वत नम जाते हैं, सागर थम जाते हैं, काटों का रास्ता फूलों का बिछौना बन जाता है और कठिन से कठिन कार्य सरल हो जाते हैं।

कैरों सरकार तुम्हें मारे, तंग करे, अत्याचार करे, वा अन्य किसी प्रकार भी कष्ट दे, परन्तु हे वीरो! पीछे पग न रखना, क्योंकि हमने कभी आगे बढ़ाया हुआ पग पीछे रखना नहीं सीखा। तुम जिस ओर भी बढ़ोगे तुम्हारी विजय है। इसमें हमारा इतिहास साक्षी है। भारत माता के बांके वीर हिन्दी के उद्धारक एवं सच्चे प्रेमी महर्षिदयानन्द जी महाराज जिस ओर बढ़े, अत्याचार की भित्ति को धड़ाम से गिरा दिया। इसी प्रकार हमारे पूर्वजों ने निजाम की नादरशाही को नष्ट कर दिया था और अपने धर्म की रक्षा की थी, उसी प्रकार हे वीरो! अबकी बार पंजाब सरकार की नीति बदलने के लिये उठो, एक नहीं, सैंकड़ों नहीं, हजारों नहीं, लाखों और करोड़ों की संख्या में चण्डीगढ़ चलो। और चलते हुये अपने नारों की गुञ्जार से आकाश को गुञ्जा दो शत्रु का दिल हिला दो, बहरों को सुना दो, सोतों को जगा दो, बैठों को खड़ा कर दो, और

(शेष पृष्ठ ६ पर)

चलचित्र और समाज

हरफूलसिंह आर्य कक्षा F. A. गवर्नमेंट कालेज नारनौल (महेन्द्रगढ़)

आज देश में चारों ओर चल चित्र ही चल-चित्र नजर आते हैं। सिनेमाओं की देश में भरमार है। ईश्वर की कृपा से यह शहरों में ही हैं। हर शहर में दो थियेटर अवश्य ही मिलते हैं। आज के युवक तथा युवतियों का चलचित्र मानसिक भोजन है। सिनेमा के बिना इनको चैन नहीं पड़ता।

चलचित्रों का प्रचार दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। यह रोग समाज को घुन की तरह लग रहा है। इसका समाज पर इतना बुरा प्रभाव हुआ है कि इसकी छाप समाज पर पूर्ण रूप से लग गई है। जहाँ भी कहीं जाते हैं तो इनकी ही चर्चा मिलती है। बच्चे क्या, बूढ़े क्या, युवक, युवतियां सभी सिनेमा के गन्दे गाने गाते गलियों में पागलों की भांति अवारा फिरते हैं। खाते-पीते, उठते-बैठते, चलते-फिरते हर समय गन्दे गाने गाते रहते हैं। उनको कोई होश नहीं होता। कई पढ़े लिखे युवक भी इन्हीं गानों को अपने माता-पिता के सामने गाते तनिक भी संकोच नहीं करते। संकोच करे तो कौन करे, माता-पिता भी वही गन्दे गाने गाते हैं।

चलचित्र से चरित्र पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है यह आप जानते ही होंगे। चलचित्रों में क्या दिखाया जाता है इसके कहने में भी शर्म आती है। सिनेमा के पात्र लीजिए। उसमें एक लड़का और एक लड़की होती है, जिसमें वह लड़का उस लड़की के साथ प्रेम करता है और वे दोनों चाहते हैं कि हमारी शादी हो जाय। उनके माता-पिता उन पर बन्धन लगाते हैं परन्तु अन्त में उनकी शादी हो जाती है। यह है सिनेमा की पोल। इसमें कौनसी वेद की बात आ गई, जिसके देखे बिना युवक नहीं रह सकते। चित्र परदे पर आते हैं। उनके शृंगार व गन्दे हावभावों से युवकों पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार दबी हुई कामवासना उखड़ जाती है और कामवासना से ब्रह्मचर्य का नाश होता है। मन को कितना धक्का लगता है। फिर चरित्र का नाश क्यों न होगा। चरित्र को खोने के पश्चात्त जीवन में शेष रह ही क्या जाता है। चरित्र एक अमूल्य वस्तु है जिसका नाश हो जाने से सर्वनाश हो जाता है। जैसा देखते हैं वैसा अवश्य करते हैं। इससे चरित्र का नाश हो जाता है। चरित्र के नाश से युवक स्वास्थ्य को खो बैठते हैं। अन्त में परिणाम वही ढाक के तीन पात होता है। युवकों के पीले मुख, मुरझाये हुए चेहरे इन्हीं चलचित्रों का परिणाम है। प्रति वर्ष २००० मनुष्य तपेदिक के शिकार होते हैं। युवकों की जवानी १६ साल तक रहती है, इसके पश्चात् बुढ़ापा आ जाता है। जिस देश में १०० वर्ष की आयु होती थी उसमें आज २० वर्ष की अवस्था में ही कितने ही युवक मृत्यु का ग्रास बनते हैं। यह प्रभाव है तो किसका ? चलचित्रों का।

एक मजदूर बेचारा सारे दिन परिश्रम करके कमाता है। उसे देखकर दया आती है। परन्तु आप उसको जब थियेटर के पास सिनेमा की टिकट खरीदते देखेंगे तो आपको आश्चर्य होगा कि इतनी कमाई में किस प्रकार गुजारा करेगा। भूखा न मरना वा कपड़े न पहनना आसान है पर चलचित्र का त्याग करना युवक के लिए आसान नहीं। लेकिन अपनी आदत से लाचार है। प्रायः स्कूल एवं कालेज के लड़कों में यह आदत बहुत ज्यादा होती है। ये विद्यार्थी तो चलचित्रों को अपने जीवन का अंग ही समझते हैं और जो कोई विद्यार्थी नहीं देखता उसे तो निपट मूर्ख बतलाते हैं। कहते हैं कि चलचित्रों से (Knowledge) साधारण ज्ञान बढ़ता है। माता-पिता की सारी कमाई सिनेमा देखने में नष्ट करते हैं। झूठ बोल कर माता-पिता से पैसे प्राप्त करते हैं और जब पैसा किसी तरह भी प्राप्त नहीं होता तो चोरी,

(शेष पृष्ठ २० पर)

"जाग ऋषि सन्तान"

[आनन्द बी-टी-सोनीपत]

जाग ऋषि सन्तान, अब तो जाग ऋषि सन्तान।
अपने शुभ्र चरित्रों द्वारा, पाओ जग में मान ॥
जाग...............

झूठी माया में फंसा है, मोह है तेरी जान।
बन्धन सारे छोड़दे, अब तो धर ईश्वर का ध्यान ॥
जाग...............

युद्ध के बादल घिर आये हैं, होगा अब घमशान।
मातृ भूमि पर बलि होने को, होगा अब आह्वान ॥
जाग...............

भाग रही दुनियां प्रगति के, पथ पर ऐ नादान।
सोता है क्यों बेसुध होकर, मत सो चादर तान ॥
जाग...............

आवश्यकता

(हरिचन्द्र 'नाज' सोनीपत)

(१)

चमन के फूल जिस से रंग लेकर फूल बनते हैं।
शहीदों का लहू है इसको पानी कौन कहता है ॥
सताये याद बचपन की जिसे डर हो बुढ़ापे का।
भला ऐसी जवानी को जवानी कौन कहता है ॥

(२)

लहू से सींचना जाने, जो अपने गुलस्तानों को।
चमन को आजकल उन बागवानों की जरूरत है ॥
धर्म की राह पर जानें, जो अपनी वारना जानें।
वतन को आज ऐसे नौ जवानों की जरूरत है ॥

(३)

जरुरत अब नहीं है, दर्द से भरपूर गानों की।
हमें अमनों मोहब्बत के तरानों की जरूरत है ॥
वतनके मानकी खातिर वतनकी आनकी खातिर।
शिवा प्रताप जैसे परवानों की जरूरत है ॥

श्री स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज का स्वहस्तलिखित अतिसंक्षिप्त जीवन वृत्तान्त सन् १९४० तक

माघ शुक्ला पंचमी सम्वत् १९२५ को मेरा जन्म एक श्रीवास्तव कायस्थ कुल में ग्राम इमरा जिला आरा में हुआ था। मेरे पिता जी का नाम "श्रीरामगुलामसिंह" और मेरी पूज्या माता जी का नाम "देवमूर्ति" था। सत्यार्थप्रकाश के बारम्बर पढ़ने के कारण प्रायः सोलह वर्ष की आयु में ही मैं आर्यसामाजिक बन गया। इस समय मैं आरा के हाईस्कूल में एण्ट्रेन्स में पढ़ता था। एण्ट्रेन्स पास करने के बाद मैं एफ० ए० की पुस्तकें पढ़ने लगा, परन्तु कई कारणों से एफ० ए० पास न कर सका।

योग साधन की बातें बतलाने वाले सत्य सुकृत पथ के एक विशेष व्यक्ति श्री कृष्णदयाल जी की कृपा से अपनी १२ वर्ष की आयु से ही मैं योग-साधन में लग गया था। यह साधन भविष्यत् में बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ।

१८९० ई० में आर्यसमाजों का आर्यभाषा का एक मात्र साप्ताहिक पत्र 'आर्यावर्त' का मैं सम्पादक नियत किया गया। यह पत्र आर्यसमाज कलकत्ता के कतिपय सभ्यों की देख-रेख में भागलपुर के प्रसिद्ध आर्य दानवीर रायबहादुर बाबू तेजोनारायणसिंह जी तथा बाबू महावीरप्रसाद जी की सहायता से प्रायः १८८७ ई० से प्रकाशित होता था। १८९२ के मध्य में आर्यावर्त प्रेस कलकत्ता से दानापुर (बिहार) आ गया और यहीं से आर्यावर्त पत्र प्रकाशित होने लगा। इस समय मैं आर्यावर्त के एडीटर तथा मैनेजर दोनों पदों का कार्य करता था।

इस प्रकार १८९७ ई० के अन्त तक मैं आर्यावर्त के सम्पादक पद तथा मैनेजर पद पर और कभी इस पत्र के संयुक्त सम्पादक और मैनेजर पदों पर कार्य करता रहा। मेरा उस समय का *कार्य कैसा था इस बात को या तो आर्यावर्त की फाइल अथवा उस समय के विद्वान् बता सकेंगे।*

इन्हीं दिनों हिमालय पर्वत के एक योगी अकस्मात् दानापुर आये। जिनसे आर्यसमाज दानापुर के प्रधान रायबहादुर बाबू जनकधारीलाल तथा मैंने विशेष लाभ उठाया।

प्रशंसित रायबहादुर तेजोनारायणसिंह जी के स्वर्गवास के पश्चात् १८९८ ई० में आर्यावर्त दानापुर से उठकर रांची चला गया और मैं कलकत्ते के आर्यभाषा के सुप्रसिद्ध राजनीतिक साप्ताहिक पत्र 'भारतमित्र' का सम्पादक नियत हुआ। यह पत्र, किसी भी सम्प्रदाय का पोषक नहीं था, केवल राजनीति का प्रचारक था। पत्र के अतिप्राचीन होने के कारण महर्षि दयानन्द के अनेक लेख भी इसमें छपते थे। मैंने कलकत्ते पहुंच कर दैनिक "भारत मित्र" को जन्म दिया और प्रायः एक वर्ष तक इसका सम्पादन करता रहा।

इन्हीं दिनों कलकत्ते के आर्यों तथा वहाँ के पौराणिकों के बीच कुछ वाद-विवाद हुआ। मैं प्रायः प्रति सप्ताह आर्य समाजिक सिद्धान्तों की पुष्टि में व्याख्यान देता रहा। "भारतमित्र" की प्रबन्ध कर्त्री सभा में भी कुछ आन्दोलन हुआ और श्री पं० दीनदयाल जी व्याख्यान वाचस्पति के अनुयायी (नाम स्पष्ट नहीं है) मेरे साथ कार्य करने के लिये आ गये और भारतमित्र पर पौराणिक रङ्ग चढ़ाना चाहा। इस पर मैंने त्याग-पत्र दे दिया।

तदनन्तर प्रायः चार वर्ष तक इटावा तथा रांची स्वाध्याय तथा साधना में तत्पर रहा। इटावा में अग्निष्टोम याग के पूर्व होने वाले वरुण प्रघास तथा चातुर्मास यज्ञों में रोम सहित आटे के मेष-मेषी के हवन तथा मृतक श्राद्ध होने के कारण मेरे शिक्षक

श्री पण्डित भीमसेन जी शर्मा से मेरी बिगड़ गई। इटावा की सभाओं में अवैदिक कृत्यों का मैंने खण्डन किया और राँची आकर आर्यावर्त पत्र के अनेक अङ्कों में उक्त यज्ञ सम्बन्धी पौराणिक कृत्यों के विरुद्ध लेख लिखे।

राँची में मुझे सूचना मिली कि महर्षि दयानन्द संस्थापित वैदिक यन्त्रालय अजमेर का कार्य ढीला हो रहा है। मेरे माननीय मित्र रायबहादुर श्री बाबू रामविलास जी शारदा प्रधान प्रबन्ध कर्तृ सभा वैदिक यन्त्रालय ने आग्रह पूर्वक मुझे अजमेर बुलाया और १-८-१९०३ ई० को मैंने वैदिक यन्त्रालय के मैनेजर पद का चार्ज ले लिया।

थोड़े ही दिनों के अन्वेषण के बाद मुझे मालूम हुआ कि यन्त्रालय के संशोधक श्री पं० बद्रीदत्त जी तथा श्री पं० रामजीलाल ने महर्षि दयानन्द रचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की संस्कृत में प्रायः एक सौ नौ १०९ स्थानों पर परिवर्तन कर दिया है। मैंने उक्त पण्डितों से इस परिवर्तन का कारण पूछा तो उन्होंने बतलाया कि महर्षि को पूर्ण वैय्याकरण सिद्ध करने के लिये अशुद्ध संस्कृत को हमने शुद्ध कर दिया है।

श्री पण्डित शिवशङ्कर शर्मा काव्यतीर्थ को छान्दोग्योपनिषद् का भाष्य लिखने के लिये मैंने कुछ दिन पूर्व अजमेर बुला लिया था। अपने समक्ष उक्त संशोधकों तथा श्री पं० शिवशङ्कर जी को बुलाकर उक्त परिवर्तनों के विषय में विचार किया और उक्त तीनों पण्डितों से परिवर्तन के विषय में लिखित सम्मति भी प्राप्त की। पं० शिवशङ्कर जी सभी परिवर्तनों को अनुचित बतलाते थे परन्तु पं० बद्रीदत्त जी तथा पं० रामजीलाल जी कुछ परिवर्तनों को अनुचित और कुछ को उचित बतलाते रहे।

यह तो मैंने समझ लिया कि पं० बद्रीदत्त जी तथा पं० रामजीलाल जी ने बुरी भावना से नहीं प्रत्युत अपनी कम समझी के कारण उक्त परिवर्तन किये। तो भी गम्भीर अपराध होने के कारण मैंने दोनों संशोधकों से प्रार्थना की कि वे कहीं अन्यत्र नौकरी ढूंढ लें और वे चले गये। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के परिवर्तित भागों को जो उक्त संशोधकों द्वारा छपवाये गये थे रद्दी करके उनके स्थान में महर्षि के पूर्व छपे ग्रन्थ के अनुसार शुद्ध फार्म छपवा दिये और तब सम्पूर्ण ग्रन्थ मुद्रित हो प्रकाशित हुआ।

ता० ३१-१-७ तक अर्थात् प्रायः साढ़े तीन वर्ष तक मैंने वैदिक यन्त्रालय में काम किया। श्रीमती परोपकारिणी सभा की ओर से नियुक्त इस यन्त्रालय के सुपरिण्टेंडेंट (अधिष्ठाता) श्री महात्मा मुंशीराम जी थे। वह अपने साप्ताहिक पत्र "सद्धर्म प्रचारक" को उर्दू के बदले आर्यभाषा में निकालने की इच्छा प्रकट कर चुके थे, और इस कार्य में वह मेरा सहयोग चाहते थे। इस कारण उक्त पत्र के सम्पादन के लिये मैं अजमेर से जालन्धर चला गया। और १ मार्च १९०७ से सद्धर्म प्रचारक को आर्यभाषा में निकालने लगा। पत्र के सम्पादक पद को प्रशंसित महात्मा जी ने और सहायक सम्पादक पद को मैंने स्वीकार किया।

"सद्धर्म प्रचारक" थोड़े ही दिनों में जालन्धर से गुरुकुल कांगड़ी चला गया और मैं भी साथ ही कांगड़ी पहुँचा। ठीक तो याद नहीं परन्तु प्रायः चार वा पांच वर्ष तक "सद्धर्म प्रचारक" तथा गुरुकुल कांगड़ी के साथ मेरा सम्बन्ध रहा। गुरुकुल कांगड़ी में रहते हुए गुरुकुल की धर्म शिक्षा तथा "भारतवर्ष का इतिहास" निर्माणादि कार्यों में भी मैं योग देता रहा।

जिन दिनों श्रीमान् लाला लाजपतराय जी को देश निर्वासन का दण्ड मिला तब हरियाणा प्रान्त पर और विशेषतया रोहतक जिले के आर्यों पर सरकारी कर्मचारियों का कोप प्रारम्भ हुआ। रोहतक जिले के प्रमुख आर्यों का एक डेपूटेशन (समूह) महात्मा जी के पास पहुँचा, जिसने अपने सारे दुखड़े सुनाये। उन दिनों गोरे हाकिमों का आतंक छाया

हुआ था और प्रायः ग्रामीणों से पूछा जाता था कि "वेल, तुम आर्या है ?"

निश्चित हुआ कि मैं रोहतक जिले में प्राचारार्थ जाऊं। तदनुसार मैं रोहतक पहुंचा। सब कठिनाइयों का सामना करता हुआ प्रचार करने लगा। प्रायः तीन या चार वर्ष तक गुरुकुल कांगड़ी की ओर से और प्रायः १२ वर्ष तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से मैंने प्रचार किया। इस काल में अपने प्यारे सहायक उपदेशकों भजनिकों के योग से कम से कम दश हजार नए आर्यसामाजिक बनाये। प्रायः बारह हजार रुपये गुरुकुल कांगड़ी को, दो हजार रुपये गुरुकुल भैंसवाल को और कई हजार रुपये गुरुकुल झज्जर को भिजवाये। साथ ही लाहौर के वेद प्रचार कोष को भी प्रायः पच्चीस हजार रुपये भिजवाये होंगे।

गुरुकुल कांगड़ी तथा आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारीगण मेरी जो सहायतायें करते रहे, उन का मैं सदा आभारी रहूँगा।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज का जन्म-शताब्दी महोत्सव जो मथुरा में हुआ था, उस समय फाल्गुन बदी नवमी संवत् १९८१ वि०, तदनुसार १७ फरवरी १९२५ ई० को पूज्यपाद श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज से मैंने संन्यास धारण किया। तदन्तर कई वर्षों तक गुरुकुल भैंसवाल तथा गुरुकुल झज्जर के मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य पद पर कार्य किया और साथ ही वैदिक धर्म प्रचार के लिए यत्न करता रहा। मैंने जो-जो सहायतायें चाहीं, उन सबको ही उक्त महानुभावों ने मुझे प्रदान किया।

वैदिक धर्म का प्रचार कर रहा हूं। मेरे संन्यास काल के कार्यों में से एक अवागढ़ नरेश का आर्य धर्म की ओर आकर्षित होना है। जो प्रायः दो वर्षों से गुरुकुल वृन्दावन को तीन हजार रुपये मासिक दे रहे हैं और अपने ज्येष्ठ पुत्र के विवाह के समय सात लाख रुपये दान करके स्थायी डिपाजिट के रूप में इलाहाबाद बैंक में जमा कर दिया है।

ब्रह्मानन्द सरस्वती
१२-१-१९४० ई०

नोट--स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज का देहावसान सन् १९४८ में हुआ था। यह संक्षिप्त स्वहस्त-लिखित जीवनवृत्त सन् १९४० तक का प्रकाशित किया गया है। विस्तृत एवं पूर्ण जीवनवृत्तान्त पुनः कदाचित् पाठकों की सेवा में उपस्थित किया जाएगा। स्वामी जी के जीवन सम्बन्धी जो भी सामग्री किसी पाठक महानुभाव के पास हो या ज्ञात हो वह हमें अवश्य ही सूचित करने की कृपा करें।

—सहसम्पादक

प्राचीन कला का अद्भुत चमत्कार

गुरुकुल झज्जर के प्रचारक ब्र० हरिशरण जी बाइबिलाचार्य तीन वर्ष से दक्षिण भारत में इसाईयों के विरुद्ध वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। इन्होंने शास्त्रार्थ द्वारा अनेक बार बड़े-बड़े इसाई पादरियों को पराजित किया है। इनका एक ट्रक्ट "बाइबिल के पैगम्बर चोर" नाम का हैदराबाद (आन्ध्र) में जब्त भी हो गया था। आप अब भी उत्साह से प्रचार कार्य में संलग्न हैं। आपने रेणापुर से लिखा है—

"रेणापुर में एक प्राचीन बावड़ी है जिसमें बुद्ध की मूर्तियां हैं। वहाँ एक बहुत बड़ा पुराना दुर्ग (किला) है। जिसमें एक दिवार है जिसकी उचाई २८ फीट है और चौड़ाई २० फीट। दिवार की नींव चौकान में २५ फीट चौड़ी है। दिवार ईंट और चूने से बनाई गई है। इसके ऊपर चढ़कर मनुष्य जब हिलाता है तो नींव तक हिलती है। कुछ पाखण्डी इसको देवी की माया बतलाते हैं। किन्तु इस प्राचीन कला का अनुसन्धान करना चाहिये। सरकार इस ओर ध्यान दे।"

भवदीय—
हरिशरण आर्य

गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली

(सत्यव्रत भाष्याचार्य साहित्यरत्न हैदराबाद)

आरम्भ से ही अन्य विषयों की अपेक्षा शिक्षा-सम्बन्धी लेखों, भाषणों एवं ग्रन्थों की ओर मेरी अधिक रुचि रही। तभी से मैं प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा को समझने की ओर चेष्टा करता रहा और अब भी कर रहा हूं। अब तक इस तथ्य पर पहुंचा हूँ कि सन् ५७ में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए किए गए उद्योगों के बाद हमारे देश को पराधीनता की बेड़ियों से बुरी तरह जकड़ा जा रहा था। विदेशी शासकों ने भारत को यहीं के धन, जन से स्वायत्त किया और अपने शासन को सुदृढ़ बनाने के लिए यहीं की धन, जन शक्ति काम में लाना चाहते थे। भारत में अंग्रेजी राज्य की नींव को दृढ़ करने का श्रेय लार्ड मैकाले को है। मैकाले ने भारत की प्रकृति का विचार करके यह निश्चय किया कि यदि भारत की शिक्षा प्रणाली में आमूल चूल परिवर्तन कर दिया जाए तो निश्चय ही हम भारत को शीघ्र ही अपना दास बना सकेंगे।

अंग्रेज जहाँ भी गए वहाँ इन्होंने शिक्षा के प्रचार का कोई विशेष यत्न नहीं किया। किन्तु भारत में विशेष विधान द्वारा शिक्षा प्रचार का यत्न किया। इसका एक विशेष कारण था। अंग्रेज प्रथम भारत में आये तो उस समय के आर्य इनसे अधिक सभ्य एवं सुशिक्षित थे। आर्यों को अपनी शिक्षा, सभ्यता तथा संस्कृति का अभिमान था।

किसी जाति को नष्ट करने का सबसे सरल साधन उसकी परम्परा को विस्मृत कराना है। अंग्रेजों ने इस तत्त्व को समक्ष रखकर मैकाले ने विधान द्वारा प्राचीन शिक्षा का नाश कर पाश्चात्य शिक्षा का राज्य द्वारा प्रचार आरम्भ किया। इससे इनके दो प्रयोजनों की सिद्धि होती थी, एक तो राज्यकार्य के लिए सस्ते मसीजीवी, (क्लर्क), दूसरे दास मनोवृत्ति के काले अंग्रेज अनायास उत्पन्न हो सकते थे।

मैकाले को अपनी योजना पर पूर्ण विश्वास था। उसने अपने पिता को १८३६ में एक पत्र में यह लिखा था कि—

"आज मैंने ऐसा कार्य किया है कि भारतवासियों का वर्ण, रंग तो न बदलेगा, किंतु भाव से भारतीय न होकर अंग्रेज हो जायेंगे।"

यह लेख मैकाले की दूरदर्शिता एवं कूटनीति का द्योतक है। भारतीयों में अपनी संस्कृति, साहित्य, इतिहास तथा कलाकौशल एवं विज्ञान के प्रति आकर्षण न रहे और सुदूर भविष्य में भी स्वदेशाभिमान की भावना का जागना संभव न रहे, इस दूरदर्शिता पूर्ण नीति से यह पत्र लिखा गया है। मैकाले से पहले इस देश में आने वाले अंग्रेज इस देश की सभ्यता, वैदिक साहित्य, प्राचीन इतिहास, प्राकृतिक वैभव एवं ऐश्वर्य पर लट्टू होते थे। उनके लेख और ग्रन्थ भारत की प्रशंसा से भरे हुए हैं, वे इस देश की प्रशंसा के गीत गाते नहीं थकते थे। मैकाले सरीखे कूटनीतिज्ञों ने यह अनुभव किया कि उनकी प्रशंसा से उनमें स्वाभिमानता की चिनगारी जाग उठेगी। इसलिए उन्होंने भारत के धर्म, साहित्य, संस्कृति, कला और विज्ञान की भरपेट निन्दा करनी प्रारम्भ की। वेदों को गडरियों के गीत कहने लगे। पुराणों की गप्पों को लेकर धर्म की खिल्ली उड़ाई जाने लगी। सारांश यह है कि सब संसार को सभ्यता एवं संस्कृति

का पाठ पढ़ाने वाले भारत को सबसे पिछड़ा हुआ बनाने का प्रयत्न होने लगा।

मानना चाहिए कि मैकाले की उपयुक्त भविष्य-वाणी अक्षरशः सत्य हुई। मैकाले द्वारा प्रचारित, राममोहनराय द्वारा समर्थित पाश्चात्य शिक्षा ने भारतीयता का सर्वथा लोप कर दिया।

इस पाश्चात्य शिक्षा का सबसे कटुफल यह हुआ कि उस समय के नवशिक्षितों में हीन भावना उत्पन्न हो गई उन्हें अपना धर्म, अपनी सभ्यता, अपनी संस्कृति आदि सभी तुच्छ प्रतीत होने लगे। इसी बलबूते पर ईसाई धर्म के ठेकेदारों ने यह भी कहने का साहस किया कि अमुक तिथि तक भारतवर्ष क्रिष्टान बन जायेगा।

इस पश्चिमीय आँधी को रोकने का प्रयत्न करना, नहीं रोकने का विचार करना भारतीयों के लिये स्वप्न बन गया था। पानी की तीव्रधारा की तरह, समुद्रीय ज्वारभाटे के समान मैकाले की योजनायें भारत को दबा रहीं थीं। इसाई पादरियों एवं मैकाले की कल्पनायें फूलने फलने लगीं।

भारत के लिए यह अत्यन्त संकट का समय था। भारतवर्ष में मानवता दासता के पैरों तले कुचली जा रही थी, स्वतन्त्र मस्तिष्क दासत्व की खूँटी पर लटकाये जा रहे थे, सदाचार वा सभ्यता पाश्चात्य साम्राज्यवाद के आखेट बन चुके थे, फूट, द्वेष एवं ईर्ष्या की प्रबल और प्रचण्ड अग्नि में भारयीय धन धान्य की पूर्णाहुति दी जा चुकी थी, इसाइयत तथा साम्राज्य लिप्सा के कुठाराघात से समाज विशृङ्खल हो रहा था।

भारतीय साहित्य एवं कला-कौशल पर वज्रपात हो रहा था। भारतीय स्वाभिमानता को जगाने वाली सम्पदा की होली हो रही थी वैदिक धर्म की चिता चुनी जा चुकी थी। निराशापूर्ण भविष्य की काली-काली घनघोर घटायें उमड़ती प्रतीत हो रहीं थीं। ऐसे भयानक आपत्तिकाल में चारों ओर से छाये संकटों की मेघावलि के बीच कराहती और अरण्य-रोदन करती हुई भारत माता की पुकार सुनकर आनन्दकन्द लंगोटबन्द स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अन्धकूप की दलदल में फँसी इस जाति के उद्धारार्थ कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया और मेषरूप धृत आर्य जाति को दर्पण में पूर्वजों का सिंह स्वरूप दिखला कर पुनः सिंह बनाने का उपाय सामने रक्खा। और उनके पूर्त्यर्थ आर्य समाज को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।

इसी उद्देश्य को लेकर अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। किन्तु अत्यन्त खेद का विषय है कि आज वहाँ भी वेद-वेदाङ्गों का अध्ययन बन्द हो गया है, अमरशहीद श्रद्धानन्द जी की आशाओं पर पानी फिर गया। और भी अनेक संस्थायें आर्यसमाज में वर्तमान हैं जिनमें वही अनार्ष शिक्षा पढ़ाई जाती हैं।

आज अनार्ष शिशा को स्कूल एवम् नामधारी गुरुकुलों में पढ़ने वाले किस प्रकार इधर उधर मारे मारे फिरते हैं ? छः सात वर्ष के हुए, माता पिता ने पढ़ने भेजा। दस वर्ष मेहनत करके मैट्रिक पास की। चार वर्ष दिमाग खाली करके बी० ए० की डिग्री प्राप्त की। डिग्री प्राप्त कर लेने पर भी वही प्रश्न होता है कि रोटी कैसे मिलेगी ? माता पिता ने अपनी सारी मेहनत की कमाई लड़के को देकर, स्वयं अपने पेट पर पत्थर बांध कर सोयें, पर उसे व्यय पूरा दिया, हजारों रुपये व्यय किये, शिर पर हो गया, जब पढ़ लिखकर बाहर निकला, माता पिता को आशा हुई की सारी दरिद्रता दूर हो जायेगी उस समय क्या ? अब नौकरी को स्थान चाहिये। किसी गरीब की नौकरी हटाकर उल्लू सीधा किया जाये, तब कहीं नौकरी लगे। और वहाँ भी उसे बी० ए० एस० ए० का बड़ा भारी पुरस्कार क्या मिले ? अफसरों की दिन रात गालियाँ और आत्मा के विरुद्ध काम। कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने क्या ही ठीक कहा है :—

लिखते रहो जो सिर झुका सुन अफसरों की गालियां।
तो दे सकेंगी रात को दो रोटियां घरवालियां॥

आज हजारों भारतीय इन पुरस्कारों से लदे हुए हैं। उनसे जाकर पूछिये। कैसे कैसे झूठ कैसी कैसी मक्कारियां उनको नौकरी के लिये करनी पड़ती हैं। अपने अधिकारियों को प्रसन्न करने लिये कैसे कैसे स्वांग रचने की जरूरत पड़ती है। और तमाशा देखिये—नगर में हमारे नेता आते हैं, उनके भाषणादि होते हैं, प्रत्येक नागरिक जाता है किन्तु वह नौकरी का पट्टा पहिनने वाला बाबू मन मसोस कर रह जाता है। वह अपने देश हितैषियों के भाषण भी नहीं सुन सकता। नौकरी क्या मिली मानो अपना शरीर ही बेच दिया, आत्मा तो बिक गई। वाह री शिक्षा! वाह रे तेरे कड़ुवे फल! ऐसी शिक्षा से तो मूर्ख रहना अच्छा है, सहस्र गुणा अच्छा है। क्या शिक्षा के ये अर्थ हैं कि अपनी स्वतन्त्रता को बेच दिया जाये। कौन समझदार इस शिक्षा को शिक्षा कह सकता है। यह शिक्षा नहीं यह तो मकड़ी का ताना बाना है।

अपने देश की ममता को छोड़ प्यारे देशबन्धुओं से पशुत्व का व्यवहार कर प्यारी मातृभाषा से मुँह मोड़ना और अपने देश के वेश से घृणा कर अपने पूर्वजों को कुदृष्टि से देखना, ये ही आधुनिक शिक्षा के उद्देश्य हैं। हम लाख बार ऐसी शिक्षा को धिक्कारते हैं और कोसों दूर से ही नमस्कार करते हैं।

महर्षि दयानन्द के उत्तराधिकारी आर्यसमाज के अधिकारियों का ध्यान इस ओर पता नहीं क्यों नहीं है।

आज आर्यसमाज स्कूलों पर हजारों रुपया व्यय कर सकता है लेकिन स्वामी दयानन्द जी की ही बताई हुई नहीं, अपितु प्राचीन आर्यजाति के उत्थानार्थ ऋषि-प्रदर्शित शिक्षा पर १ रुपया ही नहीं पैसा भी व्यय करना निष्फल समझता है। आर्यसमाज के कर्णाधारो! अपने आचार्य दयानन्द के इस मार्मिक एवं हृदयोद्भुत सत्यार्थ में निहित अमरवाणी को हृदयङ्गम करके अपने तन, मन, धन को उसके प्रचार में न्यौछावर कर दो, अन्यथा तुमको विश्वासघात रूप पाप के प्रायश्चित्त रूप, राजर्षि श्रद्धानन्दादि आदि शतशः वीरों के रक्त से सिंचित इस आर्य समाज के पौधे का मूलोन्मूलन अपने धनमदान्धतावृत नेत्रों से निहारना होगा।

———

(पृष्ठ १३ का शेष)

डाके एवं हर प्रकार की बेईमानी से सिनेमा के लिए प्राप्त करते हैं। यदि वे नालिज ही बढ़ावें तो समाज में प्रति दिन सुनें, देखें और पढ़ें कि क्या होता है। जो नई शैतानियाँ सीखते हैं वह चलचित्रों ही से। जो समय सन्ध्या, हवन वा व्यायाम में लगना था वह चलचित्रों में व्यतीत होता है। नई शैतानियां दिन प्रति दिन सीख कर समाज में उसका प्रचार करते हैं। बच्चों को भी उनके माता-पिता यह आदत डाल देते हैं। आजकल तो कई आर्य बन्धु भी चलचित्र देखने लग गए और चलचित्रों की प्रशंसा करते-करते नहीं थकते। उनका कथन है कि सिनेमा शिक्षाप्रद बातें सिखाता है, सिनेमा से एक मनुष्य अच्छे गुण ग्रहण कर सकता है। और चलचित्र हमें बताता है कि हमारे समाज में क्या-क्या बुराईयाँ हैं। परन्तु क्या हम समाज की बुराइयाँ प्रतिदिन नहीं देखते हैं? क्या हमें नहीं मालूम कि आज का समाज कैसा है? एक आर्य बन्धु ने बतलाया कि सिनेमा से हमारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। हम तो बुराइयों को ग्रहण नहीं करते। परन्तु चींटियों के आगे नमक में चीनी मिलाकर डाली जाय तो चींटियां चीनी को चुग लेंगी और नमक छोड़ देंगी। इस प्रकार अवश्य बुरा प्रभाव पड़ता है। जो मनुष्य पहले सिनेमा देखने वालों को मूर्ख बतलाते थे, वे अब स्वयं उन्हें बुद्धिमान् बताने लग गए। बात यह हुई कि अब वे मूर्ख हो गए। इस प्रकार सिनेमा घातक वस्तु है। मैंने इसकी बुराइयां भरपेट कीं। उद्धार चाहने वाले इसका त्याग करें। आशा है इसका प्रभाव युवकों पर अवश्य पड़ेगा। आर्यजन इसके विरुद्ध प्रचार करें और यह चलचित्रों की बीमारी दूर करें, जिससे देश उन्नति के मार्ग पर पहुँचे।

संस्था समाचार

हरियाणा प्रान्तीय आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

आयुर्वेद महाविद्यालय का द्वितीय वर्ष का अध्ययन चालू है और प्रथम वर्ष का प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेशार्थी छात्र प्रवेशनियम नीचे लिखे पते से मंगवायें। विशेष परिचय के लिये लिखें, अथवा स्वयं आकर कार्यालय से परिचय प्राप्त करें।

निवेदक—
पं० सत्यदेव वासिष्ठ भिषककेसरी
अध्यक्ष।

———

परीक्षा-परिणाम

गुरुकुल झज्जर के दो ब्रह्मचारियों ने आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के आधीनस्थ दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर (अम्बाला) की "सिद्धान्त शिरोमणि" के प्रथम खण्ड की परीक्षा दी। परीक्षा परिणाम इस प्रकार रहा।

पं० क्रमाङ्क	नाम	वेद	व्याकरण	वेदाङ्ग	दर्शन	उपनिषद्	सिद्धान्त	साहित्य	आयुर्वेद	प्रस्ताव	योग
१	वेदव्रत	७५	७०	५०	७९	६५	६०	५९	७०	८९	६१७/९००
२	महावीर	८०	७२	५६	८१	५८	४४	८६	८२	९५	६५५/९००

परीक्षा परिणाम अत्युत्तम रहा। दोनों ही छात्र प्रथम श्रेणी में उतीर्ण हुए।

निवेदक—
मुख्याधिठाता गुरुकुल झज्जर।

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला (रजि०) गुरुकुल झज्जर की

* अचूक औषधियाँ *

१–नेत्र ज्योति सुर्मा

लगाइये और नेत्र ज्योति पाइये। इसके लगाने से आँखों के सब रोग जैसे आँख दुखना, खुजली, लाली, जाला फोला, रोहे, कुकरे, पास का कम दीखना (शार्ट साइट) दूर का कम दीखना (लांगसाइट), प्रारम्भिक मोतियाबिन्द आदि दूर हो जाते हैं। आंखों के सब रोगों की रामबाण औषधि है। यही नहीं किन्तु लगातार लगाने से दृष्टि (बीनाई) को तेज तथा आँखों को कमल की तरह साफ स्वच्छ रखता है। बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। प्रतिदिन जिसने भी लगाया उसी ने मुक्तकण्ठ से इस सुर्मे की प्रशंसा की है।

२–नेत्रामृत

लाली, कड़क, धुन्ध, ढलकवा, गरदोगुब्बार, रोहे तथा भयंकरता से दुखती आंखों के लिए जादू भरा विचित्र योग है।

मूल्य बड़ी शीशी ।ı≡) छोटी शीशी ।≡)

३–स्वप्नदोषामृत रस

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषध इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे पीछे या बीच में वीर्य आने को बन्द कर देगी। मूल्म ५) रुपये

सेवन विधि—प्रातः सायं एक-एक गोली गोदुग्ध या शीतल जल के साथ। विशेष—यदि स्वप्नदोष का रोगी अत्यन्त दुर्बल हो तो दूध के साथ और हृष्ट-पुष्ट हो तो जल के साथ सेवन करें। ब्रह्मचारी को जल के साथ सेवन करना चाहिए।

४–स्वप्नदोषामृत चूर्ण

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषधि इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे-पीछे या बीच में वीर्य के आने को बन्द कर देती है।

मूल्य ३) एक मास

५–रोहितारिष्ट

यह अरिष्ट पुराने और बढ़े हुए प्लीहा (तिल्ली) यकृत (जिगर) के लिये अद्वितीय औषध है। जब किसी औषध से यह रोग ठीक न होते हों तो इसका चमत्कार (जादू) प्रयोग करके देखना चाहिये। यह उदर पीड़ा (गोला वायु गोला आदि), पेट में वायु का भरना, अजीर्ण भूख न लगना मलबद्धता आदि सभी पेट के रोगों को दूर करता है। सदैव रहने वाले मलबन्ध (कब्ज) को दूर करने की यह एक ही औषध है। यह जठराग्नि को दीप्त करता है। पाचन शक्ति को खूब बढ़ाता है। यह आयुर्वेद की रामबाण औषध है। मूल्य २)

६--कर्णरोगामृत

कान में पीप आना, बहरापन और प्रत्येक प्रकार की कर्ण पीड़ा को दूर करने के लिए यह अति उत्तम औषध है। प्रतिदिन सेवन करने से कानों का कोई रोग नहीं होता और मस्तिष्क की शुष्कता दूर होती है। मूल्य एक शीशी १)

७--व्रणामृत

भयंकर फोड़े, फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा अनेकों वर्षों के नासूर (सरह) आदि रोगों की अद्वितीय औषधि है। दिनों का काम घण्टों में, घण्टों का काम मिनटों में करती है।—मूल्य एक शीशी १)

८–स्वास्थ्यवर्धक चाय

यह चाय स्वदेशी, ताजी एवं शुद्ध जड़ी-बूटियों से तैयार की गई है। वर्तमान चाय की भाँति यह नींद और भूख को न मारकर खाँसी, जुकाम, नजला, सिरदर्द, खुश्की अजीर्ण, थकान सर्दी आदि रोगों को दूर भगाती है। मस्तिष्क एवं दिल को शक्ति देती है। मूल्य १ छटांक ।–)

९–दन्तरक्षक मंजन

दाँतों से खून वा पीप का आना, दाँतों का हिलना, दाँतों के कृमिरोग, सब प्रकार की दाँतों की पीड़ा तथा रोगों को दूर भगाता है और दांतों को मोतियों के समान ... शीशी ।)

पाचनामृत

मन्दाग्नि, अरुचि, अजीर्ण (कब्ज), पेट का फूलना, पेट का भारीपन, शूल, जी मिचलाना, वमन, खट्टी डकार आदि पेट के सभी रोगों को नष्ट कर भूख को बढ़ाता है। आंतों के सब रोगों को दूर कर पाचन शक्ति को बल देता है। पुराने से पुरानी तिल्ली जिगर की अचूक औषधि है। मूल्य एक शीशी ४)

पामामृत (दाद खुजली)

यह सब ही खुजली दादादि चर्म रोगों के लिये अत्युत्तम औषध है। खुजली सूखी हो या पकने वाली यह सब प्रकार की खुजली के लिये रामबाण औषधि है। इसके प्रयोग करने के पश्चात् किसी अन्य औषधि की आवश्यकता नहीं। दाद को जड़ से नष्ट करती है। मूल्य २)

बाल रोगामृत

बालकों के हरे-पीले दस्त, अपच, अजीर्ण (कब्ज) अरुचि, दांत निकलते समय के रोग, सूखिया मसान रोग, वमन, निर्बलता, ज्वर आदि सभी रोगों को दूर कर बालकों को मोटा करता है। अतः प्रत्येक गृहस्थी घर में रखें। मूल्य एक शीशी ५)

८–संजीवनी तैल

मूर्च्छित लक्ष्मण को चेतना देने वाली इतिहास प्रसिद्ध बूटी से तैयार किया गया यह तैल घावों के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुये घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भर कर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है। मू० ५)

सेवन विधि—फाये में भर कर बार-बार चोट आदि पर लगायें।

च्यवनप्राश

इसी ऋतु के ताजे आंवले से तैयार किया गया स्वादिष्ट, सुमधुर और एक दिव्य रसायन (टानिक) है। जिस का सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सब के लिये अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक, सभी हृदय रोगों की अद्वितीय औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा अन्य सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका (निरन्तर) सेवन समूल नष्ट करता है। यह निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है।

मूल्य ७) सेर, ५सेर लेने पर ६) सेर

बलदामृत

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आ जाता है। पीनस (सदा रहने वाले जुकाम और नजले) की महौषध है। वीर्य वर्द्धक, कास (खांसी) नाशक, राजयक्ष्मा (तपेदिक), श्वास (दमा) के लिये लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करती तथा अत्यन्त रक्त वर्द्धक है। निर्बलों को बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ट बनाती है। यह अपने ढङ्ग की एक ही औषध है। मूल्य ५) प्रति शीशी

ज्वरामृत

यह नये व पुराने सभी प्रकार के ज्वरों की रामबाण औषध है। बिगड़े हुये मलेरिया, विषम ज्वर को दूर करने में अद्वितीय औषध है। कुनेन भी इसके आगे तुच्छ औषध है। कुनेन का सेवन सिर दर्द, स्वप्न-दोष, प्रमेह आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है, किन्तु यह औषध सब दोषों को दूर करती है तथा ज्वर की प्रत्येक अवस्था में दी जा सकती है। मलेरिया काल में सेवन की हुई मलेरिया को नहीं आने देती। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, सेवन करें और लाभ उठावें। मूल्य एक शीशी ५)

पता—आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला पो० गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक (पंजाब)

'सुधारक' का आगामी विशालकाय विशेषाङ्क

'बलिदानाङ्क'

—०—

इस विशालकाय विशेषांक की तैयारी प्रारम्भ हो चुकी है। चित्रों के लिये ब्लाक बनवाये जा रहे हैं। सुधारक का जो अंक आपके हाथ में है इसी आकार (साइज) के ५०० पांच सौ से भी अधिक पृष्ठ तथा १०० से अधिक रंगीन चित्र इस बलिदानांक में दिये जायेंगे। सरल भाषा और सुन्दर छपाई होगी।

इस विशेषांक में लगभग २०० दो सौ, उन वीरों के जीवन और इतिहास की यशोगाथा लिखी जायेगी जो अपनी जन्मभूमि भारत की पराधीनता की शृङ्खलाओं को विश्रृङ्खलित करने के लिये बृटिश साम्राज्यवाद की जड़ काटने के लिये, स्वतन्त्रता की लहर को देश-देश के कोने-कोने में पहुँचाने के लिए, तनमन में क्रान्ति की धूम मचाकर भारत को स्वाधीन बनाने के लिए हँसते-हँसते फांसी के तख्तों पर झूल गये। कारावास की भीषण विपत्तियों को सहन करते हुए भी जो बेड़ी तथा हथकड़ियों को आभूषण बनाकर झूम-झूम कर मस्ती से आजादी के गाने गाया करते थे।

जिस स्वतन्त्रता को देखकर हम प्रसन्नता से फूले नहीं समाते, वह कितने बलिदानों के पश्चात् मिली है, कितने नवयुवकों ने अपने अमूल्य यौवन की आहुति दी है? यह सब इस "बलिदानांक" में पढ़िये। यह अंक अपने ढंग का अपूर्व तथा अद्वितीय होगा।

इस विशेषाङ्क का मूल्य डाक व्यय सहित १०।।) होगा। किन्तु सुधारक के ग्राहकों को अग्रिम धन (पेशगी) भेजने पर ५।।) में ही घर बैठे ही रजिस्ट्री द्वारा मिल जायगा। सुधारक का ग्राहक बनने के लिए २) धनादेश से भेजें। जिन ग्राहकों का धन अगाऊ न मिलेगा उनको पीछे ८।।) में ही अंक प्राप्त हो सकेगा।

अंक परिमित संख्या में ही प्रकाशित होगा, हो सकता है कि समाप्त हो जाने पर पीछे आपको पछताना पड़े। अतः ५।।) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करवा लें। इस मूल्य में ।।) डाक व्यय भी सम्मिलित है।

धन भेजने का पता—

व्यवस्थापक "सुधारक"
पो० गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक, पंजाब

पता

ग्राहक संख्या

सेवा में श्री— पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति

मु०

पो० C/o श्रद्धानन्द प्रतिष्ठान

जि० गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार)

प्रकाशक आचार्य भगवान्देव गुरुकुल झज्जर ने सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली में मुद्रक जगदेवसिंह शास्त्री 'सिद्धान्ती' के प्रबन्ध से छपवाया।

वर्ष ४
अङ्क १२

गुरुकुल झज्जर (रोहतक) श्रावण २०१४ वि०
अगस्त १९५७, दयानन्दाब्द १३३

वार्षिक मूल्य २)
एक प्रति बीस नये पैसे

भारत की स्वतन्त्रता के लिये फांसी पर चढ़ने वाला वीर

वीर युवक खुदीराम बोस

१५ अगस्त भारत का स्वतन्त्रता दिवस है। इस स्वतन्त्रता दिवस के शुभागमन के लिये स्वातन्त्र्य संग्राम की बलि वेदि में भारत माता के सच्चे सपूत सहस्रों नवयुवक क्रान्तिकारी वीरों ने चढ़ती जवानी में और भरी हुई जवानी में अपने जीवन की पवित्रतम आहुतियाँ दी हैं। उनमें से ही एक अन्यतम बांका वीर क्रान्तिकारी खुदीराम बोस है।

बङ्गाल के किंगजफोर्ड नामक जज ने सैकड़ों देशभक्तों को सजा दी। भारतीय क्रान्तिकारी वीरों ने उसका बदला लेने के लिये अर्थात् किंगजफोर्ड की हत्या के लिये खुदीराम बोस और प्रफुल्लकुमार चाकी को नियुक्त किया था। इसी काण्ड के अन्तर्गत इस १७ वर्षीय क्रान्तिकारी तरुण को अंग्रेज सरकार ने ११ अगस्त १९०८ ई० में फांसी पर लटका दिया। ये क्रान्तिकारी वीर मृत्यु से कभी न घबराते थे। इनका कहना था कि—"मरना तो एक ही दिन है, फिर वीरों की तरह क्यों न मरो।"

—०:※:०—

संचालक व सम्पादक—ब्र० भगवान्देव आचार्य गुरुकुल झज्जर
सह-सम्पादक—ब्र० वेदव्रत भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति
व्यवस्थापक—यज्ञदेव शास्त्री भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति
सह-व्यवस्थापक—ब्र० महावीर भाष्याचार्य, सिद्धान्तशास्त्री

विषय-सूची

सुधारक के नियम

१—सुधारक अंग्रेजी महीने की १० ता० को डाकखाने में डाला जाता है। यदि २० ता० तक न मिले तो अपने पोस्ट आफिस में पूछ-ताछ करनी चाहिए। फिर भी न मिले तो हमें लिखने पर और भेज दिया जायेगा।

२—लेख छोटे सारगर्भित तथा कागज के एक ओर सुन्दर और सुवाच्य लिखे हुये हों।

३—लेख में उचित परिवर्तन करना, प्रकाशित करना या न करना सब सम्पादक के आधीन है। अस्वीकृत लेख पोस्टेज भेजने पर ही वापिस लौटाया जा सकेगा।

४—वेद विरुद्ध लेखों का प्रकाशन सुधारक में न हो सकेगा।

५—सिद्धांत विरुद्ध, अश्लील और मिथ्या विज्ञापनों के लिए "सुधारक" में स्थान नहीं है। इतना होते हुये भी विज्ञापन की सत्यता का उत्तरदायित्व हम पर नहीं है।

६—व्यवस्थापक सम्बन्धी सब पत्र-व्यवहार तथा मनीआर्डर आदि "व्यवस्थापक-सुधारक" के नाम से भेजने चाहियें, किसी व्यक्ति के द्वारा न भेजें। साथ ही ग्राहक अपनी संख्या अवश्य लिखें।

७—एजेण्टों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है और ५ से कम की एजेन्सी नहीं दी जाती। विज्ञापन का धन अगाऊ भेजना आवश्यक है।

८—सब पत्र-व्यवहार हिन्दी तथा संस्कृत में ही करें। उर्दू, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में पत्र व्यवहार न करें। पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड भेजें।

विज्ञापन दर

	पूरा पृष्ठ	आधा पृष्ठ	चौथाई पृष्ठ
एक बार	१६)	९)	५)
तीन बार	४०)	२४)	१३)
छः बार	७५)	४५)	२५)
१ वर्ष तक	१३०)	७५)	४५)

टाइटिल अन्तिम १५% अधिक।
टाइटिल तृतीय १०% अधिक।
विशेषांक में सवाया। कम से कम ४॥)

वेदोपदेश—

न्याय के लिये अड़े रहने वाले विजयी होते हैं

(पं० देवशर्मा 'अभय' विद्यालङ्कार)

अप्रतीतो जयति सं धनानि,
प्रति जन्यानि उत या सजन्या।
अवस्यवे यो वरिवः कृणोति,
ब्रह्मणे राजा तमवन्ति देवाः॥
(ऋग्वेद ५। ५०। ६)

शब्दार्थ—

(अ+ प्रति × इतः) पीछे कदम न हटाने वाला ही (धनानि) ऐश्वर्यों को (सं जयति) जीतता है, वे ऐश्वर्य चाहे (प्रति जन्यानि) वैयक्तिक होवें अथवा (या सजन्या) वे सामूहिक होवें। और (देवाः) देव (तं) उस सत्ताधारी राजा की (अवन्ति) रक्षा करते हैं (यः राजा) जो कि राजा (अवस्यवे) रक्षा चाहने वाले (ब्रह्मणे) सच्चे ब्राह्मणों की (वरिवः कृणोति) पूजा किया करता है, उनके आगे झुकता है।

पीछे कदम न हटाने वाला मनुष्य ही विजय को प्राप्त करता है। ऐसा ही मनुष्य विजयी हो कर ऐश्वर्यों को पाता है। प्रतिजन से सम्बन्ध रखने वाले वैयक्तिक ऐश्वर्य तथा जन-समूह से सम्बन्ध रखने वाले सामाजिक वा राष्ट्रिय ऐश्वर्य उन्हीं जनों वा जन-समूहों को प्राप्त होते हैं जिन में कि चिरकाल तक लगातार उद्योग करते जाने की शक्ति होती है, जिन में लगन, धैर्य होता है, जिन में अड़े रहने, डटे रहने का गुण होता है, जो कि कभी कदम पीछे हटाना नहीं जानते। जिन में यह गुण नहीं है ऐसे व्यक्ति वा राष्ट्र के लिये संसार में कोई ऐश्वर्य नहीं है। अतः हे व्यक्तियो ! तुम धैर्य को सीखो, हे राष्ट्रो ! तुम मिलकर अन्त तक डटे रहना सीखो।

पर इसका दूसरा पार्श्व भी है। डटे रहना, अन्याय के विरुद्ध और न्याय के लिये चाहिये। परन्तु प्रायः दुनिया के सब सत्ताधारी मनुष्य स्वार्थ वश हो अन्याय के लिये भी डटे रहते हैं। ऐसे डटे रहने वालों का तो=वे चाहे कितने ही बड़े शक्तिशाली हों=विनाश ही होता है। जगत् के संचालक देव लोग तो उसी सत्ताधारी राजा की रक्षा करते हैं जो कि न्याय के लिये झुकने वाला होता है, जहो कि सत्य उपदेश देने वाले की बात को नम्रता से सुनता है, अड़ता नहीं, अतएव जो कि ऐसे संरक्षण चाहने वाले सच्चे ब्राह्मणों की सदा पूजा किया करता है। सत्ताधारी लोग यदि अपना कल्याण चाहते हैं तो उन्हें चाहिये कि दुनियावी कोई सत्ता न रखने वाले, सब का भला और रक्षण चाहने वाले, नम्र, ज्ञानी पुरुष उन्हें आकर जो कुछ सुझावें उसे वे सत्कार-पूर्वक सुनें और उनकी शुभ सला को वे तुरन्त पूरा करें।

जरूरत इस बात की है कि निर्बल और पद-दलित लोग सत्य पर अड़ना सीखें और सत्ताधारी लोग नमना सीखें। और उस से भी अधिक जरूरत इस बात की है कि प्रत्येक मनुष्य सदा देखे कि वह कहीं बलवान् अन्यायी के सामने झुक तो नहीं जाता है, कदम पीछे तो नहीं हटा लेता और असत्ताधारी सच्चे पुरुष के सामने अड़ा तो नहीं रहता है।

(वैदिक विनय से)

सम्पादकीयम्

प्रिय पाठकवृन्द ! आपके हाथ में सुधारक का चतुर्थ वर्ष का १२ वां अङ्क है। इस अङ्क के साथ सुधारक के ४ वर्ष सम्पूर्ण हो जाते हैं। अनेक विघ्नबाधाओं के होते हुए भी सुधारक निरन्तर चार वर्ष से प्रति मास १० ता० को आप की सेवा में भेज दिया जाता है। निश्चित तिथि पर तैयार करने में क्या क्या संकट उपस्थित होते हैं, इस को तो कोई भुक्त-भोगी ही जान सकता है। सम्पादक अपने व्यक्तिगत कष्टों को तो जैसे-तैसे दूर कर देता है, क्योंकि उस में वह स्वतन्त्र है। दिन में लेख सामग्री तैयार करने का अवसर न मिले तो रात को कर सकता है। किन्तु सामग्री सज्जा के पश्चात् प्रेस वालों के आधीन होना पड़ता है। वे लोग निश्चित समय तक तैयार करने का वचन देते हैं, वे भी स्वयं अन्यों के आधीन होने के कारण अपने वचन को पूरा नहीं कर पाते। दुबारा जाकर आग्रह करने पर मुकदमे की तरह अगली तारीख लग जाती है। इस प्रकार बार-बार तारीख लगती रहती है और पत्र को डाकखाने में देने की नियमित तिथि आ पहुंचती है। क्योंकि वह राजकीय नियम होता है उसका पालन न करें तो दण्ड भुगतना पड़ता है। अर्थात् निश्चित तिथि के पश्चात् डाकखाना तिगुना डाक व्यय लेता है, निश्चित तिथि पर यदि ३०) रुपये के टिकिट लगते हैं तो अवधि के उपरान्त ६०) अवश्य ही व्यय होंगे। "सर्वं परवशं दुःखम्" के अनुसार परतन्त्रता के कारण पदे-पदे संकटों का साम्मुख्य करना पड़ता है। यह सब कुछ होते हुए भी हम ईशानुकम्पा से अपनी साधना में उत्तीर्ण ही हुए।

सुधारक प्रगति के पथ पर अग्रेसर है। ईश्वर की कृपा और ग्राहकों के सहयोग से सुधारक उत्तरोत्तर उन्नति करता जा रहा है। पञ्चम वर्ष में सुधारक अपने पाठकों की सेवा में और भी उत्कृष्ट लेख सामग्री उपस्थित कर सकेगा, ऐसी हमारी धारणा है।

"सुधारक" का उद्देश्य भी नाम के अनुरूप ही है। समाज सुधार करना, समाज में प्रचलित कुरीतियों को दूर करना इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है, साथ ही साथ सन्मार्ग दर्शन का कार्य भी किया जाता है। जिस से आर्यसमाज और वैदिक धर्म का प्रचार भी होता है। वैदिक धर्म के प्रचार और समाज सुधार को दृष्टि में रखते हुए ही इस मासिक पत्र का मूल्य केवल २) वार्षिक रखा गया है, जिस से कि 'सुधारक' से दरिद्र से दरिद्र व्यक्ति भी लाभ उठा सके। आप स्वयं विचार कर देखें कि आज के अर्थ युग में २) का क्या मूल्य है ? इस में से चार आने के तो टिकट सुधारक के बारह अंकों पर लग जाते हैं, शेष रहे पौने दो रुपये। कम से कम प्रति-मास २४ पृष्ठ सुधारक में आते हैं २४+१२ = २८८ पृष्ठों का इस साइज का लेखसंग्रह पौने दो रुपये में आपको कहीं न मिल सकेगा। पौने दो रुपयों में केवल कागज और छपाई के व्यय की भी पूर्ति नहीं होती। विशेषाङ्कों पर तो और भी अधिक व्यय आजाता है। इस के अतिरिक्त भी अनेक व्यय हैं जो कि सुधारक के ग्राहकों तक पहुंचने में होते हैं।

कुछ ग्राहकों को यदाकदाचित् सुधारक ठीक समय पर नहीं मिल सकता, जिस से ग्राहक दुःख अनुभव करते हैं। हमारे यहाँ कार्यालय में प्रत्यय ठीक लिखवा देने के उपरान्त कोई भूल नहीं होती। लिखित प्रत्यय पर ठीक समय पर प्रत्येक ग्राहक के पास सुधारक अवश्य ही भेजा जाता है। किन्तु डाकविभाग के कर्मचारियों की असावधानी से ग्राहक सुधारक से वञ्चित रह जाते हैं। अनेक बार

ऐसा हो जाता है कि डाक छांटने वाले कर्मचारी कहीं की डाक कहीं भेज देते हैं, ऐसा अनेक बार हमने स्वयं अपने गुरुकुल के डाकखाने में देखा है कि दूसरे ग्रामों की डाक (कार्ड, लिफाफे, अखबार आदि) हमारी गुरुकुल की डाक की थैली में आजाते हैं। यह भी सुधारक के न मिलने का कारण है। दूसरा देहात के ग्रामों में ऐसा होता है कि पत्र-वितरक (डाकिया) गांव की डाक स्कूल के लड़कों को दे देता है कि तुम दे देना, फिर वे लड़के दें वा न दें यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। इसी प्रकार पत्र-वाहक स्वयं ग्राहक के उपस्थित न मिलने पर पड़ौसियों को डाक दे आता है, और वे ग्राहक को देना भूल जाते हैं अथवा कोई बच्चा इधर-उधर डाल देता है। इसी प्रकार के बाधक कारणों से सुधारक कुछ सज्जनों को नहीं मिल पाता। किसी भी कारण से आपको सुधारक न मिले, आप नियमानुसार अपने डाकखाने से पूछ-ताछ करें और हमें लिखें, हम आपको दूसरा अंक अवश्य भेजेंगे।

जिन ग्राहकों का चन्दा इस १२ वें अंक के साथ समाप्त होता है वे अपना २) चन्दा शीघ्रातिशीघ्र मनीआर्डर द्वारा भेजने की कृपा करें। हमें चन्दे के लिये किसी भी ग्राहक को न लिखना पड़े। कुछ सज्जन सुधारक वी. पी. पी. द्वारा मंगवाते हैं, उनसे हमारा निवेदन है कि वे यह घाटे का सौदा न करें। क्योंकि नये नियमानुसार मनी आर्डर से चन्दा भेजने पर ग्राहक का २. १५ पैसा व्यय होता है और वी. पी. पी. द्वारा मंगवाने पर २.७१ पैसा देना पड़ेगा। इस प्रकार ग्राहक की ५६ पैसा की हानि होती है और हमारा कोई लाभ नहीं होता। अतः चन्दा सदा मनीआर्डर द्वारा ही भेजना चाहिये।

बलिदानाङ्क

कुछ सज्जन हमें पत्र द्वारा अथवा मिलने पर मौखिक पूछते रहते हैं कि बलिदानाङ्क कब निकलेगा? उन सभी महानुभावों से मेरा नम्र-निवेदन है कि बलिदानांक के निकालने में देर तो अवश्य हुई है किन्तु अन्धेर नहीं है। "धीरे पके सो मीठा होय" के अनुसार जितना विलम्ब से यह विशेषांक निकलेगा उतना ही उत्तम होगा। जिन सज्जनों ने अभी तक बलिदानांक का मूल्य नहीं भेजा है, वे ५॥) मनी आर्डर से भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करवालें। हिन्दी रक्षा आन्दोलन के कारण सम्पादक मण्डल बलिदानांक की तैयारी शीघ्र न कर सका, इस आन्दोलन के उपरान्त शीघ्र ही बलिदानांक आपकी सेवा में प्रकाशित कर भेजा जायेगा

इस वर्ष प्रत्येक ग्राहक दो दो नये ग्राहक और बना कर हमें इस पवित्र कार्य में अपना सहयोग अवश्य ही प्रदान करें। जो महानुभाव इस कार्य में अधिक उत्साह से कार्य करेंगे उनका नाम सुधारक में प्रकाशित किया जायेगा और १० नये ग्राहक बनाने वालों को एक वर्ष तक सुधारक बिना मूल्य भेजा जायेगा।

"सुधारक प्रेस"

सुधारक के पाठकों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि अब हम गुरुकुल में ही अपना "सुधारक प्रेस" लगा रहे हैं। योजना बन चुकी है और शीघ्र ही प्रेस लगा दिया जायेगा। अपना प्रेस हो जाने पर प्रकाशनसम्बन्धी पर्याप्त सुविधायें हो जायेंगी और सुधारक भी पूर्वापेक्षया सुन्दर रूप में प्रकाशित किया जायेगा। अब प्रेस दूर देहली में होने के कारण इच्छानुकूल सम्पादन करने में अनेक त्रुटियां रह जाती हैं। ग्राहक महानुभावों का सहयोग और स्नेह हमारे साथ बना रहेगा तो शनैः शनैः सुधारक का प्रकाशन बहुत ही भव्य रूप में किया जायेगा, जिस से सुधारक का कायाकल्प ही हो जायेगा।

सम्पादक

पंजाब का हिन्दी आन्दोलन

(ले०—विश्वप्रिय शास्त्री भाष्याचार्य साहित्यरत्न)

कहा जाता है कि गुरुमुखी लिपि का निर्माण गुरु ने मोटी बुद्धि रखने वाले शिष्यों के लिए किया था जिससे उनकी समझ में गुरु की वाणी अच्छी तरह से आ जाये। तीस-चालीस लाख सिक्खों में से अकाली सिक्खों का इसके पढ़ने के लिये विशेष हठ है। पञ्जाब सरकार ने अकालियों के प्रभाव में आकर बहुसंख्यक हिन्दी भाषी जनता के लिए भी इसका पढ़ना अनिवार्य कर दिया। गुरुमुखी लिपि की यह अनिवार्यता ही पञ्जाब में हिन्दी आन्दोलन का कारण है।

भाषा समस्या के निबटारे के उपाय—

१—राष्ट्रपिता बापू के शब्दों में जो भाषा जहाँ की मातृ-भाषा हो उसमें ही बालक की शिक्षा का प्रबन्ध हो।

२—भाषा के प्रश्न को भाषाशास्त्रियों पर छोड़ देना चाहिये।

३—हिन्दी और गुरुमुखी के नाम पर जनता की सम्मति लें ली जाये जिसको जनता चाहे वह वहाँ की भाषा हो।

४—यदि द्विभाषी राज्य की दुहाई है तो दोनों भाषाओं के पढ़ाने का प्रबन्ध कर दिया जाये, अनिवार्यता किसी की न हो, माता पिता जिसमें चाहे शिक्षा दिलायें।

धर्मनिरपेक्ष सरकार को चाहिये था कि वह शिक्षा की समस्या को राजनीतिक स्तर पर न लाती। यदि अकालियों का विशेष आग्रह गुरुमुखी लिपि के लिये था तो उनसे कहती कि जाओ हिन्दुओं से बात करो। ऐसा करने पर बात इतनी न बिगड़ती। परन्तु अकालियों से बातें करते हुए हमारी सरकार के कर्णधार हिन्दू बन गये। और आज जब हिन्दी-भाषी मांग कर रहे हैं कि ऐसा क्यों किया गया? तो आन्दोलन को राजनीतिक चाल बताया जा रहा है। जब आर्यसमाज की मांगें उचित हैं, न्यायप्रिय व्यक्ति के हृदय पर प्रभाव डालती हैं, तो क्यों न न्याय के आधार पर उन्हें मान लिया जाये? मांग स्वीकार होने पर आन्दोलन समाप्त अपने आप हो जायेगा।

हरयाणा का बलिदान

अवधी, ब्रजभाषा, राजस्थानी, हरियाणवी (बांगरू) बोलियों की तरह पञ्जाबी भी हिन्दी की एक बोली है। वैसे अवधी, ब्रजभाषा आदि का साहित्य बहुत बढ़ा चढ़ा है। बोलने वालों की संख्या भी बहुत अधिक है। परन्तु पञ्जाबी साहित्य और बोलने वालों की दृष्टि से बड़ी सीमित है।

सत्तर लाख के लगभग हरयाणा वालों ने अपनी हरयाणवी (बांगरू) के लिए पृथक् मांग न करके राष्ट्रभाषा पर अपनी (बांगरू) को बलिदान कर राष्ट्र-भक्ति का परिचय दिया।

चाहिये तो यह था कि सिक्ख भाई भी अपनी पञ्जाबी के लिये पृथक् लिपि की मांग न करके हिन्दी को ही अपनाकर राष्ट्र-भक्ति का परिचय देते। क्योंकि हमारे प्रधान मन्त्री माननीय नेहरू जी के शब्दों में "पञ्जाबी अक्सर उर्दू में लिखी जाती रही है हिन्दी में भी लिखी जा सकती है।"

क्या ही अच्छा होता कि अकाली भाई उर्दू की तरह हिन्दी में ही पञ्जाबी को लिखना स्वीकार कर लेते, हिन्दी के महान् साहित्य के साथ उनकी पंजाबी का प्रचार होता और पृथक्ता (प्रान्तीयता) समाप्त होकर राष्ट्रीयता का प्रोत्साहन मिलता।

कहा यह जा रहा है कि पंजाब में हिन्दी पर कोई सङ्कट नहीं है। उनसे निम्न प्रश्न प्रष्टव्य है।

१—क्या पेप्सू में जहाँ पर हिन्दी बोलने वालों की संख्या कम नहीं, क्या प्रारम्भ से हिन्दी की पढ़ाई का प्रबन्ध है ?

२—जालन्धर क्षेत्र में एक स्कूल में हिन्दी पढ़ने वालों की संख्या ३९ तथा एक श्रेणी में हिन्दी पढ़ने वालों की संख्या ९ हो तो क्या सरकार की ओर से हिन्दी पढ़ाने का प्रबन्ध है ?

३—पञ्जाबी क्षेत्र में एक श्रेणी से हिन्दी पढ़ने वाले ९ विद्यार्थी हों और गुरुमुखी पढ़ने वाला एक या दो विद्यार्थी हों तो क्या हिन्दी पढ़ने वाले ९ लड़कों को पञ्जाबी पढ़ने वाले दो-तीन लड़कों जैसा सुभीता मिलेगा ?

४—पञ्जाबी क्षेत्र में जिला स्तर तक कोई सरकारी अधिकारी हिन्दी का प्रयोग न कर सकेगा ?

५—पञ्जाबी क्षेत्र में जो लड़के चौथी श्रेणी के पश्चात् पढ़ना छोड़ देंगे क्या वह हिन्दी से वञ्चित नहीं रह जायेंगे ?

पञ्जाबी क्षेत्र में प्रत्येक छात्र चौथी श्रेणी तक गुरुमुखी लिपि में पञ्जाबी पढ़े और पञ्जाबी में हिन्दी को पढ़े यह बात तो युक्तियुक्त है, क्योंकि हिन्दी राष्ट्र भाषा है।

परन्तु सत्तर लाख हरयाणा निवासी चौथी के उपरान्त पाञ्चवीं श्रेणी में गुरुमुखी को क्यों पढ़ें ? उन पर पाञ्च-छः वर्ष गुरुमुखी की अनिवार्यता क्यों थोपी गयी है ?

यदि कहा जाये कि साहित्य पञ्जाबी का बढ़िया है। यह बात भी नहीं है। साहित्य बङ्गाली और मरहठी का बड़ा बढ़ा चढ़ा है। सहृदयता के नाते बंगाली को क्यों न पढ़ा जाये।

सरकारी पक्ष की ओर से कहा जा रहा है कि पञ्जाब को द्विभाषी राज्य घोषित कर कर दिया है। इसलिये गुरुमुखी को पढ़ा जाये। तो सरकार से प्रष्टव्य है कि क्या किसी और प्रान्त में भी भारत के जैसी व्यवस्था है जहाँ पर अल्पसंख्यकों की भाषा बहुसंख्यकों पर बलात् लादी गयी है ? यदि सरकार अनुभव के लिये ऐसा कर रही है तो पञ्जाब में न करके किसी अन्य प्रान्त में करके देख ले।

द्विभाषी राज्य का यह अभिप्राय नहीं कि अल्पसंख्यकों की भाषा को न चाहने वाले बहुसंख्यक समुदाय पर थोपा जाये।

सत्तर लाख हरयाणा वाले हिन्दी को चाहते हैं कि हिन्दी पढ़ें और द्वितीय भाषा के रूप में पाँचवीं कक्षा में भी उन्हें अधिकार होना चाहिये कि वह भारत के संविधान में स्वीकृत चौदह भाषाओं में किसी को भी अपना लें जैसा कि उत्तर-प्रदेश में है।

यह एक साधारण बात है कि जब पञ्जाब में सर्विस करने वाले को हिन्दी और पञ्जाबी का ज्ञान होना आवश्यक है तो सर्विस वाला छात्र पञ्जाबी को दूसरी भाषा के रूप में लेगा। यह एक प्रलोभन ही पर्याप्त है पुनः गुरुमुखी की अनिवार्यता लागू कर करके सरकार क्यों आन्दोलन को बढ़ावा दे रही है। यह अनिवार्यता हिन्दी भाषाओं के साथ अन्याय है, कहीं भी इसका उदाहरण देखने को न मिलेगा। सरकार को समय पर सचेत होकर अनिवार्यता को हटा लेना चाहिये।

उत्तरदायित्व-हीन साधारण व्यक्ति कुछ भी कहें। परन्तु जब कांग्रेस अध्यक्ष गान्धीवादी श्री ढेबर ने यह कहा कि "पंजाब में भाषा फार्मूले को स्वीकार कर मा० तारासिंह ने हिन्दी की बड़ी सेवा की है।" तो आश्चर्य और दुःख हुआ।

मा० तारासिंह की सेवा उस समय मानी जाती जब कि पृथक् गुरुमुखी की मांग न करके मास्टर तारासिंह हिन्दी को हरयाणा निवासियों की तरह अपनाकर अपनी हिन्दी-भक्ति और राष्ट्र-भक्ति का परिचय देते। इससे प्रान्तीय भावना समाप्त होती और राष्ट्रीयता को प्रोत्साहन मिलता और गुरुओं की वाणी का हिन्दी में प्रचार होता।

इतने भी उदार न थे तो कम-से-कम भाषा को राजनीतिक स्तर पर न लाते। जनता को अधिकार था,

(शेष पृष्ठ २३ पर)

महर्षि दयानन्द की २१ और ३१ वर्ष की पाठ विधि

(वेदव्रत सम्पादक सुधारक)

महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मचर्यपालन और विद्याध्ययनादि के सम्बन्ध में अपने सत्यार्थप्रकाश, संस्कार-विधि, व्यवहारभानु और वेदभाष्यादि ग्रन्थों में पर्याप्त प्रकाश डाला है। यह लेख महर्षि दयानन्द की पाठविधि पर लिखा गया है, उस पाठविधि को पढ़ने वाले ब्रह्मचारी वा विद्यार्थी के क्या-क्या कर्त्तव्य कर्म हैं यह भी यहाँ पर संक्षेप में संग्रह कर देना उचित प्रतीत होता है। वेदारम्भ संस्कार में पिता ब्रह्मचारी को ब्रह्मचर्याश्रम का साधारण उपदेश करता है—

ब्रह्मचारी के दैनिक कार्य

१. ब्रह्मचार्यसि असौ।१	१. तू आज से ब्रह्मचारी है।
२. अपो अशान।	२. नित्य सन्ध्योपासन, भोजन के पूर्व शुद्ध जल का आचमन किया कर।
३. कर्म कुरु।	३. दुष्टकर्मों को छोड़कर धर्मयुक्त कर्म किया कर।
४. दिवा मा स्वाप्सीः।	४. दिन में शयन कभी मत कर।
५. आचार्याधीनो वेदमधीष्व।	५. आचार्य के आधीन रह के नित्य साङ्गोपाङ्ग वेद पढ़ने में पुरुषार्थ किया कर।
६. द्वादश वर्षाणि प्रतिवेदं ब्रह्मचर्यं गृहाण वा ब्रह्मचर्यं चर। (आ० १ । २२ । २-३)	६. एक २ सांगोपांग वेद पढ़ने के लिये बारह २ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य अर्थात् ४८ वर्ष तक वा जब तक सांगोपांग चारों वेद पूरे होवें तब तक अखण्डित ब्रह्मचर्य कर।
७. आचार्याधीनो भवान्यत्रधर्माचारणात्।	७. आचार्य के आधीन धर्माचरण में रहा कर, परन्तु यदि आचार्य अधर्माचरण वा अधर्म करने का उपदेश करे, उस को तू कभी मत मान और उसका आचरण मत कर।
८. क्रोधानृते वर्जय।	८. क्रोध और मिथ्या भाषण करना छोड़ दे।
९. मैथुनं वर्जय।	९. आठ प्रकार के मैथुन को छोड़ देना।२
१० उपरि शय्यां वर्जय।	१० भूमि में शयन करना, पलंग आदि पर कभी न सोना।
११ कौशीलवगन्धाञ्जनानि वर्जय।	११. कौशीलव अर्थात् गाना, बजाना तथा नृत्य आदि निन्दित कर्म, गन्ध और अञ्जन का सेवन मत कर।

---

१. 'असौ' पद के स्थान में ब्रह्मचारी का नाम सर्वत्र उच्चारण करे।

२. स्त्री का ध्यान, कथा, स्पर्श, क्रीड़ा, दर्शन, आलिङ्गन, एकान्तवास और समागम, यह आठ प्रकार का मैथुन कहाता है, जो इनको छोड़ देता है, वही ब्रह्मचारी है।

१२. अत्यन्तं स्नानं भोजनं निद्रां जागरणं निन्दां लोभमोहभयशोकान् वर्जय।	१२. अतिस्नान, अतिभोजन, अधिक निद्रा, अधिक जागरण, निन्दा, लोभ, मोह, भय, शोक का ग्रहण कभी मत कर।
१३. प्रतिदिनं रात्रेः पश्चिमे यामे चोत्थायावश्यकं कृत्वा दन्तधावनस्नानसन्ध्योपासनेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनायोगाभ्यासान् नित्यमाचर।	१३. रात्रि के चौथे पहर में जाग। आवश्यक शौचादि दन्तधावन, स्नान, सन्ध्योपासना, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना, योगाभ्यास का आचरण नित्य किया कर।
१४. क्षुरकृत्यं वर्जय।	१४. क्षौर मत करा।
१५. मांसरूक्षाहारं मद्यादिपानं च वर्जय।	१५. मांस, रूखा, शुष्क अन्न मत खावे और मद्यादि मत पीवे।
१६. गवाश्वहस्त्युष्ट्रादियानं वर्जय।	१६. गोयान—बैल, घोड़ा, हाथी, ऊंटादि की सवारी मत कर।
१७. अन्तर्ग्रामनिवासोपानच्छत्रधारणं वर्जय।	१७. गाँव अर्थात् बस्ती में निवास और जूता और छत्र का धारण मत कर।
१८. अकामतः स्वयमिन्द्रियस्पर्शेन वीर्यस्खलनं विहाय वीर्यं शरीरे संरक्ष्योर्ध्वरेताः सततं भव।	१८. लघुशंका के बिना उपस्थ इन्द्रिय के स्पर्श से वीर्य स्खलन न करके वीर्य को शरीर में रख के निरन्तर ऊर्ध्वरेता अर्थात् नीचे वीर्य को मत गिरने दे, इस प्रकार यत्न से वर्त्ता कर।
१९. तैलाभ्यंगमर्दनात्यम्लातितिक्तकषायक्षाररेचनद्रव्याणि मा सेवस्व।	१९. तेलादि से अंगमर्दन, उबटना, अति खट्टा अमली आदि, अति तीखा लाल मिर्ची आदि, कसेला हरड़े आदि, क्षार अधिक लवण आदि, रेचक जमालगोटा आदि द्रव्यों का सेवन मत कर।
२०. नित्यं युक्ताहारविहारवान् विद्योपार्जने च यत्नवान् भव।	२०. नित्य युक्ति से आहार विहार करके विद्या ग्रहण में यत्नशील हो।
२१. सुशीलो मितभाषी सभ्यो भव।	२१. सुशील, थोड़े बोलने वाला, सभा में बैठने योग्य गुण ग्रहण कर।
२२. मेखलादण्डधारणभैक्ष्यचर्यसमिदाधानोदकस्पर्शनाचार्यप्रियाचरणप्रातःसायमभिवादनविद्यासञ्चयजितेन्द्रियत्वादीन्येते ते नित्यधर्माः।	२२. मेखला और दण्ड का धारण, भिक्षाचरण अग्निहोत्र, स्नान, सन्ध्योपासन, आचार्य का प्रियाचरण, प्रातः सायं आचार्य को नमस्कार करना, विद्या संचय करना, जितेन्द्रिय होना इत्यादि ये तेरे नित्य करने के और जो निषेध किये वे नित्य न करने के कर्म हैं।

............इत्यादि उपदेश तीन दिन के भीतर आचार्य वा बालक का पिता करे। तत्पश्चात् घर को छोड़ गुरुकुल में जावे। यदि पुत्र हो तो पुत्रों की पाठशाला और कन्या हो तो स्त्रियों की पाठशाला में भेजे

यदि घर में वर्णोच्चारण की शिक्षा यथावत् न हुई हो तो आचार्य बालकों को और कन्याओं[1] को स्त्री पाणिनिमुनिकृत वर्णोच्चारण शिक्षा १ (एक) महीने के भीतर पढ़ा देवें। पुनः पाणिनिमुनिकृत अष्टाध्यायी का पाठ पदच्छेद अर्थसहित ८ (आठ) महीने में अथवा १ (एक) वर्ष में पढ़ाकर धातुपाठ और दश लकारों के रूप सधवाना तथा दश प्रक्रिया भी सधवानी। पुनः पाणिनिमुनिकृत लिंगानुशासन और उणादि गणपाठ तथा अष्टाध्यायीस्थ णवुल् और तृच् प्रत्ययाद्यन्त सुबन्त रूप ६ (छः) महीने के भीतर सधवा देवें। तत्पश्चात् पुनः दूसरी बार अष्टाध्यायी, पदार्थोक्ति, समास, शङ्कासमाधान, उत्सर्ग, अपवाद, अन्वय पूर्वक पढ़ावें और संस्कृत भाषण का भी अभ्यास कराते जायें। ८ महीने के भीतर इतना पढ़ना पढ़ाना चाहिये।

तत्पश्चात् पतञ्जलिमुनिकृत महाभाष्य जिसमें वर्णोच्चारणशिक्षा, अष्टाध्यायी, धातुपाठ, गणपाठ, उणादिगण, लिंगानुशासन इन ६ (छः) ग्रन्थों की व्याख्या यथावत् लिखी है, डेढ़ वर्ष में अर्थात् १८ (अठारह) महीने में इसको पढ़ना पढ़ाना इस प्रकार शिक्षा और व्याकरण शास्त्र को ३ (तीन) वर्ष ५ (पांच) महीने वा ६ (नौ) महीने अथवा ४ (चार) वर्ष के भीतर पूरा कर सब संस्कृत विद्या के मर्मस्थलों को समझने योग्य होवे[2]।

तत्पश्चात् यास्क मुनिकृत निघण्टु, निरुक्त तथा कात्यायनादि मुनिकृत कोश १॥ (डेढ़) वर्ष के भीतर पढ़ के, अव्ययार्थ, आप्तमुनि कृत वाच्यवाचक सम्बन्ध रूप यौगिक योगरूढि और रूढि तीन प्रकार के शब्दों के अर्थ यथावत् जानें। तत्पश्चात् पिंगलाचार्यकृत पिंगलसूत्र छन्दोग्रन्थ भाष्यसहित ३ (तीन) महीने में पढ़ और ३ (तीन) महीने में श्लोकादि रचनविद्या को सीखे। पुनः यास्क मुनिकृत काव्यालङ्कार सूत्र वात्स्यायनमुनिकृत भाष्य सहित, आकांक्षा, योग्यता, आसत्ति और तात्पर्यार्थ, अन्वय सहित पढ़ के इसी के साथ मनुस्मृति, विदुरनीति और किसी प्रकरण में के १० सर्ग वाल्मीकीय रामायण के, ये सब १ (एक) वर्ष के भीतर पढ़ें और पढ़ावें।

---

१. सहशिक्षा अर्थात् लड़के लड़कियों को एक साथ पढ़ाने के पक्षपाती लोग महर्षि दयानन्द के लेख को ध्यान से पढ़ें और मनन करें। सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास में भी महर्षि ने सहशिक्षा का तीव्र विरोध किया है।

"विद्या पढ़ाने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिये और वे लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोस एक-दूसरे से दूर होनी चाहियें। जो वहां अध्यापिका और अध्यापक पुरुष वा भृत्य, अनुचर हों वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पाँच वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में पाँच वर्ष की लड़की भी न जाने पावे। अर्थात् जब तक वे ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहें जब तक स्त्री वा पुरुष का दर्शन, स्पर्शन, एकान्त सेवन, भाषण, विषयकथा, परस्परक्रीडा, विषय का ध्यान और सङ्ग इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें। और अध्यापक लोग उनको इन बातों से बचावें। जिससे उत्तम विद्या, शिक्षा, शील स्वभाव, शरीर और आत्मा से बलयुक्त हो के आनन्द को नित्य बढ़ा सकें। पाठशालाओं से एक योजन अर्थात् चार कोस दूर ग्राम वा नगर रहें।"

२. "......बुद्धिमान् पुरुषार्थी, निष्कपटी, विद्यावृद्धि के चाहनेवाले नित्य पढ़ें पढ़ावें तो डेढ़ वर्ष में अष्टाध्यायी और डेढ़ वर्ष में महाभाष्य पढ़ के तीन वर्ष में पूर्ण वैयाकरण होकर वैदिक और लौकिक शब्दों का व्याकरण से बोधकर पुनः अन्य शास्त्रों को शीघ्र सहज में पढ़ पढ़ा सकते हैं। किन्तु जैसा बड़ा परिश्रम व्याकरण में होता है वैसा श्रम अन्य शास्त्रों में करना नहीं पड़ता। और जितना बोध इनके पढ़ने से तीन वर्षों में होता है उतना बोध कुग्रन्थ अर्थात् सारस्वत, चन्द्रिका, कौमुदी, मनोरमादि के पढ़ने से पचास वर्षों में भी नहीं हो सकता।" (सत्यार्थप्रकाश)

तथा १ (एक) वर्ष में सूर्यसिद्धान्तादि[1] में से कोई १ (एक) सिद्धान्त से गणित विद्या जिसमें बीजगणित, रेखागणित और पाटीगणित, जिसको अंकगणित भी कहते हैं, पढ़ें और पढ़ावें। निघण्टु से लेके ज्योतिष पर्यन्त वेदांगों को चार वर्ष के भीतर पढ़ें।

तत्पश्चात् जैमिनिमुनिकृतसूत्र पूर्वमीमांसा को व्यासमुनिकृतव्याख्या सहित, कणादिमुनिकृत वैशेषिकसूत्र रूप शास्त्र को गौतममुनिकृत प्रशस्तपादभाष्य सहित, वात्स्यायनमुनिकृत भाष्य सहित गौतम-मुनिकृत सूत्ररूप न्यायशास्त्र, व्यासमुनिकृत भाष्य सहित पतंजलिमुनिकृत योगसूत्र योगशास्त्र, भागुरिमुनि-कृत भाष्य युक्त कपिलाचार्यकृत सूत्रस्वरूप सांख्यशास्त्र, जैमिनि वा बोधायन आदि मुनिकृत व्याख्या सहित व्यासमुनिकृत शारीरिकसूत्र तथा ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक १० (दश) उपनिषद् व्यासादिमुनिकृत व्याख्या सहित वेदान्तशास्त्र। इन ६ (छः) दर्शनशास्त्रों को २ (दो) वर्ष के भीतर पढ़ लेवें।[2]

तत्पश्चात् बह्वृच, ऐतरेय, ऋग्वेद का ब्राह्मण, आश्वलायनकृत श्रौत तथा गृह्यसूत्र और कल्प-सूत्र पद क्रम और व्याकरणादि के सहाय से छन्द, स्वर, पदार्थ, अन्वय, भावार्थ सहित ऋग्वेद का पठन ३ (तीन) वर्ष के भीतर करे. इसी प्रकार यजुर्वेद को शतपथ ब्राह्मण और पदादि के सहित २ (दो) वर्ष तथा सामब्राह्मण और पदादि तथा गानसहित सामवेद को २ (दो) वर्ष तथा गोपथब्राह्मण और पदादि के सहित अथर्ववेद २ (दो) वर्ष के भीतर पढ़ें और पढ़ावें। सब मिल के ९ (नौ) वर्षों के भीतर ४ (चार) वेदों को पढ़ना और पढ़ाना चाहिये[3]।

पुनः ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद जिसको वैद्यकशास्त्र कहते हैं, जिसमें धन्वन्तरि जी कृत सुश्रुत

---

१. सत्यार्थप्रकाश में महर्षि दयानन्द ने ज्योतिष पढ़ने का विधान दर्शन, वेद तथा उपवेदों के पढ़ने के पश्चात् सब से पीछे किया है और पठनकाल भी एक वर्ष के स्थान में दो वर्ष लिखा है। (देखो तृतीय समुल्लास)

२. पूर्व मीमांसा पर व्यासमुनिकृत व्याख्या, वैशेषिक पर गौतममुनिकृत, न्यायसूत्र पर वात्स्यायनमुनिकृत भाष्य, पतञ्जलि मुनिकृत योगसूत्र पर व्यासमुनिकृतभाष्य, कपिलमुनिकृत सांख्यसूत्र पर भागुरिमुनिकृतभाष्य, व्यासमुनि-कृत वेदान्तसूत्र पर वात्स्यायनमुनिकृतभाष्य अथवा बोधायन मुनिकृत भाष्य वृत्ति पढ़ें पढ़ावें। इन सूत्रों को कल्प अङ्ग में भी गिनना चाहिये।"

......"पूर्वमीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योगसांख्य, और वेदान्त, अर्थात् जहाँ तक बन सके वहाँ तक ऋषिकृत व्याख्या सहित अथवा उत्तम विद्वानों की सरल व्याख्या युक्त छः शास्त्रों को पढ़ें पढ़ावें।"

(सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास)

नोट—इस समय न्यायदर्शन पर वात्स्यायनभाष्य, योगदर्शन पर व्यासभाष्य और वैशेषिकदर्शन पर प्रशस्तपादभाष्य उपलब्ध हैं। शेष तीन दर्शनों के महर्षि दयानन्द जी ने जो भाष्य लिखे हैं वे हमारी दृष्टि में अप्राप्य हैं, अतः ऋषि के ['जहाँ तक बन सके वहाँ तक ऋषिकृत व्याख्या सहित अथवा उत्तम विद्वानों की सरल व्याख्या युक्त छः शास्त्रों को पढ़ें पढ़ावें।"] इस लेखानुसार सांख्यदर्शन पर ब्रह्ममुनिभाष्य, वेदान्तदर्शन पर भी ब्रह्ममुनिभाष्य और पूर्व-मीमांसा पर शबरस्वामिभाष्य पढ़ना पढ़ाना चाहिये, ऐसा हमारा विचार है, हमारे पठनपाठन में इन तीनों दर्शनों पर उपरिलिखितभाष्यों से उत्तम भाष्य दृष्टिगोचर नहीं हुआ। किसी विद्वान् की दृष्टि में इनसे उत्तम भाष्य हों तो हमें कृपया अवश्य ही सूचित करें।

३. "पश्चात् छः वर्षों के भीतर चारों ब्राह्मण, अर्थात् ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मणों के सहित चारों वेदों के स्वर, शब्द अर्थ, सम्बन्ध तथा क्रिया सहित पढ़ना योग्य है।" (सत्यार्थप्रकाश ३ समुल्लास)

और निघण्टु तथा पतंजलि ऋषिकृत चरक आदि आर्ष ग्रन्थ हैं इनको ३ (तीन) वर्ष के भीतर पढ़ें[१]। जैसे सुश्रुत में शास्त्र लिखे हैं, बनाकर शरीर के सब अवयवों को चीर के देखें तथा जो उसमें शारीरिकादि विद्या लिखी है, साक्षात् करें।

तत्पश्चात् यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद, जिसको शस्त्रास्त्र विद्या कहते हैं, जिसमें अंगिरा आदि ऋषि कृत ग्रन्थ हैं, जो इस समय बहुधा नहीं मिलते, ३ (तीन) वर्ष में[२] पढ़ें और पढ़ावें। पुनः सामवेद का उपवेद गान्धर्ववेद, जिसमें नारद संहितादि ग्रन्थ हैं उनको पढ़ के स्वर, राग रागिणी, समय वादित्र, ग्राम, ताल, मूर्च्छना आदि का अभ्यास यथावत् ३ (तीन) वर्ष के भीतर करें[३]।

तत्पश्चात् अथर्ववेद का उपवेद अर्थवेद जिसको शिल्पशास्त्र कहते हैं, जिसमें विश्वकर्मा त्वष्टा और मयकृत संहिता ग्रन्थ हैं, उनको ३ (तीन[४]) वर्ष के भीतर पढ़ के विमान, तार, भूगर्भादि विद्याओं को साक्षात् करें। ये शिक्षा से ले के आयुर्वेद[५] तक १४ (चौदह) विद्याओं को ३१ (इकत्तीस) वर्षों में पढ़ के महाविद्वान् होकर अपने और सब जगत् के कल्याण और उन्नति करने में सदा प्रयत्न किया करें।"

(संस्कारविधि वेदारम्भ प्रकरण)

संस्कारविधि के अनुसार ३१ वर्ष के पाठ्यक्रम की तालिका

समय	पुस्तक नाम
१ एक मास	वर्णोच्चारणशिक्षा
८ आठ मास वा १ वर्ष	अष्टाध्यायी (पाणिनीय)
६ छः मास	दश लकारों के रूप तथा दश प्रक्रिया, लिंगानुशासन, उणादि, गण-पाठ, अष्टाध्यायीस्थ णवुल् और तृच् प्रत्ययाद्यन्त सुबन्त-रूप।
८ आठ मास	पुनः दूसरी बार अष्टाध्यायी, पदार्थोक्ति, समास, शङ्कासमाधान, उत्सर्ग, अपवाद, अन्वय पूर्वक पढ़ावें और संस्कृत भाषण का अभ्यास करवाते जायें।
१८ अठारह मास	पतंजलिमुनिकृत महाभाष्य

योग ३ वर्ष ५ मास वा ३ वर्ष ६ मास अथवा ४ वर्ष के भीतर पढ़ें पढ़ावें।

---

१. "इस प्रकार सब वेदों को पढ़ के आयुर्वेद अर्थात् जो चरक, सुश्रुत आदि ऋषिमुनिप्रणीत वैद्यक शास्त्र है उसको अर्थ, क्रिया, शस्त्र, छेदन, भेदन, लेप, चिकित्सा, निदान, औषध, पथ्य, शरीर, देश, काल और वस्तु के गुण ज्ञान पूर्वक चार वर्ष के भीतर पढ़ें पढ़ावें।"

२. सत्यार्थप्रकाश में धनुर्वेद का अध्ययन काल २ वर्ष लिखा है।

३. सत्यार्थप्रकाश में गान्धर्ववेद तथा अर्थवेद के अध्ययन का तो विधान किया है, किन्तु २१ वर्षों में इनके लिए समय निर्धारित नहीं है।

४. वर्तमान उपलब्ध संस्कारविधि में तीन के स्थान में ६ वर्ष छपा हुआ है। जो कि अशुद्ध छपा है। यदि छः वर्ष पाठ को ठीक माना जाये तो ३१ वर्ष के स्थान में ३४ वर्ष हो जाते हैं। अतः हमने यहाँ छः के स्थान में 'तीन' पाठ रखा है।

५. यहाँ पर आयुर्वेद के स्थान में 'अर्थवेद' पाठ होना चाहिये। क्योंकि शिक्षा से ले के अन्तिम अर्थवेद तक ही ३१ वर्ष पूरे होते हैं, आयुर्वेद तक के पाठ्यक्रम में २२ वर्ष होते हैं। ४ वर्ष व्याकरण, ४ वर्ष अन्य वेदाङ्ग, २ वर्ष दर्शन, ९ वर्ष वेद, ३ वर्ष आयुर्वेद, ४+४+२+९+३=२२ वर्ष।

१८ अठारह मास (१॥ वर्ष)	निघण्टु, निरुक्त तथा कात्यायनादिमुनिकृत कोश आप्तमुनि कृत वाच्यवाचक सम्बंध रूप यौगिक योगरूढि और रूढि तीन प्रकार के शब्दों के अर्थों का यथावत् ज्ञान।
३ तीन मास	पिंगलछन्दः शास्त्र भाष्य सहित
३ तीन मास (½ वष)	श्लोकादिरचनविद्या
१२ बारह मास (१ वर्ष)	यास्ककृत काव्यालंकारसूत्र वात्स्यायनमुनिकृतभाष्य सहित मनुस्मृति, बिदुरनीति १० सर्ग वाल्मीकीय रामायण के किसी प्रकरण के।
१२ बारह वर्ष (१ वर्ष)	सूर्यसिद्धान्तादि में से कोई एक सिद्धान्त से गणित विद्या जिसमें बीजगणित, रेखागणित और पाटीगणित (अंकगणित) पढ़ें।

४ वष में निघण्टु से लेकर ज्योतिष पर्यन्त वेदांग पढ़ें।

२ वर्ष में छः दर्शन तथा ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, मांडूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और बृहदारण्यकोपनिषदें।

३ वर्ष	ऋग्वेद, ऐतरेय ब्राह्मण, आश्वलायन श्रौतसूत्र, आश्वलायनगृह्यसूत्र और कल्पसूत्र पद; क्रम
२ वर्ष	और व्याकरण के सहाय से छन्द, स्वर, पदार्थ, अन्वय भाष्य सहित, यजुर्वेद, शतपथब्राह्मण, पदादि सहित।
२ ,,	सामवेद, सामब्राह्मण और पदादि तथा गान सहित।
२ ,,	अथर्ववेद, गोपथब्राह्मण और पदादि सहित।

९ वर्षों में चारों वेद ब्राह्मणादि सहित।

३ वर्ष	आयुर्वेद, (चरक, सुश्रुत, धन्वन्तरीयनिघंटु)
,,	धनुर्वेद (अंगिरादि ऋषिकृत ग्रन्थ)
,,	गान्धर्ववेद (नारदसंहितादि)
,,	अर्थवेद (विश्वकर्मा, त्वष्टा और मयकृतसंहिता)

१२ वर्षों में चारों उपवेद।

(अति संक्षिप्त)

४ वर्ष में	शिक्षा और व्याकरण
४ ,,	निरुक्तादि ज्योतिष पर्यन्त वेदांग
२ ,,	छः दर्शन और १० उपनिषदें
९ ,,	४ वेद ब्राह्मणादि सहित
१२ ,,	४ उपवेद
३१ वर्ष सर्वयोग	

सत्यार्थप्रकाश के अनुसार २१ वर्ष के पाठ्यक्रम की तालिका

"प्रथम पाणिनि मुनि कृत शिक्षा जो कि सूत्ररूप है। उसकी रीति अर्थात इस अक्षर का यह स्थान यह प्रयत्न यह करण है जैसे 'प' इसका ओष्ठ स्थान, स्पष्ट प्रयत्न और प्राण तथा जीभ की क्रिया करनी करण कहाता है। इसी प्रकार यथायोग्य सब अक्षरोंका उच्चारण माता-पिता आचार्य सिखलावें।" तदनन्तर-

	३ वर्ष में	व्याकरण
१ वर्ष	६ वा ८ मास में	निघण्टु, निरुक्त
	४ मास में	छन्दः शास्त्र, पद्य रचना आदि
	१ वर्ष में	मनुस्मृति, वाल्मीकीय रामायण, और महाभारत के विदुरनीति आदि अच्छे-अच्छे प्रकरण
	२ वर्ष में	छः दर्शन और दस उपनिषदें
	६ वर्ष में	४ वेद ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मणों के सहित।

१३ वर्षों में वेदपर्यन्त पढ़ें पढ़ावें।

४ वर्ष में	आयुर्वेद
२ वर्ष में	धनुर्वेद
(समय नहीं लिखा)	गान्धर्ववेद
(समय नहीं लिखा(	अर्थवेद
२ वर्ष में	ज्योतिष

८ वर्षों में ४ उपवेद और ज्योतिष पढ़ें पढ़ावें।

२१ वर्ष सर्वयोग

"ऐसा प्रयत्न पढ़ने और पढ़ाने वाले करें कि जिससे बीस वा इक्कीस वर्षों के भीतर समग्रविद्या उत्तमशिक्षा प्राप्त होके मनुष्य लोग कृतकृत्य होकर सदा आनन्द में रहें। जितनी विद्या इस रीति से बीस वा इक्कीस वर्षों में हो सकती है उतनी अन्य प्रकार से शतवर्ष में भी नहीं हो सकती।"

(सत्यार्थप्रकाश ३ समु०)

क्योंकि जो महाशय महर्षि लोगों ने सहजता से महान् विषय अपने ग्रन्थों में प्रकाशित किया है वैसा इन क्षुद्राशय मनुष्यों के कल्पित ग्रन्थों में क्यों कर हो सकता है? महर्षि लोगों का आशय जहाँ तक हो सके वहाँ तक, सुगम और जिसके ग्रहण में समय थोड़ा लगे इस प्रकार का होता है और क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहाँ तक ऐसा बने वहाँ तक कठिन रचना करनी जिसको बड़े परिश्रम से पढ़ के अल्प लाभ उठा सके, जैसे पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ होना। और आर्ष-ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना।

सत्याग्रह-माहात्म्यम्

(ले० पण्डित सत्यदेव वासिष्ठ, अध्यक्ष हरयाणा प्रान्तीय आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर)

सत्याग्रही के लक्षण --

सत्यत्यागतपोदयागुणयुतः शौचक्षमाभूषितः,
पापाचाररतस्य दर्पदलनो धीरः सदैवापदि ।
हिंसात्यागरतः सुकर्मणि मतः सेवायुतः सात्त्विको,
यस्त्वेतैर्भुवि भासतेऽतिविमलः सत्यःस सत्याग्रही ॥

सत्य,त्याग,तप और दया के गुणों से युक्त पवित्रता और क्षमा से विभूषित पापाचरण करने वालों के गर्व का खण्डन कर्त्ता, आपत्ति में धैर्यवान्, अहिंसा में तत्पर, सत्कर्म में लीन, सेवाभावी और सात्त्विक भाव से भरा हुआ, इन गुणों से युक्त होकर जो पृथ्वी पर शोभायमान हो रहा है,वही सच्चा सत्याग्रही है।

विद्विट्पञ्चकमङ्गभङ्गजभयो दारिद्र्य-लोकैषणे,
शीतोष्णं धनधान्यबन्धुवनिता वाचश्च मौर्ख्यस्पृशः,
हृद्ये वस्तुनि सक्तिरात्मविमतिर्दर्पः कुलस्यात्मनः,
शक्ताश्च्यावयितुं न यं श्रुतिधरं सत्यः स सत्याग्रही ॥

रूप रस गन्ध स्पर्श और शब्द ये पाँच ज्ञानेन्द्रियों के विषय, हाथ पैर टूट जाने का डर, दरिद्रता लोकैषणा, सर्दी-गर्मी,धन, धान्य, बन्धु, स्त्री, मूदुता पूर्णवचन, प्रियवस्तु के प्रति आसक्ति, (प्रसङ्गवश) अपने मन में उपजी हुई कुबुद्धि, अपना और अपने कुल का अभिमान ये जिस शास्त्रज्ञ को अपने मार्ग से विचलित करने में समर्थ नहीं होते, वही सच्चा सत्याग्रही है।

सत्याग्रह के तप का बहुत बड़ा माहात्म्य है

शत्रोर्दृष्टिपथं न याति तपस्तेजः परं यच्छति,
दिष्ट्या तद्धि निपीड्यमानमनिशं वृद्धिं मुदा गच्छति ।
कल्पान्तेष्वपि नालमस्ति सबलो रोद्धुं सुतप्तं तपः,
सम्मानाय यतस्व भूप ! तपसा कीर्तिं यतः प्राप्स्यसि ॥

यह सत्याग्रहरूपी तप शत्रु की दृष्टि में नहीं आता किन्तु तेजस्वी बनाता है और यदि इसका दमन किया जाता है, तो यह और भी अधिक वृद्धि को प्राप्त होता है। अधिक क्या कहें कल्पान्त में भी कोई भी बलवान् अच्छे, प्रकार से आराधित इस तप को रोकने में समर्थ नहीं है। अतः हे राजन्! इन सत्याग्रही तपस्वियों के संमान का प्रबंध करो, इससे तुम्हारा यश बढ़ेगा।

शमप्रधानैस्तपसाऽतिदीप्तैः,
सञ्चीयते वह्निसमं हि तेजः ।
प्रदाहशीलं हि तपोऽस्ति यस्माद्,
भस्मत्वमायाति नरोऽवमन्ता ॥

क्योंकि शान्ति-प्रधान और तपस्या से दीप्त ऐसा अग्नितुल्य तेज सत्याग्रहियों के द्वारा सञ्चित किया जाता है और यह तप जलाने में समर्थ है। अतः ज इसका अपमान करता है वह भस्म हो जाता है।

सत्याग्रहज्ञानजुषो नरा ये,
तच्च्यावने नालमिहास्ति लक्ष्मीः ।
नूनं दवाग्नेः शमने समर्थो,
वायुः कदाचिन्न समृद्धवेगः ॥

जिन्होंने सत्याग्रह का व्रत लिया है उन मनुष्यों को अपने मार्ग से डिगाने में धन का लोभ समर्थ नहीं है। जैसे दावानल को बुझाने का सामर्थ्य वायु के प्रचण्ड वेग में नहीं होता।

इत्थं प्रभूतैः परियन्त्रणैश्च,
प्रपीड्यमानाः प्रततिं प्रयान्ति ।
दृष्ट्वा मनःक्षोभफलानुबंधं,
निरुन्त्स्व यत्नं विफलं महीप !

इस प्रकार अनेक यन्त्रणाओं से पीड़ित किये गये सत्याग्रही दिनों दिन वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

अतः हे राजन् परिणाम में मन को दुःखित करने वाले इस विफल प्रयास को रोक दो।

आतङ्कयाग्रहिणं राजा, शक्तः स्यात्तदसुक्षये।
किन्त्वजोऽप्यस्य नालं स्याद्,गतिं रोद्धुं शुभावहाम्॥

राजा सत्याग्रही को पीड़ित करके उस के प्राण हरण कर सकता है। पर उसकी कल्याणमयी गति को रोकने में तो ब्रह्मा भी समर्थ नहीं हो सकता।

मर्त्येनाग्रह एव कार्य उचितः,
सत्येन चेत् संयुतो,
दुष्प्रापान् सुलभान् करोति,
भवने धन्योऽस्ति सत्याग्रहः।
धैर्येणाग्रहमेत्य संयतमनाः कीर्तिं परां विन्दते,
निष्पापाग्रहतः प्रमथ्य पिशुनान् स्वर्गे परे राजते॥

यदि कोई सच्ची मांग है तो उस के लिये मनुष्य के द्वारा सत्याग्रह किया जाना उचित है। क्योंकि यह सत्याग्रह बड़ा धन है कि जो अलभ्य को सुलभ बना देता है। धैर्य पूर्वक सत्याग्रह का सहारा लेकर संयमी सत्याग्रही परम यश को प्राप्त करता है और सत्याग्रह से ही दुष्टों का नाश करके स्वर्ग का भागी बनता है।

कल्याणस्यैकभूमिर्विविधमलहरः पावनः पावनानां,
पाथेयं यन्महार्घं सपदि निजपदप्राप्तये प्रस्थितस्य,
विश्रान्तिस्थानमेकं कविवरवचसां जीवनं सज्जनानां
दिव्यः सत्याग्रहोऽयं प्रभवति विदुषां भूतये सर्वदैव॥

यह सत्याग्रह कल्याण की एक मात्र भूमि है अनेक मनःपापों को दूर करने वाला है, पवित्रों में पवित्र है, अपने लक्ष्य की सिद्धि के हेतु निकले हुए मनुष्य के लिये बड़ा ही कीमती राह का कलेवा है, कविवरों की वाणी का एक मात्र विराम स्थान है, सज्जनों का जीवन है और दिव्य अलौकिक है, यह विद्वानों के कल्याण के लिये सदा समर्थ है।

दुर्वासनां मलिनसत्त्वजनस्य भिन्दन्,
निन्दन्सदा दुरितदर्पभवान् विकारान्।
नित्यं विरिञ्चिसदृशैर्लोषितां सुशक्तिं,
सत्याग्रहो वितनुते मनुजेन जुष्टः॥

यह सत्याग्रह मनुष्य के द्वारा सेवित होने पर, मलिन भाव वाले मनुष्य की दुर्वासना को भेदता हुआ, पाप और अभिमान से उत्पन्न विकारों की सदा निन्दा करता हुआ, ब्रह्मा आदि के द्वारा वाञ्छनीय उत्तमशक्ति को नित्य वितरित करता है।

सत्यं नरा वच्मि न पक्षपातात्,
सर्वेषु लोकेषु सुखैकहेतोः।
सत्याग्रहाच्छ्रेष्ठतमोऽस्ति नान्यो,
मिथ्याग्रहान्निम्नतरो न कश्चित्॥

हे मनुष्यो मैं सत्य कहता हूँ, पक्षपात से नहीं, कि तीनों लोकों में सुख प्राप्ति का एक मात्र हेतु सत्याग्रह से श्रेष्ठतम दूसरा नहीं है। तथा मिथ्याग्रह (झूठ के प्रति आग्रह) से बढ़कर नीच नहीं हैं।

निरुध्य दुर्दान्तमनोविकारान्,
प्राज्ञाः! ससंक्षेपमुदाहरन्तु।
सत्याग्रहः स्यद्यादि भूपचित्ते,
कुतः प्राजानां दुरिताग्रहः स्याद्?॥

दुःख से दमन करने योग्य मन के ईर्ष्यादि विकारों को रोक कर हे प्राज्ञजनो! बिना हठाग्रह के सार रूप में कहिये कि यदि राजा के चित्त में सत्य के प्रति आग्रह हो, तो फिर प्रजा का दुराग्रह क्यों कर हो सकता है?

———

ऋषि सन्तान का सदाचार

ले० पं० ताराचन्द 'शर्मा कविस्थल (महेन्द्रगढ़)

थी विख्यात सदाचारी यह ऋषियों की सन्तान
जाने दुनिया सारी मिलते ऐतिहासिक प्रमाण। टेक

राम और लक्ष्मण गये थे वन में संग जनक की जाई
एक दिवस रावण की भगिनी शूर्पणखां वहाँ आई
कुटनीपन के कुटिल भाव कर बुरी तरह बतलाई
रामचन्द्र और लक्ष्मण ने वह बार-बार समझाई
समझाने से ना मानी दिये काट नाक और कान। १।

सुग्रीव ने सीता के गहने राम को जब पकड़ाये
रामचन्द्र ने कहा पहिचानो लक्ष्मण को दिखलाये
नीची कर लई नाड़ वीर ने रोकर वचन सुनाये
पैरों के तो मैं बतलादूं यह ना जायें बताये
पैरों के सिवा कभी ऊपर को किया नहीं मैंने ध्यान। २।

इन्द्रपुरी में गये थे अर्जुन शस्त्र विद्या पाने
एक दिवस इन्द्र की अप्सरा आई पास फुसलाने
दे तुझ जैसा पुत्र अर्जुन लागी करन बहाने
तू माता मुझे पुत्र समझलै लगे वीर फरमाने
हो चुपचाप चली गई एक दम करके बन्द जुबान। ३।

औरंगजेब की जेल में था जब कि दुर्गादास
गुलेनार बादशाह की प्यारी जो बेगम थी खास
कर शृंगार जेल के अन्दर गई दुष्टा बदमाश
दुर्गादास मैं दासी तेरी मेरी करदे पूर्ण आस
"ताराचन्द" कहा चली जा यहाँ से क्यों बनती नादान। ४।

श्रीमती जी हस्पताल में

(लेखकः—सुदर्शनदेव व्याकरणाचार्य गुरुकुल झज्जर)

"घोड़े ने तहनाल जुड़ाई
तो मण्डूकी ने भी टाङ्ग उठाई"।

हिन्दी राष्ट्रभाषा हो गई, अंग्रेजी भी विश्वव्यापी भाषा समझी जाने लगी, उर्दू ने भी पाकिस्तान बनवाकर अपने जीवन का मार्ग निकाल लिया, रूसी चीनी आदि भाषाएँ भी अपने अपने देशों में फूली फली नहीं समातीं। गुजराती, कनाड़ी, तैलगू, बङ्गला मराठी आदि भी शिर उठा रही हैं, तो श्रीमती पंजाबी जी ने भी सोचा कि मैं भी क्यों किसी से पीछे रहूँ ? मैं अपनी तनुलता (शरीर) पंजाब में खूब बढ़ा सकती हूँ, क्योंकि मेरा नाम पंजाबी है, और मुझे पतिदेव भी सुयोग्य मिले हैं जो कि पंजाब के मुख्य मन्त्री हैं। यह मेरे लिये स्वर्णिम अवसर है। हाथ में आया हुआ अवसर जाने नहीं देना चाहिए, क्योंकि—

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।
फिर दौर दौरा दिखाता नहीं॥

ऐसा सोच श्रीमती जी पहिले पहल छोटे स्कूलों में गई और अपनी विशेषता के पुल बांधने लगी। मैं बहुत सरल हूँ, मैं सुन्दर हूँ, मैं जल्दी आ जाती हूँ, इत्यादि इत्यादि। तत्पश्चात् श्रीमती जी ने हाईस्कूलों की ओर पग बढ़ाया। वहाँ भी श्रीमती जी ने अपनी विशेषता के पुल बाँधने में कोई कमी न छोड़ी। अभिप्राय यह है कि श्रीमती जी वहाँ भी खूब पुजने लगी। इस कार्य में श्रीमती जी के पति देव ने भी पूरा पूरा सहयोग किया।

अब श्रीमती जी ने देखा कि मेरे तो यहां बच्चा बच्चा चरण छूता है। बड़े-बड़े पढ़े लिखे लोग भी "की गल है, सेवा दस्सो" आदि बोल चाल में मुझे ही अपनाते हैं, और बड़ा गौरव अनुभव करते हैं। यह देख श्रीमती जी प्रसन्नता की मारी फूलकर कुप्पा हो गई। यत्र तत्र प्रांतों में खूब दौरा करने लगी। प्रसन्नता यहाँ तक बढ़ी कि अपने आपको सम्भाल भी न सकी।

विश्वस्त सूत्रों से विदित हुआ है कि एक दिन श्रीमती जी भ्रमणार्थ जा रही थी। काफी सफर तय करने के बाद श्रीमती जी का विमान आर्यसमाज पर्वत के ऊंचे शिखर से टकरा गया। संचालक ने विमान को तत्काल ही बड़ी सावधानी से सम्भाला। फिर भी श्रीमती जी को बहुत चोट आई और वे मूर्छित हो गई। उन्हें तत्काल हस्पाताल पहुँचाया गया। आजकल उनकी दशा बहुत शोचनीय है। उनके पतिदेव जी भी बहुत चिन्तित हैं कि कहीं श्रीमती जी का स्वर्गवास न हो जाए ?

हमारी मांगें

१. सम्पूर्ण नए पंजाब राज्य में एक ही भाषा योजना लागू होनी चाहिये।
२. शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा के माध्यम का चुनाव पूरी तरह माता-पिता की इच्छा पर छोड़ देना चाहिए।
३. किसी भी विशेष स्तर पर दोनों भाषाओं में से किसी एक भाषा का, द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाया जाना अनिवार्य नहीं होना चाहिये।
४. शासन के प्रत्येक स्तर पर अंग्रेजी भाषा का स्थान हिन्दी को दिया जाना चाहिये।
५. जिले के स्तर या उसके नीचे की सरकार की सब सूचनायें और निर्देश दोनों भाषाओं में होने चाहियें।
६. किसी भी भाषा में प्रार्थना पत्र देने की आज्ञा होनी चाहिये। उनका उत्तर भी उसी भाषा में होना चाहिये।
७. जिले स्तर तथा उसके नीचे सरकारी कागजात दोनों लिपियों में होने चाहियें।

(हिन्दी रक्षा समिति पंजाब)

इनमें से १, ३ और ७ मांगें मुख्य हैं। जिन पर सत्याग्रह चल रहा है। शेष माँगें सरकार मान चुकी है।

॥ ओ३म् ॥

—एक नया ढोंग—

"नया जाल लाये पुराने शिकारी"

"फूंकों से यह चिराग बुझाया न जायगा !"

हिन्दी प्रेमियों द्वारा चलाये गये हिन्दी आन्दोलन की पीठ में छुरा घोंपने के लिये अब विरोधियों ने हिन्दी के सहायक का रूप धारण कर जनता की आँखों में धूल झोंकने का विफल प्रयास किया है। इस का ताजा प्रमाण तथाकथित हिन्दी शिक्षा प्रचारिणी समिति का निर्माण तथा १४-७-५७ को होने वाला अधिवेशन है। सम्भवतः इस प्रकार के साधु वेषधारी······ने सोचा है कि वे जनता को केवल चिकनी-चुपड़ी बातों से तथा वैधानिक उपायों के 'अमोघ अस्त्र' के आविष्कार से शान्त कर सकेंगे। परन्तु जनता को भली प्रकार ज्ञात है, कि आर्यसमाज ने अपना सत्याग्रह का अन्तिम पग उठाने से पहले वैधानिक उपायों का यहाँ तक प्रयोग किया कि कुछ लोग इस शान्तिप्रियता को कायरता मान बैठे।

हम वैधानिक उपायों के प्रयोग का उपदेश देने वाले इन तथाकथित हिन्दी के पक्षपातियों से पूछना चाहते हैं—कि क्या ?

(१) आर्यसमाज ने पूरे दो वर्ष वैधानिक उपायों द्वारा समस्या सुलझाने में नहीं लगाये ?

(२) क्या आर्यसमाज इसी समस्या को शान्ति-पूर्ण उपायों से सुलझाने के लिए अपमानित होकर भी कई बार पंजाब के मुख्य मंत्री सरदार कैरों से नहीं मिला ?

(३) क्या अम्बाला हिन्दी अधिवेशन में बढ़ाये जाने वाले पग को इसी लिये स्थगित नहीं किया गया कि श्रीमन्नारायण ने इसे अपनी सेवाओं से सुलझाने का वचन दिया था ?

(४) क्या इसी सम्बन्ध में हिन्दी प्रेमी श्री धीवर भाई प्रधान कांग्रेस, श्रीमन्नारायण, मौलाना आजाद तथा पं० जवाहरलाल नेहरू से नहीं मिले ?

(५) क्या समस्या को शान्त उपायों से हल करने के लिए जनता के हृदयसम्राट् श्री स्वामी आत्मानन्द जी ने सर्वप्रथम सद्भावना यात्रा आरम्भ नहीं की।

(६) क्या यह सत्य नहीं, कि उपर्युक्त सब प्रयत्नों को सदैव विफलता का मुँह देखना पड़ा और पूज्य स्वामी जी की सद्भावना यात्रा को जानते हुए कैरों साहब चण्डीगढ़ छोड़ कर चले गये।

इस परिस्थिति में हम नहीं समझते कि वैधानिक उपायों से कैसे प्रयत्न किया जाता है ?

हम हिन्दी आन्दोलन को समाप्त करने के स्वप्न देखने वालों से प्रार्थना करते हैं कि वे अपनी आत्मा की हत्या न करें। यदि वे सचमुच हिन्दी पक्षपाती हैं और बहुरूपियापन उनका लक्ष्य नहीं है, यदि उन्हें हिन्दी से कुछ भी प्रेम है तो वे श्री स्वामी आत्मानन्द जी के नेतृत्व में कार्य करें अथव अपने प्रकार से समूचे पंजाब से हिन्दी पर लगे प्रतिबंध को हटवा दें। वे हिन्दी आन्दोलन में रोड़ा न बनें, अपितु अपने प्रशंसनीय कार्यों द्वारा यश कमाएँ अन्यथा जनता यह समझ चुकी है कि अब विरोधियों को हिंदी का विरोधी बनकर आने का साहस नहीं रहा। अतः वे हिंदी के पक्षपाती बनने का ढोंग कर जनता को धोखा देना चाहते हैं।

शेष रही तथाकथित "हिंदी पक्षपातियों" द्वारा हिंदी को उसका उचित स्थान दिलाने की बात, सो हम इस सम्बंध में कहे देते हैं—

न खञ्जर उठेगा न तलवार उन से।
यह बाजू मेरे अजमाये हुए हैं॥

निवेदकः—
भरतसिंह
संयोजकः—हरयाणा हिन्दी रक्षा समिति रोहतक।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन का उग्ररूप

(वेदव्रत सम्पादक सुधारक)

पर्याप्त समय से पञ्जाब में भाषा सम्बन्धी स्वतन्त्रता छीन कर राज्य सरकारने लोकतन्त्रता का अच्छा उदाहरण उपस्थित किया है । जनता द्वारा ही चुन कर भेजे हुए कुछ व्यक्ति राज्यसत्ता के अभिमान में जनता की ही स्वतन्त्रता को छीन लेते हैं और कृतघ्नता का एक उदाहरण सन्मुख रख देते हैं । जिस हाण्डी में खाते हैं उसी में छेद करने वाले ये सत्ताधारी कब तक ऐसी मूर्खता कर सकेंगे ? एक बार खाना हो वह खा सकते हैं किन्तु सच्छिद्र हाण्डी दुबारा न चढ़ाई जा सकेगी यह ध्यान रखें । अर्थात् जनता से भिक्षा मांग मांग कर सत्ता प्राप्त करने वाले कृतघ्नों को जनता कभी क्षमा नहीं कर सकती । अगले निर्वाचन में "अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्" अपने किये का फल अवश्य ही प्राप्त करेंगे ।

भाषा की स्वतन्त्रा छिन जाने पर प्रजा में अत्यधिक क्षोभ उत्पन्न हो गया । आर्यसमाज शान्ति पूर्वक निरंतर तीन वर्ष तक प्रयत्नशील रहा कि किसी भी भान्ति यह समस्या सुलझाई जा सके और माता पिता को अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने की स्वतन्त्रता मिले तथा किसी को भी बलात् (जबरदस्ती) कोई भी भाषा वा लिपि न पढ़ाई जाये । किन्तु आर्यसमाज की इस शांत नीति का सरकार पर कोई प्रभाव न पड़ा, अपितु सरकार आर्यसमाज को बलहीन समझने लगी । जैसा कि महात्मा विदुर ने कहा है—

एक क्षमावतां दोषो द्वितीयो नोपपद्यते ।
यदेनं क्षमया युक्तमशक्तं मन्यते जनः ॥

हिन्दी की रक्षा के निमित्त आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता एवं हिन्दी रक्षा समिति के प्रथम सर्वाधिकारी पूज्यपाद स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने अन्य संन्यासी और वानप्रस्थी साधुओं के साथ सद्भावना यात्रा प्रारम्भ की । सद्भावना यात्रा के द्वितीय सर्वाधिकारी स्वामी रामेश्वरानन्द जी के साथ सरकार ने बर्बरता एवं मूर्खता का व्यवहार किया और सद्भावना यात्रा निष्फल हुई । इसके उपरांत स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने सत्याग्रह की घोषणा करदी । सत्याग्रहियों के साथ सरकार जो अत्याचार कर रही है वे इतने भयंकर एवं अमानुषिक हैं कि जिनको सुन कर रोमाञ्च हो जाता है ।

सत्याग्रहियों को लात, घूंसे मारना, केश और टांग पकड़ कर धूप से तपती हुई सड़कों पर घसीटना, जबरदस्ती मोटरों में ठूंस कर मोटरों को घण्टों धूप में तपाना । पानी-पानी चिल्लाते हुए सत्याग्रहियों को पीने के लिये जल भी न देना । लाठी तथा विशेष हथियारों के ऐसे गुप्त वार करना जिन से सत्याग्रही बेहोश कर गिर पड़े, नाक से खून की धार बह निकले, इसके पूज्य स्वामी संतोषानन्द जी महाराज तथा स्वामी ईशानन्द जी महाराज आदि साधु महात्मा प्रत्यक्ष उदाहरण हैं । यही नहीं सत्याग्रहियों को भयंकर जंगलों में छोड़ आना, जहाँ पर खाने-पीने को कुछ न मिले और रेल मोटर आदि किसी सवारी के मिलने की भी कोई सम्भावना न हो । इसके पश्चात् भी सत्याग्रहियों को मारने पीटने के लिये गुण्डों को छोड़ रखा है । साधु संन्यासियों को इतनी बुरी तरह मारना पीटना और उनका तिरस्कार करना तथा धार्मिक चिह्न ओमृध्वज को छीन कर फाड़ डालना इत्यादि पंजाब पुलिस के जघन्य कृत्य हैं । सत्याग्रहियों ने हमें आकर स्वयं बतलाया है कि इस प्रकार के नीच कर्म करने वाली अधिकतर सिक्ख पुलिस ही है । इसका एक उदाहरण करनाल के एक हिन्दू सिपाही ने उपस्थित किया ।

उसने सभा में कहा कि हम देश की रक्षा के लिये पुलिस में भरती हुए हैं। साधु महात्माओं को मारने पीटने के लिये नहीं। यदि मुझे चण्डीगढ़ भेजा जायेगा तो मैं नहीं जाऊँगा। दूसरे ही दिन उस सिपाही को चण्डीगढ जाने की आज्ञा हुई, किन्तु उसने सर्वथा निषेध कर दिया। इस पर उसको कैद कर लिया गया। इसी प्रकार १३ जुलाई की सूचना है कि पंजाब सरकार ने हिन्दी आन्दोलन से सहानुभूति रखने के सन्देह में कुछ कर्मचारियों को अलग कर दिया और बहुतसों को चण्डीगढ़ से स्थानान्तरित कर दिया।

इसी प्रकार सरकार ने आदेश दिया है कि कोई भी कांग्रेसी हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भाग न ले। यहां तक कि सरकारी कर्मचारियों के घर वाले भी इसमें भाग न लें। कांग्रेस सत्ता विधि-विधानों को ताक में रखकर प्रजातन्त्र में यह सब दुष्कृत्य कर रही है। अपने पाप कर्मों को तिरोहित रखने के लिये तीन दैनिक पत्र 'वीर अर्जुन' 'प्रताप' और 'हिंद समाचार' पर १५ जुलाई से प्रतिबंध लगा दिया है। देख लीजिये कैरोंशाही का नमूना।

हिंदी रक्षा-आन्दोलन के दमन के लिये पंजाब सरकार सभी निकृष्ट साधनों का सहारा ले रही है। किंतु "रोग बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की" के अनुसार सरकार जितना आन्दोलन को दबाने के कुप्रयत्न करती है उतना ही आन्दोलन उग्र रूप धारण करता जा रहा है। सरकार के सभी अत्याचार जलती हुई अग्नि में इन्धन और मिट्टी के तेल तथा पैट्रोल का काम कर रहे हैं। साधु महात्माओं के मारने पीटने और उनके अनादर को देख और सुनकर जनता में अत्यधिक प्रतिशोध भावना बढ़ती जा रही है और विशेषतया हरयाणा की जनता में! क्योंकि हरयाणा की जनता के हृदय में साधु-संन्यासियों के प्रति अत्यधिक श्रद्धा और प्रेम है। हरयाणा के लोगों में सरकार के अमानुषिक और अवैधानिक अत्याचारों के प्रति इतनी क्रोधाग्नि उत्पन्न हो चुकी है, उस अग्नि को और बढ़ने का अवसर दिया गया तो कुछ ही दिनों में देखते-देखते अत्याचारी सरकार उस क्रोधाग्नि में भस्मसात् हो जायेगी और हिंदी रक्षा-आन्दोलन को समाप्त करने के स्वप्न देखने वाले स्वयं समाप्त हो जायेंगे।

यह आन्दोलन सर्वथा उचित है, यह समस्त हिंदी-जनता की सम्मिलित आवाज है, इस आवाज को दबाने की शक्ति न कैरों सरकार में है और न भारत सरकार में। यह आन्दोलन अब सार्वदेशिक रूप धारण कर चुका है। अभी तक नेहरू जी के विदेश से लौटने की प्रतीक्षा में आन्दोलन को तीव्र न कर संगठित किया जाता रहा। अब प्रधान मन्त्री पं० नेहरू ने इसके विषय में कुछ भी न करने के लिए कहा है। लोग नेताओं के आदेश की प्रतीक्षा में बैठे हैं। आदेश मिलते ही जत्थे पर जत्थे सत्याग्रह के लिये पहुंच जायेंगे। यही नहीं, बहुत से सरकारी सर्विस में लगे हुए व्यक्ति भी इसी प्रतीक्षा में हैं कि हमें कब सत्याग्रह में जाने का आदेश मिलता है और हम कब अपनी नौकरी से त्यागपत्र दें। क्योंकि अभी तक हिन्दी रक्षा-आन्दोलन के संचालकों ने इस प्रकार का कोई आदेश नहीं दिया है। अपितु अभी तक उनको नौकरी न छोड़ने की ही प्रेरणा दे रहे हैं।

हरयाणा-प्रान्त को अभी तक लोगों ने पिछड़ा प्रान्त बनाये रखा है। अब हरयाणा जाग गया है। हरयाणा वालों को पथ-प्रदर्शक सुयोग्य नेता मिल गये हैं और हरयाणा अपने नेताओं के आदेश पर तन, मन, धन का बड़े से बड़ा बलिदान देने के लिये तैयार हो चुका है। हरयाणे के साथ-साथ समस्त पंजाब के हिन्दू भी अपने अधिकारपूर्ण एवं गौरव-शाली जीवन के लिये संगठित हो चुके हैं, चाहे वे किसी भी मत वा सम्प्रदाय, दल, धर्म वा जाति के हों, किन्तु अब छोटे-छोटे अवान्तर भेदभावों को छोड़कर हिन्दुत्व के सूत्र से संगठित हो चुके हैं। संगठन में बड़ा बल है, संगठित हुवा समाज क्या नहीं कर सकता ?

बहूनामप्यसाराणां समवायो हि दुर्जयः।
तृणैरावेष्ट्यते रज्जुर्येन नागोऽपि बद्ध्यते ।।

आर्य वीरो ! आगे बढ़ो !!

[ले० ब्र० महादेव सि० शास्त्री, गुरुकुल झज्जर]

"प्रेता जयता नरः उग्रा वः सन्तु बाहवः"

सत्याग्रह का बिगुल बजे आज डेढ़ मास हो चुका है। इस सत्याग्रह की प्रगति दिन दुगनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। इस अल्पकाल में हजारों सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह किया, सैंकड़ों को बुरी तरह पीटा गया। यहाँ तक भयङ्कर से भयङ्कर अरण्यों में सत्याग्रहियों को छोड़ा गया, विषैले सांपों पर फेंका गया, नहरों में बहाया गया, परन्तु यह हिन्दी माता के सच्चे सपूत आर्यवीर सरकार की कूटनीति से कहाँ डरने वाले थे।

कहा जाता है कि कैरों साहब ने उच्च सत्ता के आगे कहा कि मैं "इस आन्दोलन को १५ दिन में ही कुचल डालूंगां,, परन्तु आन्दोलन पूर्व से अधिक जोरों पर है। और कैरों सरकार की निद्रा को हराम कर रहा है। सरकार को याद रखना चाहिये कि वह अपनी नीति को तत्काल बदल डाले नहीं तो सरकार को लेने के देने पड़ेंगे। कैरों साहब का कहना है कि "यह आन्दोलन केवल ४-५ जिलों में है" परन्तु उन्हें विदित होना चाहिये कि ४-५ जिलों में नहीं किन्तु यह आन्दोलन पंजाब को लांघकर अखिल भारतीय आन्दोलन हो गया है। भारत ही क्या यह तो विदेशों में भी फैल रहा है। देश के कोने-कोने से यही ललकार आ रही है, कि—"भारत का बच्च-बच्चा होगा हिन्दी भाषा पर बलिदान।" ललकार ही ललकार नहीं सभी प्रान्तों से आर्यवीर सत्याग्रह के लिए अपने-अपने जत्थे बनाकर चण्डीगढ़ पहुँच रहे हैं और हजारों की संख्या में अपने नेताओं की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे हैं, ऐसी अवस्था में क्या यह कहा जा सकता है कि सत्याग्रह स्वयमेव बन्द हो जायेगा। कदापि नहीं ! कदापि नहीं !! कदापि नहीं !!!

आर्यों ने यह पग बढ़ाया है, यह बहुत सोच समझ कर ही बढ़ाया है, इसको आगे ले जाना हमारा काम है। इसलिए हे आर्यवीरों ! समय को न चूको "गया वक्त फिर हाथ आता नहीं," के अनुसार इस प्रकार का अमूल्य समय बार-बार नहीं आया करता। यह समय तो ईश्वर कृपा से आर्यवीरो की परीक्षा के लिए आया है। याद रखना आर्यवीरो ! यदि इस समय को हमने हाथ से खो दिया तो हमने अपने हाथों से अपने पैरों पर कुठाराघात किया, और सदा के लिए हमारा अस्तित्व समाप्त हो जायेगा, यह ही नहीं हमारी भावी सन्तान हमें कोसेगी, अतः आर्य्यवीरो उठो और अपने तन मन धन से इस आन्दोलन को पुष्ट करो। हे वीरो ! यह पांचभौतिक शरीर तो नष्ट होना है, गल सड़ कर मरने से लाखों गुणा अच्छा यह है कि इस शुभ यज्ञ में अपने आहुति दें।

यदृच्छया चोपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
सुखिनः क्षत्रिया पार्थ लभन्त युद्धमीदृशम् ।।१।।
गीता २।१।२।।

के अनुसार आर्यवीरों के लिए स्वर्ग द्वार खुल गया है। आर्यवीरो ! जिसके लिए तुम्हारा जन्म हुआ था जिसके लिए वीर क्षत्राणी ने तुम्हें जन्म दिया था वा वीर क्षत्रिय जिसकी राह देखते हैं, वह समय ईश्वर की कृपा से आ पहुंचा है। स्वर्ग का द्वार खुल गया है। इसलिये वीरो ! आगे बढ़ो और अपनी मांगों को प्राप्त करो। वेद भी यही कहता है।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।।

हे वीरो ! उठो, अब सोने का समय नहीं, अपने लक्ष्य की ओर बढ़ो, उसको प्राप्त करने लिए आर्यवीरो ! तुम्हारी भुजाओं में बल है। वेद भगवान् यही कहता है:—

प्रेयता जयता नरः उग्राव: सन्तुबाहवः ।। अ. ३।१६।१।

अर्थात् हे आर्यवीरो ! उठो, विजय प्राप्त करो, क्योंकि तुम्हारी भुजाओं में उग्र बल है, दुश्मन का दमन करने की शक्ति है; तो क्या फिर आर्यवीरो ! सोते रहोगे इस प्रकार समय को खोते रहोगे ? नहीं ! नहीं ।।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥ २।३७॥

इसके अनुसार हे वीर यदि तू इस धर्म युद्ध में काम आयेगा तो स्वर्ग को प्राप्त होगा। यदि जीवित रहेगा तो सुख का उपभोग करेगा। आर्यवीरो! दोनों ओर तुम्हारा कल्याण है। तो क्या यह स्वर्ण अवसर खोवोगे। याद रखना यदि यह स्वर्ण अवसर खो दिया पछताना गोगा।

"जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया फिर पछताये क्या होवत है।" जब समय बीत जायेगा तो देखते रहना और अपनी मूर्खता पर पछताना। हे आर्यवीरो! पश्चात्ताप का अवसर न देकर इस सत्याग्रह यज्ञ में आहुति दे दो। और अपने पूर्वजों की लाज रखो।

हे आर्यवीरो! इस समय सरकार का अत्याचार वा बर्बरता चरम सीमा पर पहुंच गई है। हमारे पूज्यपाद संन्यासी वर्ग का अपमान करना तथा बुरी तरह पीटना, पूजनीय माताओं के साथ भी इस प्रकार दुर्व्यवहार करना, और सबसे अधिक अन्याय जो हमारी प्राणों से प्यारी आर्य जाति के प्रतीक ओम्ध्वजा का इस प्रकार अपमान करना आदि अपमानों को क्या तुम ऐसे ही सहते रहोगे, वा आर्य जाति के सपूत कहलाओगे, धिक्कार है हमें हमारे होते हुए यह सरकार इस प्रकार हमारे पूजनीयों का अपमान करे तथा ओमूध्वज को फाड़ डालने का सहस करे और हम देखते रहें। इस अपमान का बदला लेने के लिये उठो, वीरो उठो और अपने-अपने स्थान से आर्यवीरो के जत्थों को लेकर चण्डीगढ़ की ओर बढ़ो। अब अधिक देर करने का समय नहीं क्योंकि विजयलक्ष्मी हमारा चरण छूने को तथा विजयमाला डालने को तैयार है। परन्तु देरी हैं तो आर्यवीरों के तैयार होने की।

(पृष्ठ ७ का शेष)

वह किसी भी भाषा को पढ़ने के लिये चुन लेती। परन्तु अनिवार्यतः गुरुमुखी का लादना यह हिन्दी की सेवा है? आश्चर्य न होता—यदि श्री ढेबर जी यह कहते कि मा० तारासिंह ने यह भाषा फार्मूला मनवा कर हिन्दी के लिए सङ्कट खड़ा कर दिया है तो कहीं युक्तियुक्त था। ऐसी ही श्री ढेबर से आशा थी। हिन्दी प्रेमियों में श्री ढेबर के वक्तव्य की चर्चा है, उन्हें स्पष्टीकरण करना चाहिये।

हमारे प्रधान मन्त्री श्री नेहरू जी ने हिन्दी-रक्षा समिति पंजाब के अध्यक्ष श्री स्वामी आत्मानन्द जी के नाम लिखे अपने अनूठे पत्र में स्वीकार किया है कि "गुरुमुखी लिपि में अक्सर अक्षर हिन्दी जैसे हैं। दो-चार अक्षरों का भेद है। समझदार व्यक्ति कुछ घण्टों में ही इसको सीख सकता है।"

जब इतनी समता है और समझने में इतनी सरलता है कि दो-चार घण्टों में सीखा जा सकता है। तो समझदार व्यक्ति यही कहेगा कि पुनः क्यों पार्थक्य को उत्पन्न किया जा रहा है? क्यों न गुरुमुखी के स्थान में हिन्दी राष्ट्रभाषा को पढ़ाया जाये? जिससे अपव्यय भी बचे और राष्ट्रीय तत्त्वों को प्रोत्साहन मिले। प्रान्तीयता समाप्त हो।

माननीय नेहरूजी जैसे सर्वप्रिय व्यक्ति को अपने प्रभाव को काम में लाकर इस पार्थक्यता को दूर करा देना चाहिये। पुनः हिन्दी आन्दोलन अपने आप समाप्त हो जायेगा।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली

(ले० आचार्य भगवानदेव)

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से मेरा अभिप्राय उस आर्ष-शिक्षण प्रणाली से है जिसका उल्लेख महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश और संस्कारविधि में किया है। ऐसे गुरुकुल हरयाणा ही नहीं, अपितु समस्त भारतवर्ष में भी बहुत कम हैं और जो हैं उनका भी दिन-प्रतिदिन अभाव होता जा रहा है।

हरयाणे में स्कूल बहुत अधिक हैं, लगभग सभी बड़े ग्रामों में स्कूल विद्यमान है। यहाँ के लोग स्कूलों में दान भी खूब देते हैं, एक-एक ग्राम ने स्कूल बनाने के लिए दो-दो लाख रुपये दिये हैं, किन्तु सब अन्धकार की ओर लेजाने के लिए, आत्मघात और राष्ट्रघात करने के लिए हैं। स्कूल कालिजों में पढ़कर देश के नवयुवक प्राचीन संस्कृति और सभ्यता में श्रद्धा नहीं रखते। वेष-भूषा, आहार-व्यवहार सब में पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण करने लग जाते हैं। तन से भारतीय किन्तु मन से पाश्चात्यों के दास बन जाते हैं। अपना तन, मन, धन सब कुछ लुटाकर बेकारों की संख्या में वृद्धि करते रहते हैं। दूध के स्थान पर अण्डा, मछली, माँस मद्य, तम्बाकू आदि का सेवन करने लग जाते हैं। इस स्कूल शिक्षा प्रणाली से भारत का कभी कल्याण सम्भव नहीं, अपितु विनाश ही होगा।

इस वर्तमान शिक्षा प्रणाली के भयंकर दुष्परिणामों को देखकर कोई भी भारतीय सन्तुष्ट नहीं। राष्ट्रपति से लेकर चपरासी तक सभी इसकी कटु आलोचना करते हैं। सम्पूर्ण देश किंकर्तव्य विमूढ़ हो रहा है, किसी को शिक्षा प्रणाली दिखलाई नहीं पड़ती। अब समय है आर्यों का पथ प्रदर्शक बनने का। आर्यों को चाहिए कि सभी स्कूलों और कालेजों को तुरन्त बन्द कर दें और उसके स्थान में आर्ष पद्धति के अनुसार गुरुकुलों का संचालन करें, तभी देश का कल्याण हो सकता है। जब तक विद्यार्थी चौबीस घण्टे सदाचारी विद्वान् गुरुओं की देख-रेख में नहीं रहता, तब तक विद्वान् ब्रह्मचारी और धर्मात्मा नहीं बन सकता। गुरुकुलों में ही विद्वान् सदाचारी, बलवान् ब्रह्मचारी और सच्चे देश भक्त नागरिक तैयार किये जा सकते हैं। आर्यसमाज के कार्य वेद प्रचारादि के लिए गुरुकुलों से ही सुयोग्य विद्वान् प्राप्त हो सकते हैं। स्कूलों से कोई आशा नहीं।

अपने सुपुत्रों को गुरुकुल में पढ़ाकर ब्रह्मचारी का पालन करवाना और देश सेवा के लिए तैयार करना सर्वोत्तम कार्य है। आर्यों को चाहिए कि अपने सभी पुत्रों को गुरुकुल में पढ़ावें, अपना सब दान गुरुकुलों को ही दें। यदि सभी आर्य अपने पुत्रों को गुरुकुलों में पढ़ावें और अपना सब दानादि केवल गुरुकुलों को ही दें तो आर्यों के दान से ही अनेक गुरुकुल-विश्वविद्यालय चलाये जा सकते हैं, किन्तु आर्यों का सबसे बड़ा दोष यह है कि ये अपने बच्चों को गुरुकुलों में नहीं पढ़ाते, अतएव उनकी सहायता भी नहीं करते।

हरयाणा में मटिण्डू, भैंसवाल, झज्झर, टटेसर, घरोण्डा, गणियार, खानपुर, इन्द्रप्रस्थ, कुरुक्षेत्र आदि एक दर्जन गुरुकुल किसी न किसी रूप में चल रहे हैं, किन्तु इन सब में एक हजार से अधिक विद्यार्थी नहीं, यह अवस्था है ऋषि दयानन्द के भक्तों की हरियाणा में। अन्यथा एक-एक गुरुकुल में हजार-हजार विद्यार्थी होने चाहियें। स्कूल आदि में हिन्दी संस्कृतादि कुछ नहीं पढ़ाई जाती। यदि अपने पुत्रों को विद्वान् बनाना है तो गुरुकुलों में आर्ष पाठविधि के अनुसार पढ़ाना चाहिए। महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है—"जितनी विद्या इस रीति (आर्षपाठविधि) से बीस-इक्कीस वर्षों में हो सकती है उतनी अन्य प्रकार से शत वर्ष में भी नहीं हो सकती।" (सत्यार्थप्रकाश समु० ३)

स्वाध्यायोपयोगी उत्तम साहित्य

उत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय करके अपने जीवन को पवित्र करें

१. चार वेद मूल संहिता १७)
२. चार वेदों का भाषाभाष्य (पं० जयदेव कृत) सम्पूर्ण सैट १४ खण्डों में ८४)
३. सत्यार्थप्रकाश (महर्षि दयानन्द) १=)
४. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका („ „) २॥)
५. संस्कार विधि („ „) ॥=)
६. पंचमहायज्ञविधि („ „) ।)
७. गोकरुणानिधि („ „) =)
८. आर्योद्देश्यरत्नमाला („ „ -)
९. अष्टाध्यायीभाष्य १, २ भाग („ „) ७)
१०. वेदाङ्गप्रकाश सम्पूर्ण १४ भाग („ „) १०।)
११. दयानन्ददिग्विजयम् (मेधाव्रताचार्य) ९)
१२. दयानन्द लहरी („ „) ॥)
१३. विरजानन्दचरितम् („ „) १)
१४. नारायणस्वामिचरितम् („ „) ।॥)
१५. प्रकृतिसौन्दर्यम् (नाटकम्) („ „) १।)
१६. ब्रह्मचर्यशतकम् („ „) ॥=)
१७. ब्रह्मचर्यमहत्त्वम् („ „) ।)
१८. ईशोपनिषद् काव्यम् („ „) ।=)
१९. कुमुदिनीचन्द्रः („ „) ४)
२०. सन्ध्या अष्टाङ्गयोग (स्वामी आत्मानन्द) ।॥)
२१. वैदिक गीता („ „) ३)
२२. आदर्श ब्रह्मचर्य („ „) ।)
२३. कन्या और ब्रह्मचर्य („ „) ≡)
२४. विरजानन्द चरित (स्वामी वेदानन्द) १।)
२५ पंचमहायज्ञविधि व्याख्या („ „) १)
२६. संस्कृत भाषा क्यों पढ़ें („ „) ॥)
२७. आसनों के व्यायाम सचित्र (देवव्रत) ॥)
२८. ब्रह्मचर्य ही जीवन है (शिवानन्द) १॥)
२९. नाड़ीतत्त्वदर्शन (सत्यदेव वसिष्ठ) ५)
३०. सन्मार्ग दर्शन (स्वा० सर्वदानन्द) ४)
३१. महर्षि दयानन्द का प्रामाणिक जीवन चरित्र दो भागों में ६)+६)= १२)
३२. दयानन्द दिव्यदर्शन ॥)
३३. वैदिक धर्म परिचय (जगदेवसिंह शास्त्री) ॥=)
३४. छात्रोपयोगी विचार माला („ „) ॥=)
३५. राष्ट्रनिर्माण में गुरुकुल का स्थान ।=)
३६. सत्यपथ (देवराज) ॥)
३७. „ „ धर्म का स्थान (देवराज) ।-)
३८. सत्याग्रहनीति काव्य (सत्यदेव) १)

—०—

आचार्य भगवान्देव जी द्वारा लिखित साहित्य

१. ब्रह्मचर्य के साधन १, २ भाग ।-)
२. „ „ दन्तरक्षा ३ भाग ≡)
३. „ „ व्यायामसन्देश ४ भाग १)
४. „ „ सन्ध्यायज्ञादि ५ भाग ।=)
५. „ „ सत्सङ्ग-स्वाध्याय ७, ८ भाग ॥)
६. „ „ भोजन ९ भाग ॥=)
७. ब्रह्मचर्यामृत =)॥
८. स्वप्नदोष की चिकित्सा =)॥
९. बालविवाह से हानियाँ -)
१०. व्यायाम का महत्त्व ≡)
११. रामराज्य कैसे हो ? ≡)
१२. पापों की जड़ शराब ≡)
१३. हमारा शत्रु तम्बाकू का नशा ।=)
१४. नेत्ररक्षा ≡)
१५. बिच्छू विषचिकित्सा =)

कमीशन दर अपने प्रकाशन पर

५) से नीचे कुछ नहीं।
५) से १०) तक की पुस्तकों पर ६।) प्रतिशत
१०) से २०) तक की „ „ १२॥) „
२०) से १००) तक „ „ २५) „
१०० से ऊपर ३०) „

विशेष विवरणार्थ हमारा सूचिपत्र मुफ्त मंगवाइये।

गुरुकुल क्या वस्तु है इस विषय में हमारा प्रकाशन "राष्ट्र निर्माण में गुरुकुल का स्थान" पुस्तक पढ़ें।

पता—व्यवस्थापक—

पता—'विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय', पो० गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक (पञ्जाब)

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला (रजि०) गुरुकुल झज्जर की
* अचूक औषधियाँ *

१-नेत्र ज्योति सुर्मा

लगाइये और नेत्र ज्योति पाइये। इसके लगाने से आँखों के सब रोग जैसे आँख दुखना, खुजली, लाली, जाला, फोला, रोहे, कुकरे, पास का कम दीखना (शार्ट साइट) दूर का कम दीखना (लांगसाइट), प्रारम्भिक मोतियाबिन्द आदि दूर हो जाते हैं। आंखों के सब रोगों की रामबाण औषधि है। यही नहीं किन्तु लगातार लगाने से दृष्टि (बीनाई) को तेज तथा आँखों को कमल की तरह साफ स्वच्छ रखता है। बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। प्रतिदिन जिसने भी लगाया उसी ने मुक्तकण्ठ से इस सुर्मे की प्रशंसा की है।

२-नेत्रामृत

लाली, कड़क, धुन्ध, ढलकवां, गरदोग़ुब्बार, रोहे तथा भयंकरता से दुखती आंखों के लिए जादू भरा विचित्र योग है।

मूल्य बड़ी शीशी ॥=) छोटी शीशी ।=)

३-स्वप्नदोषामृत रस

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषध इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे पीछे या बीच में वीर्य आने को बन्द कर देगी। मूल्म ५) रुपये

सेवन विधि—प्रातः सायं एक-एक गोली गोदुग्ध या शीतल जल के साथ। विशेष—यदि स्वप्नदोष का रोगी अत्यन्त दुर्बल हो तो दूध के साथ और हृष्ट-पुष्ट हो तो जल के साथ सेवन करें। ब्रह्मचारी को जल के साथ सेवन करना चाहिए।

४-स्वप्नदोषामृत चूर्ण

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषधि इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मू में आगे-पीछे या बीच में वीर्य के आने को बन्द कर देती है।

मूल्य २) एक मास

५-रोहितारिष्ट

यह अरिष्ट पुराने और बढ़े हुए प्लीहा (तिल्ली) यकृत (जिगर) के लिये अद्वितीय औषध है। जब किसी औषध से यह रोग ठीक न होते हों तो इसका चमत्कार (जादू) प्रयोग करके देखना चाहिये। यह उदर पीड़ा (गोला, वायु गोला आदि), पेट में वायु का भरना, अजीर्ण, भूख न लगना, मलबद्धता आदि सभी पेट के रोगों को दूर करता है। सदैव रहने वाले मलबन्ध (कब्ज) को दूर करने की यह एक ही औषध है। यह जठराग्नि को दीप्त करता है। पाचन शक्ति को खूब बढ़ाता है। यह आयुर्वेद की रामबाण औषध है। मूल्य २)

६--कर्णरोगामृत

कान में पीप आना, बहरापन और प्रत्येक प्रकार की कर्ण पीड़ा को दूर करने के लिए यह अति उत्तम औषध है। प्रतिदिन सेवन करने से कानों का कोई रोग नहीं होता और मस्तिष्क की शुष्कता दूर होती है। मूल्य एक शीशी १)

७--व्रणामृत

भयंकर फोड़े, फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा अनेकों वर्षों के नासूर (सरह) आदि रोगों की अद्वितीय औषधि है। दिनों का काम घण्टों में, घण्टों का काम मिनटों में करती है।—मूल्य एक शीशी १)

८-स्वास्थ्यवर्धक चाय

यह चाय स्वदेशी, ताजी एवं शुद्ध जड़ी-बूटियों से तैयार की गई है। वर्तमान चाय की भांति यह नींद और भूख को न मारकर खांसी, जुकाम, नजला, सिरदर्द, खुश्की अजीर्ण, थकान, सर्दी आदि रोगों को दूर भगाती है। मस्तिष्क एवं दिल को शक्ति देती है। मूल्य १ छटांक ।-)

९-दन्तरक्षक मंजन

दाँतों से खून वा पीप का आना, दाँतों का हिलना, दाँतों के कृमि रोग, सब प्रकार की दाँतों की पीड़ा तथा रोगों को दूर भगाता है और दाँतों को मोतियों के समान चमकाता है।—मूल्य एक शीशा ॥)

१०—पाचनामृत

मन्दाग्नि, अरुचि, अजीर्ण (कब्ज), पेट का फूलना, पेट का भारीपन, शूल, जी मिचलाना, वमन, खट्टी डकार आदि पेट के सभी रोगों को नष्ट कर भूख को बढ़ाता है। आंतों के सब रोगों को दूर कर पाचन शक्ति को बल देता है। पुराने से पुरानी तिल्ली जिगर की अचूक औषधि है। मूल्य एक शीशी ४)

११—पामामृत (दाद खुजली)

यह सब ही खुजली दादादि चर्म रोगों के लिये अत्युत्तम औषध है। खुजली सूखी हो या पकने वाली यह सब प्रकार की खुजली के लिये रामबाण औषधि है। इसके प्रयोग करने के पश्चात् किसी अन्य औषधि की आवश्यकता नहीं। दाद को जड़ से नष्ट करती है। मूल्य २)

१२—बाल रोगामृत

बालकों के हरे-पीले दस्त, अपच, अजीर्ण (कब्ज) अरुचि, दांत निकलते समय के रोग, सूखिया मसान रोग, वमन, निर्बलता, ज्वर आदि सभी रोगों को दूर कर बालकों को मोटा करता है। अतः प्रत्येक गृहस्थी घर में रखें। मूल्य एक शीशी ५)

१३—संजीवनी तैल

मूर्च्छित लक्ष्मण को चेतना देने वाली इतिहास प्रसिद्ध बूटी से तैयार किया गया यह तैल घावों के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुये घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भर कर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है। मू० ५)

सेवन विधि—फाये में भर कर बार-बार चोट आदि पर लगायें।

१४—च्यवनप्राश

इसी ऋतु के ताजे आंवले से तैयार किया गया स्वादिष्ट, सुमधुर और एक दिव्य रसायन (टानिक) है। जिस का सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सब के लिये अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक, सभी हृदय रोगों की अद्वितीय औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा अन्य सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका (निरन्तर) नसेव समूल नष्ट करता है। यह निर्बल को बलवान और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है।

मूल्य ७) सेर, ५सेर लेने पर ६) सेर

१५—बलदामृत

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आ जाता है। पीनस (सदा रहने वाले जुकाम और नजले) की महौषध है। वीर्य वर्द्धक, कास (खांसी) नाशक, राजयक्ष्मा (तपेदिक), श्वास (दमा) के लिये लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करती तथा अत्यन्त रक्त वर्द्धक है। निर्बलों को बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ट बनाती है। यह अपने ढङ्ग की एक ही औषध है। मूल्य ५) प्रति शीशी

१६—ज्वरामृत

यह नये व पुराने सभी प्रकार के ज्वरों की रामबाण औषध है। बिगड़े हुये मलेरिया, विषम ज्वर को दूर करने में अद्वितीय औषध है। कुनेन भी इसके आगे तुच्छ औषध है। कुनेन का सेवन सिर दर्द, स्वप्न-दोष, प्रमेह आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है, किन्तु यह औषध सब दोषों को दूर करती है तथा ज्वर की प्रत्येक अवस्था में दी जा सकती है। मलेरिया काल में सेवन की हुई मलेरिया को नहीं आने देती। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, सेवन करें और लाभ उठावें। मूल्य एक शीशी ५)

पता—आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला पो० गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक (पंजाब)

रजि० नं० ई० पी० ५०

'सुधारक' का आगामी विशालकाय विशेषाङ्क
'बलिदानाङ्क'

—०—

इस विशालकाय विशेषांक की तैयारी प्रारम्भ हो चुकी है। चित्रों के लिये ब्लाक बनवाये जा रहे हैं। सुधारक का जो अंक आपके हाथ में है इसी आकार (साइज) के ५०० पांच सौ से भी अधिक पृष्ठ तथा १०० से अधिक रंगीन चित्र इस बलिदानांक में दिये जायेंगे। सरल भाषा और सुन्दर छपाई होगी।

इस विशेषांक में लगभग २०० दो सौ, उन वीरों के जीवन और इतिहास की यशोगाथा लिखी जायेगी जो अपनी जन्मभूमि भारत की पराधीनता की शृङ्खलाओं को विशृङ्खलित करने के लिये बृटिश साम्राज्यवाद की जड़ काटने के लिये, स्वतन्त्रता की लहर को देश-देश के कोने-कोने में पहुँचाने के लिए, तनमन में क्रान्ति की धूम मचाकर भारत को स्वाधीन बनाने के लिए हँसते-हँसते फांसी के तख्तों पर झूल गये। कारावास की भीषण विपत्तियों को सहन करते हुए भी जो बेड़ी तथा हथकड़ियों को आभूषण बनाकर झूम-झूम कर मस्ती से आजादी के गाने गाया करते थे।

जिस स्वतन्त्रता को देखकर हम प्रसन्नता से फूले नहीं समाते, वह कितने बलिदानों के पश्चात् मिली है, कितने नवयुवकों ने अपने अमूल्य यौवन की आहुति दी है? यह सब इस "बलिदानांक" में पढ़िये। यह अंक अपने ढंग का अपूर्व तथा अद्वितीय होगा।

इस विशेषाङ्क का मूल्य डाक व्यय सहित १०।।) होगा। किन्तु सुधारक के ग्राहकों को अग्रिम धन (पेशगी) भेजने पर ५।।) में ही घर बैठे ही रजिस्ट्री द्वारा मिल जायगा। सुधारक का ग्राहक बनने के लिए २) धनादेश से भेजें। जिन ग्राहकों का धन अगाऊ न मिलेगा उनको पीछे ८।।) में ही अंक प्राप्त हो सकेगा।

अंक परिमित संख्या में ही प्रकाशित होगा, हो सकता है कि समाप्त हो जाने पर पीछे आपको पछताना पड़े। अतः ५।।) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें। इस मूल्य में ।।) डाक व्यय भी सम्मिलित है।

धन भेजने का पता—

व्यवस्थापक "सुधारक"
पो० गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक (पंजाब)

ग्राहक संख्या
सेवा में श्री सम्पादक जी
गुरुकुल पत्रिका
पो० गुरुकुल कांगड़ी
जि० हरिद्वार

प्रकाशक आचार्य भगवान्देव गुरुकुल झज्जर ने सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली में मुद्रक जगदेवसिंह शास्त्री 'सिद्धान्ती' के प्रबन्ध से छपवाया।

वर्ष ५ अङ्क २ | गुरुकुल झज्जर (रोहतक) आश्विन २०१४ वि० अक्तूबर १९५७, दयानन्दाब्द १३३ | वार्षिक मूल्य २) एक प्रति बीस नये पैसे

क्रान्तिकारी वीर नवयुवक राजेन्द्रनाथ लहरी

श्री राजेन्द्र लहरी देश के इने गिने होनहार युवकों में से थे। स्वभाव के अत्यन्त साधु और निर्भीक थे। यह मृत्यु से कभी भयभीत न होते थे। फांसी के दिन स्वयं हंसते-हंसते फाँसी के फन्दे को अपने गले में डाल लिया। आप कहा करते थे—"हमारे लिये मृत्यु शरीर का
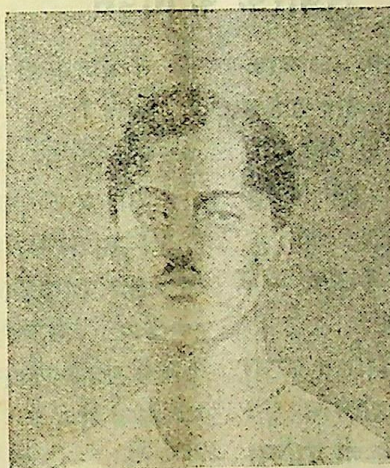
परिवर्तनमात्र है। पुराने कपड़ों को फैंक कर नये कपड़े पहनना मात्र है। १७ दिसम्बर १९२७ ई० को गांडा जेल में आप को फ़ांसी पर लटका ही तो दिया। आप अच्छे "शायर" भी थे। मृत्यु के समय आपने कहा—

हम सरेवार को जो वशद शौक घर करते हैं।
ऊंचा सर कौम का हो नजर ये सर करते हैं॥
सूख न जाये कहीं पौधा यह आजादी का।
खून से अपने इसे इसलिये तर करते हैं॥

संस्थापक व सम्पादक—ब्र० भगवान्देव आचार्य गुरुकुल झज्जर
सम्पादक —ब्र० वेदव्रत भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति
व्यवस्थापक —बलदेवसिंह बी० ए०, एम. सी. सि० प्रभाकर
सह-व्यवस्थापक—ब्र० सुदर्शनदेव भाष्याचार्य, सिद्धान्तशास्त्री

विषय-सूची

सुधारक के नियम

१—सुधारक अंग्रेजी महीने की १० ता० को डाकखाने में डाला जाता है। यदि २० ता० तक न मिले तो अपने पोस्ट ऑफिस में पूछ-ताछ करनी चाहिए। फिर भी न मिले तो हमें लिखने पर और भेज दिया जायेगा।

२—लेख छोटे सारगर्भित तथा कागज के एक ओर सुन्दर और सुवाच्य लिखे हुये हों।

३—लेख में उचित परिवर्तन करना, प्रकाशित करना या न करना सब सम्पादक के आधीन है। अस्वीकृत लेख पोस्टेज भेजने पर ही वापिस लौटाया जा सकेगा।

४—वेद विरुद्ध लेखों का प्रकाशन सुधारक में न हो सकेगा।

५—सिद्धांत विरुद्ध, अश्लील और मिथ्या विज्ञापनों के लिए "सुधारक" में स्थान नहीं है। इतना होते हुये भी विज्ञापन की सत्यता का उत्तरदायित्व हम पर नहीं है।

६—व्यवस्थापक सम्बन्धी सब पत्र-व्यवहार तथा मनीआर्डर आदि "व्यवस्थापक-सुधारक" के नाम से भेजने चाहियें, किसी व्यक्ति के द्वारा न भेजें। साथ ही ग्राहक अपनी संख्या अवश्य लिखें।

७—एजेण्टों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है और ५ से कम की एजेन्सी नहीं दी जाती। विज्ञापन का धन अगाऊ भेजना आवश्यक है।

८—सब पत्र-व्यवहार हिन्दी तथा संस्कृत में ही करें। उर्दू, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में पत्र व्यवहार न करें। पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड भेजें।

विज्ञापन दर

	पूरा पृष्ठ	आधा पृष्ठ	चौथाई पृष्ठ
एक बार	१६)	६)	५)
तीन बार	४०)	२४)	१३)
छः बार	७५)	४५)	२५)
१ वर्ष तक	१३०)	७५)	४५)

टाइटिल अन्तिम १५% अधिक।
टाइटिल तृतीय १०% अधिक।
विशेषांक में सवाया। कम से कम ४।।)

❋ संसार सागर से तरा सकने वाली नौका ❋

पृथक् प्रायन् प्रथमा देव हूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा: ।
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीर्मैवते न्यविशन्त केपय: ।।
ऋ० १०-४४-६

शब्दार्थः

(प्रथमाः) जो प्रथम प्रकार के या विस्तृत ज्ञानी (देवहूतयः) देवों अर्थात् दिव्य गुणों का आह्वान करने वाले मनुष्य होते हैं वे (पृथक्) जुदा ही (प्रायन) प्रकृष्ट मार्ग से (अपने-अपने लोकों को) पहुँचते हैं। ये (दुष्टराः) बड़े दुस्तर (श्रवस्यानि) ज्ञानैश्वर्यो को, श्रवणीय यशों को (अकृण्वत) प्राप्त कर लेते हैं। परन्तु ये जो (यज्ञियां नावं) इस यज्ञमयी नाव पर (आरुहं) चढने में (न शेकुः) समर्थ नहीं होते (ते) वे (केपयः) कुत्सित अपवित्र आचरण वाले होकर (ईर्मा इव) यहीं इसी लोक में (न्यविशन्त) नीचे-नीचे जाते हैं।

विनय

भाइयो! इस संसार सागर से हमें तरा सकने वाली नौका यज्ञमयी ही है। हम यदि यज्ञकर्म नहीं करेंगे तो हम न केवल मनुष्यत्व से ऊपर नहीं उठ सकेंगे किन्तु अपने मनुष्यत्व को कायम भी नहीं रख सकेंगे, तब हमें नीचे पशुत्व में अधः पतित होना पड़ेगा! देखो, बहुत से "देव-हूति" पुरुष उन देव लोक, पितृलोक, ब्रह्मलोक आदि दुष्प्राप्य यशोमय उच्च लोकों को पहुँच गये हैं, बड़े भारी यत्न से इस मनुष्यावस्था को तरकर देव हो गये हैं। ये लोग यज्ञिय नाव पर चढ़कर ही वहाँ पहुँचे हैं। उन्होंने अपने में देवों का, दिव्यताओं का आह्वान किया है और 'प्रथम' बने हैं। दूसरी तरफ देखो, वे दुर्भागे मनुष्य हैं जो कि थोड़ा-सा स्वार्थ त्याग न कर सकने के कारण, अयज्ञिय हो ऋणबद्ध रहने के कारण उस नाव का आश्रय नहीं पा सके हैं। अतः यहीं बन्धे पड़े रह गये हैं। ये बिचारे 'केपि' कुत्सिताचरणी लोग यहाँ भी नीचे धंसते जा रहे हैं, पशुत्व में गिर रहे हैं। इनका फिर पवित्र बनना अब अत्यन्त कठिन हो गया है। अतः आओ, मनुष्य योनि पाकर हम कुछ न कुछ तो स्वार्थ त्याग करें, इतना यह कर्म तो करें कि ऋणबद्ध न बने रहें, हम पर जो माता, पिता गुरु, समाज राष्ट्र, मनुष्यता, प्रकृति माता और परमेश्वर आदि के ऋण है। उन्हें उतारने के लिये तो अपने स्वार्थ का नित्य हवन किया करें। हम यदि इतना करेंगे, केवल परमावश्यक पंच यज्ञों का यथा शक्ति करते रहेंगे तो भी हम इस यज्ञिय नौका पर चढ़ सकेंगे और देवयान लोकों को नहीं तो कम से कम पितृयाण लोकों को तो जा पहुँचेंगे, अपने मनुष्यत्व को तो नहीं खो देंगे। भाइयो! यज्ञमयी नौका खड़ी है। हम चाहें तो देवहूति होकर, दिव्य स्वभाव धर्मशील होकर इस नौका द्वारा इस दुस्तर सागर को तर कर ज्ञानैश्वर्यमय उच्च से उच्च लोकों तक पहुँच सकते हैं, नहीं तो, फिर यदि हम इस नौका में स्थान न पा सके तो हम ऐसी खराब परिस्थिति में आ पड़ेंगे और वहाँ ऐसे निलज्ज बन जायेंगे कि हम कुत्सित अपवित्र कर्मों के करने में ही सुख पावेंगे और नीचे ही नीचे गिरते जायेंगे फिर हमारे उद्धार का दूसरा अवसर कितने काल बाद आवेगा यह कौन जानता है? तब हमारे उस पाप योनी चक्र से निकलने का इस यज्ञिय नौका में फिर आश्रय पा सकने का दूसरा अवसर कब आवेगा यह कौन कह सकता है?

(वैदिक विनय से)

सम्पादकीयम्

समझौते की ओर

पञ्जाब के हिन्दी आन्दोलन की समस्या को सुलझाने का प्रयत्न किया जा रहा है। हिन्दी रक्षा समिति श्री डा० गोपीचन्द भार्गव के प्रयत्नों का स्वागत करने को तैयार है। उधर मास्टर तारासिंह समझौते के किसी भी प्रयत्न को उचित नहीं समझते। साथ ही पंजाब में अशान्ति भी बढ़ती जा रही है। हिन्दी रक्षा समिति ने तीसरा मोर्चा भी करनाल में लगा दिया है तथा चौथा अम्बाला में।

संसद सदस्य श्री ला० अचिन्त राम के शब्दों में हिन्दी आन्दोलन को जनता का सहयोग प्राप्त है। ऐसी अवस्था में केन्द्रिय सरकार का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह मास्टर तारासिंह से कहे कि जो योजना हमने आप से मिलकर बनाई थी हिन्दू जनता उसे मानने को तैयार नहीं है। वास्तव में भाषा का प्रश्न सांस्कृतिक है। धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्था आर्य समाज ने अंग्रेज काल में भी हिन्दी के लिये भारी प्रयत्न किये डी. ए. वी. कालेजों का जाल बिछा दिया और सरकार से एक पैसा भी सहायता का स्वीकार न किया और हिन्दी को पढ़ाया।

आज अपने स्वराज्य में वह हिन्दी पर प्रतिबन्ध स्वीकार नहीं कर सकता। उसकी माँगे न्यायोचित है। उन्हें न्याय मिलना ही चाहिये।

यदि मांगे उचित न होती। और उनमें साम्प्रदायिक या राजनीतिक तत्व होता तो प्रधान मन्त्री श्री नेहरू जी के सब से पहले वक्तव्य पर जो उन्होंने इंग्लैण्ड जाने पर हिन्दी रक्षा समिति के प्रधान स्वामी आत्मानन्द जी महाराज को चिट्ठी के रूप में भेजा था आन्दोलन ढीला पड़ जाता।

हिन्दू सभा और जन संघ ने जो आन्दोलन कभी चलाये वह श्री माननीय नेहरू जी के वक्तव्य पर ढीले पड़ गये थे परन्तु आर्यसमाज का हिन्दी आन्दोलन प्रबल होता जा रहा है। इस का कारण है न्यायोचित माँग।

जैसे बङ्गाल की भाषा बङ्गाली वैसे पन्जाब की भाषा पंजाबी कहने से काम न चलेगा। क्योंकि पंजाब की राज-भाषा पंजाबी तो उस समय भी नहीं रही जब पंजाब पञ्च आब ही नहीं छः आब कहा जाता था। शतलज, व्यास, रावी, चिनाव, झेलम के साथ-साथ सिन्धु भी पंजाब में बहती थी। अब वह पंजाब १० वर्ष से पाकिस्तान के आधीन है और वहां की राज भाषा उर्दू है। अब तो केवल शतलज व्यास वाला केवल दो आब वाला पंजाब है।

इसमें लगभग ७० लाख की जन संख्या वाला हरियाणा प्रान्त है जिसकी भाषा हिन्दी की एक बोली हरियाणा की बाङ्गरू है। इस भाग का पंजाबी बोली से सम्बन्ध है न गुरुमुखी लिपि से।

पञ्जाब के भाषा फार्मूला के विधायकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है और इस को हिन्दी क्षेत्र घोषित किया है। और इसकी राज-भाषा हिन्दी को घोषित कर दिया है परन्तु चौथी कक्षा के उपरान्त पाँचवी कक्षा में गुरुमुखी की पढ़ाई को अनिवार्य कर दिया है। गुरुमुखी की इस अनिवार्यता से ही हरियाणा में हिन्दी आन्दोलन को पूरा बल मिला है।

दूसरी भाषा पढ़ना आवश्यक हो तो चौथी कक्षा के उपरान्त भारतीय संविधान से स्वीकृत १४ भाषाओं में से किसी एक भाषा का अध्ययन अनिवार्य हो जैसा कि उत्तर प्रदेश में है तो हम समझते हैं हरियाणा के लिये हिन्दी आन्दोलन की समस्या का उचित सुलझाव होगा। ऐसा होने पर गुरुमुखी की बात भी बनी रहेगी क्योंकि पंजाब में सर्विस करने वालों के लिये दोनो भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है। जो सर्विस करना पंजाब में चाहेगा उसे गुरुमुखी को पढ़ना ही पड़ेगा। दूसरी भाषा के रूप में बलात पढ़ाई का राज भाषा आयोग ने भी विरोध किया है रह गया पंजाबी भाषी क्षेत्र जालन्धर और पेप्सु।

वास्तव विकता को दृष्टि में रक्खा जाये तो पंजाबी भी हिन्दी की एक बोली ही है। पन्जाबी जानने वाला हिन्दी को और हिन्दी जानने वाला पंजाबी को भली प्रकार समझ लेता है। हिन्दी वाला पन्जाबी को भले ही थोड़ा कम समझे। परन्तु पन्जाबी बोलने वाला हिन्दी को अच्छी तरह से समझ लेता है।

एक गुरुमुखी के विद्वान के कथनानुसार तो गुरुमुखी संस्कृत से बहुत मिलती है। इस आधार पर भी पंजाबी का हिन्दी से गहरा सम्बन्ध है। इसके विपरीत उत्तर प्रदेश को देखिये कितना लम्बा चौड़ा है वृजभाषा अवधि आदि सब बोलियां हिन्दी की है। गढ़वाल और नैनीताल के पहाड़ी प्रान्त की भाषा गढ़वाली पहाड़ी है। वह हिन्दी को समझते भी नहीं उनकी हिंदी पढ़े लिखे की समझ में नहीं आती। उन बेचारों ने अपनी भाषा की पृथक् मांग नहीं की। हिंदी को उन्होंने अपनाया है। एक प्रकार से उनकी बड़ी भारी बुद्धिमत्ता है उन्होंने अपना सम्बन्ध भारत की राज भाषा से जोड़ा है।

यदि पंजाबी बोलने वाले भी हिंदी को अपनालें तो वह अपना विचार भारत के सभी प्रान्तों में फैला सकेंगें हिंदी के द्वारा उनका और राष्ट्र का हित होगा।

हिन्दी देवनागरी में वह पंजाबी को बड़े आराम से लिख सकते हैं। बड़े दुख की बात है कि पंजाबी को वह उर्दू में फारसी में लिख सकते हैं। परन्तु हिंदी में नहीं लिख सकते।

इसलिए सबसे अच्छा उपाय यह है कि वह हिन्दी लिपि को अपनायें।

मैं, अथवा अन्य लोई सहृदय व्यक्ति इस बात को कहदे तो हो सकता है साम्प्रदायिक कहलायें। हर्ष है इस बात का कि राष्ट्रपति माननीय डा० राजेन्द्र प्रसाद ने देश वासियों से राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने के लिए हिन्दी की देवनागरी लिपि को अपनाने की अपील की है।

इसी प्रकार से भारतीय सरकार से नियुक्त राजभाषा आयोग ने भी सब भाषा भाषियों से बिना किसी बलात् के स्वतन्त्रता पूर्वक देवनागरी लिपि को अपनाने का अनुरोध किया है।

हिन्दी और गुरुमुखी की प्रगति और लोकप्रियता को देखते हुए हिन्दी ही पंजाब की राजभाषा होने योग्य है। पंजाब विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में हिन्दी की परीक्षाओं या हिन्दी माध्यम से जितने विद्यार्थी परीक्षा में बैठते हैं उसका पाँचवाँ भाग भी गुरुमुखी में नहीं बैठता। यह तो उस समय है जब कि गुरुमुखी को सरकार की ओर से प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

इसलिए राजभाषा हिन्दी ही होनी चाहिए।

इतने पर भी विशेषता गुरुमुखी को देनी ही है तो जालन्धर और पेप्सु क्षेत्र में हिन्दी और गुरुमुखी राजभाषा रहें।

हमारे प्रधान मंत्री माननीय नेहरू जी का कथन है कि फिनलैण्ड में स्विश लोग २६ प्रतिशत हैं और भाषा स्विश भाषा फिनलैण्ड की राजभाषा है।

हिन्दी भाषी भी इसी आधार पर न्याय चाहते हैं। जालन्धर क्षेत्र में ४५ प्रतिशत हिन्दी भाषी हिन्दी के लिए माँग करते हैं। हिन्दी राजभाषा भी गुरुमुखी की तरह हो जायें तो कोई भी कारण नहीं दीखता कि हिन्दी के लिए चलाया आन्दोलन बन्द न हो।

नहीं तो पंजाब का हिन्दू भयभीत है कि आज हमें बलात् गुरुमुखी पढ़ाई जा रही है। कल को सिक्ख बनने के लिए विवश किया जायेगा।

भारतीय संविधान ने १४ भाषाओं में एक पंजाबी को भी स्वीकृत किया है। यह एक युक्ति दी जाती है इसलिए पंजाबी राजभाषा होनी चाहिये।

यदि यह युक्ति है तो संस्कृत भी भारतीय संविधान से स्वीकृत एक प्रमुख भाषा है।

प्रमुख में इसलिए लिख रहा हूँ कि राष्ट्र-भाषा के काल में कई भाषा वशिष्ठ देश भक्तों ने संस्कृत को भारत की राष्ट्र-भाषा बनाने के लिए प्रयत्न किया।

उन दिग्गजों में बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल सामायिक प्रमुख मन्त्री मध्यभारत श्री माननीय डा० कैलाशनाथ काटजू भी थे।

परन्तु ऐसी विशाल साहित्य वाली संस्कृति को किसी भी प्रान्त या जिले की राजभाषा नही बनाया गया।

सचाई तो यह है कि पंजाब केसरी ला० लाजपतराय के उपरान्त पंजाब को नेता नहीं मिला, नहीं स्वराज के आदिम सूत्रधार महर्षि दयानन्द को गुरु और आर्य समाज को माता कहने वाले लाला लाजपतराय के समक्ष हिन्दी की हत्या पंजाब में न होती। हिन्दी की उन्नति के लिए स्वयं लालाजी ने क्या कुछ नहीं किया। डी० ए० वी० कालेजों के निर्माण में उनका बड़ा हाथ था।

आन्दोलन हिन्दी का चल रहा है। सरकार की देखें आँखें कब खुलती हैं? समझौता होगा। न्याय संगत होगा। इसी में हिन्दी का सम्मान है। लेखक—

विश्वप्रिय शास्त्री

आज की सार्वजनिक समस्या—

इन्फ्लूएंजा से बचाव

[वैद्य श्री रामनारायण शर्मा प्रबन्ध संचालक, श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदिक भवन प्राइवेट लि०]

आज-कल इन्फ्लुएञ्जा (वातश्लेष्मज्वर) का प्रकोप भीषणता के साथ देश भर में चल रहा है। इसके पहले दौर से ही बहुत बड़ी संख्या में जन आक्रान्त हुए हैं, उस पर कुछ वैज्ञानिकों द्वारा, निकट में ही, दूसरे दौर के तीव्रता से आने की आशंका की। भविष्यवाणी से लोगों का आतंकित होना स्वाभाविक है, अतएव इस रोग की वास्तविकता पर विचार करते हुए इससे बचाव के साधारण उपायों पर प्रकाश डालना और जनता को आतक-मुक्त करना आवश्यक हो गया है।

आज के प्रचार युग की यह एक बड़ी विशेषता है कि किसी भी बात को, बात की बात में, विशालतम रूप मिल जाता है। प्रचार की यह विभीषिका, मैं समझता हूँ रोग के क्षेत्र में नितांत दुःखद है। किसी रोग के घातक प्रभावों को असंतुलित प्रचार देना जनहित के लिए हानिकर है। मुख्यतः संक्रामक रोग का आक्रमण मनुष्य की मानसिक स्थिति या मनोबल से सम्बन्ध रखता है। क्षीण मनोबल की अवस्था में शरीर से भरपूर स्वस्थ मनुष्य पर भी संक्रामक रोग लगे हाथ आक्रमण करता है। ऐसी दशा में संक्रामक रोगों के सम्बन्ध में जब कोई प्रचार किया जाय तब इस बात का विशेष ध्यान रक्खा जाना चाहिए कि उससे जनता कदापि आतंकित न हो और रोग की भयंकरता को बढ़ा-चढ़ा कर बताने की अपेक्षा उससे बचाव के साधारण उपायों को ही अधिक प्रचारित किया जाना चाहिए। हम यह नहीं चाहते कि जनता लापरवाह हो, परन्तु सावधानी का इतना बोझ भी नहीं डाला जाना चाहिए कि आतंक से आवृत होकर उसका मनोबल ही शिथिल पड़ जाय।

दुर्भाग्यवश हमारी राष्ट्रिय सरकार की नीति इस दिशा में यथार्थ ढंग से काम करने की है। जब कोई रोग फैलता है तो उसकी भयंकरता के वीभत्स प्रचार से जनता को आतंकित कर दिया जाता है और रोग से प्रतिरोध में प्रधानतः पाश्चात्य विज्ञान का सहारा लिया जाता है जो पूर्णतः सफल प्रयत्न नहीं होता। परिणामतः समस्या जटिल हो जाती है। यही बात पाण्डु (पीलिया) फैलने के समय हुई थी और ऐसा ही इन्फ्लुएंजा के प्रसंग में हो रहा है। मेरा विश्वास है, यदि केन्द्रीय सरकार आयुर्वेद तथा यूनानी के अनुभवी वैद्य एवं हकीमों से परामर्श लेती तो बहुत हितकर हो। कितने ही पुराने वैद्य-हकीम विद्यमान है, जिन्होंने १६१८ के इन्फ्लुएंजा म कार्य किया है उनके अनुभव से लाभ उठाया जासकता है। १६१८ का इन्फ्लुएंजा का आक्रमण सामान्य नहीं। उस बार प्रायः एक करोड़ से अधिक लोग मरे थे और ज्वर से तो कदाचित ही कोई बचा हो। उस वर्ष बहुत वर्षा हुई थी तथा वर्षान्त में इन्फ्लुएंजा एवं मलेरिया दोनों ही महावारी के रूप में गए थे। इन्फ्लुएंजा में ही जिनको न्युमोनिया हो जाता था, वह रोगी प्रातः नहीं बचता था। उन दिनों का मुझे स्मरण है। मैं समझता हूँ, मेरे से वृद्ध वैद्य एवं हकीम गुरुजन इस विषय में और अधिक प्रकाश डाल सकते हैं। मैं उन दिनों आयुर्वेद पढ़ रहा था। मुझे स्मरण है कि हमारे पूज्यपद आचार्य जी ने इस रोग में शीघ्र बचाव के लिए प्रथम एक-दो दिन का उपवास करे तथा गर्म जल पीने का विधान निर्देश किया था। उपवासोपरान्त हल्का सुपाच्य भोजन लेने से खोई हुई शक्ति शीघ्र अर्जित करने का उनका

उपदेश था। वह आचरण मैंने स्वयं किया था। रोग से बचाव के लि ए अनेकों को इस प्रयोग ने लाभान्वित किया। इस महामारी में मेरे पूज्य पिताजी एवं पत्नी का देहान्त हो गया था और उपवास पर अवलम्बित रहने वाली मेरी अतिवृद्धा दादी रोग मुक्त रही थी। मेरा अभिप्राय है कि ऐसे ही पुराने अनुभवों को वृद्ध वैद्य-हकीमों से संकलित करके उनका उपयोग किया जाना चाहिए।

महामारियों का प्रतिरोध

महामारी का प्रकोप होना कोई नई बात नहीं है, इसका क्रम प्राचीन काल से चला आता है। चरक के जनपदोध्वंस अध्याय में महामारियों के कारण एक साथ प्रान्त के प्रान्त नष्ट होने का वर्णन मिलता है। हमारे प्राच्य ऋषियों की सम्मति में ऐसी महामारियों के प्रकार का का कारण अधर्म का विस्तार है। समाज के और शासन के कर्णधारों में जब चहुँमुखी लोभ की वृद्धि हो जाती है, धर्म और नीति का उलंघन एवं अधिकार तथा शक्ति का दुरुपयोग होने लगता है और जनता भी वैसा ही अनुसरण करके अधर्म मार्ग पर चलने को बाध्य हो जाती है। तब जीवन के सब नियमों का व्यतिक्रम हो जाता है। अर्थ एवं काम को सम-सीमित रखना ही धर्म का प्रधान लक्षण है, जब यह कुछ नहीं होता जीवन के नियम संयम छूट जाते हैं, परिणामतः दैवी शक्तियाँ मानव के रक्षण का कार्य छोड़ देती है और तभी महामारियाँ मानव-समाज को तृस्त कर उठती हैं।

हमारी वर्तमान स्थिति इससे निम्न नहीं है। साधारण सूक्ष्म विचार करने से यह तथ्य स्पष्टतः सामने आता है। हमारे देश में जनता को आवश्यक पौष्टिक पदार्थ तो दूर की बात है, सामान्य भोजन भी भली प्रकार सुलभ नहीं होता। एक ओर अन्न के अभाव की विभीषका दूसरी ओर निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या-यह दुबारा प्रभाव जनता को कृश कर रहा है। नियम-संयम का स्थान जीवन में रहा नहीं। स्वास्थ्य के विषय में जीवन के तरीके ही ऐसे भिन्न अपाये जा रहे हैं, जो पाश्चात्य परम्पराओं पर आधारित हैं और कदापि भारतीय जनता के जीवन-क्रम से मेल नहीं खा सकते।

ऐसी दशा में महामारियों के प्रतिरोध के लिए हमें भारतीय-जीवन के मूल आधारों का आश्रय लेना चाहिए और युग तथा परिस्थितियों के अनुकूल उनमें कुछ बढ़ा-घटाकर उनको जन-जीवन में समाविष्ट करना चाहिए। महामारी, व्याधियां और अनेक समस्यायों का समाधा न—एक जनसंख्या के सीमित करने के उपाय से हो सकता है संयम और ब्रह्मचर्य के नियमों का ऐसे मवैज्ञानिक ढंग से प्रसार किया जाय, जो अपढ़-कुपढ़ जनता पर भी प्रभावकारी हो। भारत जैसी धर्म और संस्कार-निष्ठजनता में ऐसा प्रयास असंभव नहीं हो सकता। संयम के सिद्धान्तों के प्रचार से जन स्वास्थ्य में भी सुधार होगा और जनसंख्या को सीमति करने में भी सहायता मिलेगी। पाश्चात्य सरकारों से प्रभावित इस पीढ़ी पर संयम और ब्रह्मचर्य का मन्त्र कुछ देर से प्रभाव कर जायेगा तब तक, इसके अतिरिक्त इस दिशा में आधुनिक परिवार-नियोजन के उपायों को अमल में लाने के लिए भी चतुर्दिक जनता को उत्साहित करना चाहिए।

शारीरिक स्वास्थ्य-संरक्षण के विषय में पाश्चात्य पद्धतियों की अपेक्षा भारतीय पद्धतियों के सिद्धान्तों को प्रचार —प्रसार दिया जाय तो बहुत हितकर हो गया। बीज को प्रधानता न देकर क्षेत्र को प्रमुखता देने की आयुर्वेदीय मनीषियों को कल्पना—भारतीय जीवन में बहुत बड़ा अर्थ रखती है। राग-निरोध के निमित्त रोग के कीटाणुओं को मुख्य न समझकर शरीर की क्षमता और रोग प्रतिरोधिनी शक्ति को ही प्रधान समझ कर चलना चाहिए। आयुर्वेद के 'त्रय उपस्तम्भा आहारः स्वप्नो ब्रह्मचर्य मिति' सिद्धांत पर चलने वाला—आहार अर्थात पौष्टिक एवं संतुलित भोजन, स्वप्न अर्थात् पूर्ण विश्राम (निद्रा) ब्रह्मचर्य अर्थात् संयम—करने वाला व्यक्ति अपने अन्दर पर्याप्त राग प्रतिरोधनी शक्ति (vitality) संचय रख सकता है। मनुष्य के शरीर में इस शक्ति का रहना अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान युग में हम रोग

के कीटाणुओं से घिरे रहते हैं। वे रोगों के कीटाणु तब तक हमें कोई हानि नहीं पहुँचा सकते जब तक हमारा शरीर सशक्त है और उसमें रोग प्रतिरोधक शक्तिपूर्ण बनी रहती है। रोग क्षमता शक्ति को कृत्रिम कीटाणुओं द्वारा उत्पन्न करने की प्रक्रिया भी आजकल अपनाई जाती है, परन्तु वह हमारे देश के लिए आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से व्यवहारिक नहीं है और एक पाश्चात्य विज्ञान वेत्ता के मतानुसार कृत्रिम कीटाणु उत्पन्न करने की प्रक्रिया हानिकर भी है।

इन्फ्लुएंजा के लक्षण और प्रभाव

हमारी तात्कालिक आवश्यकता इन्फ्लुएंजा की समस्या पर विचार करना है। आयुर्वेदिक में इसको वातश्लेष्मज्वर कहा गया है, वातावरण के दूषित एवं विषाक्त हो जाने के कारण यह रोग फैलता है। सबसे पहले गले में कुछ सुरसुरी सी अवगत होती है और स्वर कुछ भारी हो जाता है। फिर नाक पर प्रभाव पड़ता है।। जुकाम हो जाता है। मलेरिया की भाँति जाड़ा देकर अथवा साधारणतः ही ज्वर आ जाता है। कुछ समय बाद ज्वर १०४° तक बढ़ जाता है। प्यास और बेचैनी बढ़ती है। सारे शरीर में दर्द हो उठता है। सिर में तीव्र शूल होता है। भूख मर जाती है। सूखी खाँसी उठती है। रोग के विषैले तत्त्वों से श्वास प्रणाली के प्रभावित होने पर न्युमोनिया भी हो जाता है। इसका ज्वर तो साधारणतः तीन दिनों में चला जाता है किन्तु रोगी रोग के प्रभाव से बहुत अशक्त और रक्तहीन हो जाता है और वह कमजोरी कई दिनों तक बनी रहती है।

इन्फ्लुएंजा का संक्रामक (फैलाव)

संक्रामक होने के कारण यह रोग शीघ्र और तीव्रगति से फैलता है। रोगी के सम्पर्क में आने से रोगी के छींकने खाँसने इत्यादि से निसृत विषाणु के वायु के माध्यम द्वारा आस-पास के व्यक्तियों के संक्रमित होने से यह रोग बहुत फैलता है। इसलिए सिनेमा, होटल, रेल, मोटर आदि भीड़ के स्थानों से बचना चाहिए। अधिकतर यह रोग गन्दी और घनी बस्तियों में जल्दी फैलता है।

बचने के उपाय

रोग होने के पूर्व ही यदि इससे बचने के उपायों की तरफ ध्यान रक्खा जाय तो यह रोग प्रभाव नहीं कर सकता। पूर्व बचाव के कुछ मुख्य उपाय निम्न प्रकार हैं:—

(१) हम ऊपर कह आये हैं कि किसी रोग का प्रभाव कमजोर मन वाले पर तुरन्त होता है, इसलिए जीवन-मरण को सृष्टि का क्रम समझकर और ईश्वर की कल्याणकारी शक्ति पर विश्वास रखकर मन को सदैव निडर और साहसी रखिए। विश्वास रखिए कि यह बीमारी बहुत भयंकर नहीं है और सावधानी बरतने पर कभी हानिकारक प्रभाव नहीं कर सकती।

(२) शरीर को स्वस्थ रखने और रोग प्रतिरोधक शक्ति को स्थायी रखने के लिए संयम और ब्रह्मचर्य का भरपूर पालन कीजिए।

(३) भोजन हल्का, सुपाच्य और कम ही कीजिए। भारीपन अवगत होने पर तुरन्त उपवास कीजिए।

(४) पेट को हल्का और साफ रखिए। कब्जियत होने पर त्रिफलाचूर्ण, पंचसरकारचूर्ण या गुलकन्द अथवा अन्य कोई साधारण दवा लेकर मल को साफ कीजिए।

(५) यह रोग सर्वप्रथम गले में होता है। नाक और गले की झिल्ली प्रदाययुक्त हो जाती है। इसके लिए दो प्रयोग सर्वोपयोगी हैं। एक गरम पानी में थोड़ा नमक डालकर गरारा (कुल्ला) करना और दूसरा नाक में सरसों का तेल सूँघना। जिन लोगों को बार-बार सर्दी-जुकाम होता है उन्हें हम कड़वा तेल सुंघाने का प्रयोग करते हैं। बंगाल में स्नान के पूर्व सिर में सरसों के तेल की मालिस करने और सूँघने का आम रिवाज है। दमा के रोगियों को बार-बार सर्दी जुकाम होने पर सरसों का तेल सूँघने की आदत डाली जाती है। इन्फ्लुएंजा में यह प्रयोग नाक एवं गले की झिल्ली को सुरक्षित रखने के

लिए बहुत हितकर होगा। नित्य प्रातःकाल उठकर दो बूँद सरसों का तेल सूँघना चाहिए। शुद्ध सरसों के तेल से किसी प्रकार का विकार नहीं होगा जैसा कि टीका आदि लगाने से प्रायः हो जाता है।

(६) यह रोग आर्द्र वातावरण से अधिक होता है, अतः बरसात में भीगने से बचना चाहिए। ओस पड़ने वाले खुले स्थान में नहीं सोना चाहिए और गीले कपड़े नहीं पहनना चाहिए।

(७) तुलसी की पत्ती, काली मिर्च, दालचीनी और अदरक की चाय भी इस रोग से बचने में बड़ा काम करती है, ऐसा कुछ प्राचीन वैद्यों का कथन है। इसलिए १०-१५ तुलसी पत्र तथा ५-७ काली मिर्च, जरा सा टुकड़ा दालचीनी और अदरक कूटकर पानी में उबाल लें और शक्कर या नमक मिलाकर चाय की भाँति पीना चाहिए। रोग के फैलने के समय में इसके द्वारा अच्छा बचाव होता है।

(८) रात को अधिक जागने, बाजारू मिठाई, गले फल, बासी भोजन खाने और भीड़-भाड़ के स्थानों में जाने से अपने को बचाना चाहिए।

(९) रहने के स्थान को अधिक से अधिक साफ-सुथरा रखना चाहिए। घर में नित्य नीम के पत्तों और गुग्गुल (गूगर) की धूनी देनी चाहिए। फ्लिट और डी० डी० टी० अथवा कैरोसिन तेल छिड़कने से भी संक्रामक कीटाणु मर जाते हैं; परन्तु इनका प्रयोग मँहगा होता है। सब साधारण जन वातावरण की शुद्धि के लिए गुग्गुल, राल, नीम की पत्ती, देव-दारू इत्यादि की धूप से काम निकाल सकते हैं।

रोग हो जाने पर

उपरोक्त बचाव के नियमों का भली भाँति पालन करने पर यह निश्चय है कि रोग नहीं होगा। बचाव के नियमों के पालन में असावधानी हो जाने से यदि रोग हो भी जाये तो कदापि उससे घबराना व भयभीत नहीं होना चाहिए। घर के किसी व्यक्ति को यदि रोग हो जावे तो शेष घर वालों का यह परम कर्त्तव्य है कि वे अपने को तथा पास-पड़ौस वालों को रोग से बचावें और सब प्रकार की सफाई इत्यादि की सावधानी रक्खें। निर्भय होकर विधिवत रोगी की परिचर्या करते हुए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :—

(१) रोग होते ही रोगी को साफ और हवादार कमरे में आराम से लेटे रहना चाहिए। बच्चों को रोगी से अलग रखना चाहिए। पीने के लिए गर्म पानी देना चाहिए। आधा गिलास गुनगुने जल में एक चुटकी भर नमक डालकर रोगी को गरारा (कुल्ला) करा देना चाहिए।

(२) ज्वर की अवस्था में रोगी को अन्न कदापि न दें। एक-दो दिन का उपवास सम्भव हो तो करावें। दूध, चाय, मुसम्मी का रस या मुनक्का खिलाकर पानी पिला दें।

(३) यह बराबर ध्यान रखना चाहिए कि रोगी का गला साफ रहे। इसके लिए गले में दवा लगाना और उपरोक्त प्रकार से बार-बार गरारा करना चाहिए।

(४) अन्य लोगों को रोग न लगे इसके लिए रोगी के अधिक पास से किसी को बात न करने देना चाहिए। रोगी के थूक या कै को तुरन्त राख या चूना से दबा देना चाहिए। रोगी के कपड़ों को दूसरों से अलग और साफ रखना चाहिए।

आयुर्वैदिक दवा

इन्फ्लुएंजा में, अब तक के अनुभव से आयुर्वैदिक औषधि विशेष लाभकारी सिद्ध हुई है। इसलिए शास्त्रोक्त आर्वेदिक औषधि का ही प्रयोग करना चाहिए।

त्रिभुवन कीर्तिरस अथवा महालक्ष्मीविलास रस (नारदीय) की एक-एक रत्ती की एक गोली। गोदन्ती हरताल—२ रत्ती के साथ मिले तो चौथाई तोला अदरक का रस मिलाकर शहद में लेना चाहिए। यह जवान आदमी के लिए पूरी खुराक है। इस प्रकार की तीन खुराकें सुबह-दोपर-शाम नित्य देनी चाहिए। बच्चों के लिए आयु के अनुसार मात्रा निश्चित करनी चाहिए।

त्रिभुवन कीर्ति और नारदीय लक्ष्मीविलास रस

सुलभ न हो तो संजीवनीवटी- कल्पतरु रस और आनन्द भैरव का प्रयोग किया जा सकता है। रोगी को अधिक खाँसी और जुकाम हो तो मरिच्यादि वटी, इलादि वटी, खदिरादि वटी, लवंगादि वटी व्यासादि वटी— किसी भी वटी को चूसने के लिए दिया जा सकता है। यदि कफ न निकलता हो और खाँसी ज्यादा हो तो चन्द्रामृत लोह को मिश्री के साथ चूसने को देना चाहिए या गुलछनप्सादि काढ़ा पीने को देना चाहिए। यदि किसी कारणवश रोग न्युमोनियाँ में परिवर्तित हो जावे तो उसकी चिकित्सा शीघ्र योग्य एवं अनुभवी चिकित्सक से करानी चाहिए। योग्य चिकित्सक जब तक न मिले तब तक शृङ्ग भस्म (३-४ रत्ती) का प्रयोग किया जाता है।

साधारणतः रोगी की चिकित्सा के लिए योग्य वैद्य की सहायता मिल सके तो सर्वोत्तम है। जहाँ वैद्य सुलभ न हो वहाँ उपरोक्त प्रकार से निर्देशित औषधियों का विधिवत प्रयोग कल्याणकर होगा।

वैद्यों से निवेदन

इन्फ्लुएंजा की इस महामारी के कारण राष्ट्र की अधिकांश जनता संकट ग्रस्त है। ऐसी दशा में प्रत्येक वैद्य-हकीम का यह परम कर्त्तव्य है कि वह निस्वार्थ भाव से जनता की सेवा के लिए कमर कस-कर कार्य क्षेत्र में आवे। इस महामारी पर विजय उनको और आयुर्वेद यूनानी की श्रेष्ठ ऐतिहासिक विजय होगी। बिना इस बात की अपेक्षा किये कि सरकार का उसके अधिकारी इस कार्य में हमारा सहयोग लेते हैं या नहीं—मेरा प्रत्येक वैद्य-हकीम से साग्रह निवेदन है कि अपना सारा ज्ञान-अनुभव और शक्ति जनता की सेवा में और रोग पीड़ित जनों की रक्षा में लगा दीजिये। निस्वार्थ भाव से आप जो सेवा करेंगे उसके प्रतिफल में जनता का आशीर्वाद आपकी परम कीर्ति और सिद्धि प्रदान करेगा।

(चलो आज चण्डीगढ़ को)

(ले० पं० ताराचन्द शर्मा कविस्थल (महेन्द्रगढ़)

नौजवानों, अब मर्दानों, उठो वीरों ललकार, चलो आज चण्डीगढ़ को। टे०

मातृ भाषा हिन्दी का अपमान हो रहा आज।
देकर के कुर्बानी अबतो तुम्हें बचानी लाज॥
कर्त्तव्य पथ पर डटकर सत्य पर करो हिन्दी का उद्धार।१। चलो······

आपस के मतभेद भुलाकर करो संगठन मेल।
जत्थे लेकर चलो गर्जते भरदो जाकर जेल॥
कांटो पर चलो-अग्नि में जलो, गोली के बनो शिकार।२। चलो······

संगीनों के आगे भी छाती अड़ा देना।
लाठी डण्डे बरछी भाले सब तन पर लेना॥
बढ़ते जाना, मत घबराना, होगी जालिम की हार।३। चलो······

सत्यमेव जयते नानृतम् ऋषियों का कहना।
यतो धर्म स्ततो जयः दृढ़ता से डटे रहना॥
पावोगे जय, 'शर्मा' निर्भय, तुम करो धर्म प्रचार।४। चलो······

* आर्य वीरो उठो *

(लेखक—ब्रह्मचारी महादेव सि० शास्त्री)

सत्याग्रह सूर्य गगन मध्य में विराजमान है। जिस प्रकार सूर्य मध्याह्न में प्रचण्ड होता है, उसी प्रकार सत्याग्रह का भी उग्रता का समय आ गया है। हमारे धैर्य धनी कर्णधारों ने उसे और उग्र करने की घोषणा की है। इसमें उग्रता लाना हमारे जैसे आर्य वीरों का ही काम है। आर्य वीरों के सम्बन्ध में वेद भगवान कहते हैं !

तीक्ष्णीयां सः परशोरग्ने स्तीक्ष्ण तराउत।
इन्द्रस्य वज्रात तीक्ष्णयां सो येषामसि पुरोहितः॥
अर्थव: ३।१६।४

अर्थात् हे आर्य वीर जो परशु की धारा से भी तीक्ष्ण है। जोग्नि की ज्वाला से भी तीक्ष्ण हैजो इन्द्र के वज्र से भी तीक्ष्ण है, उसमें तू अग्रणी है। यह ही नहीं और भी—

दूष्या दूषिरासे हेत्या हेतिरासि मेन्या मेनिरसि।
आप्नुहि श्रेयां समति समं क्रामः ॥
अर्थव० २।११।१

अर्थात् हे वीर ! जो शक्ति तुझे दूषित करने को आती है उलटा तू उसे दूषित करने वाला है। शस्त्र का तू शस्त्र है, वज्र का तू वज्र है, अपने आपको पहचान और बराबर वाले से आगे बढ़ श्रेष्टता को प्राप्त कर। अन्यच्च—

उतः क्रामातः पुरुषा भाव पत्था—मृत्यो पडनिशभन मुञ्चमानः अर्थवः ८।१।४

अर्थात हे वीर ! उन्नति शिखर की ओर बढ़ा चल, व अपनी मौत की बेडी खण्ड-खण्ड कर दे।

अन्यच्च क्षत्रस्य योनिरसि, क्षत्रस्य नाभरासि।
यजुः २०।१

अर्थात् हे वीर तू क्षात्र बल का भण्डार है। तू क्षात्र बल का केन्द्र हैं।

अपने गुणों पर गर्व करता हुआ आर्य वीर कहता है।

"अयुतोऽहम" अर्थव० अर्थात् हे दुष्टो ! दस हजारों के लिए मैं एकला ही पर्याप्त हूँ

अन्यच्च—अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं मृत्यवेडव तस्थे कदाचन। ऋ० १०-४८-५७।

अर्थात् हे मनुष्यों ! सुनो मेरा परिचय मैं इन्द्र हूं, वाकाबीर हूं, और आसानी से मरने वाला नहीं हूं। अन्यच्च—

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम।
अभी षाडस्मि विश्वषाडा शाभाशां विषा सहिः॥
अथर्वः१२ ।१।५४।

अर्थात् वीर कहता है सुनो मेरा परिचय मैं साहसी वीर हूं।, भूमंडल में उत्कृष्ट हूँ दुश्मन के छक्के छुड़ाने वाला हूं, और सबको हराने वालाहूं। जिस दिशा में मैं कदम रखूंगा। वहाँ अन्यायी अत्याचारी व दुष्टों को पकड़-पकड़ कर मसल डालूंगा। यह हैं आदर्श वीर की दिव्य भावना।

स्वे गये जागृह्याप्रयुच्छन के अनुसार वीरों अपने-अपने घर से आलस्य को त्याग कर एक मन वाले होकर उठो क्योंकि हमारे नेताओं का आह्वान पुरा करने हिंदी माता की रक्षा करने, देवनागरी लिपी का उद्धार करने, तथा कैरों सरकार के दांत खट्टे करने के लिए, आर्य वीरो उठो; आगे बढ़ो, बढ़ते हुए तुम्हारे जो मार्ग में बाधक बनकर खड़े हुये हैं उनको तोड़ते-फोड़ते हुए आगे-आगे बढ़ते चलो।

वेद भगवान् वीरों से कहता है--

प्रेता जयता नर इन्दो वः शर्म्म यच्छतु।
उग्रावः संतु बाह्वोऽनाधृष्या यथा सथ।
ऋ० १०।१०३।१६।

अर्थात् हे आर्य वीरो। उठो आगे बढ़ो व विजय को प्राप्त करो क्योंकि तुम्हारी भुजाओं में उग्र तेज है। बल है, जिस कारण तुम कभी पराजय का मुख न देख सको। यह ही नहीं आगे और कहते हैं। (शेष पृष्ठ १७ पर)

बुद्धि का चमत्कार

(ले०—ब्र० सुदर्शनदेव व्याकरणाचार्य गुरुकुल झज्जर)

किसी नगरी में एक महापण्डिताभास रहते थे। जिनको लगभग ५०० ग्राम सभी विषयों के प्रकांड पंडित तथा अपना गुरु मानते थे। उन ग्राम निवासी जनों की सब प्रकार की उलझी हुई गुत्थियों को वे ही सुलझाया करते थे। उनका अपना शुभ नाम श्री महापंडित लाल बुझक्कड़ जी था।

एक दिन का समाचार है कि जिस शुभ नगरी में श्रीमान् महापंडित जी महाराज निवास करते थे उसी नगरी से रात्रि के समय किसी राजा का हाथी होकर चला गया। प्रातःकाल हुआ। सभी कृषक (किसान) लोग कार्यार्थ खेतों में जाने लगे। उन्होंने उन विशाल पदचिन्हों (पैड़ों) को देखा। उन भोले कृषक लोगों ने इस प्रकार के विचित्र पदचिह्न अपने जीवन में कभी नहीं देखे थे। इन्हें देख कर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होंने आपस में पूछा कि भाइयों! यह क्या है? किन्तु इसका किसी को भी सुराग नहीं मिला कि यह है तो क्या है? अन्ततोगत्वा वे सभी मिलकर श्री महा पंडिताभास जी के द्वार पर गए और नम्रता पूर्वक प्रार्थना की कि पंडित जी महाराज! निवेदन है कि आज हमारे सामने एक बड़ी भारी समस्या आ उपस्थित हुई है। जिसका कि हल हमारे विचार से किसी के पास नहीं है। यदि उसका कोई हल निकाल सकते हैं तो केवल आप ही निकाल सकते हैं। ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है।

श्री महापंडिताभास जी महाराज बहुत अनुनय विनय के उपरान्त उनके साथ समस्या स्थल पर पधारे। वे उन पदचिह्नों को देखकर प्रथम रोये और तदनु हंसने लगे। कृषक लोगों ने उनसे ऐसा करने का कारण पूछा। उन्होंने उत्तर दिया कि मेरे नेत्रों से अश्रुधारा तो इसलिए बह निकली कि जब मेरा निधन (मृत्यु) हो जायगा तब इस प्रकार के जटिल प्रश्नों का संसार में ठीक-ठीक उत्तर कौन दिया करेगा, और मुझे हंसी इसलिए आई कि इसका हल तो बहुत ही सरल है। श्री महापंडिताभास जी ने अपनी छन्दोमय वाणी में उस जटिल समस्या को निम्न प्रकार सुलझाया—

लाल बुझक्कड़ बूझिया और न बूझा कोय।
पग में चक्की बान्ध के हिरना कूदा होय॥

अर्थात्—तुम जानते हो कि जंगल में जो हिरन रहते हैं, उनमें से कोई हिरण किसी जंगली मनुष्य की चक्की के दोनो पाटों को अपने पगों में बान्ध कर रात्रि में कूदता हुआ चला गया है। ये सब चक्की के पाटों के चिह्न हैं। पंडित जी की बुद्धि का चमत्कार देखकर लोगों की वाह-वाह की ध्वनि से आकाश गूंज उठा। लोगों ने श्री पंडित जी महाराज को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि सारे भूमण्डल में आप जैसा सभी विषयों का तलस्पर्शी एवं मर्मज्ञ तथा प्रकांड पंडित कोई नहीं है, जो कि ऐसी जटिल समस्याओं को खेल-खेल में ही सुलझा सके।

अभी-अभी का समाचार है कि पंजाब नामक खेत (क्षेत्र) में भी कुछ एक लोगों को दो पदचिह्न दिखाई दिये। वे सभी लोग अपने आपको बड़ा भारी दिमागदार समझते थे। इसलिए एक दूसरे को पराजित करने के लिए उनमें वर्षों वाद-विवाद प्रश्न-उत्तर तथा बहस-मुबाहसे होते रहे। उनमें कुछ काल पश्चात् किन्हीं कारणों वश आपस में समझौता हो गया। निर्णय यह हुआ कि इनमें से एक को समाप्त ही कर दिया जाये "न रहेगा बांस न बजेगी

बांसुरी" के अनुसार सदा के लिए एतत्सम्बन्धी सभी बखेड़े समाप्त हो जायेंगे। अन्त में दोनों उस एक को समाप्त करने पर पूर्ण बलेन तुल गए। विदित हुआ है कि उस समाप्य पदचिह्न का नाम हिन्दी है।

जिन अलबेले वीरों ने वह पदचिह्न अपने खून पसीने की कमाई से तैयार किया था, और जिस पर अनेकों वीरों ने अपने अमूल्य जीवन की बलि चढ़ाई थी। यहाँ तक उसके लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था, जब उन दुर्मद वीरों को यह ज्ञात हुआ कि तुम्हारा अमूल्य पदचिह्न नाना प्रकार के छलों की वर्षा से नष्ट-भ्रष्ट किया जा रहा है तभी उन्होंने एक भयङ्कर तूफान (आंदोलन) को जन्म दिया। उस तूफान की भव्य मूर्ति को देखकर उनके सब छल बल तथा कपटी फार्मूले चिंता की हवा में उड़ने लगे। यहाँ तक कि उनके भी पैर उखड़ने की सम्भावना हुई तो उन सब दिमागदारों के दिमाग फेल हो गये। समस्या सूत की कूकड़ी की भांति उलझ गई। इसे सुलझाये तो सुलझाये कौन?

हमें इससे विदित होना चाहिए कि आजकल के समस्या मन्त्री लाल बुझक्कड़ बहुत ही उदार नेता हैं। जब भी उन्हें प्रान्त, देश, राष्ट, एवं संसार के सामने कोई भी जटिल से जटिल समस्या खड़ी दिखाई देती है वे तभी उसका ऐसा सुन्दर हल उठा कर रख देते हैं कि जिसे देखकर सभी देशों के दिमागदार जन दङ्ग रह जाते हैं।

अभी बड़े-बड़े दिमागदार उपरोक्त हिन्दी समस्या के लिए अपने-अपने दिमाग लड़ा ही रहे थे कि आजकल के सुविख्यात समस्यामन्त्री महोदय ने उसका ऐसा सुन्दर हल रखा कि उनकी बुद्धि का चमत्कार देखकर सब वाह वाह कह उठे। हल ललित छन्दामयी वाणी में निम्न प्रकार है—

हिन्दी गन्दी है सुनो, इससे न कोई लाभ।
अंग्रेजी पढ़कर बनो, "मास्टर" अरु सहाब॥

उनका अपना प्रसिद्ध शुभ नाम भी छन्द में बन्धनी में बन्द है।

पैदा कर

(आर० एन० आनन्द बी० टी० सोनीपत)

जहाँ में इनक्लाब ऐसा नया भगवान् पैदा कर।
मिटा दे झूठ की दुनिया नये इन्सान पैदा कर॥
बहे फिर दूध की नदियां हमारी पूज्य भूमि पर।
गऊ माता की सेवा का दिलों में मान पैदा कर॥
वतन का बच्चा-बच्चा ब्रह्मचारी बन के दिखलाए।
"दयानंद" और "भीष्म" सी निडर संतान पैदा कर।
सितम का खौफ कोसों दूर हो बढ़ते रहें हमदम।
हमेशा आगे बढ़ने के लिए औसान पैदा कर॥
लगा दे देश की खातिर हमेशा जान की बाजी।
"शिवा परताप" से "आनन्द" अब बलवान पैदा कर॥

संस्था-समाचार

बिजली का गण्डासा और आटा पीसने की चक्की

सभी गुरुकुल-प्रेमी महानुभावों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आपका प्रिय गुरुकुल ईश्वर की कृपा से और आप लोगों की सहायता एवं सहयोग से दिन प्रतिदिन उन्नति करता जा रहा है। अगस्त १९५६ में गुरुकुल में बिजली आई थी उसके कुछ काल पश्चात् नवम्बर १९५६ में गुरुकुल के कूएं में 5 H.P. की मोटर लगा दी गई थी, जिसके द्वारा जल सिंचन का कार्य सुचारु रूप से हो रहा है और गुरुकुलवासियों एवं पड़ौसियों के स्नानादिक कार्यों में भी इसी से पर्याप्त सुविधा मिली है।

अब एक और 20 H.P. की मोटर नया भवन बना कर लगा दी गई है, इससे आटा पीसने की चक्की, कुट्टी काटने का गण्डासा, पुस्तकादि प्रकाशनार्थ प्रेस और रसायनशाला में औषधनिर्माण की मशीनें चलाई जायेंगी। वर्तमान में हमने इस मोटर पर आटा पीसने की चक्की और कुट्टी काटने का गण्डासा ये दो ही लगवाये हैं ये दोनों १५ सितम्बर १९५७ से चालू हो गये हैं। इनके द्वारा गुरुकुल का आटा पीसने और कुट्टी काटने में पर्याप्त सुविधा रहेगी, क्योंकि अब तक आटा पिसवाने के लिये झज्जर शहर में जाना पड़ता था जिसमें हमें बहुत असुविधा और हानि होती थी। गोशाला के ५० पशुओं का कुट्टी चारा आदि काटने के लिये पहले हाथ का गण्डासा (मशीन) थी, उसके पश्चात् बैलों का गण्डासा लगाया था, किन्तु अब बिजली का गंडासा लग जाने पर और भी लाभ और आराम हो गया है। इसके साथ ही बाहर के ग्रामीणों का अन्न पीसने और कुट्टी काटने से गुरुकुल में आय (आमदनी) भी हो जायेगी।

इसी प्रकार गत पांच वर्षों से गुरुकुल की रसायनशाला (फार्मेसी) का कार्य भी पर्याप्त उन्नति पर है। गुरुकुल की "आर्य आयुर्वेदिक रसायन शाला" की लगभग ८००००) अस्सी हजार की सम्पत्ति है, इसके रोहतक, दादरी, देहली, नरेला, कानपुर आदि नगरों में विक्रय केन्द्र खुले हुए हैं और सैंकड़ों स्थानों पर एजेन्सियां खुली हुई हैं। जहाँ पर हमारी एजेन्सियाँ नहीं खुली हैं वहाँ पर एजेन्टों की आवश्यकता है, इच्छुक महानुभाव पत्र व्यवहार करें वा स्वयं आकर मिलें औषध निर्माण कार्यार्थ मशीनरियों के लग जाने पर रसायनशाला का कार्य और भी विशालतर हो जायगा। ये सभी उद्योग-धन्धे गुरुकुल को स्वावलम्बी बनाने के उद्देश्य से चलाये जा रहे हैं जिससे कि संस्था स्वावलम्बी होकर अपने पाँवों पर खड़ी हो सके।

समाज और राष्ट्र के उत्थान में गुरुकुलों ने बहुत बड़ा भाग लिया है। वास्तव में गुरुकुल ही भारत के राष्ट्रिय शिक्षणालय हैं और गुरुकुल शिक्षण-प्रणाली ही भारतीय शिक्षा-प्रणाली है। इस को अपनाने से ही भारत की उन्नति और कल्याण सम्भव हो सकेगा। आज के बालक ही आगामी भारतीय नागरिक और नेता होंगे। उनको श्रेष्ठतम बनाने के लिये गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली द्वारा शिक्षित और दीक्षित करना परम आवश्यक है, अन्यथा भारत का स्वराज्य कभी स्वराज्य नहीं बन पायेगा। अतः प्रत्येक माता-पिता का कर्त्तव्य है कि अपने होनहार बच्चों को गुरुकुलों में शिक्षा दिलवावें।

हरयाणा प्रान्तीय आयुर्वेद महाविद्यालय

आयुर्वेद महाविद्यालय का द्वैमासिकावकाश ३० सितम्बर को समाप्त होकर १ अक्तूबर से द्वितीय सत्र चालू हो गया है। गुरुकुल विभाग और आयुर्वेद विभाग के प्रवेश नियमादि कार्यालय से मंगवाये जा सकते हैं।

एक जापानी बच्चे की मांग

(ले० खूबराम शर्मा ततरापुर खालसा)

सुनाऊँ कहानी सुनो एक बालक नादान की।
गाथा है जापान की यह गाथा है जापान की ॥ टेक

स्वामी राम तीर्थ गए वहाँ एक बार थे।
यहीं से संग ले गए कुछ सात्विक आहार थे॥
कुछ दिनों में समाप्त हुई खुराक हिन्दुस्तान की ॥१॥

दो दिन भूखे रहे हुआ भोजन का प्रबन्ध ना।
होटलों का खाना किया साधु ने पसन्द ना।
मांस खाने की आदत वहाँ क्योंकि हर इन्सान की ॥२॥

व्याकुल भूख से हो नीचे वृत्त के विश्राम किया।
एक जापानी बच्चे ने आ इतने में प्रणाम किया।
झोली थी फलों से भरी बालक वीर जवान की ॥३॥

बोला बालक मेरे योग्य काम हो महाराज जी।
दिलो जान से पूरा करूँ बतलादो ऋषि राज जी।
इस अज्ञानी बालक को घूँटी पिलादो ज्ञान की ॥ ४ ॥

बोले साधू भूख ने व्याकुल किया मम अंग है।
दो दिन से भोजन बिना हो गया रंग भंग है।
इच्छा है प्रबल मुझे इस टाइम भोजन पान की ॥५॥

सारे घूमा मिला नहीं निरामिष आहार है।
बतलादो जो ऐसी जगह मिले पुरस्कार है।
बोला बालक बात सुनकर स्वामी जी गुणवान की ॥६॥

स्वामी जी हर कोई यहाँ खाता मद्य मांस है।
फल खाओ और भूख मिटाओ लो ये मेरे पास है।
यह कह बच्चे ने झोली भर दी साधू विद्वान् की ॥७॥

फल खाकर प्रसन्न हुये स्वामी जी महाराज जी।
बोले माँगों कुछ भी बच्चे दूँगा वो ही आज जी।
जापानी बच्चे ने अपनी मांग यूँ बयान की ॥८॥

देते हो तो देवो मुझ को स्वामी यही दान आप।
भूखे रहे यहाँ मत जा कहना हिन्दुस्तान आप।
होवे मान हानि इससे मेरे जन्म स्थान की ॥६॥

धन्य हो बच्चे तुझे चिन्ता है सारे देश की।
सर पर रखा हाथ साधु आशीर्वाद पेश की।
आर्यों को है खबर "खूब राम" तेरे गान की ॥१०॥
गाथा है जापान की, यह गाथा है जापान की ॥

आज कर्त्तव्य क्या कह रहा है ?

(लेखक प्रमोद कुमार 'अभय' उजीना)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना जिस समय की उनकी यही भावना थी कि इसमें दीक्षित लोग संसार को प्रकाश देंगे तथा वे कदापि किसी प्रकार का अन्याय सहन नहीं करेगें और उसका प्रत्येक प्रकार से विरोध करेगें । उनका जीवन इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि उन्हें सत्य के लिए अनेकों कष्ट सहने पड़े और अन्त में भी सत्य के लिए ही बलिदान हुए । क्या उनका जीवन यह प्रेरणा नहीं दे रहा कि सदैव उचित का पक्ष लो और अनुचित का विरोध करो । आज उन द्वारा संस्थापित आर्य समाज की कसौटी पर कसने का समय आ गया है । आज यह दिखाने का समय है कि हम अपने गुरु (पथ प्रदर्शक का कितना आदर करते हैं और कितना अनुसरण कर रहे हैं ।

स्वामी जी का जन्म गुजरात काठियावाड़ में हुआ था यह सर्व विदित है उन्होंने हिंदी को "आर्यभाषा" स्वीकार करते हुए सत्यार्थ प्रकाश आदि प्रेरणा-ग्रन्थ इसी भाषा में लिखे । वे हिंदी की पूर्णता और महत्ता को समझते थे । इसी लिए उन्होंने किसी भी प्रकार की परवाह न करते हुए इसी भाषा को महत्त्व दिया, इसके अतिरिक्त अब हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा है । ऐसी अवस्था में हिंदी की अवहेलना करना एक प्रकार की साम्प्रदायिक भावना का प्रतीक है । इसके विपरीत पंजाबी बोली, भाषा कहलाने योग्य है ही नहीं और जैसा कि इतिहास बताता है यह लूंडा लीपि से निकली है । इसका अपना कोई व्याकरण नहीं, इसका अपना कोई शब्द भंडार नहीं जो हैं वे या तो हिंदी संस्कृत अपभ्रंश है अथवा अरबी भाषा के या यह भाषा पूर्ण है, अविकसित है । ऐसी अवस्था में यह भाषा पंजाब की भाषा होने लायक नहीं, फिर यदि रखते भी हैं तो ऐच्छिक रखें जिसकी इच्छा हो वह यह पढ़े जिसकी इच्छा न हो वह न पढ़े । क्योंकि कोई भी माता-पिता जब अपने बच्चे को शिक्षा दिलायेगा तब पंजाबी भाषा उसके किसी काम नहीं आयेगी । अकालियों का पञ्जाबी भाषा पर विशेष जोर देना केवल मात्र साम्प्रदायिकता के कुछ नहीं । हिंदू, जैन, बौद्ध आदि की धर्म की भाषा हिंदी नहीं संस्कृत है । वे संस्कृत का आदर करते हैं तथा पढ़ते हैं । और संस्कृत भाषा अनेकों प्रतिघातों को सहते हुए आज तक जीवित है, क्योंकि वह धार्मिक भाषा है । भाषाओं में अन्तर आता रहा किन्तु उसका स्वरूप वही है । आज तक सिख गुरुओं ने कभी हिंदी को बुरी नजर से नहीं देखा । प्रत्युत यह कहना अनुचित न होगा कि उन्होंने गुरुमुखी को केवल धर्म की भाषा माना और अपनी अन्य रचनायें हिंदी में लिखी । गुरु गोविंदसिंह जी जो कि अन्तिम गुरु थे और जिन्होंने सिखों को नया जन्म दिया, वे इस बात को समझते थे । इसी उद्देश्य से उन्होंने हिंदी साहित्य की वृद्धि की । इतनी ही नहीं उन्होंने हिंदी के लगभग ५२ कवियों को अपने दरबार में आश्रय दे रखा था उन्हीं के शिष्यों द्वारा हिन्दी से इतना चिढ़ना देख कर केवल साम्प्रदायिकता का प्रभाव न कहा जाये तो और क्या कहा जा सकता है ।

पण्डित श्री नेहरू जी को प्रारम्भ से ही हिन्दी से कुछ विशेष चिढ़ है । जिन दिनों हिन्दी को राष्ट्र-भाषा मानने के लिए आन्दोलन चल रहा था उन दिनों नेहरू जी ने हिंदुस्तानी के विषय में बहुत जोर लगाया था किन्तु असफल रहे । इसलिए हिंदी के विषय में वे उसी पक्ष का अनुमोदन करेगें जिसका पक्ष प्रबल होगा । पिछली अकालियों की मांग स्वी-

कार करके सरकार अपनी घुटना टेक प्र का परिचय दे ही चुकी है। अतः अपनी मांग के के लिए जा कि अनुचित भी नहीं है। हमें संघर्ष करना चाहिए। भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है और ऐसे राष्ट्र में यदि साम्प्रदायिक शासन को स्थान दिया जाता है तो यह कार्य विधान विरुद्ध होगा। किसी का धर्म, भाषा अथवा सभ्यता किसी पर लादी नहीं जा सकती, जैसी कि अब लादी जा रही है। गुरुमुखी कुछ लोगों की धार्मिक भाषा है और वह भाषा ठीक है उस धर्म को मानने वाले के लिए आदरणीय है किन्तु अन्यों के ऊपर लादने के लिए नहीं। साम्प्रदायिक भाषा को राजकीम भाषा स्वीकार करके उस सम्प्रदाय को बढ़ावा देना है तथा अन्य लोगों पर लादने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। हिंदी भाषा साम्प्रदायिक भाषा नहीं। न ही आर्य समाज वा जैन आदि कि है प्रत्युत सबकी है इसका विकसित साहित्य समझने बोलने में सरल है और अब तक हिंदी पढ़ाई जाती रही है तो अब पंजाबी का विशेष जोर देना केवल साम्प्रदायिकता ही है।

श्रीमन्नारायण ने कांग्रेसियों से हिंदी रक्षा सत्याग्रह में भाग लेने से मना कर दिया है। यही एक परीक्षा स्थल है जहाँ आर्य समाजी जो कांग्रेस में है अपने कर्त्तव्य का परिचय दें। पद लोलुपता के कारण कांग्रेस की चाटुकारिता कहने वाले नीच और पातकी हैं। वे धर्म के शत्रु हैं। अपना भाषा वा संस्कृति के लिये जिनके हृदय में दर्द नहीं वे निसन्देह पशु हैं। मनुष्य हो ही नहीं सकते। आज हमें दिखा देना चाहिये कि हम आर्य क्या कर सकते हैं। अथवा जलसों सभाओं में केवल बोलने ही वाले हैं। आज मौका है संगठित होकर आगे बढ़ो और भाषा के लिए वा देश के लिए इस प्रकार होने वाली साम्प्रदायिक कार्यवाही के आगे संघर्ष करो

(शेष पृष्ठ ११ का)

उत्तिष्ठ संनह्यध्व मुदाराः केतुभिः सह। अथर्व ११।१।११

अर्थात् वीरो उठो कमर कस लो व हाथों में ओम् पताका सम्भालो और अपनी मांगों के झंकारों से सरकार के कान गुञ्जा दो और सरकार की नींद हराम कर दो। जो हमारी मांगों को सरकार नहीं सुनेगी तो वह दिन दूर नहीं कि सरकार अपने हाथों अपने पैरों पर कुठारा घात कर अपना सर्वनाश करेगी।, क्योंकि वेद भगवान् कहते हैं — "ऋतस्यश्लोका बधिराततर्द:" के अनुसार सच्चे आर्य वीरों की पुकार बहरे के कानों को खोल देती है। तो क्या आर्य वीर इस बहरी सरकार के कान को नहीं खोल सकेंगे?

पंजाब सरकार को अपनी नीति बदलनी पड़ेगी नहीं तो हम "जितमस्माकम्" इस वेदाज्ञा के अनुसार अपने बल से हम सरकार का तख्ता बदल डालेगें क्योंकि हमें वेद आदेश देता है—उद्वृह रक्षः सहमूलमिन्द्रः। ऋ० ३। ३०। १७

हे आर्य वीरो राक्षस सरकार को समूल उखाड़ दो। तभी तो भारत माता के सपूत राष्ट्रभाषा हिंदी के सच्चे प्रेमी श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज ने कहा है कि "इस दुष्ट अत्याचारी सरकार को उखाड़ कर ही छोड़ेंगे"। सरकार का इसी में भला है। कि वह हमारी न्यायोचित याञ्चनाओं का अपनी हठ धर्मी को छोड़ कर मान ले।

आश्चर्य की बात यह है कि छोटे से बड़े तक सभी मन्त्री इस आन्दोलन को राजनीतिक तथा साम्प्रदायिक बता कर कुचलना चाहते हैं। परन्तु यह तो वही बात है "उलटा चोर कोतवाल को डांडे" के अनुसार अपने आप साम्प्रदायिक सिक्खों के आगे झुककर इस प्रश्न को उलझा रखा है। वह हमें कहते हैं। परन्तु सरकार का स्मरण रहे कि वह आर्य नेता इनकी कूटनीतियों को खूब समझते हैं।

कैरों सरकार कुछ भला चाहती है, कुछ काल जीना चाहती है तो वह अपनी नीति को तत्काल बदले। सरकार यह समझती है कि हम आन्दोलन को अपनी राज्य शक्ति से दबा देगें। परन्तु यह सब असम्भव है। "उत्क्रामत" के अनुसार आर्य वीरो नेसदा ऊपर को चढ़ना तथा चलना सीखा है। वे दबनहीं सकते।

"श्री मद्भगवतगीता"

(ले० श्री देवराज विद्यावाचस्पति गुरुकुल झज्जर)

श्रीगत् शब्द का अर्थ है जिसमें श्री है और जिससे श्री की प्रगति हो, "भगवद्गीता" इसमें भग शब्द का अर्थ है 'ऐश्वर्य' जिसमें सम्पूर्ण ऐश्वर्य विद्यमान है उसका नाम है भगवद् इसी को भगवान् करके भी बोलते हैं, वेद का मन्त्र है "भग एवं भगवाँ अस्तु देवा स्तेन वयं भगवन्तः स्याम इसमें बताया है कि भग ही भगवान् है, भग शब्द भज् सेवायाम् धातु से बनता है, 'भजयते सेव्यते इति भवः' जिसका सेवन किया जाये जैसे किसी औषधि का सेवन किया जाता है उसे ग्रहण किया जाता है उसका भोजन वा पान किया जाता है, वह धन है। जितना भी ऐश्वर्य है उसका सेवन किया जाता है इसलिये भग सेवनीय वस्तु का नाम है। जो वस्तु हममें नहीं है उसको उस ऐश्वर्य में से ग्रहण करके हम पूरा कर लेते हैं हममें नहीं है इसका अर्थ है कि जिस वस्तु की हम अपने अंदर कमी अनुभव करते हैं उसे वस्तुओं के भण्डार में से ग्रहण करके हम अपनी कमी पूरी कर लेते हैं। प्राणि मात्र अपने अन्दर किसी न किसी प्रकार की कमी अनुभव करते हैं। और उसकी पूर्ति के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं। परन्तु वे नहीं जानते कि जो कुछ हमें प्राप्त करना है। उसकी निधि कहाँ है जिसमें से हमारी कमी पूरी हो सके। यह जो कुछ भी संसार दृष्टिगोचर हो रहा है। उसकी वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए हम उद्योग करते रहते हैं और इसमें कभी हम सफल होते हैं कभी विफल क्योंकि हमें यह नहीं मालूम कि इस संसार की सब वस्तुओं का स्रोत एक ऐसा तत्त्व है जिसके अन्दर यह संसार सूक्ष्म रूप से और स्थूल रूप से भी विद्यमान है, यदि उस परम तत्त्व के साथ हमारा सम्बन्ध हो जाए तो जो कुछ उसमें है उस सबका हमारे अन्दर प्रवाह चल पड़े और इस प्रवाहित रस से हम इसी प्रकार तृप्त हो जायें जिस प्रकार एक महान् जलाशय का खेत के साथ नाली के द्वारा सम्बन्ध होने से वह खेत सूखने नहीं पाता, परन्तु उस जलाशय के जल से तृप्त हुआ सदा हराभरा रहता है यह जलाशय परम तत्त्व ऐसा है कि जिसका जल न कभी कम होता है न अधिक। यह सदैव परिपूर्ण रहता है, जिनकी इससे तृप्ति होती है वे जड़ चेतन पदार्थ सब इसी के अन्दर गर्भित रूप से रहते हैं। इसी महत्त्व के कारण भग और भगवान् को अभेद रूप से वेद ने वर्णन किया है। उस भगवान् की स्तुति गान जिस ग्रन्थ में किया है उस ग्रन्थ का नाम भगवद्गीता है। गीता के अन्दर इसी भगवत् तत्व का निरूपण है। इसी भगवत् तत्व ने अन्य सब लघु तत्त्वों को अपने आकर्षण बल से आकृष्ट करके रखा है। इस लिए इसका नाम कृष्ण कहा गया है। भगवान् कृष्ण कहें या कृष्ण कहें इस में कोई भेद नहीं आता क्योंकि कृष्ण और भगवान् एक ही वस्तु के नाम हैं। इस परम तत्त्व का निरूपण गीता में ऐसी सुन्दर रीति से किया गया है कि जिस वर्णन को ध्यान में लगाकर श्रद्धा भक्ति के साथ उसे अपनाकर साधक उसमें अन्तर्लीन सा हो जाता है। अब हम भग और भगवान् के सम्बन्ध पर विचार करते हैं। भग शब्द में 'भ' का अर्थ है स्थिति तत्त्व और 'ग' का अर्थ गति तत्त्व है, यह स्थिति और गति तत्त्व जिसमें विद्यमान है उसका नाम भगवान् है। इन्हीं दो तत्त्वों से मिलकर सम्पूर्ण ब्रह्मांड की रचना हुई है। उपनिषदों में स्थिति तत्त्व को रयि तथा गति तत्त्व को प्राण शब्द से कहा है। रुचि और प्राण से सम्पूर्ण ब्रह्मा जी की रचना हुई। वहाँ कहा है। "प्रजा कामो वै प्रजापतिः स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा मिथुन मुत्पादयते रयिं च प्राणं च इत्येतौमे बहुधा प्रजाकरिष्यत इति।' यहाँ भी उन्हीं दो तत्व के मिलने से सम्पूर्ण पदार्थों की रचना हुई ऐसा है निश्चयपूर्वक कहा गया है। इसी रचना को ऐश्वर्य

कहा है। और इस ऐश्वर्य का जो स्वामी है उसको ईश वा ईश्वर कहते हैं। 'ई' का अर्थ है यह संपूर्ण चराचर जगत् और इसमें विद्यमान सत्ता जो सर्वत्र निवास वा शयन करती है। उसका नाम 'ईश' है। इसकी व्याख्या ईशोपनिषद् में बड़ी सुन्दर रीति से की गई है। पाणिनि ने ईश का अर्थ इश धातु से ऐश्वर्य किया है। इस प्रकार ईश्वर और भगवान् दोनों का अर्थ ऐश्वर्यवान् है। इसी भगवत तत्त्व को पहचानने के लिए गीता शास्त्र प्रवृत्त हुआ है। सम्पूर्ण गीता शास्त्र के अन्दर इसी का विस्तार से वर्णन है। इसी का ध्येय रूप से चिन्तन करके जो बुद्धि मनुष्य को प्राप्त होती है वही बुद्धि मनुष्य में बनी रहे इसकी साधना गीता शास्त्र में भली प्रकार से निरुपण की है। सब लघु सत्ताओं को परस्पर मिलाने वाली यह भगवान् तत्त्व रूपी महान् सत्ता है। इसके अन्दर सम्पूर्ण लघु सत्ताओं की स्थिति मनुष्य को कर्मापेक्षित आकांक्षा जन्य कर्म से उत्पन्न हुई है। किन्तु यह भगवद् सत्ता निराकांक्ष भाव से उनमें विद्यमान् है। यह आकांक्षा जन्य न होने के कारण कर्म के फल से रहित है, जबकि अन्य सत्तायें कर्मापेक्षित होने से बन्धन का कारण बनती है। केवल भगवद् सत्ता ही कर्मनिरपेक्ष सत्ता होने के कारण स्वस्वरूप स्थिति से प्राप्त होती है। अन्य शब्दों में हम इस भगवद् सत्ता को समष्टि सत्ता तथा इसके गर्भ में रहने वाली अन्य लघु सत्ताओं को व्यष्टि सत्ता के रूप में समझते हैं। जैसे इस शरीर के अन्दर अंग प्रत्यंग अपने-अपने कार्य को करते हुए शरीर की जो समष्टि चेतना है। अपने आप को उसके अर्पण किये हुए रहते हैं। शरीर की जो सत्ता समष्टि सत्ता है और अंगों की अपनी-अपनी सत्ता व्यष्टि सत्ताएं हैं। इसी प्रकार एक ग्राम वा नगर में रहते हुए मनुष्य अपनी-अपनी व्यक्तिगत सत्ता रखते हुये ग्राम की सामूहिक वा समष्टि सत्ता में अपने को अर्पण किये रहते हैं। इसी प्रकार अनेक ग्राम अपनी व्यष्टि सत्ताओं को प्रान्त की समष्टि सत्ता में अर्पण किये रहते हैं, सब प्रान्त अपने को राष्ट्र की सत्ता में और इसी प्रकार ब्रह्मांड व्यापिनी एक ऐसी महा समष्टि सत्ता है जिसमें ब्रह्मांड गत सब व्यष्टि सत्ताएं समर्पित हैं। उस महान समष्टि सत्ता को जिसे हम कृष्ण वा भगवद् सत्ता के नाम से पुकारते हैं। उसके लिए स्मरण करने का आदेश गीता में विद्यमान है। जब तक यह स्मरण का भाव पूर्णतया हमारे अंदर नहीं उतरता तब तक हम गीता के आदेश से बहुत दूर हैं।

(क्रमशः)

गुरुकुल झज्जर की अष्टमकक्षा (व्याकरण शास्त्री)

का

परीक्षा-परिणाम

पत्र संख्या—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	योग	
१. ब्र० यशपाल—	६६	५०	७१	६३	७३	७४	७९	७४	७६	५८	८२	= ७६६/११००	७०%
२. ब्र० धर्मपाल—	५३	५३	६६	५०	४०	५६	६५	६९	७७	५६	९०	= ६७५/११००	६१%
३. ब्र० मनुदेव—	५०	५४	३६	४०	४२	५०	४१	५१	७०	३६	६२	= ५३२/११००	४८%

निवेदक—मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल झज्जर।

वेद विरोधी भारतीय

[कुन्दनलाल शर्मा "प्रभाकर" ततारपुर खालसा]

भारत स्वर्ग कहाया करता था दीवाना वेदों का।
बल विद्या में प्रबल था जब तक परवाना वेदों का ॥ टेक ॥

आज वही मूर्ख कहलाता वेदों के प्रचार बिना,
गैरों में अपमानित होता वेद विद्या विस्तार बिना।
पत्थर २ में सर मारे बुद्धि व सुविचार बिना,
भारत आज ख्वार होता है दयानन्द गम ख्वार बिना ॥
सदाचार व्यवहार बिना सीखा ठुकराना वेदों का ॥१॥

भारत में विद्या पाने को अंग्रेजी स्कूल खुले,
अपनी प्यारी संस्कृति को भारतवासी भूल चले।
रंगे विदेशी रंग में सारे वेदों के प्रतिकूल चले,
छोड़ "नमस्ते" शब्द दिया और गुड़नाईट अनुकूल चले ॥
फूल चले मुर्झाने को जल इनको मिला ना वेदों का ॥२॥

कुछ तो रंगे विदेशी रंग में कुछ पापी मक्कार फिरें,
भैरू, भैया, सेठ सीतला गंगा व हरिद्वार फिरें।
डैरू ढप और ढ़ोल बजाते भंगी और चमार फिरें,
इनकी भेंट चढ़ाने वाले पशुओं के लंगार फिरें ॥
झूंठे और लबार फिरें, कहें झूठा अफसाना वेदों का ॥३॥

रुपये हजारों लगा-लगा कर मंदिर अजब बनाते हैं,
शिल्पी से घड़वाय मूर्ति वहाँ रखकर पुजवाते हैं।
नीच पुजारी पड़े-पड़े वहाँ माल मुफत का खाते हैं,
मंदिर को व्यभिचार गृह कर उसमें पाप कामते हैं ॥
'कुन्दन' को बुरा बताते हैं जो गावे गाना वेदों का ॥४॥

स्वाध्यायोपयोगी उत्तम साहित्य

उत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय करके अपने जीवन को पवित्र करें

१. चार वेद मूल संहिता १७)
२. चार वेदों का भाषाभाष्य (पं० जयदेव कृत) सम्पूर्ण सैट १४ खण्डों में ८४)
३. सत्यार्थप्रकाश (महर्षि दयानन्द) १=)
४. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका („ „) २॥)
५. संस्कार विधि („ „) ॥।=)
६. पंचमहायज्ञविधि („ „) ।)
७. गोकरुणानिधि („ „) =)
८. आर्योद्देश्यरत्नमाला („ „) -)
९. अष्टाध्यायीभाष्य १, २ भाग („ „) ७)
१०. वेदाङ्गप्रकाश सम्पूर्ण १४ भाग („ „) १०।)
११. दयानन्ददिग्विजयम् (मेधाव्रताचार्य) ८)
१२. दयानन्द लहरी („ „) ॥)
१३. विरजानन्दचरितम् („ „) १)
१४. नारायणस्वामिचरितम् („ „) ॥।)
१५. प्रकृतिसौन्दर्यम् (नाटकम्) („ „) १।)
१६. ब्रह्मचर्यशतकम् („ „) ।।=)
१७. ब्रह्मचर्यमहत्त्वम् („ „) ॥)
१८. ईशोपनिषत् काव्यम् („ „) ।=)
१९. कुमुदिनीचन्द्रः („ „) ४)
२०. सन्ध्या अष्टाङ्गयोग (स्वामी आत्मानन्द) ॥।)
२१. वैदिक गीता („ „) ३)
२२. आदर्श ब्रह्मचर्य („ „) ।)
२३. कन्या और ब्रह्मचर्य („ „) ≡)
२४. विरजानन्द चरित (स्वामी वेदानन्द) १॥)
२५ पंचमहायज्ञविधि व्याख्या („ „) १)
२६. संस्कृत भाषा क्यों पढ़ें („ „) ॥)
२७. आसनों के व्यायाम सचित्र (देवव्रत) ॥)
२८. ब्रह्मचर्य ही जीवन है (शिवानन्द) १॥)
२९. नाड़ीतत्त्वदर्शन (सत्यदेव वसिष्ठ) ५)
३०. सन्मार्ग दर्शन (स्वा० सर्वदानन्द) ४)
३१. महर्षि दयानन्द का प्रामाणिक जीवन चरित्र दो भागों में ६)+६)= १२)
३२. दयानन्द दिव्यदर्शन ॥)
३३. वैदिक धर्म परिचय (जगदेवसिंह शास्त्री) ॥=)
३४. छात्रोपयोगी विचार माला („ „) ॥=)
३५. राष्ट्रनिर्माण में गुरुकुल का स्थान ।=)
३६. सत्यपथ (देवराज) ॥)
३७. „ „ धर्म का स्थान (देवराज) ।-)
३८. सत्याग्रहनीति काव्य (सत्यदेव) १)

—०—

आचार्य भगवान्देव जी द्वारा लिखित साहित्य

१. ब्रह्मचर्य के साधन १, २ भाग ।-)
२. „ „ दन्तरक्षा ३ भाग ≡)
३. „ „ व्यायामसन्देश ४ भाग १)
४. „ „ सन्ध्यायज्ञादि ५ भाग ।=)
५. „ „ सत्सङ्ग-स्वाध्याय ७, ८ भाग ॥)
६. „ „ भोजन ९ भाग ॥=)
७. ब्रह्मचर्यामृत =॥)
८. स्वप्नदोष की चिकित्सा =॥)
९. बालविवाह से हानियाँ -)
१०. व्यायाम का महत्त्व ≡)
११. रामराज्य कैसे हो ? ≡)
१२. पापों की जड़ शराब ≡)
१३. हमारा शत्रु तम्बाकू का नशा ।=)
१४. नेत्ररक्षा ≡)
१५. बिच्छू विषचिकित्सा =)

कमीशन दर अपने प्रकाशन पर

५) से नीचे कुछ नहीं।
५) से १०) तक की पुस्तकों पर ६।) प्रतिशत
१०) से २०) तक की „ „ १२॥) „
२०) से १००) तक „ „ २५) „
१००) से ऊपर ३०) „
विशेष विवरणार्थ हमारा सूचिपत्र मुफ्त मंगवाइये।

गुरुकुल क्या वस्तु है इस विषय में हमारा प्रकाशन "राष्ट्र निर्माण में गुरुकुल का स्थान" पुस्तक पढ़ें।

पता—व्यवस्थापक—

पता—'विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय', पो० गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक (पञ्जाब)

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला (रजि०) गुरुकुल झज्जर की
* अचूक औषधियाँ *

१–नेत्र ज्योति सुर्मा

लगाइये और नेत्र ज्योति पाइये। इसके लगाने से आँखों के सब रोग जैसे आँख दुखना, खुजली, लाली, जाला, फोला, रोहे, कुकरे, पास का कम दीखना (शार्ट साइट) दूर का कम दीखना (लांगसाइट), प्रारम्भिक मोतियाबिन्द आदि दूर हो जाते हैं। आंखों के सब रोगों की रामबाण औषधि है। यही नहीं किन्तु लगातार लगाने से दृष्टि (बीनाई) को तेज तथा आँखों को कमल की तरह साफ स्वच्छ रखता है। बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। प्रतिदिन जिसने भी लगाया उसी ने मुक्तकण्ठ से इस सुर्मे की प्रशंसा की है।

२–नेत्रामृत

लाली, कड़क, धुन्ध, ढलकवा, गरदोगुब्बार, रोहे तथा भयंकरता से दुखती आंखों के लिए जादू भरा विचित्र योग है।

मूल्य बड़ी शीशी ।।=) छोटी शीशी ।=)

३–स्वप्नदोषामृत रस

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषध इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे पीछे या बीच में वीर्य आने को बन्द कर देगी। मूल्म ५) रुपये

सेवन विधि—प्रातः सायं एक-एक गोली गोदुग्ध या शीतल जल के साथ। विशेष—यदि स्वप्नदोष का रोगी अत्यन्त दुर्बल हो तो दूध के साथ और हृष्ट-पुष्ट हो तो जल के साथ सेवन करें। ब्रह्मचारी को जल के साथ सेवन करना चाहिए।

४–स्वप्नदोषामृत चूर्ण

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषधि इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मू[illegible] में आगे-पीछे या बीच में वीर्य के ने को बन्द कर देती है।

मूल्य [illegible]) एक मास

५–रोहितारिष्ट

यह अरिष्ट पुराने और बढ़े हुए प्लीहा (तिल्ली) यकृत जिगर के लिये अद्वितीय औषध है। जब किसी औषध से यह रोग ठीक न होते हों तो इसका चमत्कार (जादू) प्रयोग करके देखना चाहिये। यह उदर पीड़ा गोला, वायु गोला आदि पेट में वायु का भरना, अजीर्ण, भूख न लगना, मलबद्धता आदि सभी पेट के रोगों को दूर करता है। सदैव रहने वाले मलबन्ध (कब्ज) को दूर करने की यह एक ही औषध है। यह जठराग्नि को दीप्त करता है। पाचन शक्ति को खूब बढ़ाता है। यह आयुर्वेद की रामबाण औषध है। मूल्य २)

६--कर्णरोगामृत

कान में पीप आना, बहरापन और प्रत्येक प्रकार की कर्ण पीड़ा को दूर करने के लिए यह अति उत्तम औषध है। प्रतिदिन सेवन करने से कानों का कोई रोग नहीं होता और मस्तिष्क की शुष्कता दूर होती है। मूल्य एक शीशी १)

७--व्रणामृत

भयंकर फोड़े, फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा अनेकों वर्षों के नासूर (सरह) आदि रोगों की अद्वितीय औषधि है। दिनों का काम घण्टों में, घण्टों का काम मिनटों में करती है।—मूल्य एक शीशी १)

८–स्वास्थ्यवर्धक चाय

यह चाय स्वदेशी, ताजी एवं शुद्ध जड़ी-बूटियों से तैयार की गई है। वर्तमान चाय की भाँति यह नींद और भूख को न मारकर खाँसी, जुकाम, नजला, सिरदर्द, खुश्की अजीर्ण, थकान, सर्दी आदि रोगों को दूर भगाती है। मस्तिष्क एवं दिल को शक्ति देती है। मूल्य १ छटांक ।=)

९–दन्तरक्षक मंजन

दाँतों से खून वा पीप का आना, दाँतों का हिलना, दाँतों के क्रमि रोग, सब प्रकार की दाँतों की पीड़ा तथा रोगों को दूर भगाता है और दाँतों को मोतियों के समान चमकाता है।—मूल्य एक शीशा ।।)

१०—पाचनामृत

मन्दाग्नि, अरुचि, अजीर्ण (कब्ज), पेट का फूलना, पेट का भारीपन, शूल, जी मचलाना, वमन खट्टी डकार आदि पेट के सभी रोगों को नष्ट कर भूख को बढ़ाता है। आंतों के सब रोगों को दूर कर पाचन शक्ति को बल देता है। पुरानी से पुरानी तिल्ली जिगर की अचूक औषधि है। मूल्य एक शीशी ५)

११—पामामृत (दाद खुजली)

यह सब ही खुजली दादादि चर्म रोगों के लिये अत्युत्तम औषध है। खुजली सूखी हो या पकने वाली यह सब प्रकार की खुजली के लिये रामबाण औषधि है। इसके प्रयोग करने के पश्चात् किसी अन्य औषधि की आवश्यकता नहीं। दाद को जड़ से नष्ट करती है। मूल्य २)

१२—बाल रोगामृत

बालकों के हरे-पीले दस्त, अपच, अजीर्ण (कब्ज) अरुचि, दाँत निकलते समयके रोग, सूखिया मसान रोग, वमन, निर्बलता, ज्वर आदि सभी रोगों का दूर कर बालकों को मोटा करता है। अतः प्रत्येक गृहस्थी घर में रखें। मूल्य एक शीशी ५)

१३—संजीवन तैल

मूर्च्छित लक्ष्मण को चेतना देने वाली इतिहास प्रसिद्ध बूटी से तैयार किया गया यह तैल घावों के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुये घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भर कर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है। मू० ॥=) नमूना

सेवन विधि—फाये में कर भर र बार-बार चोट आदि पर लगायें।

१४—च्यवनप्राश

इसी ऋतु के ताजे आँवले से तैयार किया गया स्वादिष्ट, सुमधुर और एक दिव्य रसायन (टानिक) है। जिसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खाँसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक, सभी हृदय रोगों की अद्वितीय औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा अन्य सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका (निरन्तर) सेवन समूल नष्ट करता है। यह निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है।

मूल्य ७) सेर, ५ सेर लेने पर ६) सेर

१५—बलदामृत

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आ जाता है। पीनस (सदा रहने वाले जुकाम और नजले) की महौषध है। वीर्य वर्द्धक, कास (खाँसी) नाशक, राजयक्ष्मा (तपेदिक). श्वास (दमा) के लिये लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करती तथा अत्यन्त रक्त वर्द्धक है। निर्बलों को बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ट बनाती है। यह अपने ढंग की एक ही औषध है। मूल्य ५) प्रति शीशी

१६—ज्वरामृत

यह नये व पुराने सभी प्रकार के ज्वरों की रामबाण औषध है। बिगड़े हुए मलेरिया, विषम ज्वर को दूर करने में अद्वितीय औषध है। कुनेन भी इसके आगे तुच्छ औषध है। कुनेन का सेवन सिर दर्द, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है, किन्तु यह औषध सब दोषों को दूर करती है तथा ज्वर की प्रत्येक अवस्था में दी जा सकती है। मलेरिया काल में सेवन की हुई मलेरिया को नहीं आने देती। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, सेवन करें और लाभ उठावें। मूल्य एक शीशी ५)

'सुधारक' का आगामी विशालकाय विशेषाङ्क

'बलिदानाङ्क'

—०—

इस विशालकाय विशेषांक की तैयारी प्रारम्भ हो चुकी है। चित्रों के लिये ब्लाक बनवाये जा रहे हैं। सुधारक का जो अंक आपके हाथ में है इसी आकार (साइज) के ५०० पांच सौ से भी अधिक पृष्ठ तथा १०० से अधिक रंगीन चित्र इस बलिदानांक में दिये जायेंगे। सरल भाषा और सुन्दर छपाई होगी।

इस विशेषांक में लगभग २०० दो सौ, उन वीरों के जीवन और इतिहास की यशोगाथा लिखी जायेगी जो अपनी जन्मभूमि भारत की पराधीनता की शृङ्खलाओं को विशृङ्खलित करने के लिये बृटिश साम्राज्यवाद की जड़ काटने के लिये, स्वतन्त्रता की लहर को देश-देश के कोने-कोने में पहुँचाने के लिए, तनमन में क्रान्ति की धूम मचाकर भारत को स्वाधीन बनाने के लिए हँसते-हँसते फांसी के तख्तों पर झूल गये। कारावास की भीषण विपत्तियों को सहन करते हुए भी जो बेड़ी तथा हथकड़ियों को आभूषण बनाकर झूम-झूम कर मस्ती से आजादी के गाने गाया करते थे।

जिस स्वतन्त्रता को देखकर हम प्रसन्नता से फूले नहीं समाते, वह कितनेबलिदानों के पश्चात् मिली है, कितने नवयुवकों ने अपने अमूल्य यौवन की आहुति दी है? यह सब इस "बलिदानांक" में पढ़िये। यह अंक अपने ढंग का अपूर्व तथा अद्वितीय होगा।

इस विशेषाङ्क का मूल्य डाक व्यय सहित १०।।) होगा। किन्तु सुधारक के ग्राहकों को अग्रिम धन (पेशगी) भेजने पर ५।।) में ही घर बैठे ही रजिस्ट्री द्वारा मिल जायगा। सुधारक का ग्राहक बनने के लिए २) धनादेश से भेजें। जिन ग्राहकों का धन अगाऊ न मिलेगा उनको पीछे ८।।) में ही अंक प्राप्त हो सकेगा।

अंक परिमित संख्या में हो प्रकाशित होगा, हो सकता है कि समाप्त हो जाने पर पीछे आपको पछताना पड़े। अतः ५।।) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करवा लें। इस मूल्य में ।।) डाक व्यय भी सम्मिलित है।

धन भेजने का पता—

व्यवस्थापक "सुधारक"
पो० गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक (पंजाब)

ग्राहक संख्या
सेवा में श्री सम्पादक जी
मु० गुरुकुल पत्रिका
पो० गुरुकुल कांगड़ी
जि० हरद्वार

प्रकाशक आचार्य भगवान्देव गुरुकुल झज्जर ने सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली में मुद्रक जगदेवसिंह शास्त्री 'सिद्धान्ती' के प्रबन्ध से छपवाया।

वर्ष ५ अङ्क ३ | गुरुकुल झज्जर (रोहतक) कार्तिक २०१४ वि० नवम्बर १९५७, दयानन्दाब्द १३३ | वार्षिक मूल्य २) एक प्रति बीस नये पैसे

गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी हिन्दी-रक्षा-सत्याग्रह के मैदान में
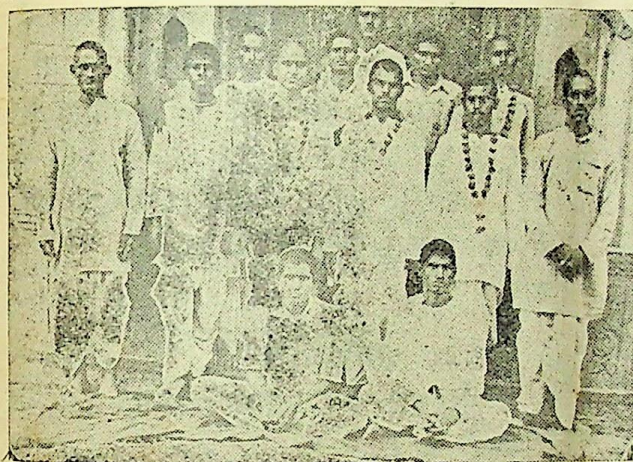
अन्यायी कैरों सरकार द्वारा मातृभाषा हिन्दी पर लगाये गये बन्धनों को तोड़ने के लिये गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी सत्याग्रह के मैदानमें आ डटे। १८ अक्तूबर को प्रातःकाल ब्रह्मचारी सोमवीर के नेतृत्व में ११ ब्रह्मचारियों का जत्था रोहतक पहुँचा। रोहतक में इन्दौर के ३ सत्याग्रही भी इसी जत्थे में मिल गये। १४ वीर सत्याग्रहियों ने झज्जर रोड (रोहतक) से हिन्दी रक्षा सम्बन्धी नारे लगाकर प्रदर्शन प्रारंभ कर दिया। जैसे-जैसे सत्याग्रही ब्रह्मचारी आगे बढ़ते गये वैसे-वैसे ही जनता की भीड़ भी बढ़ती ही गई। दुकानदार भी दुकानें छोड़-छोड़कर जत्थे के पीछे चल पड़े। सत्याग्रही आचार्य भगवान्देव, जगदेवसिंह सिद्धान्ती, प्रो० शेरसिंह आदि की अपीलें तथा महात्मा गान्धी जी की चेतावनी "सफेद टोपी वाले चुन-चुन कर मारे जायेंगे।" इत्यादि विज्ञापन भी बाँटते जा रहे थे। एक ड्यूटी पुलिसवाले ने टेलीफोन करके पुलिस बुलवाई लगभग २ घण्टा प्रदर्शन करने के पश्चात् ११॥ बजे सिटी पुलिस कोतवाली में जत्था गिरफ्तार कर लिया गया। दर्शकों की आवाज आ रही थी कि रोहतक में इस प्रकार का नवयुवक सत्याग्रहियों का प्रदर्शन कई दिन पश्चात् हुआ है; क्योंकि रोहतक में पुलिस का दमनचक्र पञ्जाब के सभी स्थानों से बढ़ चढ़ कर चल रहा है। वीर सत्याग्रहियों के गगनभेदी नारों को सुनकर दुकानदार कह रहे थे—"यह आर्यसमाजी हैं, यह किसी को छेड़ते नहीं और छेड़ते हैं तो छोड़ते नहीं।"

(शेष पृष्ठ २ पर)

संस्थापक व सम्पादक—ब्र० भगवान्देव आचार्य गुरुकुल झज्जर
सम्पादक —ब्र० वेदव्रत भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति
व्यवस्थापक —बलदेवसिंह बी० ए०, एफ. एस. सी. सि० प्रभाकर
सह-व्यवस्थापक—ब्र० सुदर्शनदेव भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति

विषय-सूची

सुधारक के नियम

१—सुधारक अंग्रेजी महीने की १० ता० को डाकखाने में डाला जाता है। यदि २० ता० तक न मिले तो अपने पोस्ट आफिस में पूछ-ताछ करनी चाहिये। फिर भी न मिले तो हमें लिखने पर और भेज दिया जायेगा।

२—छोटे लेख सारगर्भित तथा कागज के एक ओर सुन्दर और सुवाच्य लिखे हुये हों।

३—लेख में उचित परिवर्तन करना, प्रकाशित करना या न करना सब सम्पादक के आधीन है। अस्वीकृत लेख पोस्टेज भेजने पर ही वापिस लौटाया जा सकेगा।

४—वेद विरुद्ध लेखों का प्रकाशन सुधारक में न हो सकेगा।

५—सिद्धान्त विरुद्ध, अश्लील और मिथ्या विज्ञापनों के लिये "सुधारक" में स्थान नहीं है। इतना होते हुये भी विज्ञापन की सत्यता का उत्तरदायित्व हम पर नहीं।

६—व्यवस्थापक सम्बन्धी सब पत्र-व्यवहार तथा मनीआर्डर आदि "व्यवस्थापक-सुधारक" के नाम से भेजने चाहियें, किसी व्यक्ति के नाम न भेजें। साथ ही ग्राहक अपनी संख्या अवश्य लिखें।

७—एजन्टों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है और ५ से कम की एजेन्सी नहीं दी जाती। विज्ञापन का धन अगाऊ भेजना आवश्क है।

८—सब पत्र व्यवहार हिन्दी तथा संस्कृत में ही करें उर्दू, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में पत्र व्यवहार न करें। पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड भेजें।

विज्ञापन दर

	पूरा पृष्ठ	आधा पृष्ठ	चौथाई पृष्ठ
एक बार	१६)	९)	५)
तीन बार	४०)	२४)	१३)
छः बार	७५)	४५)	२५)
१ वर्ष तक	१३०)	७५	४५

टाईटिल अन्तिम १५% अधिक।
टाईटिल तृतीय १०% अधिक।
विशेषांक में सवाया। कम से कम ४॥)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ब्रह्मचारियों के इस जत्थे से पहले जुलाई में श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज ने चण्डीगढ़ में सत्याग्रह किया था, वे आज कैरों सरकार की जेल में बन्द हैं। उनके पश्चात ब्र० महावीर भाष्याचार्य ने जत्थे लेकर रोहतक में सत्याग्रह किया। तत्पश्चात् गुरुकुल के कर्मचारी श्री सत्यदेव दलीपसिंह आदि ने सत्याग्रह में भाग लिया, ये सब भी डिस्ट्रिक्ट जेल रोहतक में बन्दी हैं। कुछेक गुरुकुल झज्जर के व्यक्तियों के वारण्ट भी हैं, किन्तु वे अपने प्रचार कार्य में संलग्न हैं, आज्ञा मिलने पर वे भी जत्थे ले लेकर जेलों को भर देंगे।

दुःखियों की सेवा करने वाले की सभी प्रशंसा करते हैं

अनु त्वाहिघ्ने अध देव देवा मदन् विश्वे
कवितमं कवीनाम्।
करो यत्र वरिवो बाधिताय दिवे जनाय तन्वे
गृणानः ।। ऋ० ६-१८-१४

शब्दार्थः

(अध) अब, हे (देव) देव ? दिव्य गुण युक्त ! (अहिघ्ने) पाप नाशके निमित्त (विश्वे) सम्पूर्ण (देवः) देव, दिव्य गुण सम्पन्न जन (त्वा) तुझ (कवीनाम्) कवियों में (कवितमम्) सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी के (अनु) अनुकूल (मदन्) आनन्दित हो रहे हैं, (यत्र) जिस काल में तू (तन्वे) शरीर के लिये (गृणानः) पुकारा जाता हुआ (दिवे) सुप्त, प्रमादग्रस्त (बाधिताय) पीड़ित (जनाय) जन के लिये [की] (वरिवः) सेवा (करः) करता है।

ज्ञानी कौन ? जिसे पाप से घोर घृणा हो। वह महाज्ञानी=महाकवि=कविराज, जिसके भीतर पाप से युद्ध करने की उग्रभावना हो, और वह कवियों का कवि=कविनाम् कवितमः, जो पाप को मार देता है।

सचमुच उस जैसा क्रान्तदर्शी कौन हो सकता है, जो पाप के होने वाले भयङ्कर परिणामों का विचार करके पाप नाश कर देता है। भयङ्कर से भयङ्कर युद्ध इतना भयङ्कर नहीं होता, जितना पाप से युद्ध। वेद में इस युद्ध का अनेक रूपों में वर्णन है।

जिस प्रकार सूर्य जब मेघ को छिन्न-भिन्न कर देता है। तब संसार में हर्षोल्लास का विकास होता है, उसी प्रकार जब मनुष्य आत्मगत पाप-अहि को मार देता है, उसके सारे दिव्य गुण चमकने लगते हैं। (जब वह आत्मक्षेत्र में सफलता प्राप्त करके महाज्ञानी समाज क्षेत्र में अवतीर्ण होता है और समाजगत दोषों, अपराधों के साथ युद्ध आरम्भ करता है, और जब वह अपने पुरुषार्थ से समाज शुद्धि करने में सफलता प्राप्त करता है।

"अनुत्वाहिघ्ने अध देव देवा मदन् विश्वे कवितमं कवीनाम्",

तब पाप-नाश के निमित्त सब जीवजात इस कवियों के कवितम की विजय पर हर्षित होते हैं।

पाप विनाश का एक रूप है कि दरिद्रों के दुःखों का दूर करना समाज की विषम – व्यारव्या के कारण दुःखियों को बहुत कष्ट होता है। समाजगत विषमता के विनाश का ढङ्ग ही यही है कि पीड़ितों की पीड़ा को दूर किया जाये।

अतः वेद कहता है–

"करो यत्र वरिवो बाधिताय जनाय"

जब बाधित=पीड़ित=दुखग्रस्त जन की सेवा करता है।

किसी दुःखी की सेवा करने से सेवा करने वाले के हृदय में कितना उल्लास होता है और जिस पीड़ित की सेवा की गई है, जिसका दुःख दूर किया गया है, उसके मन से पूछो, उसके मन की क्या अवस्था है।

वेद स्पष्ट कहता है कि जो बाधित है, पीड़ित हैं, उनके बाधित होने में केवल समाज ही अपराधी नहीं है, वरन् बाधित का अपना भी अपराध है। वह अपराध है प्रमाद। इसको कहने के लिये वेद ने 'जनाय' का विशेषण भी दिया है। आलस्य और प्रमाद के कारण मनुष्य को अनेक प्रकार की हानियाँ उठानी पड़ती हैं। सुप्त प्रमादी को मानो दिव्य गुण भी नहीं चाहते। अतः जो बाधित है, उन्हें प्रमाद, आलस्य, तन्द्रा, निन्द्रा को छोड़ पुरुषार्थ और उद्यम को अपनाना चाहिये।

(स्वाध्याय सन्दोह से)

सफल-जीवन

जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त करने के लिए, मानव जीवन को सफल एवं सार्थक करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति प्रयत्न करता है। अपनी-अपनी शक्ति और बुद्धि के अनुसार सभी लोग जीवन को सुखमय बनाने में जुटे हुए हैं।

पाठकवृन्द ! हम सभी ने जीवन को सफल बनाने के सम्बन्ध में बहुत कुछ पढ़ा लिखा है, किन्तु फिर भी यह आशंका हमारे मन में निरन्तर बनी ही रहती है कि वास्तव में सफल जीवन है क्या ? जीवन साफल्य की कसौटी क्या है ? क्या आज के अर्थयुग में अपरिमित धनोपार्जन करना जीवन साफल्य है ? खूब यश प्राप्त करना जीवन सफलता है वा किसी उच्च पद पर आसीन होना ? अथवा सर्वविध सांसारिक भोगविलास की सामग्री जुटा लेने में ही जीवन को सफल माना जाये ? अभिप्राय यह है कि सब प्रकार से केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति को ही क्या किसी मनुष्य के जीवन की सफलता कहा जा सकता है ? और दूसरे उन सभी को, जिनका अपने स्वार्थ की ओर ध्यान नहीं, असफल ?

इन प्रश्नों पर विचार करते हुए तीन महापुरुषों का जीवन इतिहास हमारे सन्मुख आया। भगवान् बुद्ध, महर्षि दयानन्द सरस्वती और महात्मा गांधी।

यह तो सर्वविदित ही है कि महात्मा बुद्ध का जीवन सभी प्रकार से सफल है। क्यों सफल है ? उन्होंने धनोपार्जन नहीं किया, सांसारिक भोग विलास के साधन भी नहीं जुटाये, अपितु उनको ठुकरा दिया, किसी उच्च पद पर भी आसीन न हुए, अपना यश फैलाने का भी प्रयत्न न किया, फिर भी आज संसार उनको पूजा की दृष्टि से देखता है। केवल इसीलिए कि उन्होंने प्राणिमात्र के दुख को दूर करने में अपना जीवन लगा दिया। उन्होंने निस्स्वार्थ भावना से मानव-सेवा का व्रत लिया था, अतएव उनका जीवन सर्वथा सफल कहा जा सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन भी सब प्रकार से अत्यन्त सफल जीवन था। उन्होंने भी धन, ऐश्वर्य नहीं बटोरा, अपितु धन सम्पत्ति से परिपूर्ण घर को लात मारकर चल पड़े थे अपने सुख-चैन के साधन भी न जुटाए, किसी उच्च पद पर भी न बैठे। यदि किसी ने बैठाना भी चाहा तो उसको तुच्छ और हेय समझकर निषेध कर दिया। पुनरपि आज संसार उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति और पूजा की भावना रखता है वह क्यों ? वह इसलिए कि उन्होंने सर्वस्व त्यागकर निस्स्वार्थ भावना से प्राणिमात्र का उपकार किया। देश, धर्म और समाज का उद्धार किया और परोपकार की वेदी पर अपने जीवन को बलिदान कर दिया। इसीलिए उनका जीवन सफल है।

इसी प्रकार महात्मा गांधी ने भी धन-सम्पत्ति एकत्रित नहीं की। उनका रहन-सहन सर्वथा साधारण था। पुनरपि उनका जीवन लाखों धन-कुबेरों से कई गुना सफल कहा जायेगा। जिन्हें कि दूसरे के दुख-दर्द से कोई मतलब नहीं, यदि मतलब है तो केवल अपना पेट भरने और निज भोग सामग्री के जुटाने का। महात्मा गांधी आजीवन दुख से कराहती हुई मानव जाति के उद्धार के लिए संघर्ष करते रहे। इन्होंने भी अपना जीवन सेवा और परोपकार के लिये समर्पण कर दिया था।

इसी प्रकार के अन्य अनेक उदाहरण उपस्थित किये जा सकते हैं जिनमें हम देखते हैं कि महापुरुषों ने अपने सुख-चैन की कुछ भी परवाह न करते हुए देश, धर्म और समाज के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया

सभी मनुष्य महात्मा बुद्ध, महर्षि दयानन्द और महात्मा गाँधी बन जावें अर्थात् अपनी सब सुख-सम्पत्ति को दुःखियों की सेवा के लिए तिलाञ्जलि दे देवें, ऐसा मैं नहीं कहता। और ऐसा सब कर भी नहीं सकते। किन्तु जहां मनुष्य अपने लिए सुख का साधन जुटाता है वहाँ तो तनिक दीन-दुखियों की ओर भी ध्यान कर लेवे तो बहुत कुछ बन जाता है। यदि किसी शुभ काय के लिए कोई चन्दा माँगे तो यथाशक्ति देना चाहिए। किसी उत्तम कार्य में हमारे तन और मन की आवश्यकता है तो हम हिचके नहीं अपितु सहर्ष उसमें सहयोग दें। केवल धन से ही परोपकार नहीं होता। अपितु तन से, मन से सेवा और सहानुभूति से भी बहुत कुछ बन जाता है। हमारे विचार से अपना जीवन सुखमय व्यतीत करते हुए सेवा और परोपकार यथाशक्ति करते रहना इसी में मानव-जीवन की सफलता है, केवल अपना ही पेट भरने में नहीं। अपना पेट तो मानवेतर प्राणी कुत्ता, बिल्ली; पशु-पक्षी सभी भरते हैं।

—वेदव्रत

पंजाब की भाषा समस्या पर एक दृष्टि

—प्रो० शेरसिंह, भू. पू. मन्त्री पंजाब—

पंजाब में भाषा के सम्बन्ध में सच्चर फार्मूला, क्षेत्रीय योजना और अकालियों की नीति को लेकर काफी गड़बड़ है। मन्त्री और विधायक के रूप में मेरा राज्य की कई बातों से सम्बन्ध रहा है। अतः इस प्रसंग में कुछ तथ्यों पर प्रकाश डालना महत्व-पूर्ण होगा।

सच्चर फार्मूला

सच्चर फार्मूले के अनुसार पंजाब के हिन्दी क्षेत्रों में बसने वाले पैंसठ लाख हिन्दी भाषियों के लिए प्राइमरी से लेकर मैट्रिक तक गुरुमुखी लिपि में पठन पाठन अनिवार्य कर दिया गया है। इस फार्मूले का जब विरोध किया जाता है तब विरोध करने वालों को यह कहकर चुप करदिया जाता है कि सच्चर फार्मूले को पंजाब के विधेयकों ने स्वीकार कर लिया है और इस प्रकार इसे कानूनी बल मिल गया है। परन्तु यह कहना गलत है क्योंकि इस फार्मूले को कानूनी बल प्राप्त नहीं। वास्तविकता यह रही कि जिन दिनों डा० भार्गव और श्री सच्चर ज्ञानी करतारसिंह का समर्थन प्राप्त करने को उत्सुक थे, उन दिनों यह उन पर थोपा गया। डा० भार्गव और श्री सच्चर ने अपने-अपने समर्थकों से तीन-चार पंक्तियों वाले एक प्रस्ताव पर हस्ताक्षर कराये थे, ताकि वे ज्ञानी करतारसिंह के साथ सफलतापूर्वक समझौता कर सकें। इसके बाद एक फार्मूला तैयार किया गया, जो सच्चर फार्मूले के नाम से प्रसिद्ध है। इस पर श्री भीमसेन सच्चर, डा० गोपीचन्द भार्गव, ज्ञानी करतारसिंह और सरदार उज्वलसिंह ने दस्तखत किए थे। पंजाब के बहु संख्यक विधायकों को तब यह पता नहीं था कि इसका क्या फलितार्थ होगा।

सरकारी नीति की अस्पष्टता

उल्लेखनीय बात यह है कि सरकार ने भी यह कभी स्वीकार नहीं किया कि सच्चर फार्मूले को कोई कानूनी बल प्राप्त है। १९५० के प्रारम्भ में जब पंजाबी को थोपने पर हरियाणा में विरोध हुआ था तब सरकार ने फार्मूले को लागू करना स्थगित कर देने का फैसला किया था। १९५५ के अगस्त मास तक सरकार को स्वयं यह पता नहीं था कि फार्मूले के प्रति उसका रुख क्या है। जालन्धर में जब पंजाब के जन-निर्देश विभाग के डायरेक्टर ने सरकार की भाषा सम्बन्धी नीति पर एक बयान दिया था तब उसका विरोध हुआ और तब तत्कालीन मुख्य मन्त्री श्री भीमसेन सच्चर ने २९ अगस्त को एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा था कि भाषा सम्बन्धी फार्मूले को स्पष्ट किए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि सरकार विभिन्न क्षेत्रों से जानकारी प्राप्त कर रही है। पूरी जानकारी प्राप्त हो जाने पर विधान मंडल में एक विधेयक रखा जायगा। इस कथन से स्पष्ट है कि पंजाब सरकार स्वयं राज्य विधानसभा में भाषा के सम्बन्ध में एक विधेयक लाने वाली थी, इससे यह भी स्पष्ट है कि सच्चर फार्मूले को कभी कानूनी बल प्राप्त नहीं था।

संसदीय पुष्टि की बात

क्षेत्रीय फार्मूले के बारे में एक दूसरी गड़बड़ यह है और जैसा कहा जाता है कि उसे संसद ने स्वीकार कर लिया है। अतः अब उससे हटने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता।

इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय बात यह है कि गत ६ सितम्बर १९५६ को लोकसभा में क्षेत्रीय फार्मूले पर विचार हुआ था। पंजाब विधान मंडल के तेंतीस सदस्यों ने पं० ठाकुरदास भार्गव के पास एक स्मरण पत्र भेजकर यह मांग की थी कि वह क्षेत्रीय फार्मूले से भाषा सम्बन्धी अनुच्छेदों को हटाकर उसके स्थान पर एक नया फार्मूला उपस्थित करें। जिसमें हिन्दी भाषी क्षेत्रों की विशेष सुरक्षा की व्यवस्था हो। पं० ठाकुरदास भार्गव ने लोकसभा में इस आशय का फार्मूला पेश किया। जिस पर सरदार बहादुरसिंह ने एक संशोधन पेश किया। इन दोनों पर मत लिए गए और दोनों गिर गए। अतः क्षेत्रीय फार्मूले में राष्ट्रपति अब भी ऐसी फेर बदल करने को स्वतन्त्र है जिससे क्षेत्रीय समितियाँ विधिवत् काम कर सकें।

अकालियों का रुख

हमारे कुछ नेताओं को यह भय है कि क्षेत्रीय फार्मूले में यदि अब कोई परिवर्तन किया गया तो अकाली नया आन्दोलन छेड़ देंगे। लेकिन यह कहना होगा कि जनता को पूरी बातों की जानकारी नहीं कराई जा रही है। ६ सितम्बर १९५६ को जब लोकसभा में क्षेत्रीय फार्मूले पर विचार हो रहा था, तब शिरोमणि अकाली दल के भूतपूर्व अध्यक्ष और पंजाब के एक प्रमुख अकाली नेता सरदार हुक्म सिंह ने श्री एन० सी० चटर्जी और पं० ठाकुरदास भार्गव के ऐतराजों का जवाब देते हुए कहा था "इस फार्मूले का यह अर्थ नहीं कि प्रत्येक हिन्दू हिन्दी भाषी और प्रत्येक सिख गुरुमुखी बोलने वाला है। पं० ठाकुरदास भार्गव का कहना है कि उन्हें पंजाबी पढ़ने को क्यों कहा जाय। मैंने यह कभी नहीं कहा कि वह पंजाबी पढ़े। मैंने हरियाणा वासियों से भी यह कभी नहीं कहा कि वे पंजाबी पढ़े यदी वह चाहें पढ़ें, न चाहें तो न पढ़ें।" सरदार हुक्मसिंह के इस कथन से स्पष्ट है कि यदि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में पंजाबी का अनिवार्य पठन पाठन समाप्त कर दिया जाय तो अकालियों को कोई आपत्ति न होगी।

सरकारी संस्थाओं की रिपोर्ट

इस सम्बन्ध में भारत सरकार द्वारा नियुक्त किये गए विभिन्न आयोगों और शिक्षा सम्बन्धी केन्द्रिय परामर्शदात्री बोर्ड की रिपोर्ट के कुछ उद्धरण देना अप्रासंगिक न होगा। बोर्ड का मत है :

"प्रादेशिक अथवा राज्यभाषा का पठन-पाठन जहां वह मातृभाषा से भिन्न है तीसरी कक्षा से पूर्व और जूनियर बेसिक स्तर के बाद नहीं शुरू किया जाना चाहिए।" इन आयोगों और बोर्डों ने उन छात्रों को जिनकी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषा एक ही हो, जबरन कोई अन्य भषा पढ़ाने की बात नहीं कही।

राजभाषा आयोग के एक सदस्य सरदार बहादुर तेजसिंह का मत भी यही है कि हिन्दी क्षेत्रों में अन्य प्रादेशिक भाषाओं के पढ़ने की उपयुक्त व्यवस्था की जानी चाहिए उसकी प्रेरणा दी जानी चाहिए। किन्तु छात्रों पर जबरन कोई चीज नहीं थोपी जानी चाहिए, हाँ राजभाषा आयोग ने सबके लिए माध्यमिक स्तर पर हिन्दी पढ़ना अनिवार्य कर देने की बात अवश्य कही है।

उपर्युक्त तथ्य प्रस्तुत कर देने के बाद में यह नहीं समझ पा रहा हूं कि हिन्दी भाषी क्षेत्र में पंजाबी का अध्ययन अनिवार्य क्यों किया जा रहा है?

माता की लाज बचायेंगे

(ले०—ब्र० सुदर्शनदेव व्याकरणाचार्य गुरुकुल भज्जर)

आदौ माता गुरोःपत्नी ब्राह्मणी राजपत्निका।
धेनुर्धात्री तथा पृथ्वी सप्तैता मातरः स्मृताः ॥

इस उल्लिखित छन्द में मनु महाराज ने सात माताओं का वर्णन किया है जो इस प्रकार हैं—

१—उत्पन्न करने वाली, २—गुरुपत्नी, ३—ब्राह्मणी, ४—राजा की पत्नी, ५—गौ, ६—धायी, ७—पृथ्वी ये सात मातायें कहलाती हैं। किन्तु उल्लिखित छन्द आज निम्न प्रकार से होना योग्य है—

आदौ माता गुरोः पत्नी ब्राह्मणी राजपत्निका।
धेनुर्धात्री तथा पृथ्वी हिन्दीति मातरः स्मृताः ॥

उपर्युक्त सात माताओं के अतिरिक्त छन्द में हिन्दी माता की भी गणना होनी योग्य है, क्योंकि आज समय यही कहता है।

यहाँ यह कहने की आवश्यकता नहीं कि माता शब्द में ही कितना स्वाभाविक स्नेह एवं प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ है। दुःख में प्रत्येक मानव के मुख से "माँ" शब्द ही निकलता है, जो शान्ति तथा स्नेह को द्योतक है। कोई भी व्यक्ति अपनी माता के प्रति अपशब्द तथा कटुवचन नहीं सुन सकता। माता का जहाँ पसीना गिरे वहाँ माता का सच्चा सपूता रक्त की धारा बहाने को तैयार होता है। कोई भी मानव क्या प्राणिमात्र माता का अपमान अपनी आँखों से देखने के लिये तैयार नहीं हो सकता। प्राणों की बलि चढ़ाना सहर्ष स्वीकार है किन्तु माता का अपमान किसी को किसी भी अवस्था में स्वीकार नहीं हो सकता।

यह सर्वविदित है कि माता के उपकार असंख्य होते हैं। माता का ऋण नहीं चुकाया जा सकता। माता की महिमा अपार है जिसे लेखनी लिख नहीं सकती, वाणी कह नहीं सकती। इसीलिए तो कहा जाता है—"जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी" अर्थात् माता तथा जन्मभूमि स्वर्ग से भी कहीं बढ़कर है।

आपने सुना होगा कि अपनी आठवीं माता हिन्दी का भरी सभा में भारी अपमान किया गया। किसी ने उसका गला घोटा, किसी ने कपड़े फाड़ डाले, किसी के दण्ड प्रहार से खून की धारा बह चली, यहाँ तक कि किसी ने माता के प्राण तक लेने की सोची।

उस सभा में कुछ एक माता के सपूत भी उपस्थित थे, किन्तु उनकी संख्या बहुत ही कम थी। वे उन मातृ-घातकों का सामुख्य (सामना) न कर सके। मन ही मन में जलकर खाक होने लगा। किन्तु एक माता के सच्चे सपूत से अपनी आत्मा की सच्ची आवाज रुक न सकी, क्योंकि वे सच्चे आत्मानन्द थे। उन्होंने मातृरक्षा नामक बिगुल उठाकर बजा ह दिया। उस बिगुल के प्रत्येक स्वर से मातृ-रक्षा क ध्वनि निकल रही थी। वह पवित्र ध्वनि आकाश में फैल माता के सच्चे सपूतों की कर्णभित्ति से जा टकराई। बस क्या था, ज्यूँ ही माता के सपूतों ने यह पवित्र मातृ-रक्षा की ध्वनि सुनी त्यूँ ही माता के सच्चे सपूत सत्याग्रह-नामक अहिंसा शस्त्र हाथ में उठा, कन्धों पर धर माता की लाज बचाने दौड़ पड़े। घटनास्थल पर पहुंचते ही आपस में खूब मुकाबला ठना-विदित होगा कि आजतक भी वह मातृ-रक्षा युद्ध तीव्र गति से चालू है।

माता के वे अलबेले सपूत भयंकर विघ्न बाधाओं दुःखों एवं यातनाओं के साथ हास्य (ठल्ला) करते हैं। वे दुःख को सुख, शोक को हर्ष, आपत्ति को सम्पत्ति भूख को भोजन, प्यास को अमृत पान, आराम को हराम, और जेल को विश्राम घर समझते हैं।

उन वीरों की यह दृढ़ प्रतिज्ञा है कि माता का भरी सभा में जो अपमान हुआ है जबतक हम उसक

बदला नहीं चुका लेंगे तबतक हमारा कदम सूत भर भी पीछे नहीं हट सकता। हम माता का अपमान अपना तथा राष्ट्र का अपमान समझते हैं; माता की रक्षा में ही हमारी रक्षा है, माता की लाज ही हमारी अपनी लाज है। हम मातृरक्षा को परमधर्म समझते हैं।

विदित हुआ कि वीरप्रवर माता के एक सच्चे सपूत ने मातृ-रक्षा युद्ध में लड़ते-लड़ते माता के गले अपने प्राणों की पवित्र जयमाला डाल दी है। उस वीर को हम नतमस्तक हो श्रद्धाञ्जली भेंट करते हैं।

अब इसमें सन्देश नहीं रह गया है कि सभी वीर विजयमाला हाथ में लिये हुये माता तक पहुंच चुके हैं। दिन प्रतिदिन सफलता दर्शन दे रही है किन्तु अभी वे किसी शुभ अवसर को खोज रहे हैं और किसी की आज्ञा की प्रतीक्षा में हैं। आज्ञा मिलते ही वे माता के गले में करतल ध्वनि के साथ विजयमाला डाल देंगे। अतः वीरों की एवं माता के सच्चे सपूतों की अभी यही प्रतिज्ञा है कि—

आगे को बढते जायेंगे
न पीछे कदम हटायेंगे।
प्राणों से खेलते जायेंगे
माता की लाज बचायेंगे॥

भजन—हिन्दी रक्षा सत्याग्रह

(ले०—पं० ताराचन्द जी शर्मा आर्योपदेशक)

[श्री पं० ताराचन्दजी शर्मा उत्साही नवयुवक हैं। वे आर्यसमाज दोङ्गड़ा अहीर के सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व करते हुए नारनौल में गिरफ्तार हो चुके हैं। उन्होंने यह कविता जेल जाने से पूर्व सुधारक में प्रकाशनार्थ भेजी है —सम्पादक]

देश धर्म के दीवानों, चलो चण्डीगढ़ को नौज्वानो
मौका आया कुर्बानी का। टेक।
सब भाषाओं की जन्मदाता, आज काट दई हिंदी माता
हो रहा काम शैतानी का। १।
जागो सोने वाले जागो, आलस्य निद्रा को त्यागो
करो फर्ज अदा नौज्वानी का। २।
तन मन धन भेंट चढ़ाना है, मातृभाषा को बचाना है
यह कर्त्तव्य अमर निशानी का। ३।
चलो जेलखाने भर दो, कैरों की नाक में दम कर दो
हो सर नीचा अभिमानी का। ४।
कभी कदम पिछाड़ी मत धरना, तुम्हें होवेगा पालन करना
उस सन्यासी की वानी का। ५।
विरोधी मन मानी तान रहे, तुम्हें बिल्कुल मुर्दा जान रहे
क्या जीना इस जिन्दगानी का। ६।
हिन्दी भाषा के जो द्रोही, करते फिरते हैं बदगोई
उन्हें समझो जयचन्द की सानी का। ७।
ताराचन्द साफ जताना है, कैरों को मजा चखाना है
हिन्दी की मानहानि का। ८।

कवित्त न० १

पुरुष पशु कौन

धर्म में रुचि अरु राष्ट्र से प्रेम नहीं,
सत्य शास्त्र वेद की ना करी पहचान है ।
तप दान शील शुभ कर्म से हीन रहे,
साधु-सत्सङ्ग हृदय नाहिं ज्ञान है ।
जब तक जीवें धन धान्य का ही नाश करे ।
धूल मांही धूल बस अन्न को मकान है ।
भूमि पर भार होके व्यर्थ जग घूमता है,
बिनु पूंछ सींग नर पशु के समान है ।

कवित्त न० २

व्यभिचार

धर्म डुबावे, बल ओज को नशावै,
विन आया काल खावै, यमराज का भी साला है ।
करें वंश बदनाम, घोर नर्क का पैगाम,
सूखें हड्डी और चाम सब दौलत का ताला है ।
सड़ै कीट-कुंड, जिमि विष्ठे मांहि मुण्ड,
कटे लाखों रुंड-मुण्ड, बहा रुधिर का नाला है ।
नानाविध आधि-व्याधि कूप महापाप का ।
व्यभिचार नीच-कीच जीवन का दिवाला है ।

हरस्वरूपसिंह "प्रभाकर"
प्रधानाध्यापक
ग० स्कूल कारौली (महेन्द्रगढ़)

१०४७२ ध्वनियाँ

(ले० - आचार्य विश्वप्रिय शास्त्री दिल्ली)

कतिपय सुप्रसिद्ध भाषाओं की उच्चारण ध्वनियां निम्न हैं।

१—बाल्टिक	१७	२—लैटिन हिब्रू	२०
३—फ्रैञ्च	२५	४—अंग्रेजी	२६
५—स्पेनिश	२७	६—तुर्की अर्बी	२८
७—फारसी	३१	८—रूसी भाषा	३५
९—चीनी	२०४	१०—संस्कृत	६३

उपरिलिखित इस तालिका के आधार पर सब से अधिक ध्वनियां चीनी भाषा की प्रतीत होती हैं। परन्तु २०४ ध्वनियां मौलिक रूप से चीनी भाषा में नहीं हैं। यह २०४ ध्वनियां कुछ थोड़ी सी ही ध्वनियां का ही रूपान्तर हैं।

संस्कृत भाषा

मूल रूप में 'त्रिषष्टिः चतुःषष्ठिर्वावर्णाः' के अनुसार संस्कृत भापा में तरेसठ या चौंसठ वर्ण (ध्वनियां) स्वीकार की गयी हैं। यहां वैयाकरण पाणिनि आचार्य संस्कृत भाषा में तरेसठ वर्ण हैं, परन्तु अवान्तर रूप में इनकी संख्या सहस्रों में पहुंच जाती हैं।

स्वर

ह्रस्व	दीर्घ	प्लुत	दीर्घ	प्लुत
अ	आ	अ३	ए	ए३
इ	ई	इ३	ऐ	ऐ३
उ	ऊ	उ३	ओ	ओ३
ऋ	ॠ	औ	औ	औ३

व्यंजन

कवर्ग	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	
चवर्ग	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	
तवर्ग	त्	थ्	द्	ध्	न्	स्पर्श
टवर्ग	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	योग २५
पवर्ग	प्	फ्	ब्	भ्	म्	
अन्तस्थ	य	व	र	ल	=४	
ऊष्म	श	ष	स	ह	=४	

अयोगवाह	यम
: विसर्जनीय	ᳵ ह्रस्व
ᳵ जिह्वामूलीय	ᳶ दीर्घ
ᳶ उपधमानीय	ँ अनुनासिक
ं अनुस्वार	ल अक्षर

इन सबका योग स्वर २२+स्पर्श २५+४ अन्तस्थ+४ ऊष्म+८ अयोगवाह=६३ वर्ण होता है। कतिपय आचार्य ऌ वर्ण के दीर्घत्व को स्वीकार करते हैं, इसलिये चौंसठ वर्ण हो जाते हैं।

आठ अयोगवाहों के अन्तिम चार अक्षरों को यम कहा गया है। इन चारों को आचार्य पाणिनि ने "अनुस्वारयमाः नासिक्याः" सूत्र से नासिका का स्थान वाला कहा है। अयोगवाहों के जिह्वामूलीय और उपध्मानीय की आकृति में तो साधारणतया कोई अन्तर प्रतीत नहीं। वैसे जिह्वामूलीय का अस्तित्व कवर्ग के ककार और खकार के परे होने पर तथा उपधमानीय का अस्तित्व पवर्ग के पकार और भकार के परे होने पर विसर्जनीय के स्थान में दीख पड़ता है।

विसर्जनीय के स्थान में होने पर भी उपधमानीय का स्थान ओष्ठ बन जाता है, पकार के संयोग से।

भेदों का विस्तार

वास्तविक रूप से देखा जाय तो अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ यह केवल ९ ही स्वर हैं।

इनमें भी अन्तिम के चार वर्ण ए ऐ ओ औ सन्ध्यक्षर कहलाते हैं अर्थात् अ और इ के संयोग से ए और अ और उ के संयोग से ओ तथा अ और ए के संयोग से ऐ और अ और ओ के मेल से औ बन जाते हैं।

ऋ और ऌ से भी किसी न किसी रूप में रेफ और लकार की ध्वनि विद्यमान है ही।

विस्तार की दृष्टि से अकार वर्ग को ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत तथा उदात्त अनुदात्त स्वरित एवं सानुनासिक और निरनुनासिक के भेद से आचार्य पाणिनि निम्न १८ भेदों वाला स्वीकार करते हैं—

अनुनासिक रहित

	ह्रस्व	दीर्घ	प्लुत
उदात्त	अ	आ	अ३
अनुदात्त	अ॒	आ॒	अ॒३
स्वरित	अ॑	आ॑	अ३॑

अनुनासिक सहित

उदात्त	अँ	आँ	अँ३
अनुदात्त	अँ॒	आँ॒	अँ॒३
स्वरित	अँ॑	आँ॑	अँ३॑

अकार के उपरिलिखित अठारह भेदों की तरह इकार उकार ऋकार के भी अठारह-अठारह भेद हो जायेंगे। इस प्रकार अकार, इकार, उकार और ऋकार इन चारों के ७२ भेद हो गये। दीर्घ न होने से लृकार के तथा ह्रस्व न होने से चारों सन्ध्यक्षरों ए ऐ तथा ओ औ के प्रत्येक के बारह-बारह भेद होने से पाञ्चों के ६० भेद हो गये।

सब मिलाकर ७२+६०=१३२ हुए

विचारणीय बात

ह्रस्व दीर्घ, प्लुत, उदत्त, अनुदात्त, स्वरित तथा सानुनासिक निरनुनासिक भेद से अकार १८ प्रकार का है। यदि आकार के उदात्ततर अनुदात्ततर स्वरिते उदात्त तथा एक श्रुतिस्वर के द्वारा भी भेद किये जायें तो अकार ४२ प्रकार का होगा।

इसी प्रकार इकार, उकार तथा ऋकार के भी बयालीस बयालीस भेद होंगे। चारों के ४२×४=१६८ भेद हो जायेंगे।

दीर्घ न होने से लृकार तथा ह्रस्व न होने से सन्ध्यक्षरों के अट्ठाईस-अट्ठाईस भेद होंगे। पाँचों के २८×५=१४० भेद होंगे। सब मिलकर १६८+१४० भेद=३०८ भेद स्वरों के हो गये।

२५ स्पर्श, ४ अन्तःस्थ तथा ४ ऊष्मों के ३३×३०८=१०१६४ भेद व्यञ्जनों के हो गये। इनमें ३०८ स्वरों के मिला कर १०१६४+३०८=१०४७२ भेद स्वर और व्यञ्जनों के हो गये।

यदि उदात्ततर आदि के हिसाब से न भी गिना जाये तब भी १३२×३३=४३५६ व्यञ्जनों के तथा १३२ स्वरों के मिलाकर ४८८८ रूप कुल स्वर और व्यञ्जनों के हो गये।

संस्कृत की १०४७२ ध्वनियों के समक्ष चीनी भाषा की २०४ ध्वनियाँ नगण्य हैं। संस्कृत भाषा की ध्वनियाँ चीनी की पचास गुणा से भी अधिक ध्वनियाँ हैं।

विचित्रता

आठ अयोगवाहों में से केवल अनुनासिक को ही लेकर आचार्य पाणिनि के ढंग पर हमारी यह कल्पना है। शेष अयोगवाहों के संयोग से रूपों की कल्पना विज्ञ पाठक स्वयं कर लें।

तरेसठ ही क्यों ?

इसका सीधा सा उत्तर यही है कि इनके उच्चारण के बिना काम ठीक नहीं चलता।

जैसा कि ऊपर दिखाया गया है कि मौलिक रूप में स्वर पाँच ही हैं। शेष चार सन्धि रूप है परन्तु अ और इ के एक साथ लिखने से दो पृथक् वर्ण बोले जाते हैं। एकार का उच्चारण अ और इ से नहीं होता।

इस प्रकार व्यंजनों में भी पाँचों वर्गों के प्रथम और तृतीय वर्ण ही मौलिक हैं। शेष तीनों वर्णों का उच्चारण दूसरे रूप में चलाने की चेष्टा करते हैं। खकार का उच्चारण दूसरी भाषाओं में क और ह से किया जाता है और घकार का उच्चारण ग और ह के संयोग से किया जाता है।

परन्तु खकार का वास्तविक उच्चारण क और ह की ध्वनि से ठीक-ठीक प्रतीत नहीं होता इसी प्रकार घकार का भी क और ग को एक साथ लिखने से नहीं होता।

इसी प्रकार ङ ञ न ण म का उच्चारण भी अनुस्वार से नहीं हो सकता। इनके और अनुस्वार के उच्चारण स्थान में भी भेद है। अनुस्वार का उच्चारण

(शेष पृष्ठ १७ पर)

सात मर्यादायें

(ले०—ब्रह्मचारी महादेव सिद्धान्त शास्त्री गुरुकुल झज्जर रोहतक)

सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरोगात्। आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीले पथां विसर्गेधरुणेषु तस्थौ ॥ऋ० १०।५।६ ॥

मनुष्य जीवन को सुखपूर्वक यापन करने के लिए ऋषि-महर्षियों ने सात मर्यादायें बान्धी हैं। यदि मनुष्य एक भी मर्यादा का पालन नहीं करता तो वह पापी होता है और जो इनका पालन करता है वह उर्ध्वगति को प्राप्त होता है। सात मर्यादाएं यह हैं—

अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-शौच-स्वाध्याय-ईश्वरप्रणिधान, आगे इनकी व्याख्या क्रमशः की जावेगी।

१—अहिंसा

साय मर्यादाओं में अहिंसा का प्रथम स्थान है। यमों में भी यह सर्वप्रथम यम है। "अहिंसा परमो धर्मः" अहिंसा ही परम धर्म है। यह पवित्र वाक्य हमें बतलाता है कि अहिंसा पालन मनुष्य की जीवन यात्रा में कितना आवश्यक है। मन, वचन, कर्म से किसी प्राणि को पीड़ा न देना अहिंसा कहलाती है। महर्षि पतञ्जलि महाराज ने योगदर्शन में कहा है "अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौवैरत्यागः" योग० पाद २ सू० ३५। जो सच्चा अहिंसा का पुजारी है उसके मन में किसी से वैर नहीं रहता और सब प्राणी भी वैर करना छोड़ देते हैं। यहाँ तक कि भयङ्कर वन्य व्याघ्रादि पशु भी उससे प्यार करते हैं। इसलिए मनुष्य को अहिंसा का पालन करना आवश्यक है।

अहिंसा के सम्बन्ध में श्री महात्मा गांधी जी महाराज की लोगों की आँखों देखी घटना है। एक दिन महात्मा जी जहाज से आ रहे थे, जब वे तट पर पहुंचे तो अध्यक्ष ने उतरने की आज्ञा नहीं दी; क्योंकि कप्तान ने आकर कहा कि महाराज ? गोरों की भीड़ आपको मारने को तुली है। इसलिए आप सांयकाल चुपचाप चले जाना अच्छा है। परन्तु महात्मा गांधी ने कहा, जब मैंने उनका कुछ भी बुरा नहीं चाहा तो मुझे क्यों पीटेंगें। यदि उनको सचाई का ज्ञान हो जाय तो वे अवश्य ही पश्चाताप करेंगे। अन्धेरे में जाना अच्छा नहीं।

जब वे जहाज से उतरे तब उन पर ईंट-पत्थर, रोड़े, सड़े हुए अण्डे और मुक्कों की बौछार होने लगी। उस समय गांधी जी को इतना पीटा कि वे बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। सौभाग्य की बात है कि तत्काल सुपरिन्टैण्डैण्ट की पत्नी ने उन्हें बचाया। इतने पर पुलिस भी आ गई। उस समय गांधी जी से पुलिस ने कहा कि आप रिपोर्ट करें, यदि नाम जानते हो तो नाम भी बता दें तो अच्छा है।

उस समय सच्चे अहिंसा के पुजारी ने कहा—"आप अहिंसा की महिमा ही नहीं जानते, इनको दण्ड देने से क्या मिलेगा। कुछ काल बाद ये स्वयं शान्त हो जायेंगे और अपने किए हुए कर्म पर पश्चाताप करेंगे।" वे प्रायः कहा करते थे 'हिंसा से दूर रहना ही अहिंसा नहीं है, किसी को मारना या सताना ही हिंसा नहीं, परन्तु मिथ्या-भाषण भी हिंसा है, जगत् के लिए जो आवश्यक वस्तु है उस पर कब्जा करना भी हिंसा है। सब प्रकार की हिंसा से बचना वास्तविक अहिंसा है।

अहिंसा के शस्त्र से ही मुट्ठी भर हड्डी वाले गांधी जी महाराज ने स्वराज्य प्राप्त किया। इसी प्रकार आधुनिक सुधारक जगद् गुरु महर्षि दयानन्द जी महाराज भी अहिंसा के पुजारी थे। उनके जीवन की यह सच्ची घटना है कि सच्चे शिव की खोज में

जब वे एक वन से दूसरे वन में फिरते थे तब एक दिन किसी भयङ्कर भालू का सामना करना पड़ा। जब अहिंसा के पुजारी ने आँख से आँख मिलाई तब वह रास्ता छोड़ पूंछ दबाकर भाग गया। इसी प्रकार जब राजा कर्णसिंह ऋषि को मारने की भावना लेकर आया, तब अन्त तक महर्षि ने अहिंसा से ही काम लिया। परन्तु उसने महर्षि पर तलवार चलाई और महर्षि ने उसकी तलवार के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। उनके शिष्य वर्ग ने कहा कि आप इनकी रिपोर्ट कर दें, परन्तु आपने कहा कि यदि कोई अपना धर्म छोड़ दें तो क्या हम भी धर्म से च्युत हो जावें ?

यहाँ पर स्वामी जी महाराज की एक जीवन घटना भी उल्लेखनीय है। जब स्वामी जी को प्राण-नाशक विष दिया गया तब उन्हें यह ज्ञात हो चुका था कि मुझे भयंकर विष दिया गया है। तभी अपने प्राणघातक को ५० रुपये की थैली भेंट देकर विदेश जाने को कहा यह है अहिंसा-पालन का सच्चा आदर्श। इसी अहिंसा के शस्त्र से आर्यवीरों ने निजाम की नादिरशाही को नष्ट-भ्रष्ट किया था और इसी पवित्र अस्त्र से पञ्जाब राज्य की नीति को बदलना है।

२—सत्य

सप्त-मर्यादाओं में सत्य का दूसरा स्थान है। सत्य अर्थात् मन, वचन, कर्म से सत्यभाषण करना, क्योंकि हमारे धर्म ग्रन्थों में कहा है "सत्यमेव जयते नानृतम्" अर्थात् सत्य की ही जय होती है असत्य की नहीं। "नास्ति सत्यात्परो धर्मः," सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। सत्यवादी की वाणी 'अमोघ' होती है। अर्थात् सत्यवादी जो कुछ कहता है वही हो जाता है। इसलिए जीवन उत्थान का यह आवश्यक कर्म है। परन्तु हमें किस प्रकार का सत्य अपनाना चाहिए। यह मनु जी महाराज ने निम्न प्रकार बताया है :—

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियं। प्रियं च नानृतम् ब्रूयादेष धर्म सनातनः। भद्रं भद्रमिति ब्रूयाद्भद्रमित्येव वा वेदत्। शुष्कवैरं विवादं च न कुर्यात्केनचित्सहः॥ मनु ४।१३८-१३९॥

इसका अर्थ स्वामी दयानन्द जी महाराज ने निम्न प्रकार किया है। "सदा प्रिय दूसरे का हितकारक बोले, अप्रिय सत्य अर्थात् काणे को काणा न बोले। अनृत अर्थात् झूठ दूसरे को प्रसन्न करने के अर्थ न न बोले। सदा भद्र अर्थात् सबके हितकारी वचन बोला करें। शुष्क वैर अर्थात् बिना अपराध किसी के साथ विरोध या विवाद न करें। जो भी दूसरे का हितकारक और बुरा भी हो तथापि कहे बिना न रहे।" "सत्येन पन्था विततो देवयानः" अर्थात् देव विद्वान् लोग सत्य के द्वारा देव पथ को प्राप्त करते हैं और योगशास्त्र में कहा है "सत्यं प्रतिष्ठायाम् क्रियाफलाश्रयत्वम्" ॥ २। ३६॥

३—अस्तेय

अस्तेय का अर्थ चोरी करना अर्थात् किसी की वस्तु बिना पूछे ग्रहण करना वा पर धन पर लालायित न होना। इस विषय में वेद भगवान् ने कहा है:—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
तेनत्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥
ईशो० १ श्लोक॥ यजु० ४०। १

अर्थात् इस संसार में जो कुछ भी है वह सब ईश्वर का ही है। इसलिए ईश्वर जो कुछ देता है वह कर्म करने पर ही देता है अतः ईश्वर ने जो दिया है उसीका उपभोग करना चाहिए। दूसरे के धन पर गीध पक्षी की भाँति मनचला नहीं होना चाहिए। ईश्वर धन कमाने के लिए सभी को कर्म करने की आज्ञा देता है:—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीवेश ९ छतं समाः"
ईशो० २ श्लोक॥यजु० ४०।२

हे मनुष्यो! कर्म करते हुए ही सौ साल तक जीने की इच्छा करो। चोरी आदि से धन कमाने की जो इच्छा है वह ठीक नहीं; क्योंकि कहा है चोरी का धन मोरी में। अर्थात जो चोरी से, अत्याचार से धन कमाता है वह धन उसको लाभ नहीं देता। वह धन उसका उलटा नाश करता है। चोर कभी भी सुख का श्वास नहीं ले सकता। अतः चोरी करना शास्त्रकारों ने महापाप बताया है। अस्तेय का लाभ बताते हुए श्री पातञ्जलि मुनि ने कहा है:—

अस्तेय प्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम् (योगदर्शन आ० २ सू० ३८।

अस्तेय में प्रतिष्ठ होने पर सब रत्नों की प्राप्ति होती है ॥

४—ब्रह्मचर्य

शरीर का अन्तिम धातु जिसे शुक्र वा वीर्य भी कहते हैं। वीर्य के नाश से शरीर रूपी दीवार धड़ाम से गिर जाती है और उसे मृत्यु घेर लेती है। कहा है:—

"मरणं बिन्दु पातेन जीवनं बिन्दुधारणात्'

मानव की ब्रह्मचर्य के एक बिन्दु पातन से मृत्यु और एक बिन्दु के धारण से जीवन प्राप्त होता है। "ब्रह्मचर्य महौषधम्" के अनुसार ब्रह्मचर्य शरीर को सर्वथा निरोग रखने की महौषध है। इस संसार सागर को तरने के लिए ब्रह्मचर्य परमावश्यक है। इस विषय में भगवान् वेद कहते हैं:—ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नतः ॥ अ० ११। ५। १६ ॥ अर्थात् ब्रह्मचय के तप से विद्वान् भयावह मृत्यु को भी जीत लेते हैं।

महाभारत युद्ध के समय बाल ब्रह्मचारी भीष्म पितामह बाणों की शैय्या पर पड़े हैं। मौत बार-बार आती है, और घबराकर भाग जाती है। यह था, ब्रह्मचर्य का प्रताप, भीष्म जी मृत्यु से प्रतिज्ञा करते हैं कि जब सूर्य उत्तरायण हो तब तुम मुझे आ संभालना इससे पूर्व हे मृत्यो: तुम्हारे सब प्रयत्न व्यर्थ हैं। इसी प्रकार जब सूर्य उत्तरायण में आया तब ब्रह्मचारी ने स्वयं ही यह लीला समाप्त की। इसी प्रकार जगदुद्धारक स्वामी दयानन्द जी महाराज जब रोगी थे, तब उनकी चिकित्सा करने वाले डाकटरों ने कहा कि यदि यह भयङ्कर विष किसी साधारण व्यक्ति को दे दिया जाता तो ५ मिनट तक भी जीवित नहीं रह सकता। परन्तु आदर्श ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द जी महाराज कई मास तक जीते रहे। अन्त में ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो कहकर संसार से विदा हुए। ब्रह्मचर्य शरीर में ठीक वही काम करता है जो कि दीपक में तेल। जिस दीपक में तेल नहीं वह दीपक, दीपक नहीं। ठीक उसी प्रकार जिस शरीर में वीर्य रूपी तेल नहीं वह शरीर तेल रहित दीपक के समान सर्वथा व्यर्थ है। ब्रह्मचर्य के बिना मनुष्य सात जन्मों में भी सुख-शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता। बिना ब्रह्मचर्य के जीवन अन्धकार-मय है। यह अनमोल चोला ब्रह्मचर्य के बिना जीर्ण शीर्ण हो जाता है। ब्रह्मचर्य के बिना मानव की संसार में वही दशा होती है जो कि छिद्र एवं जीर्ण-शीर्ण नौका की। मानव के चरम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्य परम आवश्यक है।

५—शौच-सफाई

जीवन के अन्तिम लक्ष्य प्राप्ति के लिए शौच भी आवश्यक अङ्ग है। किससे किसकी सफाई होती है इस विषय में मनु जी महाराज ने अपने ग्रन्थ में लिखा है:—

अद्भिर्गात्राणिशुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यांभूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति ॥
मनु० ५। १०६॥

अर्थात् जल से गात्र (शरीर) शुद्ध होता है, मन की सफाई सत्य के व्यवहार से होती है, विद्या वा तप से जीवात्मा की शुद्धि होती है और बुद्धि की शुद्धि ज्ञान-सत्यश्शात्र के अध्ययन-अध्यापन से होती है। आत्मोत्थान के लिए शौच की महती आवश्यकता है। परन्तु शुद्धि का अथ यह नहीं कि शुद्धि के स्थान पर फैशन किया जावे। फैशन करने वालों को यह याद रखना चाहिए कि मनुष्य फैशन से कभी भी उन्नति-पथ पर नहीं चल सकता। वह तो उन्नति के स्थान पर फैशन में फँसकर अवनति पथ पर चलता हुआ पाप गर्त में गिरता है। शृंगार प्रिय मनुष्य कभी अहिंसादि व्रतों का पालन नहीं कर सकता।

स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने अपने ग्रन्थ मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प पुस्तक में लिखा है:—

"सरलता सदाचार की जननी है और शृङ्गार व्याभिचार का दूत है। अतः शृङ्गार को छोड़कर शुद्धिपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करें।

६—स्वाध्याय

स्वाध्याय का अर्थ अध्ययनं अध्यायः स्वस्वाध्यायः स्वाध्यायः अर्थात् अपनी आत्मा का अध्ययन तथा आत्मोद्धार के लिए जो सद्ग्रन्थों का पठन है वह स्वाध्याय कहलाता है। हमारे शास्त्र में स्वाध्याय की बहुत महिमा गायी गयी है। स्वाध्याय करने से पतित से पतित मनुष्य भी उन्नति के शिखर पर पहुंच जाता है। स्वाध्याय की महिमा बताते हुए महर्षि पातञ्जलि मुनि जी ने कहा है:—

स्वाध्यायादिष्टदेवतासंप्रयोगः ॥ योग २।४४ ॥

अर्थात् स्वाध्याय से ही इष्टदेव की प्राप्त होती है। इस सूत्र पर भाष्य करते हुए श्री महर्षि व्यास जी कहते हैं:—

स्वाध्यायाद्योगमासीतयोगात्स्वाध्यायमामनेत्
स्वाध्याय योग सम्पत्या परमात्मा प्रकाशते।

अर्थात् स्वाध्याय से योग को प्राप्त होता है और योग से स्वाध्याय को, अर्थात् आत्मज्ञान को प्राप्त होता है, स्वाध्याय और योग से ईश्वर की प्राप्ति होती है वा ईश्वर का साक्षात्कार करता है।

स्वाध्याय से हजारों मनुष्य ऊँचे उठे हैं और आत्मोत्थान तथा देशहित का कार्य किया है। जैसे पं० क्षेमकरण जी अपनी वृद्ध अवस्था में स्वाध्याय के बल पर अथर्ववेद का भाष्य कर गये। इसी प्रकार शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने भी स्वाध्याय के बल पर अपने जीवनकालीन शास्त्रार्थों में कभी भी पराजय का मुख नहीं देखा। विरोधियों का उत्तर मुँह तोड़ देते हैं। इसी प्रकार आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के महामन्त्री श्री पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती भी अपने स्वाध्याय के बल से एक साधारण सिपाही से ही इस स्थान पर पहुँचे। हैं। इस प्रकार अनेक ज्वलन्त उदाहरण हैं। स्वाध्याय की सीढ़ी से ही उन्नति के शिखर पर पहुँच जाते हैं।

हमें स्वाध्याय के लिए आर्ष ग्रन्थ ही चुनने चाहियें क्योंकि ऋषि लोग बड़े परिश्रम से और अपने अनुभव तथा तप द्वारा लोक के हितार्थ ये रत्न बनाते हैं। अतःएव आर्षग्रन्थों का स्वाध्याय सर्वथा हितकर होता है। उपन्यास नाटकादि कथाओं की पुस्तकों का पढ़ना स्वाध्याय नहीं कहलाता, वह तो उत्थान के स्थान पर पतन की ओर ले जाता है इनको पढ़कर उन्नति की आशा करना चाहता है वह मानों बिन्दु धारा की सोपान से आकाश में चढ़ना चाहता है। लोग अपना समय काटने के लिए पढ़ते हैं। परन्तु उन्हें ज्ञान होना चाहिए कि यह समय का काटना ही अपने पैरों पर अपने हाथों से ही कुल्हाड़ी मारना है और अपने अमूल्य शरीर रूपी रत्न का सर्वनाश करना है। यदि कोई उन्नति करना चाहता है तो अश्लील ग्रन्थों को त्याग कर सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय कर अपने आपको कृतकृत्य करें।

७— ईश्वर प्रणिधान

अन्तिम मर्यादा ईश्वर प्रणिधान है। जगत् स्रष्टा ईश्वर की आराधना के बिना मनुष्य का जीवन फीका है। ईश्वर ने ही हमारे सुख के लिए सारा संसार रचा है। यदि हम उसके उपकार को भूल जाँय तो इससे बढ़कर और कोई महापाप नहीं।

ईश्वर प्रणिधान के बिना मनुष्य दुःख सागर से पार नहीं उतर सकता। ईश्वर प्रणिधान से महर्षि दयानन्द, स्वामी शंकर, महात्मा गांधी आदि दुःखसागर से पार हो गए। मनुष्य ईश्वर प्रणिधान तथा सब इन्द्रियों का निग्रह करके इस संसार-सागर से पार हो सकता है। इस विषय में राजर्षि मनु महाराज कहते हैं—

वशे कृत्वेन्द्रिय ग्राम सयम्य च मनस्तथा
सर्वांससाधयेदर्थानक्षिण्वन् योगस्तनुम् ॥मनु०२।१००।

अर्थात् इन्द्रियों तथा मन को वश में करके वा योग द्वारा शरीर की पीड़ा न देता हुआ सब काय को सिद्ध करे। जितेन्द्रिय वही है जो कि कठिन से कठिन आपत्ति आने पर भी मर्यादा भङ्ग न करे। बड़े से बड़े प्रलोभन आने पर भी ईश्वर को न भूलें वही वीर है जैसे मनु जी कहते हैं—

श्रुत्वास्पष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः
न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेंद्रियः मनु २।९८।

(शेष पृष्ठ २० पर)

श्रीमद्भगवद्गीता

ले०—श्री देवराज विद्यावाचस्पति गुरुकुल झज्जर

(गतांक का शेष)

यह भगवत्सत्ता ही परम सत्ता है जिसके आधीन हमारी व्यष्टि सत्तायें हैं—इस बुद्धि का हमारे अन्दर योग बना रहे। यह बुद्धि योग है, जिस बुद्धि योग पर गीता के अन्दर अत्यधिक बल दिया है और कहा है 'बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः"। यह बुद्धि कौन सी बुद्धि है? यह वह बुद्धि है जिसे भगवताकार रूप में स्वरूप स्थिति कहा है। यह ऐसा परमयोग है जिसमें अन्य सब अवान्तर योग सम्मिलित रहते हैं। वस्तुतः इस लक्ष्य पर पहुँचने के लिए हमारे राष्ट्र की स्थिति गीता के इस परम तत्त्व को लेकर होनी चाहिए अर्थात् समष्टि सत्ता में व्यष्टि सत्ताएं अपने आप को अर्पित करके रहें। इस प्रकार की स्थिति अनेक बार इस भूतल में प्रकट हुई और अनेक बार उसका उच्छेद हुआ। गीता में इसी को लेकर कहा है—

"इमम् विवस्वते योगम् प्रोक्तवानहम व्ययम्।
विश्वान् मनवे प्राह मनुरिक्ष्वा कवेऽब्रवीत्॥" आदि।

यह राजर्षि योग हैं जिसे राज-विद्या, राज-गुह्य शब्द से गीता में कहा है। यदि एक बार पुनः यह शासन प्रणाली वा राज्य-व्यवस्था स्थापित हो जाय तो सचमुच विश्व का महान् कल्याण हो। श्रीकृष्ण ने अपने समय में अनुभव किया कि राज-शासन व्यवस्था जिस आदर्श रूप में होनी चाहिए वह आदर्श रूप विश्व में कभी था, परन्तु समय पाकर अनेक बार उसका उत्थान-पतन होता रहा। सृष्टि का नियम है कि यहाँ पर हम जो कुछ अनुभव कर रहे हैं वह सब चक्रवत् घूम रहा है। इसीलिए कहा है कि इतिहास अपने को दोहराया करता है। जैसे मनुष्य जाति में मानव-इतिहास अपने को दोहराता है, उसी प्रकार इस सृष्टि के अन्दर जितनी भी घटनाएं हो रही हैं वे एक के बाद दूसरी आती हैं परन्तु उनका आना-जाना इस प्रकार प्रतीत होता है जैसे चक्कर चल रहा हो। सूर्य के चारों ओर पृथ्वी घूमती है और यह पृथ्वी घूमती हुई छः ऋतुओं का एक चक्र हमारे सम्मुख उपस्थित करती है। पृथ्वी अपने चारों ओर चौबीस घंटों का कार्यक्रम चक्रवत् उपस्थित कर रही है। चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ एक मास के रूप में उसी चक्र को उपस्थित करता है जैसे पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमने पर सम्वत्सर चक्र का कारण बनती है। पृथ्वी का अपने चारों ओर घूमने से पार्थिव सम्वत्सर और चन्द्रमा का पृथ्वी के चारों ओर घूमने से चान्द्र-सम्वत्सर बनता है। वेद तथा ज्योतिष के अन्दर ऐसे अनेक सम्वत्सरों का वर्णन है। इस सम्वत्सर-प्रक्रिया को विश्व में निरीक्षण द्वारा अवलोकन करते हुये हमें पता लगता है कि जो कुछ हो चुका है वह फिर नहीं होगा। वस्तुतः ऐसा नहीं। सृष्टि के चाक्रिक-नियमानुसार फिर वही अवस्था लौट कर आवेगी जो पहले हो चुकी है। यही पुनरावर्त्तन का चक्र है। इसी चाक्रिक-गति को दृष्टि में रखकर गीता में यह नियम स्थापित किया है कि जिस अवस्था में भगवत् सत्ता के रूप में श्रीकृष्ण महाराज ने जिस राज्य-सत्ता का प्रचार किया वही विश्व की शांति के लिए फिर प्रचलित होनी चाहिए। हमारी सम्मति में यह विषय ऐसा मौलिक और महत्त्व का विषय है कि गीता-शास्त्र के अन्य विषय इसके अन्तर्गत हैं और इसी मुख्य विषय को लेकर यहाँ पर समाविष्ट हुए हैं।

उपर्युक्त दृष्टि से गीता को राष्ट्र-निर्माण-शास्त्र कहा जा सकता है। भीष्म ने भी राज्य विद्या को सर्वोपरि कहा है—"सर्वेधर्माः राज्य धर्मेषु चोक्ताः" धर्म का अर्थ है मर्यादा। राष्ट्र यदि मर्यादा का उल्लंघन करे तो सब व्यक्ति भी करने लगेंगे। लोगों को मर्यादा में लाने या धर्म-संस्थापन के लिए महापुरुषों का अवतरण होता है। अब यह देखना है कि गीता को राज्य-शास्त्र किस प्रकार कहा जा सकता है। युद्ध-क्षेत्र में जिस समय अर्जुन दोनों सेनाओं के बीच खड़े होकर देखते हैं कि उन्हें स्वजनों (अपने ही सम्बन्धियों) से लड़ना है तो उन्हें संकोच होता है, वे जानते हैं कि वे लोग आततायी हैं उन्होंने लाक्षा-गृह का प्रज्वलन, स्त्री-हरण, द्यूत-क्रीड़ा,

आदि अनेक अपराध किये हैं। मनु ने भी आतातायी-वध में दोष नहीं बताया, अतः उनसे युद्ध करने वा करने के प्रश्न की आवश्यकता नहीं थी। किन्तु संजय ने अर्जुन को युद्ध की हानि के विषय में जैसा समझा रक्खा था और इस आशय से कि दुर्योधन का राज्य बना रहे उसने अर्जुन की बुद्धि में संशय उत्पन्न कर दिया था। अर्जुन स्वयं भी उत्तर दे सकता था। परन्तु उसने श्रीकृष्ण के मुँह से ही उत्तर दिलवाना ठीक समझा। श्री कृष्ण ने उसे समझाया—तू मारने वाला कौन होता है ? भगवान् की ओर से जो नियत होता है, वही होता है। युद्ध तो होना ही है। तेरी प्रकृति इस प्रकार की है कि तू लड़ेगा ही। इसे तू बदल नहीं सकता।' जिस समय युद्ध आरम्भ हुआ, पहिले कौरव-सेनापति ने शंख-ध्वनि की। उसके प्रत्युत्तर में पांडव सेनापति भीम नहीं अपितु श्रीकृष्ण शंख बजाते हैं और अन्य लोग। पाण्डवों ने भीम को सेनापति रक्खा था किन्तु बागडोर श्रीकृष्ण के हाथ में थी। श्रीकृष्ण महानीतिमान्,सर्व-शास्त्र विद्, योग विद्या में निपुण तथा मनोविज्ञान के इतने ज्ञाता थे कि प्रत्येक की कमजोरी को भली प्रकार जानते थे। युद्ध में जब तक किसी व्यक्ति की कमजोरी ज्ञात न हो, उसकी मृत्यु किसी के हाथ से होनी कठिन है। अतः श्रीकृष्ण को पाण्डवों ने मुख्य माना। श्रीकृष्ण शस्त्र लेने को प्रस्तुत थे, और सेनापति को शस्त्र लेना ही पड़ता है। अतः भीम को सेनापति बनाया गया तथापि बागडोर श्रीकृष्ण के हाथ में थी। अर्जुन विषाद् की निवृत्ति हेतु श्रीकृष्ण का जो व्याख्यान हुआ उसे सभी लोग सुन रहे थे। एक बात यह भी ध्यान देने की है कि यद्यपि अर्जुन को जीत के विषय में संदेह था किन्तु श्रीकृष्ण को सफलता का पूर्ण निश्चय था। उनको यह स्पष्ट निर्णय था कि साम्राज्य व्यवस्था हमारी ही चलेगी। विरोधी लोगों को समाप्त कर दिया जायेगा। उनकी राज्य व्यवस्था के सिद्धान्तों का गीता में इस प्रकार से निरूपण है—

१. साम्राज्यवादी देशों में सम्राट् धन लीनता है किंतु प्रजा की पर्वाह नहीं करता। दुर्योधन तथा उसके साथी किसी भी प्रकार से युद्ध जीतना चाहते थे। प्रजा की सन्तुष्टि असन्तुष्टि का उन्हें ध्यान न था। ब्राह्मण और क्षत्रिय ही अपने को सब कुछ समझते थे। स्त्रियों वैश्यों तथा शूद्रों को कोई अधिकार न थे। इस प्रकार तीन चौथाई प्रजा कष्ट में थी। श्रीकृष्ण ने कहा है "स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रांस्तेऽपियान्ति परां गतिम्" इसका अर्थ है कि सभी को बराबर अधिकार होंगे और कोई भी ऊँचे से ऊँचे पद पर जा सकता है। सबको आगे बढ़ने के अवसर हैं। इसके लिए आवश्यक है कि सबके लिए शिक्षण का प्रबन्ध हो। सभी को सब प्रकार की विद्याएं सीखने का अवसर मिले अर्थात् समाज में सभी को समानाधिकार हों। भगवान के सन्मुख सभी बराबर हैं। अध्यात्मदृष्टि से कहीं भेदभाव सम्भव नहीं। इसी अध्यात्म दृष्टि का राष्ट्रीय दृष्टिकोण में समावेश हो यह गीता की एक बहुत बड़ी विशेषता है।

(क्रमशः)

(पृष्ठ ११ का शेष)

स्थान केवल नासिका है जबकि ङ् ञ् न् ण् म् का उच्चारण स्थान है।

क और ह का उच्चारण स्थान यद्यपि कण्ठ है और खकार का भी कण्ठ है। ककार का और हकार स्थान तो मिलता है परन्तु आभ्यान्तर प्रयत्न के साथ बाह्य प्रयत्न तथा प्राण भी भिन्न है। इसलिये संक्षेप भले ही कर लिया जाये परन्तु वास्तविक उच्चारण होना सम्भव नहीं है।

इसलिये संस्कृत भाषा के आचार्यों ने वास्तविक उच्चारण ध्वनियों को चुना है। इसके लिये उन्होंने गम्भीर सोच विचार तथा गम्भीर परिश्रम किया है। इसलिये यह ध्वनियाँ वैज्ञानिक हैं। इनमें कमी या वृद्धि करना वास्तविक उच्चारण से कोसों दूर हो जाना है। परिवर्तन से अनर्थ होगा।

“तड़फती हुई आत्माओं की पुकार”

(लेखक—प्रताप “शास्त्री”)

भारतवर्ष धर्म प्रधान और कृषि प्रधान देश माना गया है। धर्म और कृषि पर आस्था रखने वाली अधिक जनसंख्या गांव में रहती है। उनका जीवन सादा, सरल और सभ्य होता है। अतः चालाक लोगों के धोखे में और बहकावे में भी जल्दी आ जाते हैं। स्वार्थ सिद्धि के बाद चालाक लोग इन्हें मूर्ख, जाहिल, असभ्य, जंगली जो भी शब्द जबान पर आये कहते हुए हिचकिचाते नहीं। अपने आपको भगवान् का प्रतिनिधि समझ बैठते हैं। ऐसे ठगों, लम्पटों के कुकर्मों को देख-देखकर वे आत्माएं तड़फ रही हैं जिनमें एक महात्मा गांधी हैः—जिन्होंने अन्तिम समय में अन्तिम सन्देश चेतावनी के रूप में अपने अनुयायियों के लिए छोड़ा। “ए ! कांग्रेसियों स्वतन्त्रता जैसा अमूल्य रत्न हमारे हाथ में आ रहा है और हम खो रहे हैं। स्वराज्य का यत्न करने के लिए हमें फिर एक-एक का मरना पड़ेगा। स्वराज्य लेने का पाठ तो लिया पर सम्भालने का पाठ नहीं सीखा। हमारी राज सत्ता ब्रिटिश की तरह बन्दूक के जोर से नहीं टिक सकेगा। अनेक त्याग और तप के बाद कांग्रेस ने प्रजा का विश्वास प्राप्त किया। परन्तु यदि आज कांग्रेस वाले प्रजा को दगा देंगे और सेवा करने के बदले मालिक बन जायंगे तथा स्वामित्व दिखाएंगे तो मैं जीवित रहूँ या नहीं। पर इतने वर्षों के अनुभव के आधार पर यह आग्रह करने की हिम्मत करता हूँ कि देश में बगावत होगी, सफेद टोपी वालों को प्रजा चुन-चुनकर मारेगी। ये शब्द उस तड़फती हुई आत्मा के हैं जिसकी कांग्रेस पार्टी का आज भारत में राज है। जिसमें प्रजातन्त्र का दिन-दहाड़े खून होता है। चोरों का सामान प्राप्त करके डकार तक नहीं ली जाती। इसी शासन सत्ता में पञ्जाब के शहरों में, गांवों में, गलियों में, कचहरियों में और जेलों में आज राष्ट्रभाषा हिंदी की सजीवता के लिए भीषण, निर्मम अत्याचार हो रहा है जो कि किसी से छुपा नहीं।

हरियाणा ऋषि और मुनियों के आदेश पर सर्वस्व बलिदान करने को तत्पर रहा है। यह कभी भी अन्याय और अत्याचार के सामने नहीं झुका। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की विजय का श्रेय भी इसी को प्राप्त है। परन्तु खेद कि आज हरयाणे के नेताओं की आत्माओं को तड़फाने वाले, उनके नाम से रोटी कमाने वाले, नित्य नए चोगे पहनने वाले, जीभ के लाड़ों की दयनीय दशा को देखकर आत्माएं पुकार उठीं। परन्तु उनकी पुकार की परवाह नक्कारखाने में तूती की आवाज की भाँति व्यर्थ। ये हैं खुदगर्ज लीडर जो शहीद सुमेर सिंह के खून का बदला चण्डीगढ़ की कुर्सियां प्राप्त करके लेना चाहते हैं और लोगों को मूर्ख, नासमझ बताते हुए अपने आप हरियाणे की मांग करके बुद्धिमत्ता की छाप लगाते हैं। क्या यही हैं हरियाणे के नेता ? जिन्हें चुल्लु भर पानी में नाक डुबोकर मर जाना चाहिए था। निर्लज्ज होकर न जाने जनता में कैसे मुंह दिखलाते हैं और हिंदी के विरोध में उनकी जबान कैसे फटती है ? सपूत वह है जो पिता की इज्जत को सवाया बढ़ाये। परन्तु इन अवसरवादियों का तो बाबा आदम ही निराला है। बाप और प्रान्त जाये भाड़ में, परन्तु इनके अपने पौबारह चाहिए।

आज तक हरियाणा में तीन नेता हुए। तीनों ही आर्यसमाज के लिए मर मिटने को तैयार रहते थे और इसी के हित मरे। जिनमें सर्वप्रथम लाला लाजपतराय जो कि १९२६ में अंग्रेजों के जुल्मों में शहीद हुए और दूसरे थे सर छोटूराम तथा तीसरे श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज जिनका देहावसान अभी पिछले ही सालों में हुआ है। इनके नेतृत्व में हरियाणा फला और फूला है। यही आत्मायें सिसकियाँ भर रही हैं कि यदि अपना कल्याण चाहते हो, अपनी-अपनी तूमड़ी और अपना-अपना राग को छोड़ आर्यसमाज की शरण में आओ। उसके आदेशों का पालन करो। आर्यसमाज सदा से हिंदी का रक्षक ही नहीं पोषक भी रहा है। उसका सारा साहित्य संस्कृत या हिंदी में है। ऐ हरियाणा निवासियो ! उन नेताओं की पुकार को सुनो और हिंदी भाषा के लिए सर्वस्व बलिदान दो। हिंदी रक्षा आन्दोलन को बल दो, आर्यसमाज के नेताओं के हाथ मजबूत करो। तन, मन, धन से इसमें सहयोग दो। अपनी इज्जत अपने हाथों में है। “संघे शक्ति कलौ युगे”। हिंदी भाषा—अमर रहे।

देश का बच्चा-बच्चा होगा हिन्दी भाषा पर बलिदान !

भाषा फार्मूला व्यावहारिक ?

ले०—आचार्य विश्वप्रिय शास्त्री दिल्ली

विभाजन से पूर्व सारे पंजाब के किसी भी जिले में सिक्खों की संख्या ३८ प्रतिशत से अधिक न थी। विभाजन के उपरान्त पश्चिमी पञ्जाब से आये हुए सिक्खों को जालन्धर विभाग में बसाया गया। हिन्दू बहुल काङ्गड़ा जिले को जालन्धर विभाग से पृथक् कर अम्बाला डिवीजन में मिलाया गया। तब जालन्धर विभाग में सिक्खों की जनसंख्या पचास प्रतिशत से ऊपर हो पायी है और हिन्दू ४५ प्रतिशत रह गये हैं।

इस बार हमारे माननीय प्रधान मन्त्री श्री नेहरू जी जब इङ्गलैण्ड आदि देशों का दौरा करने के उपरान्त भारत वापस आये तो उन्होंने कहा था कि फिनलैण्ड में २९ प्रतिशत स्विश लोग रहते हैं परन्तु फिनलैण्ड में स्विश भाषा भी राज्य की भाषा है। समाचार-पत्रों में २९ प्रतिशत छपा था, परन्तु मालूम हुआ है कि फिनलैण्ड केवल १० प्रतिशत ही स्विश लोगों की जनसंख्या है। पुनरपि स्विस भाषा फिनलैण्ड की राज्य भाषा है—

जब फिनलैण्ड में १० प्रतिशत स्विशों की राज्य भाषा स्विश है तो समझ में नहीं आता, जालन्धर विभाग में हिन्दी को क्षेत्रीय भाषा घोषित क्यों नहीं किया जाता ? जबकि हिन्दी भाषी वहाँ पर ४५ प्रतिशत है। इतना ही नहीं, जिलास्तर तक जालन्धर विभाग में हिन्दी का प्रयोग न किया जा सकेगा।

इतने पर पञ्जाब सरकार के मुख्य मन्त्री माननीय सरदार प्रतापसिंह कैरों ने कपूरथला के बाजाखाना नामक स्थान पर किसान सम्मेलन में भाषण देते हुए कहा है कि—

१—मेरी समझ में नहीं आता कि यह हिन्दी आन्दोलन क्यों चलाया जा रहा है ?

२—हमारी भाषा नीति में क्या दोष है ?

हिन्दी आन्दोलन के लिये आर्यसमाज लगभग गण्य मान्य नेताओं को जेल भेज रहा है। लगभग छः सात हजार सत्याग्रही जेलों में बन्द हैं। फिरोजपुर तथा बहुअकबरपुर काण्ड को सहन कर रहा है। आर्यवीर सुमेरसिंह का बलिदान फिरोजपुर जेल में हो चुका। परन्तु मुख्य मन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरों की समझ में हिन्दी आन्दोलन का उद्देश्य ही नहीं आया।

उनकी समझ में कब आयेगा ? यह तो समझने तथा समझाने वालों की इच्छा पर निर्भर है।

पञ्जाब की भाषा समस्या को सुलझाने के लिये १-पेप्सु फार्मूला, २—सच्चर फार्मूला, ३-क्षेत्रिय फार्मूला, यह तीन फार्मूले बनाये गये। परन्तु तीनों से भाषा की समस्या सुलझी नहीं अपितु उलझ गयी है।

१—पेप्सु फार्मूले के अनुसार प्रत्येक को गुरुमुखी पढ़नी पड़ेगी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह माता-पिता की इच्छा के विपरीत तानाशाही है। राष्ट्रपिता गांधी की इच्छा के विपरीत, है। जनतन्त्र की विचारधारा के सर्वथा विपरीत है।

२—"सच्चर फार्मूला" के अनुसार जालन्धर क्षेत्र में जहाँ पर हिन्दी भाषियों की जनसंख्या ४५ प्रतिशत है वहाँ अनिवायरूप से गुरुमुखी प्रत्येक को पढ़नी पड़ेगी। परन्तु प्रारम्भ से हिन्दी भाषी माता-पिता को यह अधिकार है कि वह दश इकट्ठे हो जायें और प्रार्थनापत्र दें। दश प्रार्थनापत्रों पर हिन्दी की पढ़ाई का प्रारम्भ से प्रबन्ध हो जायेगा। यह दश या दश से अधिक छात्र चौथी कक्षा तक हिन्दी में शिक्षा ग्रहण करते रहेंगे।

चौथी के उपरान्त जब पाञ्चवीं कक्षा में प्रवेश करेंगे तो आगे व्यवस्था इनकी कैसे चलेगी, आरम्भ

से गुरुमुखी पढ़ने वालों के साथ इनका समन्वय कैसे हो सकेगा, हिन्दी वाले गुरुमुखी से अनभिज्ञ होंगे और गुरुमुखी वाले हिन्दी से। इसलिये मैट्रिक तक बड़ी गड़बड़ रहेगी।

प्रारम्भिक श्रेणी में दश प्रविष्ट होकर पाञ्चवी में कठिनता से उनमें से दो-चार रह जायेंगे। प्रारम्भ से गुरुमुखी वालों के साथ चलेंगे, नहीं। उन दो चार के लिये पृथक् व्यवस्था करनी पड़ेगी। पृथक् व्यवस्था के लिये व्ययभार का प्रश्न उठता है। इसलिये यह व्यावहारिकता समझ में नहीं आती।

जब अनिवार्य शिक्षा हो जायेगी उस समय कैसे काम चलेगा। ४५ प्रतिशत हिन्दी भाषी क्षेत्र में क्या किसी ग्राम में दश हिन्दी प्रारम्भ से पढ़ने वाले न मिलेंगे।

पैंतालीस और पचास में कोई अन्तर विशेष नहीं है। इसलिये भाषा फार्मूला के विधायक इस बात को सोचें और ठण्डे दिल से सोचें कि हिन्दी के लिये यह प्रतिबन्ध उचित नहीं है। इसलिये फार्मूलों की भाषा में न सोचकर जालन्धर विभाग में हिन्दी और गुरुमुखी दोनों की पढ़ाई का समुचित प्रबन्ध सरकार की ओर से होना चाहिये।

बालक के पिता को अधिकार होना चाहिये कि वह अपनी इच्छा से हिन्दी या गुरुमुखी में शिक्षा दिलाये।

आया हिन्दुओं को पञ्जाबी या गुरुमुखी से कोई द्वेष नहीं। वह गुरुमुखी की भी उन्नति चाहते हैं परन्तु जबरदस्ती गुरुमुखी की पढ़ाई को वह सहन न करेंगे।

जितनी शक्ति सिक्ख लोग गुरुमुखी की अनिवार्यता के लिये लगा रहे हैं उतनी शक्ति वह गुरुमुखी का लोकप्रिय साहित्य तैयार करने में लगायें।

हिन्दी आन्दोलन के सूत्रधार श्री पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने मास्टर तारासिंह से अनुरोध किया था कि मैं आपके साथ गुरुमुखी की उन्नति के लिये पञ्जाब का दौरा करने के लिये तैयार हूँ परन्तु गुरुमुखी की जबरन पढ़ाई के मैं विरुद्ध हूँ। वास्तव में जबरदस्ती गुलामों के साथ होती है, स्वतन्त्रों के साथ नहीं। यह जबरदस्ती ही हिन्दी आन्दोलन का कारण है।

जबतक इसको समाप्त नहीं किया जाता हिन्दी आन्दोलन बन्द नहीं हो सकता। सरदार कैरों को सोचना चाहिये कि जेलों में बन्द पाञ्च सात हजार बन्दी पागल तो नहीं। इनमें गण्यमान्य विद्वान नेता, वकील डाक्टर तथा विधान सभाओं के सदस्य भी हैं। इन्हें सरकार के विरुद्ध शिकायत है तभी तो प्रदर्शन कर रहे हैं, जेल जा रहे हैं, डण्डे खा रहे हैं, विविध यातनायें झेल रहे हैं।

(पृष्ठ १५ का शेष)

महर्षि दयानन्द जी इसका भाष्य इस प्रकार करते हैं "जितेन्द्रिय उसको कहते हैं कि जो स्तुति सुनके हर्ष और निन्दा सुनके, शोक, अच्छा स्पर्श करके, सुख और दुष्ट स्पर्श से दुखी, सुन्दर रूप देखकर प्रसन्न और दुष्टरूप देख अप्रसन्न, उत्तम भोजन करके सुखी निकृष्ट भोजन करके दुखी सुगन्ध में, रुचि दुर्गन्ध में अरुचि नहीं करता वही वीर होता है उस पर इन्द्रियाँ प्रभाव नहीं डालतीं।"

सात मर्यादाओं को संक्षिप्त रूप में लिखा है।

स्वाध्यायोपयोगी उत्तम साहित्य

उत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय करके अपने जीवन को पवित्र करें

क्रम	पुस्तक	मूल्य
१.	चार वेद मूल संहिता	१७)
२.	चार वेदों का भाषाभाष्य (पं० जयदेव कृत) सम्पूर्ण सैट १४ खण्डों में	८४)
३.	सत्यार्थप्रकाश (महर्षि दयानन्द)	१=)
४.	ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका (,, ,,)	२॥)
५.	संस्कार विधि (,, ,,)	॥=)
६.	पंचमहायज्ञविधि (,, ,,)	।)
७.	गोकरुणानिधि (,, ,,)	=)
८.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (,, ,,)	-)
९.	अष्टाध्यायीभाष्य १, २ भाग (,, ,,) ५)+५)	१०)
१०.	वेदाङ्गप्रकाश सम्पूर्ण १४ भाग (,, ,,)	१०।)
११.	दयानन्ददिग्विजयम् (मेधाव्रताचार्य)	६)
१२.	दयानन्द लहरी (,, ,,)	॥)
१३.	विरजानन्दचरितम् (,, ,,)	१)
१४.	नारायणस्वामिचरितम् (,, ,,)	॥।)
१५.	प्रकृतिसौन्दर्यम् (नाटकम्) (,, ,,)	१।)
१६.	ब्रह्मचर्यशतकम् (,, ,,)	॥=)
१७.	ब्रह्मचर्यमहत्त्वम् (,, ,,)	॥)
१८.	ईशोपनिषत् काव्यम् (,, ,,)	।=)
१९.	कुमुदिनीचन्द्रः (,, ,,)	४)
२०.	सन्ध्या अष्टाङ्गयोग (स्वामी आत्मानन्द)	॥।)
२१.	वैदिक गीता (,, ,,)	३)
२२.	आदर्श ब्रह्मचर्य (,, ,,)	।)
२३.	कन्या और ब्रह्मचर्य (,, ,,)	≡)
२४.	विरजानन्द चरित (स्वामी वेदानन्द)	१॥)
२५	पंचमहायज्ञविधि व्याख्या (,, ,,)	१)
२६.	संस्कृत भाषा क्यों पढ़ें (,, ,,)	॥)
२७.	आसनों के व्यायाम सचित्र (देवव्रत)	॥)
२८.	ब्रह्मचर्य ही जीवन है (शिवानन्द)	१॥)
२९.	नाड़ीतत्त्वदर्शन (सत्यदेव वसिष्ठ)	५)
३०.	सन्मार्ग दर्शन (स्वा० सर्वदानन्द)	४)
३१.	महर्षि दयानन्द का प्रामाणिक जीवन चरित्र दो भागों में ६)+६)=	१२)
३२.	दयानन्द दिव्यदर्शन	॥)
३३.	वैदिक धर्म परिचय (जगदेवसिंह शास्त्री)	॥=)
३४.	छात्रोपयोगी विचार माला (,, ,,)	॥=)
३५.	राष्ट्रनिर्माण में गुरुकुल का स्थान	।=)
३६.	सत्यपथ (देवराज)	॥)
३७.	राष्ट्र-निर्माण में धर्म का स्थान (देवराज)	।-)
३८.	सत्याग्रहनीति काव्य (सत्यदेव वासिष्ठ)	१)

—•—

आचार्य भगवान्देव जी द्वारा लिखित साहित्य

क्रम	पुस्तक	मूल्य
१.	ब्रह्मचर्य के साधन १, २ भाग	।-)
२.	,, ,, दन्तरक्षा ३ भाग	≡)
३.	,, ,, व्यायामसन्देश ४ भाग	१)
४.	,, ,, सन्ध्यायज्ञादि ५ भाग	।=)
५.	,, ,, सत्सङ्ग-स्वाध्याय ७, ८ भाग	॥)
६.	,, ,, भोजन ९ भाग	॥=)
७.	ब्रह्मचर्यामृत	=॥)
८.	स्वप्नदोष की चिकित्सा	=॥)
९.	बालविवाह से हानियाँ	-)
१०.	व्यायाम का महत्त्व	≡)
११.	रामराज्य कैसे हो ?	≡)
१२.	पापों की जड़ शराब	≡)
१३.	हमारा शत्रु तम्बाकू का नशा	।=)
१४.	नेत्ररक्षा	≡)
१५.	बिच्छू विषचिकित्सा	≡)

कमीशन दर अपने प्रकाशन पर

५) से नीचे कुछ नहीं।

५) से १०) तक की पुस्तकों पर ६।) प्रतिशत

१०) से २०) तक की ,, ,, १२॥) ,,

२०) से १००) तक ,, ,, २५) ,,

१००) से ऊपर ३०) ,,

विशेष विवरणार्थ हमारा सूचिपत्र मुफ्त मंगवाइये।

गुरुकुल क्या वस्तु है इस विषय में हमारा प्रकाशन "राष्ट्र निर्माण में गुरुकुल का स्थान" पुस्तक पढ़ें।

पता—व्यवस्थापक—

पता—'विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय' पो० गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक (पञ्जाब)

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला (रजि०) गुरुकुल झज्जर की

* अचूक औषधियाँ *

१–नेत्र ज्योति सुर्मा

लगाइये और नेत्र ज्योति पाइये। इसके लगाने से आँखों के सब रोग जैसे आँख दुखना, खुजली, लाली, जाला, फोला, रोहे, कुकरे, पास का कम दीखना (शार्ट साइट) दूर का कम दीखना (लांगसाइट), प्रारम्भिक मोतियाबिन्द आदि दूर हो जाते हैं। आँखों के सब रोगों की रामबाण औषधि है यही नहीं किन्तु लगातार लगाने से दृष्टि (बीनाई) को तेज तथा आँखों को कमल की तरह साफ स्वच्छ रखता है। बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। प्रतिदिन जिसने भी लगाया उसी ने मुक्तकण्ठ से इस सुर्मे की प्रशंसा की है। मूल्य ।।) शीशी

२–नेत्रामृत

लाली, कड़क, धुन्ध, ढलकवा, गरदोगुब्बार, रोहे तथा भयंकरता से दुखती आंखों के लिए जादू भरा विचित्र योग है।

मूल्य बड़ी शीशी ।।=) छोटी शीशी ।=)

३–स्वप्नदोषामृत रस

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषध इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे पीछे या बीच में वीर्य आने को बन्द कर देगी। मूल्य ५) तोला

सेवन विधि—प्रातः सायं एक-एक गोली गोदुग्ध या शीतल जल के साथ। विशेष—यदि स्वप्नदोष का रोगी अत्यन्त दुर्बल हो तो दूध के साथ और हृष्ट-पुष्ट हो तो जल के साथ सेवन करें। ब्रह्मचारी को जल के साथ सेवन करना चाहिए।

४–स्वप्नदोषामृत चूर्ण

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषधि इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मू में आगे-पीछे या बीच में वीर्य के निकलने को बन्द कर देती है।

मूल्य २) छटांक

५–रोहितारिष्ट

यह अरिष्ट पुराने और बढ़े हुए प्लीहा (तिल्ली) यकृत जिगर के लिये अद्वितीय औषध है। जब किसी औषध से यह रोग ठीक न होते हों तो इसका चमत्कार (जादू) प्रयोग करके देखना चाहिये। यह उदर पीड़ा गोला, वायु गोला आदि पेट में वायु का भरना, अजीर्ण, भूख न लगना, मलबद्धता आदि सभी पेट के रोगों को दूर करता है। सदैव रहने वाले मलबन्ध (कब्ज) को दूर करने की यह एक ही औषध है। यह जठराग्नि को दीप्त करता है। पाचन शक्ति को खूब बढ़ाता है। यह आयुर्वेद की रामबाण औषध है। मूल्य २)

६--कर्णरोगामृत

कान में पीप आना, बहरापन और प्रत्येक प्रकार की कर्ण पीड़ा को दूर करने के लिए यह अति उत्तम औषध है। प्रतिदिन सेवन करने से कानों का कोई रोग नहीं होता और मस्तिष्क की शुष्कता दूर होती है। मूल्य एक शीशी १)

७--व्रणामृत

भयंकर फोड़े, फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा अनेकों वर्षों के नासूर (सरह) आदि रोगों की अद्वितीय औषधि है। दिनों का काम घण्टों में, घण्टों का काम मिनटों में करती है।—मूल्य एक शीशी १)

८–स्वास्थ्यवर्धक चाय

यह चाय स्वदेशी, ताजी एवं शुद्ध जड़ी-बूटियों से तैयार की गई है। वर्तमान चाय की भाँति यह नींद और भूख को न मारकर खाँसी, जुकाम, नजला, सिरदर्द, खुश्की अजीर्ण, थकान, सर्दी आदि रोगों को दूर भगाती है। मस्तिष्क एवं दिल को शक्ति देती है। मूल्य १ छटांक ।-)

९–दन्तरक्षक मंजन

दाँतों से खून वा पीप का आना, दाँतों का हिलना, दाँतों के कृमि रोग, सब प्रकार की दाँतों की पीड़ा तथा रोगों को दूर भगाता है और दाँतों को मोतियों के समान चमकाता है।—मूल्य एक शीशी ।।)

१०–पाचनामृत

मन्दाग्नि, अरुचि, अजीर्ण (कब्ज), पेट का फूलना, पेट का भारीपन, शूल, जी मचलाना, वमन खट्टी डकार आदि पेट के सभी रोगों को नष्ट कर भूख को बढ़ाता है। आंतों के सब रोगों को दूर कर पाचन शक्ति को बल देता है। पुरानी से पुरानी तिल्ली जिगर की अचूक औषधि है। मूल्य एक शीशी ५)

११–पामामृत (दाद खुजली)

यह सब ही खुजली दादादि चर्म रोगों के लिये अत्युत्तम औषध है। खुजली सूखी हो या पकने वाली यह सब प्रकार की खुजली के लिये रामबाण औषधि है। इसके प्रयोग करने के पश्चात् किसी अन्य औषधि की आवश्यकता नहीं। दाद को जड़ से नष्ट करती है। मूल्य २)

१२–बाल रोगामृत

बालकों के हरे-पीले दस्त, अपच, अजीर्ण (कब्ज) अरुचि, दाँत निकलते समयके रोग, सूखिया मसान रोग, वमन, निर्बलता, ज्वर आदि सभी रोगों को दूर कर बालकों को मोटा करता है। अतः प्रत्येक गृहस्थी घर में रखे। मूल्य एक शीशी ५)

१३–संजीवनी तैल

मूर्च्छित लक्ष्मण को चेतना देने वाली इतिहास प्रसिद्ध बूटी से तैयार किया गया यह तैल घावों के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुये घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भर कर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है। मू० ॥=) नमूना

सेवन विधि—फाये में क भर र बार-बार चोट आदि पर लगायें।

१४–च्यवनप्राश

इसी ऋतु के ताजे आँवले से तैयार किया गया स्वादिष्ट, सुमधुर और एक दिव्य रसायन (टानिक) है। जिसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खाँसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक, सभी हृदय रोगों की अद्वितीय औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा अन्य सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका (निरन्तर) सेवन समूल नष्ट करता है। यह निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है।

मूल्य ७) सेर, ५ सेर लेने पर ६) सेर

१५–बलदामृत

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आ जाता है। पीनस (सदा रहने वाले जुकाम और नजले) की महौषध है। वीर्य वर्द्धक, कास (खाँसी) नाशक, राजयक्ष्मा (तपेदिक). श्वास (दमा) के लिये लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करती तथा अत्यन्त रक्त वर्द्धक है। निर्बलों को बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ट बनाती है। यह अपने ढंग की एक ही औषध है। मूल्य ५) प्रति शीशी

१६–ज्वरामृत

यह नये व पुराने सभी प्रकार के ज्वरों की रामबाण औषध है। बिगड़े हुए मलेरिया, विषम ज्वर को दूर करने में अद्वितीय औषध है। कुनेन भी इसके आगे तुच्छ औषध है। कुनेन का सेवन सिर दर्द, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है, किन्तु यह औषध सब दोषों को दूर करती है तथा ज्वर की प्रत्येक अवस्था में दी जा सकती है। मलेरिया काल में सेवन की हुई मलेरिया को नहीं आने देती। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, सेवन करें और लाभ उठावें। मूल्य एक शीशी ५)

पता—आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला पो० गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक (पंजाब)

रजि० नं० ई० पी० ५०

"ग्राहकों से"

सुधारक के पांचवें वर्ष का तृतीय अङ्क आपके हाथों में है, जिन ग्राहक महानुभावों ने इस वर्ष का चंदा नहीं भेजा, है, कृपया वे निम्न पते पर मनी-आर्डर द्वारा वार्षिक चन्दा शीघ्र भेजने की कृपा करें।

—व्यवस्थापक "सुधारक"

ग्राहक संख्या

सेवा में श्री सम्पादक जी

मु० गुरुकुल पत्रिका

पो० गुरुकुल कांगड़ी

जि० हरद्वार

पाठकों से निवेदन

(ले० कुन्दनलाल शर्मा "प्रभाकर" ततारपुर खालसा)

प्रिय पाठको पत्र सुधारक का हर जगह प्रचार करो।
अधिक से अधिक संख्या में नए-नए पाठक तैयार करो। टेक
क्योंकि ऋषि सन्तान वेद की मर्यादा सब तोड़ चली।
जीवन के जो नियम बताए उन से मुखड़ा मोड़ चली।
चली कुमार्ग लक्ष्यहीन हो सद्मार्ग को छोड़ चली।
मत मतान्तरों में फँसकर के आर्यत्व से दौड़ चली।
अतः सुधारक पहुंचा उन पर सबका आप सुधार करो ॥ १
बन करके रवि पत्र सुधारक अन्धकार को खो देगा।
और साबुन सनलाईट बनकर आत्मा का मल धो देगा।
बन करके तूफान पाप की नौका शीघ्र डुबो देगा।
उखाड़ असत्य के पौदे को बीज सत्य के बो देगा।
पहुँचाकर इसे हर घर में दूर सभी अन्धकार करो ॥२
दुनियाँ के कोने-कोने में वेद का नाद बजा देगा।
सदियों से सोई जाति को फिर से पत्र जगा देगा।
भूले भटके लोगों को यह शुभ मार्ग पर ला देगा।
सारी मानव जाति को वैदिक सन्देश सुना देगा।
हर मानव पर भेज इसे जाति का उपकार करो॥ ३
करो प्रण सब पत्र सुधारक हर घर में पहुंचाने का।
वहीं करो इसकी चर्चा जहाँ अवसर मिल जा जाने का।
मूल्य बहुत ही थोड़ा रखा नहीं उद्देश्य कमाने का।
परोपकार परमार्थ लक्ष्य कुन्दनलाल तेरे गाने का।
सोई आर्य जाति को निज कविता से बेदार करो ॥ ४

प्रकाशक आचार्य भगवान्देव गुरुकुल झज्जर ने सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली में मुद्रक जगदेवसिंह शास्त्री 'सिद्धान्ती' के प्रबन्ध से छपवाया।

वर्ष ५ | अङ्क ४

गुरुकुल झज्जर (रोहतक) मार्गशीर्ष २०१४ वि०
दिसम्बर १९५७, दयानन्दाब्द १३३

वार्षिक मूल्य २)
एक प्रति बीस नये पैसे

हरयाणा केसरी श्री प्रो० शेरसिंह जी भू० पू० मंत्री पंजाब

गुरुकुल झज्जर के कुलपति, भूतपूर्व सिंचाई और विद्युन्मन्त्री पञ्जाब श्री प्रो० शेरसिंह जी के हिन्दी रक्षा आन्दोलन में जत्था लेकर जाने से पूर्व १७-११-७ को दीवानहाल देहली में श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री के सभापतित्व में स्वागत सभा की गई। पौन घण्टे तक प्रो० साहब ने कैरोंशाही का भाण्डा फोड़ किया। स्वागत के पश्चात् प्रो० साहब को गिरफ्तार कर पुलिस कोतवाली में ले जाया गया, तत्पश्चात् पुलिस आपको जीप में बैठाकर रोहतक ले गई। प्रो० साहब ने अपने स्वागत भाषण में हरयाणा निवासियों के नाम निम्नलिखित सन्देश दिया—
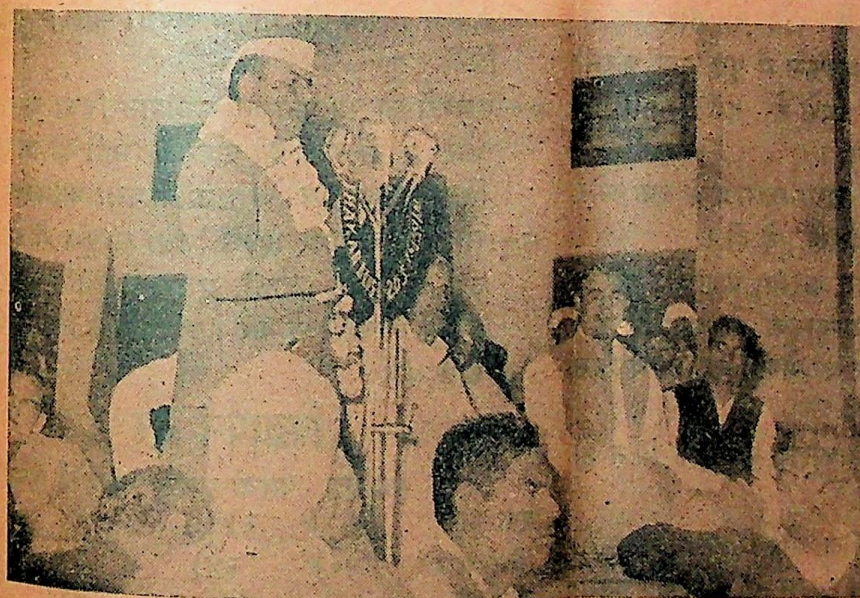
मेरे हरयाणा के स्वाभिमानी बंधुओं! आज कैरोंशाही ने तुम्हारे सम्मान और स्वाभिमान को चुनौती दी है। इस चुनौती को स्वीकार करके पूरी शक्ति के साथ कूद पड़ो हिंदी रक्षा आन्दोलन में और भर दो पंजाब की सब जेलों को। आपका एक तुच्छ सेवक होता हुआ आज मैं अपने कर्तव्य को पूरा करने हिंदी-रक्षा आन्दोलन में अपनी आहुति देकर जेल जा रहा हूँ। मेरे बाद हरयाणा के जाटों और किसानों का ताँता तब तक बंधा रहे जबतक कि हिंदी आन्दोलन सफल न हो जाये।

संस्थापक व सम्पादक—ब्र० भगवानदेव आचार्य गुरुकुल झज्जर
सम्पादक —ब्र० वेदव्रत भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति
व्यवस्थापक —बलदेवसिंह बी० ए०, एफ. एस. सी. सि० प्रभाकर
सह-व्यवस्थापक—ब्र० सुदर्शनदेव भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति

विषय सूची

सुधारक के नियम

१—सुधारक अंग्रेजी महीने की १० ता० को डाकखाने में डाला जाता है। यदि २० ता० तक न मिले तो अपने पोस्ट आफिस में पूछ-ताछ करनी चाहिये। फिर भी न मिले तो हमें लिखने पर और भेज दिया जायेगा।

२—छोटे लेख सारगर्भित तथा कागज के एक ओर सुन्दर और सुवाच्य लिखे हुये हों।

३—लेख में उचित परिवर्तन करना, प्रकाशित करना या न करना सब सम्पादक के आधीन है। अस्वीकृत लेख पोस्टेज भेजने पर ही वापिस लौटाया जा सकेगा।

४—वेद विरुद्ध लेखों का प्रकाशन सुधारक में न हो सकेगा।

५—सिद्धान्त विरुद्ध, अश्लील और मिथ्या विज्ञापनों के लिये 'सुधारक' में स्थान नहीं है। इतना होते हुये भी विज्ञापन की सत्यता का उत्तरदायित्व हम पर नहीं।

६—व्यवस्थापक सम्बन्धी सब पत्र-व्यवहार तथा मनीआर्डर आदि व्यवस्थापक-'सुधारक' के नाम से भेजने चाहियें, किसी व्यक्ति के नाम न भेजें। साथ ही ग्राहक अपनी संख्या अवश्य लिखें।

७—एजन्टों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता और ५ से कम की एजेन्सी नहीं दी जाती विज्ञापन का धन अगाऊ भेजना आवश्यक

८—सब पत्र व्यवहार हिन्दी तथा संस्कृत में ही उर्दू, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि भाषा में पत्र व्यवहार न करें। पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड भेजें

विज्ञापन दर

	पूरा पृष्ठ	आधा पृष्ठ	चौथाई पृष्ठ
एक बार	१६)	९)	५)
तीन बार	४०)	२४)	१३)
छः बार	७५)	४५)	२५)
१ वर्ष तक	१३०)	७५	४५

टाईटिल अन्तिम १५% अधिक।
टाईटिल तृतीय १०% अधिक।
विशेषांक में सवाया। कम से कम ४॥)

मित्र पाप से बचाता है।

ओ३म् मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते।
मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः ॥
ऋ० ५।६५।४॥

(मित्रः) सर्वस्नेही भगवान् (अंहोः+चित्) पाप से भी [बचाकर] (क्षयाय) निवास के लिये (उरु) विशाल (गातुम्) पृथिवी (वनते) देता है। (हि) क्योंकि (सुमतिः) उत्तमबुद्धि उस (प्रतूर्वतः) अति-शीघ्रकारी (विधतः) विधाता (मित्रस्य) कृपालु प्रभु की है।

भगवान् के स्नेह को इतनी-सी बात से जान लेना चाहिए कि हमें सदा चिताता रहता है। वेद में बहुत ही सुन्दर कहा है—

"अचेतयदचितो देवो अर्यः" (ऋ० ७-८६-७)

वह सर्वज्ञ स्वामी (मालिक) अचेतों को चिताता है। पापी को जब अपने पाप का और भगवान् के रक्षकत्व का बोध होता है और वह समझता है कि—

मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते।

स्नेहवान् भगवान् पाप से बचाकर और निवास के लिये विशाल भूमि देता है। तब वह रो-रोकर कहता है—

क्वात्यानि नौ सख्या बभूवतुः सचावहे यदवृकं पुराचित्। (ऋ० ७-८८-५)

वे हमारी मैत्रियाँ क्या हुईं जब पहले कुटिलता रहित मिलकर रहते थे। पाप करके अपने चिरसंगी सदा संगी का संग छोड़ दिया, और हम पाप पंक में फंस गये। जीव तो अज्ञान के कारण पाप करने लगा, उसको पाप से ग्लानि स्वतः ही नहीं हुई वरन् सर्वरक्षक परमात्मा ने ही वह सुमति दी, जैसा कि वेद कहता है—

मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः।

क्योंकि सुमति तो अति शीघ्रकारी, कृपालु विधाता की है। ऋषि ने लिखा है—"जब आत्मा मन और इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता, वा चोरी आदि, वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है उस समय जीव की इच्छा ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाती है। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय निःशंकता और आनन्दोत्सव उठता है वह जीवात्मा की ओर से नहीं परमात्मा की ओर से है।" (स० प्र०) सच्चे मित्र का यह कार्य ही है कि मित्र को सुमति-सच्ची मति दे। परमात्मा स्वाभाविक मित्र है—"जैसा परमेश्वर सब जगत् का निश्चित मित्र है, न किसी का शत्रु और न किसी से उदासीन है। इससे भिन्न कोई भी इस प्रकार का कभी नहीं हो सकता॥" (स० प्र० १ समुल्लास)

यदि भगवान् उदासीन हो जायें तो जीवों का विशेषकर पापी जीवों का निस्तार, उद्धार कभी नहीं हो सके। परमात्मा का स्नेह ही पापियों की रक्षा कर रहा है। सांसारिक मित्र प्रयोजन न होने पर उदासीन या वैरी बन जाते हैं। किन्तु भगवान् तो सहज मित्र है, नैमित्तिक मित्र नहीं। अतः वह कभी उदासीन नहीं होता।

(स्वाध्याय सन्दोह से)

——

रावण की लङ्का

राक्षस राजा रावण की कथा हमारे इतिहास में बहुत प्राचीन काल से चली आ रही है। विजयदशमी के अवसर यह कथा प्रति वर्ष 'रामलीला' के रूप में ताजी कर दी जाती है। हमने रावण और रावणराज्य के अत्याचार अपनी आँखों से नहीं देखे, इसमें हमारा इतिहास ही साक्षी है किन्तु आज हम वही रावण-राज्य एवं राक्षसी क्रूरता और अत्याचार पंजाब में प्रत्यक्ष देख रहे हैं। रावण राज्य ही नहीं, अपितु पंजाब सरकार को आज राक्षस-राज्य से भी निकृष्ट और हीन कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। रावण राक्षस होते हुए भी वेद-शास्त्रों का पण्डित था, वह पुनरपि भारतीय संस्कृति के कुछ संस्कार रखता था किन्तु आज के पंजाब के शासक इससे सर्वथा खाली दिखाई देते हैं, यदि कोई एकाध भूला भटका भारतीय-संस्कृति का कुछ ज्ञाता है भी, तो उसने अपने आपको बेच रखा है और अपनी आत्मा का हनन कर, दबा पड़ा है, उसमें और मुर्दे में कोई अन्तर नहीं हो सकता। कैरों सरकार ने जो अत्याचार पञ्जाब में किये हैं उनका उदाहरण आज तक संसार के इतिहास में कहीं भी नहीं मिलता, इसलिए तो मैं कैरों और कैरों सरकार को रावण और रावणराज्य से भी निकृष्टतर लिख रहा हूँ। मैं ही नहीं, न्यायाधीश कपूर ने भी अपनी फिरोजपुर काण्ड की रिपोर्ट में कहा है कि ऐसा नृशंस अत्याचार **"न भूतो न भविष्यति"**

जब अत्याचार चरम सीमा पर पहुँच जाता है तब परमात्मा की कृपा से कोई न कोई उस अत्याचारी का सर्वनाश करने वाला भी उपस्थित हो ही जाता है। जैसे कि रावण के बध के लिए राम और लक्ष्मण जा पहुँचे। उसी प्रकार पञ्जाब के अत्याचार और अत्याचारी शासकों के उन्मूलनार्थ हिन्दी-रक्षा समिति ने अथवा आर्यसमाज ने धर्मयुद्ध प्रारम्भ कर रखा है। सभी युद्धों में धर्म की विजय हुई है। भगवान् श्रीकृष्ण ने भी गीता में कहा है—"यतो धर्मस्ततो जयः"

धर्मात्मा बिभीषण

रामायण के पाठकों को ज्ञात होगा कि जब रावण ने महारानी सीता का हरण किया तब उसके छोटे भाई धर्मात्मा बिभीषण ने रावण को समझाया, राक्षस राजा ने अपने राज्य और बल के घमण्ड में चूर होने के कारण बिभीषण की एक भी बात न मानी।

जब धर्मात्मा बिभीषण ने देखा कि रावण के विनाश के दिन आ गये हैं "विनाशकाले विपरीत बुद्धिः" और इस की बुद्धि भी सर्वथा विपरीत हो गई है, तब वह अपने अत्याचारी भाई को छोड़कर रामचन्द्रजी के साथ जा मिला था। आज पञ्जाब में हमें फिर वही पुराना दृश्य दिखाई दे रहा है। कैरों सरकार और हिंदी-रक्षा समिति का युद्ध छिड़ा हुआ है। प्रो० शेरसिंह जी सरदार प्रतापसिंह कैरों के बहुत निकट के मित्र और साथी हैं।

उन्होंने सरदार साहब को बहुत दिन तक समझाया, किन्तु जब उन्होंने प्रो० शेरसिंह जी की धर्मयुक्त और न्यायोचित बात न मानी तो प्रो० साहब ने कैरों साहब को छोड़कर अन्याय का प्रतीकार करने के लिए सत्याग्रह करने का निश्चय कर लिया और इसी निश्चय के अनुसार उनको १७ नवम्बर को पंजाब सरकार ने नजरबन्द कर लिया है।

प्रो० साहब के इधर सत्याग्रह में सम्मिलित हो जाने से कैरों साहब की गद्दी हिल गई, अब निश्चित जानिये कि यह रावण की लङ्का (कैरों शाही) भस्मसात् होकर ही रहेगी, क्योंकि अब हिन्दी रक्षा-समिति को धर्मात्मा बिभीषण (प्रो० शेरसिंह) मिल गया है। "घर का भेदी लङ्का ढावे।"

घबराकर सरदार प्रतापसिंह कैरों ने २२ नवम्बर को लुधियाने में प्रो० शेरसिंह जी तथा उनके विचारों के दूसरे महानुभावों से अपील की है कि "हिन्दी रक्षा आन्दोलन के कारण जो संकट पैदा हो गया है, उससे वे पंजाब को बचावें।"

प्रो० साहब का त्याग

कैरों साहब ने प्रो० शेरसिंह जी से कहा था कि आप यदि हिन्दी आन्दोलन के विरुद्ध वक्तव्य दे दें तो डा० गोपी चन्द भार्गव की बजाये मैं आपको मंत्री बनाने के लिये तैयार हूँ। किन्तु प्रो० साहब ने मंत्री-पद की गद्दी को ठुकरा दिया।

(शेष पृ० १० पर)

हम अन्तिम श्वास तक अन्याय का सामना करेंगे

श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज—प्रधान हिन्दी रक्षा समिति की ओर से दिया गया वक्तव्य जो उन्होंने सत्याग्रह करने से पूर्व दिल्ली में दिया—

"हमने अप्रैल सन् १९५७ में अपनी सरकार के सम्मुख यह मांग उपस्थित की थी कि भाषा क्षेत्र में उत्पन्न की गई कठिनाइयों को दूर कर दिया जावे। किन्तु सरकार ने हमारी बात सुनी अनसुनी कर दी। जून १९५६ में हमने अपनी कठिनाइयों को सात मांगों के रूप में सरकार के सम्मुख उपस्थित किया और ३० मई १९५७ तक हम लगभग एक वर्ष तक सरकार के उस न्याय-निर्णय की प्रतीक्षा करते रहे जिसमें सात मांगों को बहुत सरल तथा सीधे रूप में प्रस्तुत किया गया था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम बड़े से बड़े नेता तथा सरकारी पदाधिकारी से मिले। किन्तु परिणाम कुछ न निकला। सरकार हमें ठुकराती ही रही। इस बात का ध्यान रखते हुये कि अपनी सरकार को न्यून से न्यून कष्ट हो मैंने अपने साथियों के साथ ३० मई १९५७ को सद्भावना-यात्रा की। प्रथम बार असफलता के दर्शन होने पर भी पुनः दोबारा सद्भावना की ओर ही पग बढ़ाया। मुझे खेद है कि पंजाब के मुख्य मंत्री जी ने हमारी मांगों को स्वीकार करने के स्थान पर हमारे वीर सत्याग्रहियों पर जो अहिंसा तथा त्याग का व्रत धारण किये हुए थे, अनेकों अत्याचार किये जिनमें गर्म सड़कों पर घसीटना, लाठियों से पीटना, सारा दिन भूखे प्यासे रखना, रात्रि के समय जंगलों में छोड़ना, विचित्र प्रकार के हथियारों का प्रयोग करना, झूठे आरोप लगाना, तंग तथा गन्दे वातावरण में सत्याग्रहियों को रखना, देवियों को पीटना तथा अपमानित करना, ओ३म् के झंडे, आर्य समाज तथा सनातन धर्म मन्दिरों को अपवित्र करना और लगभग आठ हजार वीरों को जेल में ठूंसना तथा सवासौ के लगभग प्रमुख व्यक्तियों को बिना अभियोग चलाये जेलों में नजरबन्द रखना, यही नहीं—हमें दबाने के लिए कई प्रकार के झूठे आरोप लगाना, हमारी मांगों पर परदा डालकर झूठा प्रचार करना, अपने झूठ तथा अत्याचारों को छुपाने के लिए सत्य के प्रतिपादक समाचार पत्रों पर प्रतिबन्ध लगाना, सरकारी कर्मचारियों पर असत्य आरोप लगाकर नौकरियों से पृथक् करना एवं सजा देना, श्री लालचन्द जी सभ्रवाल को खून देकर जीवन बचाने वाले व्यक्ति को जेल में डालना आदि ऐसे कार्य हैं जिससे सरकार की नीति हमें कुचलने की स्पष्ट प्रतीत हो जाती है, गणतन्त्रीय राज्य शासन ने हमें दबाने के लिए जो बहुत घृणात्मक कार्य किए हैं वे हैं—फिरोजपुर जेल में निहत्थे सत्याग्रहियों पर घोर अत्याचार तथा रोहतक के गांवों में पुलिस द्वारा भय, आतंक फैलाना, बहुअकबरपुर तथा नया वास के ग्रामों में निरपराध देवियों तथा भाइयों को अपमानित करना तथा उन पर लाठियों के प्रहार करना। इन सब कुकृत्यों को मैं अपनी रोग शय्या पर पड़ा-पड़ा सुनता रहा, पर चुप रहा। स्वास्थ्य ठीक होने पर जब भी मुझे वीरों पर किये गये अत्याचारों, उनके घरों की नीलामियों तथा वीर सुमेरसिंह जी का बलिदान याद आता तो मेरा मन दुखित हो उठता। इसलिए मैंने निश्चय कर लिया है कि शरीर की अवस्था भले ही कैसी ही हो मुझे सत्याग्रह करके सरकार द्वारा किए गए अत्याचारों के विरोध में अपना तथा अपने साथियों का रोष प्रकट कर देना आवश्यक है। दिल्ली में चल रही बात-चीत का उपहास तो लुधियाना में दिये गए हमारे मुख्य मंत्री सरदार प्रतापसिंह जी कैरों के भाषण से स्पष्ट हो गया। जब भी वातावरण ठीक

होने को आता है तो सरदार प्रतापसिंह कैरों चिड़ाने वाले शब्दों का प्रयोग कर वातावरण को दूषित बना देते हैं जैसा कि उन्होंने प्रधान मंत्री के सर्वप्रथम पत्र से उत्पन्न हुये वातावरण को अपने सोनीपत के भाषण से गन्दा कर दिया था। पंजाब सरकार हमारी सद्भावना की कितनी कीमत आँकती है यह इससे स्पष्ट हो जाता है कि जब महात्मा आनन्दभिक्षु जी तथा ब्रह्मचारी बालकराम ने सद्भावना का संकेत करते हुए अपनी भूख हड़ताल को तोड़ दिया, वहाँ सरकार ने न तो अब तक उन वीरों को छोड़ा है जिनको ६ अगस्त के दिन आर्यसमाज मन्दिर में पकड़ा गया था और न ही अपराध करने वाले पुलिस आफिसर को सजा दी है। इससे जाना जा सकता है कि सरकार पर कितना विश्वास किया जा सकता है।

यह दुःख की बात है कि हमारी मातृभाषा हिंदी को दबाने तथा गुरुमुखी हम पर जबरदस्ती लादने के लिए वह सब अत्याचार किये जा रहे हैं, जो सम्भवतः किसी काल में तथा किसी देश में नहीं हुए। जब हमारी पंजाब में यह दुर्दशा की जा रही है तब पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इस हो रहे अत्याचार के विरुद्ध एक भी शब्द न कहकर हमारे विरोध में कई कटु शब्द कहकर पंजाब में तानाशाही की सहायता की है। इसलिए मैंने तथा मेरे साथियों ने उनके पंजाब पधारने पर सत्याग्रह का निश्चय किया है। मैं उन सब भाई बहिनों की जिन्होंने प्रत्येक प्रकार के कष्ट सहन किये हैं अथवा कर रहे हैं, सराहना करता हूँ और उनसे आशा करता हूँ कि वह दृढ़ता के साथ अत्याचारों का विरोध करते रहेंगे तथा सरकार को यह चेतावनी देना चाहता हूँ कि हम अपने अन्तिम श्वास तक अन्याय का सामना करते रहेंगे और न्यायोचित मांगें मनवाकर रहेंगे।"

कैरों के प्रति–

(रचयिता–गोपीचंद शर्मा, कविस्थल, महेन्द्रगढ़)

कैरों थोड़े थोड़े दिन के ठाठ, रे तज दे मगरूरी। टेक।
सत्ता के मद में तू गर्वाया, हिन्दी पर प्रतिबन्ध लगाया
सिक्खों की करके छांट, दी सिक्खी को आजादी पूरी। १।
हिन्दुओं के दिल में ज्वाला जली है, ज्वाला को झुंझलाने झंझा चली है
लाठी चार्ज धमकी डाट, क्या ये ही राज्य जम्हूरी। २।
हिटलर, सीजर, चंगेज आया, गुलाम करना सबको चाहा
आखिर हुए बारह बाट, रह गई इच्छा अधूरी। ३।
हिन्दुओं के मंदिरों को फुड़ाकर, चोटी और जनेऊ तुड़ाकर।
गया औरंगजेब सम्राट्, इसी तरह जाना जरूरी। ४।
इतिहास से कुछ शिक्षा पाले, हिन्दी से प्रतिबन्ध हटाले
अकाली भेड़ियों से पंजा छुटाले, मास्टर जी को पाठ पढ़ाले
करतार कर्त्ता के भय से बचाले, जलती अग्नि को जल्दी बुझाले
अन्याय के मार्ग से पग हटाले, शर्मा न्याय का पथ अपनाले
वरना कर्म-चक्की का पाट, कर देगा चकना चूरी। ५।

नैपाली वीर बलभद्रसिंह की वीरता की झांकी

अंग्रेज सरकार ने तीस हजार सेना मय तोपों आदि के नैपाल पर हमला करने के लिए तैयार कर ली। इस सेना के मुकाबले के लिए नैपाल दरबार मुश्किल से १२ हजार सेना जमा कर सका। नैपाली अंग्रेजों के मुकाबले में न धन खर्च कर सकते थे, और न उनके पास हथियार थे, और न वे कूटनीति में ही अँग्रेजों से टक्कर के थे।

सबसे पहले मेजर जनरल जिलैस्पी की सेना सेना ने नैपाल की सरहद के अन्दर प्रवेश किया। नाहन और देहरादून दोनों उस समय नैपाल के राज में थे। नाहन का राजा अमरसिंह थापा नैपाल दरबार का एक प्रसिद्ध सेनापति था। और अमर सिंह थापा का भतीजा सेनापति बलभद्रसिंह केवल ६०० आदमियों सहित देहरादून की रक्षा के लिए नियुक्त था। अँग्रेजी सेना के आने की खबर पाते ही बलभद्रसिंह ने बड़ी शीघ्रता के साथ देहरादून से करीब तीन मील दूर नालापानी की सबसे ऊँची पहाड़ी के ऊपर कलंगा नाम का एक छोटा सा दुर्ग खड़ा कर लिया। बलभद्रसिंह के आदमी अभी बड़े बड़े कुदरती पत्थरों और जंगली लकड़ियों की सहायता से इस दुर्ग की चहार दीवार तैयार कर ही रहे थे कि जिलैस्पी की सेना का अधिकाँश भाग करनल मॉबी के आधीन २४ अक्टूबर को देहरादून पहुंच गया। लिखा है कि "खीरी के जमीदारों और बहादुरसिंह के बेटे राना जीवनसिंह ने देहरादून तक पहुंचने में अँग्रेजों को बहुत मदद दी।" जिलैस्पी स्वयं कुछ पीछे रह गया। हमें स्मरण रखना चाहिए कि इसके आठ दिन के बाद १ नवम्बर को हेस्टिंग्स ने नैपाल के साथ बाजाब्ता युद्ध का एलान किया। फिर भी सेनापति बलभद्रसिंह ने इस अवसर पर अपने से नौ गुनी और कहीं अधिक सन्नद्ध अँग्रेजी सेना का अपने नाम मात्र के दुर्ग में जिस वीरता के साथ मुकाबिला किया, वह वीरता संसार भर के इतिहास में सदा के लिए स्मरणीय रहेगी।

कलंगा के दुर्ग के अन्दर बलभद्रसिंह के पास केवल तीन सौ सिपाही और तीन सौ स्त्रियाँ और बच्चे थे। करनल मॉबी को विश्वास था कि बलभद्रसिंह उस छोटे से अधकचरे दुर्ग के अन्दर मुट्ठी भर आदमियों के सहारे अँग्रेजी सेना के मुकाबले का साहस न करेगा। २४ अक्तूबर की रात को मॉबी ने बलभद्रसिंह को लिख भेजा कि दुर्ग अँग्रेजों के हवाले कर दो, बलभद्रसिंह ने मॉबी के दूत के सामने पत्र को पढ़कर फाड़ डाला और उसी दूत के द्वारा अँग्रेजी सेना को तुरन्त युद्ध के लिए आमन्त्रित किया।

२५ तारीख की सवेरे करनल मॉबी अपनी सेना सहित नालापानी की तलहटी में जा पहुंचा। दुर्ग के चारों ओर तोप लगा दी गई। दुर्ग के भीतर से नैपाली बंदूकों की गोलियाँ बराबर अँग्रेजी तोपों का जवाब देती रहीं। मॉबी ने जब देखा कि शत्रु को वश में कर सकना इतना सरल नहीं है तो उसने जनरल जिलैस्पी को खबर दी। जिलैस्पी उस समय सहारनपुर में था। २६ अक्टूबर को जिलैस्पी नालापानी पहुँचा। तीन दिन जिलैस्पी को तैयारी में लगे। उसके बाद में उसकी आज्ञानुसार चारों ओर से चार अँग्रेजी पलटनों ने एक साथ दुर्ग पर हमला किया। एक ओर की पलटन करनल कारपेन्टर के, दूसरी ओर की कप्तान फ्रास्ट के, तीसरी ओर की मेजर कैली के, और चौथी ओर की कप्तान कैम्पबेल के अधीन थी। एक पांचवी पलटन मेजर लडलॉ के अधीन खास जरूरत के समय के लिए पीछे रखी गई।

नैपाली स्त्रियों की वीरता

चारों ओर से जोरों के साथ कलङ्गा के दुर्ग पर गोली बारी शुरू हुई। अँग्रेजी तोपों ने बलभद्रसिंह के तीन सौ बहादुरों में से अनेकों को खेत कर दिया फिर भी दुर्ग के भीतर से बन्दूकों की गोलियाँ लगातार तोप के गोलों का जवाब देती रहीं। और अँग्रेजी सेना में से जो योद्धा बार-बार दुर्ग तक पहुंचने की कोशिश करते थे उन्हें हर बार वहीं पर खत्म करती रहीं। कप्तान वन्सीटॉर्ट लिखता है कि गोलियों की इस बौछार में अनेक बार साफ दिखाई दिया कि नैपाली स्त्रियाँ बेधड़क चाहर दीवारी पर खड़ी होकर वहाँ से शत्रुओं के ऊपर पत्थर फेंक रहीं थीं। यहाँ तक कि बाद में दीवार के खण्डहरों में अनेक स्त्रियों की लाशें मिलीं। अँग्रेजी सेना ने अनेक बार ही दुर्ग की दीवार तक पहुँचने के प्रयत्न किये। किन्तु ये सब प्रयत्न निष्फल गये। इनमें अनेक ही अँग्रेजी अफसरों और सिपाहियों की जाने गईं। इन्हीं में से एक प्रयत्न में मेजर जनरल जिलैस्पी ने भी कलङ्गा की दीवार के नीचे अपने प्राण दिये।

जिलैस्पी की करुणाजनक मृत्यु

जिलैस्पी की मृत्यु वास्तव में अत्यन्त करुणा जनक थी। उसका मुख्य कारण गोरे सिपाहियों की कायरता थी।

इतिहास लेखक विलसन लिखता है कि बार बार की हार से चिढ़कर जनरल जिलैस्पी स्वयं तीन कम्पनियाँ गोरे सिपाहियों की साथ लेकर दुर्ग के फाटक की ओर बढ़ा। दुर्ग के अन्दर से गोलियाँ और पत्थरों की बौछार शुरू होते ही ये तीन सौ गोरे सिपाही पीछे हट गये। वीर जिलैस्पी अकेला आगे बढ़ा। उसने अपनी नङ्गी तलवार घुमाकर और ललकार कर अपने सिपाहियों को आगे बुलाना चाहा। किन्तु व्यर्थ, इतने में ही एक गोली दुर्ग के फाटक में ३० गज पर जिलैस्पी की छाती में लगी। जिलैस्पी वहीं पर ढेर हो गया।

लिखा है कि कलङ्गा के ठीक फाटक के ऊपर गोरखों की एक तोप थी जिसकी आगे से होकर शत्रु को आगे बढ़ने की हिम्मत न होती थी। गोरखों के पैने तीरों ने भी अँग्रेजी सेना के संहार में सहायता दी। इसके अतिरिक्त विलियम्स साफ लिखता है कि गोरखे इस वीरता के साथ दुर्ग की रक्षा कर रहे थे कि अँग्रेजी सेना को दुर्ग की दीवार तक बढ़ने का साहस न होता था। भारत के अन्दर प्रायः प्रत्येक ऐसे खतरे के अवसर पर अँग्रेज सिपाहियों ने अत्यधिक कायरता का परिचय दिया है। भरतपुर के मुहासरे के समय भी अँग्रेजों ने लज्जास्पद व्यवहार किया था

जिलैस्पी की मृत्यु के बाद थोड़ी देर के लिए सेना का नेतृत्व फिर करनल माँबी के हाथों आया माँबी ने मुहासरे को जारी रखने की अपेक्षा अब जल्दी से पीछे हट जाने में ही अधिक बुद्धिमत्ता समझी। पीछे हटकर उसने सहायता के लिए दिल्ली पत्र लिखा। एक महीने में और अधिक फौज और तोपें दिल्ली से देहरादून पहुँची। २५ नवम्बर को फिर एक बार अँग्रेजी सेना ने कलङ्गा के दुर्ग को विजय करने का प्रयत्न किया। इस बार भी उन्हें हार खाकर पीछे हटना पड़ा। महासरा जारी रहा और अंग्रेजी तोपें रातदिन दुर्ग के ऊपर गोलों की वर्षा करती रहीं।

गोरखा सेना की प्यास से लाचारी

इसी बीच दुर्ग के अन्दर पानी का काल पड़ गया। पानी वहाँ नीचे की पहाड़ियों के कुछ झरनों से जाता था। ये झरने इस समय अँग्रेजी सेना के हाथों में थे और अँग्रेजों ने दुर्ग के अन्दर पानी का जाना बन्द कर दिया था। बलभद्रसिंह और उसके बच्चे हुए साथियों की हालत इस समय अत्यन्त करुणाजनक थी। अँग्रेजी तोपों के गोले दुर्ग के भीतर लगातार अपना काम कर रहे थे। इस बौछार में जख्मियों की चीखें और पानी एक एक बूँद के लिये स्त्रियाँ और बच्चों की तड़पन और इस सब पर

एक छोटा-सा नाम मात्र का दुर्ग, जिसके चारों ओर की दीवारों में सूराख हो चुके थे और दुर्ग के बाहर असंख्य शत्रु। शत्रु के गोलों की शायद वे इतनी प्रवाह नहीं करते किन्तु पानी की प्यास ने उन्हें लाचार कर दिया।

३० नवम्बर को सवेरे, जबकि अँग्रेजी तोपों से गोले बारी बराबर जारी थी और उनके जवाब में गोरखा बन्दूकों की गोलियाँ भी लगातार अपना काम कर रही थीं। एकाएक दुर्ग के अन्दर की बन्दूकें और कमाने चन्द मिनट के लिए शांत हो गईं। अचानक दुर्ग का लोहे का फाटक खुला। अँग्रेज समझे कि बलभद्रसिंह अब हमारी अधीनता स्वीकार कर लेगा, किन्तु उन्हें धोखा हुआ : शायद अब भी शत्रु की अधीनता स्वीकार करने का विचार तक वीर बलभद्रसिंह या उसके साथी गोरखों के चित्त में न आया होगा। कलङ्गा के भीतर के करीब ६०० प्राणियों से ७० उस समय तक जिन्दा बचे थे जिनमें कुछ स्त्रियाँ भी थीं, ये सब प्यास से बेताब थे। दुर्ग का फाटक खुलते ही ये ७० गोरखे स्त्री और पुरुष नङ्गी तलवारें हाथों में लिए बन्दूकें कन्धे पर रक्खे, कमर से खुकरियाँ लटकाए, सरों पर फौलादी चक्र लपेटे, वीर बलभद्रसिंह के नेतृत्व में शान्ति और शान के साथ फाटक से बाहर निकले। बलभद्रसिंह का शरीर सीधा चेहरा हँसता हुआ और चाल एक सच्चे सिपाही की तरह नपी हुई थी। पेश्तर इसके कि अँग्रेज अफसर यह समझ सकें कि क्या हो रहा है। बलभद्रसिंह अँग्रेजी सेना के बीच से रास्ता करता हुआ अपने ७० साथियों सहित नालापानी के झरनों पर पहुँचा। जी भरकर सबने चश्मा का पानी पिया और फिर वहाँ से ललकार कर कहा तुम्हारे लिए दुर्ग विजय करना असम्भव था। किन्तु अब मैं अपनी इच्छा से दुर्ग छोड़ता हूँ।

अद्भुत वीरता

इसके बाद शत्रु के देखते-देखते एक क्षण भर के अन्दर बलभद्रसिंह और उनके साथी पास की पहाड़ियों में गुम हो गए। जिस समय अँग्रेज दुर्ग के भीतर पहुंचे वहाँ सिवाय मरदों औरतों, और बच्चों की लाशों के और कुछ न था। कप्तान बन्सीटार्ट लिखता है कि इस दुर्ग के मुट्ठी भर संरक्षकों ने अँग्रेजों की पूरी एक सेना को एक महीने से ऊपर तक रोके रक्खा। जनरल जिलैस्पी को मिलाकर अँग्रेजों के ३१ अफसर और ८ सिपाही इस संग्राम में काम आए। अँग्रेजों ने कलंगा के दुर्ग पर कब्जा करते ही उसे जमीन से मिलाकर बराबर कर दिया। इस समय उस स्थान पर साल वृक्षों का एक घना जंगल है।

आर० सी विलियम्स इस घटना के सम्बन्ध में लिखता है—

"कलंगा के दुर्ग की रक्षा का इस प्रकार अन्त हुआ। यह रक्षा का कार्य वीर से वीर जाति के इतिहास को अलंकृत करने वाला था और इस वीरता के साथ उसका सम्पादन किया गया जो प्रायः हमारी अपनी पराजयों की जिल्लत को धोने के लिए काफी थी।"

देहरादून के जंगलों में रीचपाना नदी के किनारे अभी तक एक छोटा-सा स्मारक बना हुआ है जिस पर खुदा हुआ है—

"हमारे वीर शत्रु बलभद्रसिंह और उसके वीर गोरखों की स्मृति में सम्मानोपहार।"

बलभद्रसिंह कलंगा से निकलकर अपने सिपाहियों सहित एक नैपाली दुर्ग जीतगढ़ की रक्षा के लिए पहुँच गया।

जौतगढ़ में मेजर बेलडाक ने एक हजार सेना सहित दुर्ग पर हमला किया। बलभद्रसिंह के पास पाँच सौ से कम सैनिक थे। फिर भी विलियम्स लिखता है अंग्रेजी सेना को जिल्लत के साथ हार खाकर पीछे हट जाना पड़ा। बलभद्रसिंह जौतगढ़ रक्षा का काम केवल साठ आदमियों को सौंप

कर अपने शेष आदमियों सहित जयटक के दुर्ग की रक्षा के लिए पहुंचा।

(साजिशें)

कम्पनी के अफसर समझ गए कि केवल सेना और तोपों के बल बिना अपने सुपरिचित "गुप्त उपायों" के गोरखों को जीत सकना असम्भव है। कलंगा के दुर्ग पर कब्जा करने के बाद करनल माँबी ने अपने एक मातहत करनल कारपेन्टर को जमना नदी के दाहिने की ओर नैपाल के इलाके में भेजा। इसलिये कि वह वहाँ की पहाड़ी कौमों को भड़काकर नैपाल दरबार के विरुद्ध उनसे विद्रोह करवा दें। इतिहास लेखक विलसन लिखता है कि करनल कारपेन्टर के प्रयत्नों से जौनसर इलाके की प्रजा बगावत कर बैठी, जिसके कारण बैराठ के दुर्ग की मुट्ठी भर सेना गोरखा सेना को दुर्ग छोड़कर पीछे हट जाना पड़ा। करनल माँबी स्वयं सिरमौर की राजधानी नाहन पहुंचा। सिरमौर नैपाल की एक सामन्त रियासत थी। हाल में नैपाल दरबार सिरमौर के पुराने राजा को किसी अपराध में गद्दी से उतार कर अमरसिंह थापा को वहां का शासन सौंप दिया था। अमरसिंह थापा उस समय श्रीनगर के दुर्ग की रक्षा के लिए नियुक्त था। अमरसिंह का पुत्र रणसूरसिंह नाहन में था। करनल मांबी ने अमरसिंह की अनुपस्थिति में पदच्युत राजा को अपनी ओर तोड़ लिया। अमरसिंह ने अपने पुत्र रणसूरसिंह को आज्ञा दी कि तुम नाहन छोड़कर कुछ दूर उत्तर की ओर जयटक के दुर्ग में आ जाओ और पास की पहाड़ियों को अपनी सेना से घेर लो। जयटक के दुर्ग में रणजूरसिंह के अधीन करीब दो हजार नैपाली सेना थी। २० दिसम्बर सन् १८१४ को जनरल जिलैस्पी की जगह जनरल मारटिंडल उस ओर की अंग्रेजी सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त हुआ। २५ को मारटिन्डल जनरल ने अपनी समस्त सेना सहित जयटक के दुर्ग पर हमला किया। वीर बलभद्रसिंह भी उस समय जयटक के दुर्ग में मौजूद था। मारटिन्डल की सेना दुर्ग की नैपाली सेना से कई गुनी थी।

अंग्रेजों की हार

मारटिण्डल कलंगा के दुर्ग की कहानी सुन चुका था। उसे पता लगा कि जयटक के दुर्ग के अन्दर पीने का पानी नीचे के कुछ कुओं से जाता है उसने अपनी मुख्य सेना को दो अलग-अलग दलों में बाँटकर एक मेजर लडलो के अधीन और दूसरा मेजर रिचर्डस के अधीन दोनों ओर से इन कुओं को घेर लेने के लिये भेजा किन्तु गोरखों ने इन दोनों सैन्यदलों को बुरी तरह परास्त किया और मेजर लडलो और मेजर रिचर्डस दोनों को अपने अनेक अफसर और सैंकड़ों सिपाही मैदान में छोड़कर और अनेक शत्रू के हाथों कैद कराकर पीछे लौट आना पड़ा। प्रोफेसर विलसन लिखता है कि इस हार के बाद जनल मारटिन्डल को जयटक के किले पर दोबारा हमला करने का साहस न हो सका। जनरल जिलैस्पी वाली सेना की कहानी यहीं पर समाप्त हो जाती है कुल जितनी सेना मेरठ से रवाना हुई थी उसमें से एक तिहाई इस समय तक खत्म हो चुकी थी। किन्तु वीर बलभद्रसिंह की वीरता सदा इतिहास ग्रन्थों में विद्यमान रहेगी। —सम्पादक

(पृ० ४ का शेष)

इसी प्रकार ज्ञानी गुरुमुखसिंह मुसाफिर ने श्री यश के द्वारा सन्देश भेजा कि हिन्दी रक्षा आन्दोलन का विरोध करने पर आपको पंजाब प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष बना दिया जायेगा, किन्तु प्रो० साहब ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर भी लात मार दी।

कुरुक्षेत्र संस्कृत विश्वविद्यालय का उपकुलपति-पद भी प्रो० साहब को इसी शर्त पर देना चाहा, किन्तु प्रो० साहब ने अपनी आत्मा का हनन कर क्रीतदास बनना स्वीकार न किया और वैदिक धर्म तथा हिन्दी की रक्षा के आगे सभी प्रलोभनों को हेय समझ कर छोड़ दिया। आप सच्चे आर्य पिता के पुत्र हैं तथा सम्पूर्ण कुटुम्ब आर्यसमाजी हैं। आपके ताऊ जी अभी जेल से छूटकर वापिस आये हैं और पूज्य पिता जी अभी कैरों के कारागार में बन्द है इतने बड़े त्याग के लिए कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो प्रो० साहब को बधाई न दे? —वेदव्रत

प्रो० शेरसिंहजी भूतपूर्व मंत्री, पंजाब मन्त्रि-मण्डल तथा सदस्य विधान सभा का वक्तव्य

मैं कांग्रेस की प्रारम्भिक सदस्यता से पृथक् कर दिया गया हूँ। इस समाचार से मुझे दुःख हुआ और प्रसन्नता भी। मेरी यह धारणा थी कि मैं कांग्रेस के भक्त के रूप में पंजाब की वर्तमान अशान्त स्थिति में अधिक से अधिक सेवा करके अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ। ऐसा करते हुए कांग्रेस की सरकारी नीति से मेरा मतभेद हो जाना स्वाभाविक था। इस पर भी मैं यह समझता था कि अपने नेताओं और साथियों से मतभेद रखता हुआ भी मैं न केवल अपनी अन्तरात्मा के प्रति ही सच्चा हूँ अपितु मैं कांग्रेस के सच्चे आदर्शों पर चल रहा हूँ। परन्तु सम्भवतः कुछ व्यक्ति पंजाब की वर्तमान शोचनीय स्थिति से अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए उत्सुक एवं प्रयत्नशील हैं। मैं केवल एक बात कह सकता हूँ। मैं अपनी योग्यतानुसार निरन्तर कांग्रेस की सेवा करता रहा हूँ। मैं जनता को विश्वास दिलाता हूँ कि कुछ भी क्यों न हो मैं अपने भूतकाल को विकृत न होने दूँगा।

दुर्भाग्य से पंजाब में ऐसा वातावरण पैदा कर दिया गया है जिसमें हिन्दी आन्दोलन की विशेषताएं पूर्णतया छिप गई हैं। इस समस्या पर निष्पक्ष विचार नहीं किया जा रहा। हममें से जो भाई राज्य में हिन्दी को एक विशेष स्थिति प्रदान करने के पक्ष पोषक थे उन पर साम्प्रदायिकता का दोषारोपण किया गया और उनके विरुद्ध निन्दात्मक और घृणात्मक प्रचार प्रारम्भ कर दिया गया। पंजाब में स्वयं काङ्गरेस ने साम्प्रदायिकता के सामने घुटने टेक दिये जिसके कारण पंजाब में हिन्दू कांग्रेसी सदस्यों की स्थिति जटिल हो गई। एक ओर तो सिख कांग्रेसी सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक मामलों में साम्प्रदायिक भावनाएं रखने और उनका प्रचार करने में स्वतन्त्र हैं और दूसरी ओर हिन्दू कांग्रेसी विशुद्ध सांस्कृतिक विषयों में भी आत्मा की स्वतन्त्रता से वंचित किये जा रहे हैं। परन्तु इसका कोई इलाज भी नहीं है। कांग्रेस हाई कमान की इच्छा पंजाब के हिन्दुओं और हिन्दू कांग्रेस जनों के साथ न्याय करने की प्रतीत नहीं होती। और हम जो बात भी कहते हैं उसको तोड़-मरोड़ कर उसका गलत अर्थ लगाया जाता है।

मैं इस विश्वास के साथ कांग्रेस से पृथक् हो रहा हूँ कि मैं आने वाले वर्षों में कांग्रेस के नेताओं को यह निश्चय करा दूँगा कि उनसे पंजाब के मामले के सम्बन्ध में निर्णय की बड़ी ही भयंकर भूल हुई है। मेरी अब भी कांग्रेस के आदर्शों में निष्ठा है। मुझे इस बात दुःख नहीं है कि मैं इस महान् संस्था से बहिष्कृत कर दिया गया हूँ। मुझे दुःख इस बात का है कि यह महान् संस्था अपने आदर्शों से गिर गई है।

पिछले कई सप्ताहों से मैं यह सोच रहा था कि कांग्रेस से त्यागपत्र देकर सत्याग्रह करूं। फीरोजपुर जेल के भीतर श्री सुमेरसिंह की दुःखजनक मृत्यु से बहुअकबरपुर ग्राम के पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के साथ किये गये पुलिस के निर्मम एवं निर्दय व्यवहार से सत्याग्रहियों को पीट-पीटकर उनके जबरदस्ती कागजों पर हस्ताक्षर या निशानी अंगूठे लेने की पाशविकता से मुझे बड़ा मानसिक सन्ताप हुआ। परन्तु श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त ने जो बड़े धैर्यवान् एवं समझदार महानुभाव हैं तथा हरियाना के मेरे कई आर्यसमाजी सम्मानित मित्रों ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया। अब स्वयं प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने वही कर दिया जो मैं सोचता था। मुझे दुःख इस बात का है कि इस नाजुक समय में प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने अपना सन्तुलन नष्ट कर दिया। इससे मुझे एक लाभ हुआ, अब मैं काङ्गरेस के अनुशासन में बन्धा हुआ नहीं हूँ, और स्वतन्त्र हूँ।

एक रोगी

ले०—सुदर्शनदेव व्याकरणाद्याचार्य गुरुकुल झज्जर

आप और हम कभी ज्वर से पीड़ित हैं तो कभी हमें प्रतिश्याय (जुकाम) हो जाता है, कभी सिर दर्द है तो कभी पेट में शूलें चलने लगती हैं। किसी को उन्माद है तो किसी को अन्य भयङ्कर रोग घेरे हुये हैं। अभिप्राय यह है कि जहाँ मानव संसार में सौख्य भोगना चाहता है वहाँ साथ-साथ उसे अनेक दुःख एवं रोगों में से भी गुजरना पड़ता है।

आयुर्वेदविज्ञ जानते हैं कि रोग प्रायः तीन प्रकार के होते हैं—१--साध्य, २—याप्य, ३—असाध्य साध्य रोग वे कहलाते हैं जो औषध आदि उपचार करने से ठीक हो जाते हैं। दूसरे याप्य रोग वे रोग वे कहलाते हैं जिनमें औषध-सेवन करते रहने से रोगी को आराम रहता है, किन्तु औषध-सेवन छोड़ देने पर रोग फिर दुःख देने लगता है। तीसरे असाध्य रोग वे होते हैं जिनकी कोई चिकित्सा नहीं हो सकती।

आपको विदित है कि आजकल नये-नये रोगों का भी संसार में प्रादुर्भाव हो रहा है। सुनते हैं कि पहिले तपेदिक रोग किसी को नहीं होता था, किन्तु आज प्रायः नवयुवक-समाज इससे बहुत अधिक पीड़ित है। अभी-अभी एक और नया रोग चला जिससे अनेक व्यक्तियों का शरीरान्त हो गया। जिसका नाम रोग-विशेषज्ञों ने "इन्फ्लूएञ्जा" या "फ्लू" रक्खा। वैद्य लोग जिसे "वातश्लोष्मिक ज्वर" कहते हैं।

आप जानते हैं कि व्यक्ति तो प्रायः रोगग्रस्त होते ही रहते हैं। पहिले भी होते थे आजकल भी होते हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। किन्तु इस कलियुग में एक बहुत ही आश्चय-जनक बात सुनने में आई, शायद आपने भी सुनी होगी। सम्भव है, आप पूछें कि वह क्या?

सुना है कि भारत का पञ्जाब प्रान्त चिरकाल से रोगी है। डाक्टरों एवं वैद्यों ने पहले चिकित्सा करने में अपनी ओर से कोई कसर न रख छोड़ी किन्तु—

रोग बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की॥
सौले उठते ही गए ज्यों-ज्यों हवा की॥

अर्थात्-रोग में कोई शान्ति का अनुभव नहीं हुआ, अपितु रोग में पहिले से कुछ वृद्धि हो गई। जिससे वैद्यों को और भारी चिन्ता ने आ घेरा।

सूचना मिली है कि लगभग ६ मास से चिकित्सा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

आप कहेंगे कि तुम यह क्या कह रहे हो? क्या कभी प्रान्त भी रोगी हुआ करते हैं। यह हमारी समझ में नहीं आता। यह ठीक है किन्तु इस विज्ञान के युग में सब कुछ हो सकता है। आपको विदित नहीं कि अभी-अभी एक दूसरा भी चांद विज्ञान ने बनाकर रख दिया है। सम्भव है दूसरा सूर्य भी बन कर चमकने लगे। यह विज्ञान का युग है, विज्ञान का।

अस्तु! आप पूछेंगे कि पञ्जाब प्रान्त को क्या असाध्य रोग हो गया है जिसकी चिकित्सा लगभग ६ मास से विशेषतया की जा रही है? उस रोग नाम फार्मूला है फार्मूला। यह बड़ा भयङ्कर रोग है। यह जिसे लग जाता है उसे समूल नष्ट कर देता है।

लगभग ६ मास पूर्व इस "फार्मूला" रोग को जड़ से उखेड़ने के लिए पञ्जाब के सभी मतिमान चिकित्सक-प्रवरों ने मिलकर एक अपनी कमेटी बनाई। जिसका नाम 'हिन्दी रक्षा समिति' रखा गया।

(शेष पृ० १३ पर)

चण्डीगढ़ चल नौजवान

(रचियता पं० ताराचन्द्र आर्योपदेशक, कविरत्न, महेन्द्रगढ़)

चण्डीगढ़ चल नौजवान रे चण्डीगढ़ । टेक।
ऐसी किस काम जवानी, मिटती जा रही नाम निशानी।
तेरी भाषा का अपमान रे, चण्डीगढ़······॥१॥
गुण्डे करते हैं बदमाशी, पीटे जाते हैं संन्यासी ।
हो रहे अत्याचार महान् रे, चंडीगढ़······॥२॥
देवियों की चूड़ियाँ तोड़ी, भर लारी जंगल में छोड़ी।
पकड़ घसीट रहे शैतान रे, चंडीगड़······॥३॥
लाठी डंडे चला रहे, तपती धूप में जला रहे हैं ।
नहीं होता जुल्म बयान रे, चंडीगड़······॥४॥
नौजवान कहाने वाले, माता की लाज बचाले ।
खड़ा हो जा सीना तान रे, चंडीगढ़······॥५॥
कर दूर सकल बेहोशी, अब तेरी ना अच्छी खामोशी।
कर तन मन धन कुर्बान रे, चंडीगढ़······॥६॥
ताराचन्द करे मत देरी, आखिर विजय होयगी तेरी ।
चल होने को बलिदान रे, चंडीगढ़······॥७॥

(शेष पृ० १२ का)

आपने अभी देखा कि 'फ्लू' रोग फैलते ही अनेक औषधियों के विज्ञापनों से अखबारों के पृष्ठ काले होने लगे। अनेक औषधियों का आविष्कार हो गया। ठीक इसी प्रकार इस 'फार्मूला' नामक नये रोग की समुचित चिकित्सा के लिये उस भिषक्-प्रवर समिति ने सत्याग्रह नामक अमूल्य एवं सञ्जीवन औषध का आविष्कार किया।

इस भिषक्- प्रवर समिति (कमेटी) की रिपोर्ट है कि 'फार्मूला' नामक रोग असाध्य नहीं है जो कि औषध-सेवन करने से दूर न हो सके। याप्य भी इसे नहीं कह सकते। हाँ, साध्य होते हुए यह रोग चिरसाध्य एवं कष्टसाध्य अवश्य है।

आज रोगी को औषध-सेवन करते हुए लगभग ६ मास हो चुके हैं। रोग बहुत पुराना है इसलिये कुछ चिकित्सा में विलम्ब हो रहा है।

विश्वस्त सूत्रों से विदित हुआ है कि आजकल रोगी की अवस्था अनुकूल है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास किया जाता है कि रोगी शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेगा।

उचित उपाय

लेखक—आचार्य विश्वप्रिय शास्त्री (दिल्ली)

पञ्जाब की उलझी हुई भाषा समस्या को सुलझाने के लिए प्रत्येक सहृदय व्यक्ति का मन लालायित है। परन्तु अभी सुलझने में नहीं आई।

चण्डीगढ़ में हमारे प्रधान मन्त्री श्री माननीय जवाहरलाल नेहरू जी ने अपने भाषण में कह दिया कि हिन्दी रक्षा समिति की ६० प्रतिशत मांगे राज्य सरकार मान चुकी है और शेष १० प्रतिशत भी बातचीत के द्वारा मनाई जा सकती है। सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के प्रधान की घोषणा है कि जब तक किसी भाषा के जोर जबरदस्ती की पढ़ाई वापस नहीं ली जाती सत्याग्रह जारी रहेगा। बन्द नहीं किया जा सकता। सरकार को चाहिए कि जबरन पढ़ाई वाले नियम को वापिस ले ले यह सब से अच्छा उपाय है।

नहीं तो आज के जनतन्त्र युग में निर्वाचन हो जाये। जिसको जनता चाहे उस राज्य की भाषा घोषित कर दिया जाये। और निर्वाचन भी हुवा हुवाया है। पञ्जाब विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के आंकड़े देख लिए जाँय।

आँकड़ों से मालूम होगा कि हिंदी की परीक्षा में बैठने वाले या हिन्दी माध्यम से परीक्षा में बैठने वाले गुरुमुखी से छः सात गुणा परीक्षार्थी होते हैं। यह तो उस समय है जब कि पञ्जाब एक बहुत बड़े भाग की राज्य भाषा गुरुमुखी लिपि में लिखी जाने वाली पञ्जाबी को मान लिया गया है।

जिस प्रकार बंगाल की भाषा बंगाली और गुजरात की गुजराती तथा महाराष्ट्र की मरहठी है। उसी प्रकार पञ्जाब की भाषा पञ्जाबी होनी चाहिए साधारण व्यक्ति ऐसा समझते हैं और हिंदी रक्षा सत्याग्रह को अनुचित बताते हैं। परन्तु यह वास्तविकता को छिपाना है। वास्तविक पञ्जाबी क्षेत्र पाकिस्तान में गया। पञ्जाब के २९ जिलों में से १६ जिले पञ्जाबी के पाकिस्तान में गए। जहाँ की भाषा उर्दू स्वीकृत हो चुकी है।

वास्तव में पञ्जाबी हिन्दी की एक बोली है। जो देवनागरी, उर्दू और गुरुमुखी लिपियों में लिखी जाती रही है और यह आज ही नहीं पुरातन काल से विभिन्न लिपियों में लिखी जाती रही है। यदि पञ्जाबी की लिपि एक मात्र गुरुमुखी ही होती तो पाकिस्तान के पञ्जाबी भाषी भी गुरुमुखी लिपि की मांग करते जैसे पूर्वी बंगाल के बंगालियों ने बंगाली को पाकिस्तान की राज्यभाषा बनवाकर ही दम लिया।

विभक्त अवशिष्ट पञ्जाब के बारह या तेरह जिलों में से जालन्धर क्षेत्र को पञ्जाबी भाषी माना गया है जालन्धर क्षेत्र पञ्जाबी भाषी है। इससे कोइ नकार नहीं करता। क्या हिन्दू और क्या सिख सब पञ्जाबी बोलते हैं। परन्तु पञ्जाबी की केवल मात्र एक लिपि गुरुमुखी ही तो नहीं है देवनागरी लिपि में भी एक बहुत बड़े समदाय में पञ्जाबी लिखी जाती रही है। यह ठीक है कि कांगड़ा को जालन्धर डिवीजन से पृथक् कर दिया गया तथा पश्चिमी पंजाब से आये हुए सिक्खों को जालन्धर डिवीजन में बसाकर तथा पेप्सू का भाग मिलाकर सिक्खों की जनसंख्या जालन्धर क्षेत्र में ५५ प्रतिशत कर दी गई है तो क्या ४५ प्रतिशत समुदाय की लिपि की अवहेलना की जा सकती है - जबकि कांग्रेस प्रबन्ध कारिणी ३० प्रतिशत समुदाय की भाषा को राज्य भाषा बनाने तक प्रस्ताव स्वीकार कर चुकी है।

इसलिए न्याय का मार्ग यही है कि जालन्धर क्षेत्र की भाषा की लिपि देवनागरी और गुरुमखी कर दी जाय।

कहा जा रहा है कि हिंदी और गुरुमुखी के अक्षरों में थोड़ा-सा भेद है। हमारे प्रधान मन्त्री श्री नेहरू जी ने भी अपने पत्र में जो उन्होंने हिंदी रक्षा समिति के प्रधान श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज को लिखा था यही विचार व्यक्त किया था कि दोनों लिपियों में थोड़ा सा अन्तर कोई भी समझदार व्यक्ति गुरुमुख लिपि को कुछ घन्टों में सीख सकता है। जब इतना ही अन्तर है तो क्यों पृथक् लिपि के लिए हट किया जा रहा है। जबकि राजभाषा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में अनुरोध किया है कि "संघीय राजभाषा हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं को लिखने में देवनागरी लिपि को स्वेच्छा से अपनाया जाये। यह लिपि सब भाषाओं को एक दूसरे के निकट लाने में शक्तिशाली साधन का काम करेगी"।

समय समय पर हमारे राष्ट्रपति माननीय डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने भी यही घोषणा की है वास्तव में इससे राष्ट्रीय तत्त्व को प्रोत्साहन मिलेगा।

यदि देवनागरी लिपि को राज्यभाषा स्वीकार कर लिया जाये तो पुन: सत्याग्रह की आवश्यकता ही नहीं रह जाती और पञ्जाबी भाषी भी इस बात पर गर्व कर सकते हैं कि उनकी भाषा का सीधा सम्बन्ध उस राष्ट्रीय लिपि से है जिसमें सारे भारत की राज्यभाषा लिखि जाती है और वह अपनी विचारधारा का प्रचार भारत के कोने-कोने ही में नहीं अपितु विदेशों में भी हिंदी को देवनागरी लिपि में कर सकेंगे।

यदि सिक्ख लोग संकुचितता से ऊपर नहीं उठते और देवनागरी लिपि को नहीं अपनाते तो ४५ प्रतिशत जनता की भावना और परम्पराओं तथा संस्कृति और साहित्य को ध्यान में रखते हुए पेप्सु सहित जालन्धर क्षेत्र की राज्य भाषा देवनागरी लिपि वाली हिंदी को ही घोषित कर देना चाहिए।

अब रह गया अम्बाला क्षेत्र यह विशुद्ध हिंदी क्षेत्र है। पञ्जाब के भाषा फार्मूला के विधेयकों ने भी इसे हिन्दी क्षेत्र स्वीकार कर इसकी क्षेत्रीय भाषा हिंदी घोषित की है। इस पर प्राईमरी शिक्षा के उपरान्त गुरुमुखी को लादना उचित नहीं, क्योंकि राजभाषा आयोग ने अपने निर्णय में अनुरोध किया है कि "हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी के अतिरिक्त और कोई भारतीय भाषा को सीखने के लिए विद्यार्थियों पर कोई जोर जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए।"

इसलिये अम्बाला क्षेत्र से प्राईमरी के उपरान्त गुरुमुखी की पढ़ाई की अनिवार्यता तत्काल हटा देनी चाहिए। अम्बाला क्षेत्र के निवासियों का सम्बंध न पञ्जाबी से है न गुरुमुखी से।

हाँ इस हिंदी क्षेत्र में कोई दूसरी भारतीय भाषा पढ़ानी ही है तो भारतीय संविधान से स्वीकृत किसी भी भारतीय भाषा को पढ़ने की छूट होनी चाहिए। जैसा कि हिंदी भाषी अनेक उत्तरप्रदेश में हैं। ध्यान रहे पञ्जाब में सर्विस करने वाले व्यक्ति को जब दोनों भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है तो सर्विस करने वाला व्यक्ति द्वितीय भाषा के रूप में गुरुमुखी को ही चुनेगा। बात वही है परन्तु सर्विस न करने वाले को छूट मिल जायेगी।

स्वतन्त्र भारत में न्याय और समय की यह मांग है कि किसी की स्वतन्त्रता को न हड़पा जाये, यही कारण है कि कैरोंशाही के वहुअकबरपुर और फिरोजपुर जेल के कांड इस सत्याग्रह को दबा न सके।

राष्ट्रपिता गांधी जी आज होते तो इस सत्याग्रह पर, और धन्यवाद देते। आर्यसमाज को कि उनके सिद्धांत सत्याग्रह को सुचारु रूप में आर्य समाज ने अपनाया है और समझा देते उन सरकारी पुर्जों को जो अपने हठ पर तुले हुए हैं। अपना मान अपमान समझ बैठे हैं।

हैदराबाद और सिंध के सत्याग्रह के अवसर पर भी कांग्रेसी नेताओं ने विपरीत रुख अपनाया था। सिंध में सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबंध लगने पर जब केन्द्रिय धारा सभा में स्व० भाई परमानन्द जी ने विरोध में प्रस्ताव रक्खा तो कांग्रेस पार्टी के नेता ने स्व० भूला भाई देसाई ने कांग्रेस पार्टी को तटस्थ

(शेष पृ० १६ पर)

मूक बलिदानों की करुण कहानी

(लेखक—प्रताप शास्त्री)

लेखक का मूक बलिदान से आशय है जिन्होंने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर भाग लिया और वे प्रतीक बने इस कहावत के "लड्डू खाने को बांदरी और डंडे खाने को रीछ" आज उनकी यही आत्मकथा है। स्वराज्य की यह चाह किसे न थी ? किसको स्वतन्त्रता प्यारी नहीं ? और कौन गौरव न समझता था इसके लिए सर्वस्व न्यौछावर करने में ? क्या कभी थी उत्साह और उमंग की ? सब कुछ होते हुए भी आज उनकी दयनीय दशा क्यों ? अवसरवादियों का ही सर्वत्र बोल-बाला नजर आ रहा है—पिसा तो पिसा कौन ? जिसने बलिदान दिया। विदेशों की सालों खाक छानी, जो देश के दीवानेपन में पागल बने। क्या हमारा कर्तव्य इसकी उपेक्षा सिखाता है। लेखक के लिखने का अभिप्राय उन शहीदों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ राष्ट्र के कर्णाधारों को उनके कर्तव्य की याद दिलाना है। जो आज इस संसार में नहीं उनकी कहानी .... । श्री सुभाषचन्द्र बोस, सरदार भक्तसिंह, चन्द्रशेखर, बीकेदत्त, रास बिहारी, अमरसिंह, राजगुरु आदि असंख्य हैं, लेखक उनके लिए नतमस्तक है। अब उनकी ओर भी निहारिये जो अपना व्यक्तित्व लिये जनता-जनार्दन की समृद्धि के लिए रात-दिन विश्राम नहीं लेते और जिनका प्रमुख हस्त था स्वतन्त्रता संग्राम में वे हैं श्री राजा महेन्द्र प्रताप जिन्होंने ३३ साल ६ महीने तक विदेशों की खाक छानते हुए तपस्वियों की भाँति जीवन की अनमोल छड़ियों की दत्तचित्त होकर, भूमिशायी होते हुए अपने निर्जीव स्वप्नों को क्रियात्मक रूप दिया। दूसरे हैं वीर सेनानी सावरकर जिन्होंने १०० मील का सागर तैरते समय अपनी जान की बाजी लगाते हुए कहा था—कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्" आज उनकी जो अवस्था है आप से छुपी नहीं। उनमें से एक को कहा जाता है दिमाग फेल हो गया, कीड़ा है, असम्भव बातें करता है और दूसरे को पुरस्कार मिला था महात्मा गाँधी की हत्या के आरोप का। इसका निर्णय पाठक व स्वयं निष्पक्ष रूप से करें।

यह सब क्यों हुआ और कैसे हुआ ? क्या कभी विचारा ? दुनियाँ में एक बात प्रचलित है कि बोलने वाली की कर्मठ कार्यकर्त्ता की अपेक्षा अधिक प्रसिद्धि होती है। ठीक इसी प्रकार अवसरवादी जो अवसर की ताक में थे—खद्दर पहन (देशभक्ति का यही चोला है) अतः आगे आ खड़े हुए और अपने पौबारह उनके कार्य जो थे वही रहे। उन्हें दूसरों की क्या पड़ी। आज भारत में मजदूर, किसान तथा श्रमजीवी वर्ग की कितनी दुर्दशा है—यदि अधिकार माँगते हैं तो गोली का शिकार बनते हैं वे और लाठी के नीचे कचूमर भी उन्हीं का निकलता है। दुख तो यह है कि अन्याय अत्याचार के विरुद्ध नेता—लोगों की जिह्वा दो सहानुभूति पूर्ण शब्द भी नहीं कह सकती। उल्टा उन्हें कोसा जाता है। आखिर ! यह धाधली कब तक चलेगी—प्रत्येक बात की हद हुआ करती है। मैं समझता हूँ अब वह किनारा भी दूर नहीं। अन्याय अत्याचार करने वाले न रहे न रहेंगे—बड़े-बड़े साम्राज्य धराशायी हो गये फिर भी जान नहीं पड़ती यह मिट्टी का पुतला यदि इतराता है तो किस बात पर।

भारत को सभी देश क्यों अपना गुरु मानते थे ? इसकी रज को माथे क्यों लगाते थे। यह सब इसकी संस्कृति, सभ्यता, कर्मनिष्ठा और धर्मपरायणता का ही एकमात्र कारण था। महात्मा गाँधी जो वर्तमान सत्ताधारियों के बापू हैं उनके अनुयायियों को उनके इस आदेश का पालन तो अवश्य करना चाहिए कि—धर्म के बिना राजसत्ता राक्षसी है "यदि वे इनसे इन्कार करेंगे तो प्रमाणित होगे कि" "हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और" बापू जी केवल जबान में रस लाने के लिए ही कहते हैं। उनका उनसे कोई सम्बन्ध नहीं। परन्तु उन्हें याद रखना चाहिये कि गाँधी जी की आत्मा यहीं कहीं चक्कर लगा रही होगी और उनके सभी कुकृत्यों को देख रही होगी। जिसके लिए उन्हें क्षमा न किया जायेगा। मानवों पर तो यातनाओं का पहाड़ टूटा परन्तु सबसे बड़ा दुख एवं आश्चर्य उन मूक पशुओं को देखकर होता है

जिन्होंने इन्हें भी यमलोक भेजने से नागा न की—इसका जीता-जागता प्रमाण कलकत्ते का गार्डन रीच कसाईखाना है—जहाँ प्रतिवर्ष लाखों गाँवों, बछड़ों का निर्दयतापूर्वक हनन होता है। महात्मा गाँधी कहा करते थे" हिन्दुस्तान में हिन्दुओं के साथ रह कर गोवध करना हिन्दुओं का खून करने के बराबर है। गोरक्षा हिन्दू धर्म की दी हुई दुनियाँ के लिए बख्शीश है और हिन्दू धर्म भी तभी तक रहेगा जब तक गाय की रक्षा करने वाले हिन्दू हैं, जो गाय को बचाने के लिए प्राण होम देने को तैयार नहीं वह हिन्दू नहीं। इसलिए आज के शासकों को स्वयं समझ लेना चाहिए कि वे क्या हैं? रक्षा करना तो दूर रहा उनका वध करने के हेतु बम्बई में एक करोड़ रुपये की लागत से औषध निर्माण के कारखाने के बहाने से कसाई-खाने का उद्घाटन किया—जहाँ वध हुए पशुओं के अंगों से दवा तैयार होगी—उद्घाटन कर्त्री हैं श्री राजकुमारी अमृत कौर-पाठक स्वयं विचारें कि अमृत कौर है या.........।

पहले हम यह सारा दोष अंग्रेजों के मत्थे मढ़ते थे चूँकि वे भारत के उस समय के शासक थे-परन्तु पूछें अब दोषी कौन—कहना ही होगा--इस घर को आग लग गई घर के चिराग से। जिसके सही आंकड़े निम्न प्रकार हैं--

अंग्रेजी राज्य	कांग्रेस राज्य	
४५-४६	५५-५६	यह निर्यात बछड़ों की खालों का है।
१,७२,०००	२६,७७,६२५	

१९५५ व ५६ का आन्तें और गोमांस का निर्यात
४,३०१,९९३ रुपये २१८,३७४ रुपये हैं।

अंग्रेजी राज्य	
सन् ४६-४७	गोवंश की खालों का निर्यात
६,२५,०००	
कांग्रेस राज्य	
सन् ५५-५६	
५,३९२,७३८	

कहां तक आंकड़े गिनाये आंखों से खून बरसता है। उन भयंकर दृश्यों को देखकर—जिनकी याद करके दिल दहल जाता है। भारत सरकार के कृषि मन्त्री डा० पंजाब राव देश मुख ने अपनी आँखों से उस भयंकर दृश्य को देखा है—फिर भी न मालूम सरकार के मालिकों का पत्थर दिल क्यों है जो पिघलता नहीं।

चौधरी छोटूराम के नाम के सहारे रोटी-रोजी कमाने वालों को भी उनकी पाग का ध्यान होना चाहिए जबकि पंजाब सरकार ने १८ नवम्बर सन् १९४४ में पन्जाब से ले जाये जाने वाले सब प्रकार के पशुओं पर नियन्त्रण कर दिया था। आज के पन्जाब में तो गाड़ियों द्वारा किस प्रकार पशुओं को कलकत्ते व बम्बई ले जाया जाता है—आपके सामने है—लिखने की आवश्यकता नहीं।

अँग्रेज सरकार के समय के आंकड़े और वर्तमान सत्ताधारी कांग्रेस राज्य के आंकड़ों को देखा। अतः अच्छा हो हम भारत में हुए मुसलमानी राज्य पर भी एक दृष्टि-पात करें—जिससे हमारे अन्दर फैलाया गया भय भी दूर हो सके। आज से सौ साल पहले २८ जौलाई १८५७ को बहादुरशाह का दरबार हुआ-जिसमें घोषणा की गई कि ईद के मौके पर गोवध न किया जावे। यदि किसी मुसलमान ने ऐसा किया तो उसे तोप के मुँह से उड़ा दिया जायेगा और किसी मुसलमान ने गोवध करने की प्रेरणा दी तो उसे कत्ल किया जायेगा। अभी पिछले दिनों यू० पी० गोसम्वर्धन कमेटी के तीन मुसलमान सदस्यों ने गोहत्या निषेध के पक्ष में मत दिये—परन्तु आप के हरियाणा प्रान्त के M.P. ने जो अपने आपको आर्य-समाजी भी घोषित करता है, और हिन्दी का पोषक अपने आपको बताता है—कहानी लम्बी है—ने गोवध के हक में वोट दिया। क्या यही है हरियाणा जहाँ दूध-दही का का खाना वाली कहावत ही नहीं—'दूध बेचना पूत बेचना समझते थे। सोचें, आप अपनी नाक को कैसे बचावेंगे—राज्य के लोभ में आकर धर्म, संस्कृति को तिलांजलि देने वाला अपने आपको कलंकित करता है—और वो स्याही चेहरे पर लग जाती है जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती है। अतः बुद्धिमता से काम लें। यही नहीं काश्मीर में ९० प्रतिशत मुसलमान है—वहाँ आज भी गो हत्यारे को ५ वर्ष का कठोर दण्ड दिया जाता है और २० प्रतिशत मुसलमानों वाले बंगाल प्रान्त में रुहाई न दुहाई है।

जिनके दिमाग में देश की आयवृद्धि का भूत सवार है उन राजनैतिक लोगों को भी सत्य से अवगत करा देना आवश्यक समझते हुए लिख देता हूँ कि एक एकड़ भूमि में गोमांस ६८ पौण्ड, मुर्गियाँ ५० पौण्ड, गेहूँ, २०५० पौण्ड, गाजर २५००० पौण्ड। अब आप इन आंकड़ों से अन्दाजा लगा लीजिये—क्या गोवंश के ह्रास से देश में अकाल, दुर्भिक्ष, संकट टल जायेगा—जनसंख्या की वृद्धि का भी एक बहाव है। आज गाय के द्वारा संसार की आमदनी का एक चौथाई भाग प्राप्त होता है जिसके आंकड़े निम्न हैं—रेलों से ३०० करोड़, कपड़े के कारखानों से १५० करोड, चीनी से १०० करोड़ तथा लोहे से ६० करोड़ रुपये वार्षिक मिलते हैं पर गोधन से राष्ट्र को ३००० करोड़ रुपये वार्षिक आय होती है। अतः शूरवीरों उठो। वीर भोग्या वसुन्धरा-गो माता अब तुम्हारी ही ओर आंखें फाड़कर आशाभरी दृष्टि से देख रही है।

सच जानिये, गौ रक्षक ही गौ भक्षक बन बैठा है—जिस सरकार का कार्य होना चाहिये था गो सदनों का स्थान-स्थान पर उद्घाटन करना, आज वही भारतीय कहलाने वाली सरकार गोसदन तो दूर रहे, मुर्गी सदनों पर जोर देने लगी। द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना में मछलियों के लिये ११,७७,५८,०००) रुपये रखा गया तथा मुर्गियों के लिये तीन करोड़। क्या यही है रामराज्य! रामराज्य की यही निशानियाँ होती हैं? शोषण, हा हाकार और टैकसों की भरमार। बेचारे किसान और मजदूर की तो कमर ही टूट गई लदान के कारण। भला जिस भारत सरकार की पशु समिति की रिपोर्ट यह प्रमाणित करती हो—"लोगों की धार्मिक भावना तथा भोजन की आदतों में क्रान्ति करके गोवंश को भोजन के स्थान में काम में लावें" ऐसी सरकार से आप क्या आशा रख सकते हैं।

आखिर, इस कलंक का जिम्मेदार कौन? मैं अपनी ओर से नहीं मा० गांधी जी के ही शब्दों में कहूँगा कि सरकार—१७-७-५७ को हरिजन सेवक में लिखा था—बाजार में बिकने वाली तमाम गाय ज्यादा से ज्यादा कीमत देकर राज्य खरीद ले तमाम बूढ़े, लूले, लंगड़े और रोगी ढोरों की रक्षा राज्य को ही करनी चाहिये। सबसे खेद का विषय तो यह है कि जिस देश में दूध, दही की नदियाँ बहती थीं वहाँ तो १२—१४ आने सेर दूध और इंगलैण्ड जैसे देश में ८-९ आने सेर दूध। यह उल्टी गंगा नहीं तो क्या है? सन्त विनोबा जी चिल्लाये, डा० राजेन्द्रप्रसाद जी कूके, गांधी जी स्वर्ग सिधारे परन्तु नेहरू जी की नहर की लहर में किसी के पांव न टिक सके—सब इधर-उधर किनारे जा लगे। आप अपने हृदय पर हाथ रखकर कहिये—आज के राज्य में क्या नहीं होता? कहीं सौन्दर्य प्रतियोगिता, कहीं हिन्दू कोड बिल की विलक्षणता, और निहत्थे संस्कृति के पुजारियों की हत्या, कहीं साधु-सन्यासियों के साथ निष्ठुरता, कहीं देवियों की चीत्कारता और बच्चों की बिलबिलाहटता सर्वत्र अशान्ति एवं अराजकता सी-प्रतीत होती है।

भारतीय बाबू लोगों से भी नम्र प्रार्थना है कि वे बाह्याडम्बर के व्यर्थ के व्यय के भार से अपने आपको बचाते हुए भारत की समृद्धि में सहयोग दें—उन मूक बलिदानों की कहानी को याद करें—जिनकी हत्या के कारण आपकी शोभा बनती है। अतः हत्या के दोष से मुक्त होने के लिए यही उपयुक्त होगा कि फैशन पर खर्च होने वाला कम से कम २००) बचावें जो निम्न रूपेण व्यय करते हैं। आप—जूता, दस्ताने, टोप, चश्माघर, मनी बैग, बिस्तरबन्द, घड़ी के फीते, सूटकेश, बैल्ट इत्यादि, अतः चमड़े की अपेक्षा कपड़े के ही उपयोग में लायें तो राष्ट्र की आय-वृद्धि में आपका हाथ होगा।

वेद भगवान् के उपासकों, पुजारियों से भी मेरा नम्र निवेदन है कि आपका वेद यही आदेश देता है कि यदि तू हमारी गाय, घोड़े तथा पुरुष का वध करेगा तो हम तुम्हें गोली से बींध देंगे अथर्ववेद १।१६।४ यदि नो गां हंसि आदि। श्रीकृष्ण के उपासको! आप जानते ही हैं कि उन्हें गोपाल क्यों कहा जाता है। इसी प्रकार भगवान् बुद्ध के अनुयायियों क्या आज उनकी शिक्षाओं को भूल गये—यथा माता पिता भ्र ता अजे वापि च आतंका। गावो नो परमा मित्ता यासु जायन्ति औसधा।

भारत के महान् नेता श्री गंगाधर तिलक कहा करते थे कि जब हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे तब पाँच मिनट में एक कलम से गोवध निषेध कानून पास कर देंगे। परन्तु

खेद कि आज स्वतंत्रता भी मिली और भारत का संविधान भी बनकर पूर्ण हुआ। परन्तु वही काणा तीन का। यदि हम स्वयं दृढ़ भावना पर स्थिर नहीं रह सकते तो हमें रूस जैसे देशों से शिक्षा लेनी चाहिये—जहाँ एक बार एक दुग्धशाला व्यवस्थापक की लापरवाही से कुछ गाय मर जाने पर न्यायालय ने उसे बीस वर्ष का दण्ड दिया और भारत में इस प्रकार के लोगों को परमिट दिये जाते हैं जो गोहत्या में साझी हों। क्या इस प्रकार के अशान्त हाहाकार वाले वातावरण में आप भीम, अर्जुन, राममूर्ति भीष्म जैसी सन्तान की आशा कर सकते हैं। यदि ऐसा विचार है तो दुराशा मात्र है। मानव जाति का प्रतिदिन ह्रास हो रहा है—बल-वीर्य की जड़ कट रही है। जिसने आपका भला किया उसका आपने वध किया। सच मानिये, आप उन मूक बलिदानों के प्रति कृतघ्न हैं। स्थान-स्थान पर स्वास्थ्य केन्द्र खोले जाने पर भी अधिक व्याधियाँ क्यों प्राप्त हो रही हैं? आज के नवयुवक की दशा क्यों दयनीय है? बुद्धि का अभाव क्यों है? क्षीणता क्यों बढ़ रही है? इसका कारण स्पष्ट ही है कि हम सब उन मूक बलिदानों की ओर आँखें मूंदे हुए हैं। प्रतिदिन ह्रास होने वाला गोवंश है। याद रखिये मछली, मुर्गी की तरह गाय की नसल कुछ महीनों में तैयार नहीं होती। इसके सुधार में कम से कम १० वर्ष लगते हैं। सर्वे पादा हस्ति पादे निमग्ना: की भाँति सभी कल्याण और लाभ गोवंश की रक्षा में ही है। गोवंश के नाश का कुप्रभाव सारे देश पर पड़ता है। ये हैं आपके मूक बलिदान जिनकी ओर से आप मुंह मोड़े बैठे हैं जैसा कि आपका और इनका कोई सम्बन्ध ही न रहा हो। अन्त में यह मूक बलिदान निम्न शब्दों के साथ फिर अपना मौन धारण कर लेता है—

जारी रहा क्रम यदि यहाँ योंही गोवंश के नाश का,
तो अस्त समझो सूर्य भारत भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही वह भी न रहने पायेगी।
यह स्वर्ग भारत भूमि बस मरघट मही बन जायेगी॥

—★—

(पृ० १५ का शेष)

रहने का आदेश दे दिया था। इतने पर भी सरदार सन्तसिंह ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया था। प्रारम्भ में गाँधी जी हैदराबाद सत्याग्रह के विरुद्ध थे वह समझते थे यह सत्याग्रह मुस्लिम स्टेट के विरुद्ध है। परन्तु जब आर्य सत्याग्रह के नेता बा० घनश्याम सिंह गुप्त ने गांधी जी को वास्तविकता के दर्शन कराये तो गांधी जी प्रसन्न हुए और सत्याग्रह के लिए आशीर्वाद दिया।

आज भी सत्याग्रह को राजनीतिक बताया जा रहा है। परन्तु वास्तविकता यह है कि आर्य समाज राजनीति की दल-दल में कभी नहीं घुसा। यदि आर्य समाज अपना उद्देश्य राजनिति को बनाता तो कांग्रेस की बागडोर आर्यसमाज के हाथ में रहती। आर्य समाज ने देश को जगाया और स्व० लाला लाजपतराय जैसे उच्च कोटि के देश भक्त कांग्रेस को दिये।

आज पञ्जाब केसरी की भूमि जल रही है। हिंदी पर प्रतिबन्ध कभी पञ्जाब केसरी सहन न करता, जिसने अंग्रेजी काल में हिंदी की पढ़ाई के लिये डी० ए० वी० संस्थाओं का जाल बिछा दिया और एक धेला सरकार से सहायता के रूप में कभी न लिया।

देश को जगाकर स्वतन्त्रता के दर्शन कराने वाले आर्यसमाजियों का भाषा पर झगड़ने वाला संकुचित मस्तिष्क का कहा जा रहा है और गुरुमुखी की पढ़ाई को जबरदस्ती थोंपने वालों को विशाल हृदय कहा जा रहा है। यह लोग देश भक्त मा० तारासिंह को क्यों नहीं कहते कि गुरुमुखी की अनिवार्यता को समाप्त कर उदार हृदय का परिचय दें।

श्रीमद्भगवद्गीता

(ले०—मुनि देवराज विद्यावाचस्पति गुरुकुल झज्जर)

(गतांक से आगे)

गीता में कहा है "न जातु तिष्ठत्यकर्म कृत" कोई बिना कार्य के नहीं रह सकता। सभी को कर्म करना पड़ेगा। पुराने राज्यों में बहुत से लोग बेकार बैठे हुए थे। गीता के सिद्धान्तानुसार कोई बिना कर्म के नहीं रह सकता। और प्रत्येक का कर्म स्वभावानुसार हो। जिस कर्म को करने में मैं समर्थ हूँ ! वही मेरा स्वभाव है। स्वभाव जन्म कर्म से मैं छूट नहीं सकता। स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धास्वेन कर्मणा। मनुष्य अपने स्वभाव से बद्ध हुआ कर्म करता ही है। अर्जुन सन्यासी होकर भी अपने स्वभाव से विवश लड़ेगा ही। अतः गीता की राज्यव्यवस्थानसार कर्म सभी को करना आवश्यक है।

३. दूसरा सिद्धान्त कर्म की प्रधानता का है। कर्म सभी को करना है किंतु फल की दृष्टि से नहीं केवल धर्म या कर्तव्य की दृष्टि से। प्रत्येक का कर्म कर्तव्य बुद्धि से हो और साथ ही उसके स्वभावानुकूल हों। जो भी कर्म किया जायगा उसका फल तो मिलेगा ही किंतु फल में दृष्टिभेद का अन्तर है। एक दृष्टि से जितना जिसका कर्म हो उसको ही उसका फल मिले और दूसरी व्यापक दृष्टि से जो भी कोई कुछ कार्य करे। सभी मिलकर उसका फल भोगें। आज जैसा हो रहा है यदि मैं अपनी एक मिल खड़ी करता हूँ तो मैं अपने सामर्थ्यानुसार दूसरों के कर्मफल को हड़पना चाहूँगा। अथवा एक बड़ी मिल में यदि एक हजार व्यक्ति कार्य करते हैं तो वे अन्य एक लाख व्यक्तियों का श्रम छीन लेते हैं। अपना सामर्थ्य बढ़ाने का अर्थ हम यह लेते हैं कि हमें अधिक से अधिक फल मिले। मशीन की आवश्यकता तो है किंतु व्यक्तिगत श्रम से सहायतार्थ उसमें बाधक वा उसे खो देने वाली न होनी चाहिए। खाली मन दुष्प्रवृति में जायगा और मर्यादा टूट जायगी। मनु ने भी बताया है कि महा यन्त्र की प्रवृति बन्द होनी चाहिए। चर्खा व्यक्तिगत श्रम में सहायक होता है जब कि मिल उसे छीन लेती है। साम्राज्यवाद में शासक का तरीका रहा है कि दूसरे राष्ट्रों को जीतकर उनमें अपना कानून चलाये जाय। वर्तमान अर्थशास्त्र धनिकों का बनाया हुआ है। भारतीय नीति उसके विपरीत है। तदनुसार हम जो भी श्रम करें सभी मिलाकर उसका फल भोगें। कहा गया है कि हरतीति धनम् अर्थात् धन वह है जो हरण करे। श्रीकृष्ण ने इस नीति को हटाकर यह स्थापित किया कि कार्य सब करें और उसका फल सभी को बाँट दिया जायगा। केवल पैदा करने वाला ही वस्तु का हिस्सेदार नहीं। किसी राष्ट्र में शांति इसी सिद्धांत से सम्भव है।

(४) अब प्रश्न उठता है कि कर्म का फल हमे नहीं मिलेगा तो हमारा निर्वाह कैसे होगा। इसका उत्तर भगवान् कृष्ण ने दिया है "अनन्या शिचन्तयन्तो मां ये जना पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेम वहाम्यहम्" अर्थात् अनन्य भाव से मेरी अर्थात् राष्ट्र हित की चिन्ता करते हुए जो कर्म की उपासना करते हैं, उनका योग क्षेम मैं वहन करता हूँ जब सभी लोग कार्य करेंगे तो इतनी आपत्ति होगी कि उसकी कोई मात्रा या मूल्य नहीं होगा। उदाहरणार्थ पिछले युद्ध में जापान ने इङ्गलैंड के कपड़े को भी जीत लिया वहाँ का कपड़ा इतना सस्ता था कि इंग्लैंड में पहुँचकर भी वहाँ के कपड़े से सस्ता पड़ता था। जापान में उत्पादन की विधि इस प्रकार रही है यदि शिल्प विज्ञान की कक्षा में एक में सौ विद्यार्थी शिक्षा पाते हों तो उन्हें विधि बताने के साथ काम भी कराया जाता है अध्यापक के पास सब पुर्जे होंगे वह एक एक पुर्जे की मात्रा वा विधि बताते हुए उन्हें क्रियात्मक रूप में भी सबसे प्रयुक्त कराता जायगा। (क्रमशः)

स्वाध्यायोपयोगी उत्तम साहित्य

उत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय करके अपने जीवन को पवित्र करें

१. चार वेद मूल संहिता २१)
२. चार वेदों का भाषाभाष्य (पं० जयदेव कृत) सम्पूर्ण सैट १४ खण्डों में ८४)
३. सत्यार्थप्रकाश (महर्षि दयानन्द) १=)
४. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका (" ") २॥)
५. संस्कार विधि (" ") ।॥=)
६. पंचमहायज्ञविधि (" ") ।)
७. गोकरुणानिधि (" ") =)
८. आर्योद्देश्यरत्नमाला (" ") -)
९. अष्टाध्यायीभाष्य १, २ भाग (" ") ५)+५) १०)
१०. वेदाङ्गप्रकाश सम्पूर्ण १४ भाग (" ") १०।)
११. दयानन्ददिग्विजयम् (मेधाव्रताचार्य) ६)
१२. दयानन्द लहरी (" ") ॥)
१३. विरजानन्दचरितम् (" ") १)
१४. नारायणस्वामिचरितम् (" ") ।॥)
१५. प्रकृतिसौन्दर्यम् (नाटकम्) (" ") १।)
१६. ब्रह्मचर्यशतकम् (" ") ॥=)
१७. ब्रह्मचर्यमहत्त्वम् (" ") ॥)
१८. ईशोपनिषत् काव्यम् (" ") ।=)
१९. कुमुदिनीचन्द्रः (" ") ४)
२०. सन्ध्या अष्टाङ्गयोग (स्वामी आत्मानन्द) ।॥)
२१. वैदिक गीता (" ") ३)
२२. आदर्श ब्रह्मचर्य (" ") ।)
२३. कन्या और ब्रह्मचर्य (" ") ≡)
२४. विरजानन्द चरित (स्वामी वेदानन्द) १॥)
२५. पंचमहायज्ञविधि व्याख्या (" ") १)
२६. संस्कृत भाषा क्यों पढें (" ") ॥)
२७. आसनों के व्यायाम सचित्र (वेदव्रत) ॥)
२८. ब्रह्मचर्य ही जीवन है (शिवानन्द) १॥)
२९. नाड़ीतत्त्वदर्शन (सत्यदेव वसिष्ठ) ५)
३०. सन्मार्ग दर्शन (स्वा० सर्वदानन्द) ४)
३१. महर्षि दयानन्द का प्रामाणिक जीवन चरित्र दो भागों में ६)+६)= १२)
३२. दयानन्द दिव्यदर्शन ॥)
३३. वैदिक धर्म परिचय (जगदेवसिंह शास्त्री) ॥=)
३४. छात्रोपयोगी विचार माला (" ") ॥=)
३५. राष्ट्रनिर्माण में गुरुकुल का स्थान ।=)
३६. सत्यपथ (देवराज) ॥)
३७. राष्ट्र-निर्माण में धर्म का स्थान (देवराज) ।-)
३८. सत्याग्रहनीति काव्य (सत्यदेव वासिष्ठ) १)

—०—

आचार्य भगवान्देव जी द्वारा लिखित साहित्य

१. ब्रह्मचर्य के साधन १, २ भाग ।-)
२. " " दन्तरक्षा ३ भाग ≡)
३. " " व्यायामसन्देश ४ भाग १)
४. " " सन्ध्यायज्ञादि ५ भाग ।=)
५. " " सत्सङ्ग-स्वाध्याय ७, ८ भाग ॥)
६. " " भोजन ९ भाग ।=)
७. ब्रह्मचर्यामृत =॥)
८. स्वप्नदोष की चिकित्सा =॥)
९. बालविवाह से हानियाँ -)
१०. व्यायाम का महत्त्व ≡)
११. रामराज्य कैसे हो ? ≡)
१२. पापों की जड़ शराब ≡)
१३. हमारा शत्रु तम्बाकू का नशा ।=)
१४. नेत्ररक्षा ≡)
१५. बिच्छू विषचिकित्सा =)

कमीशन दर अपने प्रकाशन पर

५) से नीचे कुछ नहीं।
५) से १०) तक की पुस्तकों पर ६।) प्रतिशत
१०) से २०) तक की " " १२॥) "
२०) से १००) तक " " २५) "
१००) से ऊपर ३०) "
विशेष विवरणार्थ हमारा सूचिपत्र मुफ्त मंगवाइये।

गुरुकुल क्या वस्तु है इस विषय में हमारा प्रकाशन "राष्ट्र निर्माण में गुरुकुल का स्थान" पुस्तक पढ़ें।

पता—व्यवस्थापक—

पता—'विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय', पो० गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक (पञ्जाब)

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला (रजि०) गुरुकुल झज्जर की
* अचूक औषधियाँ *

१–नेत्र ज्योति सुर्मा

लगाइये और नेत्र ज्योति पाइये। इसके लगाने से आँखों के सब रोग जैसे आँख दुखना,खुजली, लाली, जाला, फोला, रोहे, कुकरे, पास का कम दीखना (शार्ट साइट) दूर का कम दीखना (लांगसाइट), प्रारम्भिक मोतियाबिन्द आदि दूर हो जाते हैं। आंखों के सब रोगों की रामबाण औषधि है यही नहीं किन्तु लगातार लगाने से दृष्टि (बीनाई) को तेज तथा आंखों को कमल की तरह साफ स्वच्छ रखता है। बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। प्रतिदिन जिसने भी लगाया उसी ने मुक्तकण्ठ से इस सुर्मे की प्रशंसा की है। मूल्य छोटी शीशी ।–) बड़ी शीशी ।।)

२–नेत्रामृत

लाली, कड़क, धुन्ध, ढलकवा, गरदोगुब्बार, रोहे तथा भयंकरता से दुखती आंखों के लिए जादू भरा विचित्र योग है।

मूल्य बड़ी शीशी ।।=) छोटी शीशी ।=)

३–स्वप्नदोषामृत रस

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषध इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे पीछे या बीच में वीर्य आने को बन्द कर देगी। मूल्य ५) तोला

सेवन विधि—प्रातः सायं एक-एक गोली गोदुग्ध या शीतल जल के साथ। विशेष—यदि स्वप्नदोष का रोगी अत्यन्त दुर्बल हो तो दूध के साथ और हृष्ट-पुष्ट हो तो जल के साथ सेवन करें। ब्रह्मचारी को जल के साथ सेवन करना चाहिए।

४–स्वप्नदोषामृत चूर्ण

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषधि इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे-पीछे या बीच में वीर्य के निकलने को बन्द कर देती है।

मूल्य १) छटांक

५–रोहितारिष्ट

यह अरिष्ट पुराने और बढ़े हुए प्लीहा (तिल्ली) यकृत जिगर के लिये अद्वितीय औषध है। जब किसी औषध से यह रोग ठीक न होते हों तो इसका चमत्कार (जादू) प्रयोग करके देखना चाहिये। यह उदर पीड़ा गोला, वायु गोला आदि पेट में वायु का भरना, अजीर्ण, भूख न लगना, मलबद्धता आदि सभी पेट के रोगों को दूर करता है। सदैव रहने वाले मलबन्ध (कब्ज) को दूर करने की यह एक ही औषध है। यह जठराग्नि को दीप्त करता है। पाचन शक्ति को खूब बढ़ाता है। यह आयुर्वेद की रामबाण औषध है। १ पौण्ड मूल्य २)

६–कर्णरोगामृत

कान में पीप आना, बहरापन और प्रत्येक प्रकार की कर्ण पीड़ा को दूर करने के लिए यह अति उत्तम औषध है। प्रतिदिन सेवन करने से कानों का कोई रोग नहीं होता और मस्तिष्क की शुष्कता दूर होती है। मूल्य एक शीशी १)

७–व्रणामृत

भयंकर फोड़े, फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा अनेकों वर्षों के नासूर (सरह) आदि रोगों की अद्वितीय औषधि है। दिनों का काम घण्टों में, घण्टों का काम मिनटों में करती है। —मूल्य बड़ी शीशी १) छोटी ।।)

८–स्वास्थ्यवर्धक चाय

यह चाय स्वदेशी, ताजी एवं शुद्ध जड़ी-बूटियों से तयार की गई है। वर्तमान चाय की भाँति यह नींद और भूख को न मारकर खाँसी, जुकाम, नजला, सिरदर्द, खुश्की अजीर्ण, थकान, सर्दी आदि रोगों को दूर भगाती है। मस्तिष्क एवं दिल को शक्ति देती है। मूल्य १ छटांक ।–)

९–दन्तरक्षक मंजन

दाँतों से खून वा पीप का आना, दाँतों का हिलना, दाँतों के कृमि रोग, सब प्रकार की दाँतों की पीड़ा तथा रोगों को दूर भगाता है और दाँतों को मोतियों के समान चमकाता है। मूल्य एक शीशा ।।)

१०–पाचनामृत

मन्दाग्नि, अरुचि, अजीर्ण (कब्ज), पेट का फूलना, पेट का भारीपन, शूल, जी मचलाना, वमन खट्टी डकार आदि पेट के सभी रोगों को नष्ट कर भूख को बढ़ाता है। आंतों के सब रोगों को दूर कर पाचन शक्ति को बल देता है। पुरानी से पुरानी तिल्ली जिगर की अचूक औषधि है। मूल्य एक शीशी ५)

११–पामामृत (दाद खुजली)

यह सब ही खुजली दादादि चर्म रोगों के लिये अत्युत्तम औषध है। खुजली सूखी हो या पकने वाली यह सब प्रकार की खुजली के लिये रामबाण औषधि है। इसके प्रयोग करने के पश्चात किसी अन्य औषधि की आवश्यकता नहीं। दाद को जड़ से नष्ट करती है। मूल्य २)

१२–बाल रोगामृत

बालकों के हरे-पीले दस्त, अपच, अजीर्ण (कब्ज) अरुचि, दाँत निकलते समयके रोग, सूखिया मसान रोग, वमन, निर्बलता, ज्वर आदि सभी रोगों को दूर कर बालकों को मोटा करता है। अतः प्रत्येक गृहस्थी घर में रखे। मूल्य एक शीशी ५)

१३–संजीवनी तैल

मूर्च्छित लक्ष्मण को चेतना देने वाली इतिहास प्रसिद्ध बूटी से तैयार किया गया यह तैल घावों के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुये घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भर कर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है। मू० ॥=) नमूना

सेवन विधि—फाये में क भर र बार-बार चोट आदि पर लगायें।

१४–च्यवनप्राश

इसी ऋतु के ताजे आँवले से तैयार किया गया स्वादिष्ट, सुमधुर और एक दिव्य रसायन (टानिक) है। जिसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खाँसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक, सभी हृदय रोगों की अद्वितीय औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा अन्य सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका (निरन्तर) सेवन समूल नष्ट करता है। यह निर्बल को बलवान और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है।

मूल्य ७) सेर, ५ सेर लेने पर ६) सेर

१५–बलदामृत

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आ जाता है। पीनस (सदा रहने वाले जुकाम और नजले) की महौषध है। वीर्य वर्द्धक, कास (खाँसी) नाशक, राजयक्ष्मा (तपेदिक), श्वास (दमा) के लिये लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलत को दूर करती तथा अत्यन्त रक्त वर्द्धक है। निर्बलों को बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ट बनाती है। यह अपने ढंग की एक ही औषध है। मूल्य ५) बड़ी शीशी

२) छोटी शीशी

१६–ज्वरामृत

यह नये व पुराने सभी प्रकार के ज्वरों की रामबाण औषध है। बिगड़े हुए मलेरिया, विषम ज्वर को दूर करने में अद्वितीय औषध है। कुनेन भी इसके आगे तुच्छ औषध है। कुनेन का सेवन सिर दर्द, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है, किन्तु यह औषध सब दोषों को दूर करती है तथा ज्वर की प्रत्येक अवस्था में दी जा सकती है। मलेरिया काल में सेवन की हुई मलेरिया को नहीं आने देती। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, सेवन करें और लाभ उठावें। मूल्य एक शीशी ५)

'सुधारक' का आगामी विशालकाय विशेषाङ्क

'बलिदानाङ्क'

—०—

इस विशालकाय विशेषांक की तैयारी प्रारम्भ हो चुकी है। चित्रों के लिये ब्लाक बनवाये जा रहे हैं। सुधारक का जो अंक आपके हाथ में है इसी आकार (साइज) के ५०० पांच सौ से भी अधिक पृष्ठ तथा १०० से अधिक रंगीन चित्र इस बलिदानांक में दिये जायेंगे। सरल भाषा और सुन्दर छपाई होगी।

इस विशेषांक में लगभग २०० दो सौ, उन वीरों के जीवन और इतिहास की यशोगाथा लिखी जायेगा जो अपनी जन्मभूमि भारत की पराधीनता की शृङ्खलाओं को विशृङ्खलित करने के लिये बृटिश साम्राज्यवाद की जड़ काटने के लिये, स्वतन्त्रता की लहर को देश-देश के कोने-कोने में पहुँचाने के लिए तनमन में क्रान्ति की धूम मचाकर भारत को स्वाधीन बनाने के लिए हँसते-हँसते फांसी के तख्तों पर झूल गये। कारावास की भीषण विपत्तियों को सहन करते हुए भी जो बेड़ी तथा हथकड़ियों को आभूषण बनाकर झूम-झूम कर मस्ती से आजादी के गाने गाया करते थे।

जिस स्वतन्त्रता को देखकर हम प्रसन्नता से फूले नहीं समाते, वह कितने बलिदानों के पश्चात् मिली है, कितने नवयुवकों ने अपने अमूल्य यौवन की आहुति दी है? यह सब इस "बलिदानाक" में पढ़िये। यह अंक अपने ढंग का अपूर्व तथा अद्वितीय होगा।

इस विशेषाङ्क का मूल्य डाक व्यय सहित १०।।) हागा। किन्तु सुधारक के ग्राहकों को अग्रिम धन (पेशगी) भेजने पर ५।।) में ही घर बैठे ही रजिस्ट्री द्वारा मिल जायगा। सुधारक का ग्राहक बनने के लिए २) धनादेश से भेजें। जिन ग्राहकों का धन अगाऊ न मिलेगा उनको पीछे ८।।) में ही अंक प्राप्त हो सकेगा।

अंक परिमित संख्या में ही प्रकाशित होगा, हो सकता है कि समाप्त हो जाने पर पीछे आपको पछताना पड़े। अतः ५।।) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करवा लें। इस मूल्य में ।।) डाक व्यय भी सम्मिलित है।

धन भेजने का पता—

व्यवस्थापक "सुधारक"

पो० गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक (पंजाब)

ग्राहक संख्या ५८

सेवा में श्री सम्पादक जी,

मु० गुरुकुल पत्रिका,

पो० गुरुकुल कांगड़ी,

जि० हरद्वार. सहारनपुर

प्रकाशक आचार्य भगवानदेव गुरुकुल झज्जर ने सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली में मुद्रक जगदेवसिंह शास्त्री 'सिद्धान्ती' के प्रबन्ध से छपवाया।

वर्ष ५ अङ्क ५ | गुरुकुल झज्जर (रोहतक) पौष २०१४ वि० जनवरी १९५८, दयानन्दाब्द १३३ | वार्षिक मूल्य २) एक प्रति बीस नये पैसे

आर्य नेताओं का भव्य स्वागत

आर्यसमाज के तीन नेता श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती, पंडित बुद्धदेव जी विद्यालंकार और आचार्य कृष्णजी का देहली पहुंचने पर श्री पं० नरेन्द्र जी ने स्वागत किया।

संस्थापक व सम्पादक—ब्र० भगवानदेव आचार्य गुरुकुल झज्जर
सम्पादक —ब्र० वेदव्रत भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति
व्यवस्थापक —बलदेवसिंह बी० ए०, एफ. एस. सी. सि० प्रभाकर
सह-व्यवस्थापक—ब्र० सुदर्शनदेव भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति

विषय सूची

सुधारक के नियम

१—सुधारक अंग्रेजी महीने की १० ता० को डाकखाने में डाला जाता है। यदि २० ता० तक न मिले तो पोस्ट आफिस में पूछ-ताछ करनी चाहिये। फिर भी न मिले तो हमें लिखने पर और भेज दिया जायेगा।

२—छोटे लेख सारगर्भित तथा कागज के एक ओर सुन्दर और सुवाच्य लिखे हुये हों।

३—लेख में उचित परिवर्तन करना, प्रकाशित करना या न करना सब सम्पादक के आधीन है। अस्वीकृत लेख पोस्टेज भेजने पर ही वापिस लौटाया जा सकेगा।

४—वेद विरुद्ध लेखों का प्रकाशन सुधारक में न हो सकेगा।

५—सिद्धान्त विरुद्ध, अश्लील और मिथ्या विज्ञापनों के लिये 'सुधारक' में स्थान नहीं है। इतना होते हुये भी विज्ञापन की सत्यता का उत्तरदायित्व हम पर नहीं।

६—व्यवस्थापक सम्बन्धी सब पत्र-व्यवहार तथा मनीआर्डर आदि व्यवस्थापक-'सुधारक' के नाम से भेजने चाहियें, किसी व्यक्ति के नाम न भेजें। साथ ही ग्राहक अपनी संख्या अवश्य लिखें।

७—एजन्टों २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है और ५ से कम की एजेन्सी नहीं दी जाती। विज्ञापन का धन अगाऊ भेजना आवश्यक।

८—सब पत्र व्यवहार हिन्दी तथा संस्कृत में ही करें उर्दू, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में पत्र व्यवहार न करें। पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड भेजें।

विज्ञापन दर

	पूरा पृष्ठ	आधा पृष्ठ	चौथाई पृष्ठ
एक बार	१६)	६)	५)
तीन बार	४०)	२४)	१३)
छः बार	७५)	४५)	२५)
१ वर्ष तक	१३०)	७५	४५)

टाईटिल अन्तिम १५% अधिक।
टाईटिल तृतीय १०% अधिक।
विशेषांक में सवाया कम से कम ४॥)

धन तन वचन से यज्ञ करो

यज्ञेन वर्धत जातवेदसमग्निं यजध्वं हविषा तना गिरा।
समिधानं सुप्रयसं स्वर्णरं द्युक्षं होतारं वृजनेषु धूर्षदम् ॥ (ऋ० २।२१)

(जातवेदसम्) जातवेदा (अग्निम्) अग्नि को (यज्ञेन) यज्ञ द्वारा) (वर्धत) बढ़ाओ। (हविषा) हवि धन (तना) तन अथवा सन्तान और (गिरा) वाणी से (समिधानम्) एक रस देदीप्यमान, (सु प्रयसम्) उत्तम प्रयासी (स्वर्णरम्) मनुष्यों का (द्युक्षम्) प्रकाशवासी तथा (वृजनेषु) पापों में (धूर्षदम) डराके बिठाने वाले (होतारम्) महादानी का (यजध्वम्) यज्ञ करो।

वैदिक धर्म यज्ञ प्रधान धर्म है। यज्ञ को निकाल दो, तो वैदिक धर्म निष्प्राण हो जायेगा। पूर्व मीमांसा दर्शन वाले तो धर्म का अर्थ यज्ञ करते हैं। अर्थात् धर्म और यज्ञ एक पदार्थ है। वेद में भी कुछ ऐसी ही बात कही गई है—

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्
(य० ४१।१६)

अध्यात्मतत्त्व वेत्ताओं ने यज्ञ पुरुष की यज्ञ के द्वारा पूजा की, और यही मुख्य धर्म हुए। यज्ञ करना जब धम हुआ, तो प्रश्न है—यज्ञ है क्या? इसके सम्बन्ध में किसी दूसरे मन्त्र की व्याख्या में लिख चुके हैं। उस को सामने रहते हुए कहा जा सकता है कि यज्ञ का प्रधान भाव आत्मसमर्पण है तब—

"यज्ञेन वर्धत जातवेदसमग्निम्" का अर्थ हुआ आत्म समर्पण के द्वारा सर्वज्ञ भगवान् को बढ़ाओ अर्थात् उसकी महिमा का विस्तार करो।

यद्यपि भगवान् की महिमा अक्षुण्ण है, नित्य है, वृद्धि ह्रास से परे है, किन्तु नास्तिकों को आस्तिक बनाना आना उसकी महिमा को बढ़ाना है। वेद का अभिप्राय यह प्रतीत होता है कि दस्यु को, नास्तिक को, अमन्तु को यज्ञ से, आत्मसमर्पण से, प्रीति से आस्तिक बनाओ। अत्याचार और क्रूरता से नहीं।

यज्ञ में क्या-क्या सामग्री चाहिए? इस में "यजध्वं हविषा तना गिरा।"

हवि से, तन से, सन्तान और वाणी से यज्ञ करो। जो वस्तु दी ली जाये, उसे हवि कहते हैं, धन ही लिया दिया जाता है। इस वास्ते हवि में धन है।

परोपकार के कार्यों में धन देना यज्ञ है। धर्म-प्रचार, विद्या प्रचार में धन का व्यय करना संसार में साधारण रीति से धन का मोह बहुत होता है, अतः यज्ञ में सब से पहले धन की त्याग करो। मीमांसक कहते हैं—देवतोद्देश्येन द्रव्य त्यागो योगः देवता को लक्ष्य करके द्रव्य का देना त्याग है। अर्थात् याग में त्याग की भावना प्रधान है सब से पहले सांयोगिक पदार्थों को ही सरलता से त्यागा जा सकता है। अतः यहाँ सब से पहले धन त्याग की बात कही है। सांयोगिक-स्थूल सांयोगिक-घर, घोड़ा, गो, रुपया, वस्त्र, पात्र, जायदाद का मोह जब टूटता है, तब आत्मा और देह के भेद का भान होने लगता है, यह भी एक प्रकार का धन ही है, अतः इसे भी धर्म मार्ग में लगा देने की भावना जागती है। वाणी का त्याग बहुत कठिन है। मनुष्य त्याग करता है किन्तु उसकी चर्चा का त्याग नहीं करता है। इस चर्चा को बन्द कर देना- नेकी करना और दरिया में डाल देना—है वाणी का त्याग जब इस प्रकार इन तीनों से याग किया जायेगा, तो वह याग पूर्ण होगा।

(स्वाध्याय सन्दोह से)

सम्पादकीयम्—

यदर्थं क्षत्रिया सूते,

क्षत्रियाणी अथवा वीराङ्गनायें अपनी सन्तान को उत्पन्न कर इस लिए दूध नहीं पिलाती कि मेरा पुत्र बड़ा होकर दूसरों की दासता स्वीकार करे अथवा कुत्ते की भान्ति पूंछ हिला कर उदरपूर्ति करे और "जी हजूरी" का जीवन व्यतीत करे। साँसारिक भोग-विलास के साधन जुटाकर आराम-तलबी का जीवन व्यतीत करना वा किसी उच्च पद अथवा चापलूसी की कुर्सी प्राप्त करना भी क्षत्रियाणी माता को पसन्द नही। क्षत्रियाणी अपनी सन्तान को दूध इसलिए पिलाती है कि मेरा पुत्र" देश जाति की रक्षा के लिए अन्याय और अत्याचार को मिटाने के लिये आठों पहर रणभूमि में जूझता रहे, तथा बड़े से बड़े बलिदान के लिये तैयार रहे। कवि ने कहा है—

जिस नर में आत्मशक्ति है,
वह शीश झुकाना क्या जाने।
रणभूमि में जा करके वह,
पीछे कदम हटाना क्या जाने॥

क्षत्रियों का सिर कट तो सकता है किन्तु किसी अन्यायी वा अत्याचारी के आगे झुक नहीं सकता। रणभूमि की ओर बढ़ाया हुआ कदम पीछे हटाना क्षत्रिय-पुत्रों का काम नहीं। मैं देख रहा हूं कि बहुत से भाई जमानत पर वापिस आ रहे हैं, जमानत पर आना एक प्रकार से माफी माँग कर ही आना है। अब तो छोटी-सी बात है किन्तु इस प्रकार से आने वाले भाइयों के माथे पर सदा के लिए कलङ्क का टीका लग जायेगा। अब समय है इस दाग को धोने का, "गया समय फिर हाथ आता नहीं" पीछे पश्चात्ताप करने से कुछ न बन सकेगा।

आज पंजाब में राष्ट्रभाषा की स्वतन्त्रता के लिये चलाये गये सत्याग्रह के सिलसिले में शान्त और निरपराध सत्याग्रहियों के साथ पंजाब सरकार का व्यवहार सर्वथा निन्दनीय एवं बर्बरता पूर्ण है। अहिंसा और पंचशील का ढोल पीटने वालों की काली करतूतें यदि देखनी हों तो पञ्जाब में आकर देख लीजिए। पंजाब में भी विशेषतया रोहतक जिले के भोले भाले किसानों पर सब से अधिक जुल्म ढाये जा रहे हैं। यदि एक दो घटना होती तो उल्लेख करता, किन्तु यहाँ तो दिन रात चौबीस घण्टे असंख्य अत्याचार किये जा रहे हैं। कौन-सा जुल्म व अत्याचार है जो इस पापी सरकार ने न करवाया हो। इतनी गुण्डागर्दी और अराजकता तो कभी मुसलमान और अंग्रेजों के शासनकाल में भी नहीं हुई। रोहतक जिले के किसानों के साथ जो दुर्व्यवहार पुलिस कर रही है, उसकी सूचनायें अखबारों तक नहीं पहुँच पातीं। यहाँ पर न तो इतने साधन हैं और नहीं इन भोले लोगों को नियमादि का ज्ञान है। यहाँ की मूक जनता की कष्ट कहानी कभी अवसर मिलने पर गाँव गाँव में घूम कर लिखी जा सकेगी।

पञ्जाब सरकार के, नहीं-नहीं नेहरू सरकार के नृशंस और अमानवीय कुकृत्यों को देख कर यदि कोई पञ्जाब का नवयुवक अपने घर बैठा रहेगा तो समझ लीजिये वह क्षत्रिय पुत्र नहीं, आर्य नहीं। क्षत्रिय अन्याय को सहन नहीं कर सकता। आर्य कभी किसी का दास नहीं बन सकता, दबाया नहीं जा सकता, "न त्वेवार्यस्य दास्यभावः"। अब वह समय आ गया है जिस लिये क्षत्रियाणी अपनी सन्तान को जन्म देती है और दूध पिलाती है।

"यदर्थं क्षत्रिया सूते, स कालोऽयं समागतः"

—वेदव्रत

नम्र-निवेदन

जिन ग्राहकों का चन्दा दिसम्बर ५७ अथवा जनवरी ५८ में समाप्त हो गया है, वे मनीआर्डर द्वारा २) अविलम्ब भेजने की कृपा करें। तथा जिन ग्राहकों ने पिछला चन्दा नहीं भेजा है वे भी २) मनीआर्डर से शीघ्र भेजने की कृपा करें।

—व्यवस्थापक "सुधारक"

हरयाणा के दो देव

(वैद्य श्री सत्यव्रत मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब)

तप और त्याग संसार की सब से बड़ी विभूति है। जो काम धन तोप और तलवार नहीं कर सकती वह काम तप और त्याग सहज से ही कर लेता है। रावण बड़ा शक्तिशाली राजा था। उसने बड़े-बड़े शक्ति सम्पन्न राजों और महाराजों को नीचा दिखाया। उस के विपरीत महात्मा राम के पास न कोई राजशक्ति थी न ऐश्वर्य। पर वह तप और त्याग साक्षात् प्रतिमा थे। परिणामस्वरूप उन के तप और त्यागने लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया और इस आकर्षण में ही उनकी विजय का रहस्य छिपा है। यही हाल कौरवों और पांडवों का था। पांडवों ने भी तप की भट्टी में अपने जीवन को विदग्ध कर लिया था। राज्य शक्ति संपन्न कौरवों ने उन्हें हर प्रकार से मिटाने का भरसक प्रयत्न किया। पर संसार जानता है कि मिटाने वाला ही मिट गया। पांडवों का बाल-बांका नहीं हुआ। दूर क्यों जाते हैं अभी कल की बात है। करने को तो अखिल भारतीय कांग्रेस बहुत दिनों से काम कर रही थी। पर जब महात्मा गांधी जी उसके कर्णधार बने तो उसमें नवजीवन का संचार हो गया। सारा देश गांधी जी के झंडे तले आ खड़ा हुआ। क्यों? इसलिए कि उनका जीवन तप और त्याग का जीवन था। एक ओर अंग्रेज सरकार का घोर दमन था और दूसरी ओर गांधी जी का तप और त्यागमय जीवन। जनता के हृदय पर गांधी जी का राज था। परिणाम यह हुआ कि अंग्रेज को अपना बिस्तर गोल करना ही पड़ा। इतिहास अपने को दोहराता है (History repeats itself) ठीक वही स्थिति आज हरियाणा प्रांत की है। हरियाणा के दो त्यागी और तपस्वियों के जीवन ने हरियाणा की कायापलट दी है। हरियाणा की क्षेत्रीय तथा मातृभाषा हिन्दी है। हरियाणा वालों की मांग यह थी कि उन पर गुरुमुखी न ठोंसी जाए। कांग्रेस की कैरों सरकार इस उचित माँग को मानने को तैयार न थी। दो तपस्वी महानुभावों श्रद्धेय बाल ब्रह्मचारी श्री भगवान् देव जी, आचार्य गुरुकुल झज्जर तथा उपप्रधान आ० प्र० सभा पंजाब और आदरणीय भाई जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती शास्त्री, महामंत्री आ० प्र० सभा पंजाब ने इस आन्दोलन का नेतृत्व अपने हाथ में लिया। उस की सफलता के लिए इन उभय देवों ने दिन रात एक करके जिस परिश्रम, तप और त्याग से हरियाणा की प्रसुप्तात्मा को जागृत किया, मेरी जड़ किन्तु वाचाल लेखनी उस का वर्णन करने में असमर्थ है।

कैरों सरकार का दमन चक्र जिस प्रकार आज हरयाणा प्रान्त में चल रहा है उसे देखकर लोग आज डायर शाही को भूल गये। तैमूर और चंगेज के अत्याचार भी आज कैरों के अत्याचार के सामने मन्द पड़ गये हैं। आज हालत यह है कि हरयाणा का प्रत्येक गाँव पुलिस के घेरे में है। घृणित से घृणित और नीच से नीच उपायों का वहाँ सहारा लिया जा रहा है। सन्देह, मात्र पर लोगों को पकड़ लिया जाता है। सत्याग्रहियों के परिवारों को नाना प्रकार से तंग किया, धमकाया और डराया जाता है। उन पर बड़े २ जुर्माने होते हैं। न्याय और व्यवस्था को ताक पर रखकर पुलिस घोर नृशंसता करती नहीं शरमाती। हल में चल रहे बैलों को कुड़क करके पुलिस खोल ले जाती है। दानवता का यह हाल है कि घर का सारा सामान, अर्थात् खाने पकाने के बर्तन, अनाज, पहनने ओढ़ने के सब गर्म कपड़े, यहाँ तक कि जलाने की लकड़ियाँ तक कुड़क कर पुलिस ले जाती है। हरयाणा निवासियों के मुंह का ग्रास तो पुलिस छीनती ही है उनकी इज्जत आबरू पर भी हाथ डालने के दुस्साहस का यत्न करती है। बहु-अकबरपुर की घटना हरयाणे का जलियां वाला कांड

(शेष पृष्ठ ६ पर)

जहां पूज्य हिन्दी का अपमान होगा

(स्व० पं० ताराचन्द 'आर्योपदेशक' कविस्थल, महेन्द्रगढ़)

जहाँ पूज्य हिन्दी का अपमान होगा,
वहाँ आर्यों का यह ऐलान होगा।
मरेंगे मिटेंगे न पीछे हटेंगे,
यों हर आर्य हिन्दू बलिदान होगा ॥१॥

गौ, भूमि, भाषा हैं माता हमारी,
जहाँ इन को किञ्चित् भी नुकसान होगा ॥२॥

कटा देंगे सिर जबकि हम हंसते हंसते,
तुम्हें आर्य शक्ति का तब ज्ञान होगा।३।

जो परवाना बन कर जलेगा धर्म पर,
प्रभु भी उसी पर मेहरबान होगा।४।

लगी होगी घर घर में तस्वीर उसकी,
जमाने में ही उसका गुणगान होगा।५।

चढ़ावेंगे सब फूल उसकी चिता पर,
धर्म देश खातिर जो कुर्बान होगा।६।

जो है हिन्दी द्रोही और कैरों का पिट्ठू,
हमें देख कर के वह हैरान होगा।७।

वह निकलेगा मुंह को छिपा कर हमेशा,
जहाँ 'ताराचन्द' तेरा व्याख्यान होगा।८।

अब मत चूको

(लेखक—महावीर व्याकरणाचार्य गुरुकुल झज्जर)

गत सात महीनों से पंजाब में एक विचित्र प्रकार की खलबली मची हुई है। न प्रजा में ही शान्ति है और न सरकार में ही। जहाँ निपराध जनता अपनी हार्दिक उचित मांग के लिये आवाज उठाना स्वतन्त्र पंजाब में अपना अधिकार समझती है वहाँ पंजाब गवर्नमेन्ट उसे अनुचित उपायों द्वारा कुचल कर रख देने में अपना गौरव मानती है।

कुछ वर्ष पूर्व हमारी सरकार ने अकालियों की गीदड़ भबकी में आकर उनके सामने घुटने टेक दिये और पंजाब की ७० प्रतिशत जनता पर अकालियों के 'जी हजूरी कुत्तों ने, जबरदस्ती गुरुमुखी भाषा लादकर मातृभाषा हिन्दी पर प्रतिबन्ध लगाया।" उसी अन्याय के कलंक को गवर्नमेन्ट के मस्तिष्क से धोने के लिये जुटी हुई है तो गवर्नमेन्ट उसे अपराधी ठहराती है। किसी कवि ने इसके लिये क्या ही अच्छा कहा है—

है जाहिल पर वह बचने के काबिल,
कि बीमारी को जो खता मानता है।
मगर ऐसे नादान का क्या ठिकाना,
कि जो मर्ज ही को दवा जानता है॥

वाह री सरकार! जिस भाषा फार्मू ले पर पंजाब में हंगामा मचा हुआ है, उसी फार्मू ले को परिवर्तन किए बिना ज्यों का त्यों लागू कर देने और ७० प्रतिशत जनता का गला घोंट देने में ही तू भाषा समस्या का सबसे अच्छा हल समझती है। यहाँ तक कि श्री पं० जवाहरलाल नेहरू के पास तो हिन्दी प्रेमियों के प्रति गाली निकालते-निकालते कोई गाली शेष नहीं रहती। उनके मतानुसार तो हिन्दी के लिये अपने प्राण न्योछावर करने वाले ही हिन्दी के परम शत्रु हैं।

क्यों न हंसी आये हमें,
इस हजरते इन्सान पर।
फेल बद तो खुद करे,
और लानत दे भगवान् पर॥

श्री नेहरू जी, श्री प्रतापसिंह कैरों तथा अन्य उच्च सत्ताधारी नेताओं से मैं सविनय पूछना चाहता हूँ कि वे हिन्दी प्रेमी सत्याग्रही कौन सा अपराध करते हैं जिसके कारण उन्हें कारागार का मार्ग दिखाया जाता है? वे कौन से कानून का उल्लंघन करते हैं कि जिसके कारण उन्हें पशुवत् जेल के सीखचों के पीछे धकेल दिया जाता है? क्या वे "हिन्दी भाषा अमर रहे" "राष्ट्र भाषा हिन्दी है" "हमारी मांग हिन्दी है" इत्यादि नारे लगाने से ही अपराधी बन जाते हैं?

यदि यही कारण है तो मैं पूछना चाहूंगा कि क्या राष्ट्रभाषा की जय बोलना भी अपराध है? जब विधान द्वारा राष्ट्र की भाषा हिन्दी निश्चित हो चुकी है और भविष्य में अंग्रेजी का स्थान हिन्दी भाषा को लेना है तो उसकी जय बोलने वाले अपराधी कैसे हो सकते हैं? संसार के समस्त इतिहास में ऐसा उदाहरण कहीं नहीं मिलता कि राष्ट्रभाषा की जय बोलना अपराध गिना जाता हो। परन्तु इस गवर्गण्ड राजा के राज्य में ही यह महा मूर्खता का द्योतक उदाहरण प्रत्यक्ष सामने आ रहा है। संसार के किसी भी देश में राष्ट्र भाषा पर कोई प्रतिबन्ध नहीं, परन्तु यह भारत ही एक ऐसा अभागा देश है कि उसके एक भाग पंजाब में भारतीय का प्रतीक राष्ट्रभाषा हिन्दी से लोगों को वंचित रखा जा रहा है। भारतीय तो क्या समस्त विश्व भर के विद्वान् भी यह सिद्ध नहीं कर सकते कि किसी देश के एक

माग को उसकी राष्ट्रिय भाषा की जय बोलने वाले तथा उसकी मांग करने वाले अपराधी ठहराये जा रहे हैं। परन्तु यह भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ यह सब कुछ हो रहा है। जहाँ भारतवर्ष पहिले बुद्धि-मत्ता में सबसे आगे था वहाँ अब महामूर्खता में भी वह सबसे आगे ही है।

यदि दुर्जन तोष न्याय से इसे अपराध भी कहा जाये तो फिर पंजाब में ही क्यों, समस्त भारत में हिन्दी की जय बोलने वालों को अपराधी ठहराया जाना चाहिए और उन सबको कारागार में डालना चाहिए। परन्तु ऐसा दूसरे प्रान्तों में तो नहीं हो रहा फिर पंजाब में ही यह अंधेर क्यों?

क्या स्वतन्त्र के लिये फाँसी की रस्सी का प्रेम से आलिङ्गन करने वाले वीर कर्तारसिंह, सरदार भगतसिंह राजगुरु आदि इसीलिये अमर शहीद हुए थे कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी उनकी जन्म भूमि पंजाब की मातृभाषा हिन्दी से वंचित रखा जायेगा। क्या पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने लाहौर में सेन्डस के हाथों इसीलिए लाठियाँ खाई थीं कि उनके रक्त से सिंचित स्वतन्त्रता तरु के मधुर फल राष्ट्रभाषा हिन्दी से उनके पंजाब को वंचित रखा जायेगा? क्या हिन्दी प्रेमी महात्मा गाँधी ने इसी-लिये गोलियाँ खाई थीं कि उनके पश्चात् उनके शिष्य ही राष्ट्रभाषा से द्रोह करेंगे?

ओ मेरे नेताओ! पंजाब में तुम्हारे हिन्दी भाषा-द्रोह को देख कर आज भी इन वीरों की आत्मायें स्वर्ग में ही रो रही होंगी।

सत्याग्रह के विषय में अनेक प्रकार की कुतर्कें की जा रही हैं। कभी साम्प्रदायिक कहकर सत्याग्रह को बदनाम करने के प्रयत्न किये जाते हैं तो कभी राजनैतिक कह कर कुचलने की चेष्टा की जाती है। मैं पूछना चाहता हूं कि जब श्री पं० नेहरू तक यह स्वीकार कर चुके हैं कि आन्दोलनकारियों की मांगें तो सर्वथा उचित हैं, तब फिर इधर-उधर की बातें बना कर व्यर्थ बकवास करने से क्या लाभ? यदि मांगें ठीक हैं तो तुरन्त मान लेनी चाहियें। इस से तुम्हें क्या सरोकार है कि आन्दोलन कौन चला रहे हैं और वह किस ढङ्ग का है। सत्याग्रह का तो कारण उसकी माँगें हैं, माँगें पूर्ण होते ही सत्याग्रह भी समाप्त है।

परन्तु ऐसी उदारता और न्यायप्रियता महात्मा गांधी जी को बदनाम करने वाले इन पद लोलुप राज्याधिकारियों में कहाँ। उल्टा जनता को ही आत-ङ्कित करना प्रारम्भ किया। महात्मा गाँधी का ऐसा कौन सा सिद्धान्त है जिसको पंजाब गवर्नमेन्ट गिन गिन कर न तोड़ रही हो। सत्य और अहिंसा के परम भक्त महात्मा गाँधी के शिष्य पंजाब में सर्वथा असत्य और हिंसा का खुले आम प्रयोग कर रहे हैं। श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती और आचार्य भगवान् देव जी जैसे साधु प्रकृति के व्यक्तियों पर डकैती का सर्वथा झूठा इल्जाम लगाया जाता है। जिन्होंने अपनी लाखों रुपये की सम्पत्ति पर ठोकर मार कर परोपकार में अपना जीवन लगा रखा है। वे आज डाकू बनाये जा रहे हैं। सत्याग्रहियों पर जितने भी इल्जाम लगाये जाते हैं उनमें ९९ प्रतिशत सर्वथा झूठे मन कल्पित होते हैं। क्या पंजाब सरकार अपनी छाती पर हाथ रखकर यह कह सकती है कि सत्याग्रहियों पर लगाये गये इल्जाम सच्चे हैं।

सर्वथा शान्त निरीह सत्याग्रहियों पर किस प्रकार अत्याचार किये जाते हैं तथा किस प्रकार महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धान्त की हिंसा की जाती है इसके लिए फिरोजपुर काँड और बहु अकबरपुर की घटनायें ज्वलन्त उदाहरण हैं। आज श्री पंडित नेहरू दूसरे देशों में शाँति और पंचशील का उपदेश देते फिरते हैं परन्तु वे स्वयं इस देश में क्या करवा रहे हैं इस पर विचार तक नहीं करते।

श्री नेहरू जी ने ९ नवम्बर को चण्डीगढ़ में भाषण देते हुए कहा था कि मुझे पता नहीं कि हिन्दी का शत्रु कौन है?

यदि अभी तक नेहरू को इस बात का पता नहीं तो अब जरा कान खोलकर सुन लें और आँख खोल कर पढ़ लें। सच्चर फार्मूला बनाने वाले तो हिन्दी

के शत्रु थे ही, परन्तु वर्तमान काल में पंजाब गवर्नमेन्ट और उसका साथ देने वाले श्री पं० नेहरू हिन्दी के परम शत्रु हैं।

सत्याग्रही वीर आखिर अपराध क्या करते हैं? न वे चोरी करते हैं न डकैती डालते हैं और न किसी को मारते ही हैं। हाथों में ओ३म् की पावन पताकायें लेकर सर्वथा शान्ति से हिन्दी भाषा की जय के ही तो नारे लगाते हैं या हिन्दी भाषा की मांग ही तो करते हैं। बस, पंजाब गवर्नमेन्ट की दृष्टि में यही उनका अपराध है। जो सरकार राष्ट्रभाषा हिन्दी के जय के नारे लगाने तथा उसकी मांग करने वालों को जेलों में ठूंसती है, वह सरकार तथा उस अन्यायान्ध सरकार का साथ देने वाला व्यक्ति ही हिन्दी का परम शत्रु है।

खैर, हमारी सरकार और नेता जैसा समझें वैसा करें। परन्तु एक बात अवश्य है कि आन्दोलन जितना लम्बा चलता जायेगा, कांग्रेस सरकार की कबर उतनी ही लम्बी और गहरी होती जायेगी। पिछले दिनों के म्युनिसिपल बोर्ड के चुनाव ही इस बात का स्पष्ट प्रमाण है।

अन्त में एक बात हिन्दी प्रेमियों के लिए भी लिख देता हूँ।

हमारी सरकार ने आप लोगों को भेड़ और मुर्दा समझ कर सच्चर फार्मूला बनाया और हिन्दी पर प्रतिबन्ध लगाया। जब आपने इसके विरोध स्वरूप हिन्दी भाषा की माँग की तो सरकार द्वारा आपको जेलों में डालकर सताया जाना स्वीकार ही है। आज पंजाब में ही नहीं अपितु भारत भर में हिन्दी प्रेमी का यदि कोई निवास स्थान है तो वह पंजाब की जेलें हैं। कोई भी हिन्दी प्रेमी पंजाब की जेलों से बाहर नजर ही नहीं आना चाहिए। अब किसी भी प्रकार से पीछे हटने का समय नहीं। यदि अब पीछे हट गये तो सर्वदा के लिये सिर उठा कर बात नहीं कर सकते। आओ हिन्दी प्रेमियों! सब मिलकर पंजाब की जेलों को भर दें और सरकार को अपनी मांग के लिए विवश कर दें। सफलता के पश्चात् फिर ऐसा समय आयेगा कि हिन्दी प्रेमी श्री पं० नेहरू और कैरों सब मिलकर एक स्वर से बोलेंगे।

राष्ट्र भाषा हिन्दी की………जय।

(शेष पृष्ठ ५ का)

समझिये। वह कौन सा अन्याय है जो कैरों सरकार हरयाणे के शान्त और अहिंसक नागरिकों पर नहीं ढा रही। पर हरयाणे वालों के मन और मस्तिष्क पर तो दो तपस्वी देवों आचार्य भगवान्देव और श्री जगदेव का राज है। जिस प्रकार गाँधी जी के नेतृत्व में जनता ने अंग्रेज के अत्याचारों से लोहा लिया था और अंग्रेज को भगा कर दम लिया, वैसे ही इन दोनों वीरों के नेतृत्व में हरयाणा की जनता कैरों शाही के विरुद्ध सन्नद्ध हो गई है। वह हर संकट और कैरों की क्रूरता का सामना करेगी पर अपने दोनों देवों के आदेशों पर कटिबद्ध रहेगी। हरयाणे वालों ने कह दिया है—

"कहो नाखुदा से कि लंगर उठा ले—मैं तूफां की जिद देखना चाहता हूँ" परिणाम वही होगा जो रावण, कौरवों और अंग्रेज का हुआ। हम हरियाणे की जनता को हर जगह यही कहते सुनते हैं कि हम अपने देवों की आज्ञा और आदेशों का पालन करेंगे। यही है इतिहास का अपने को दुहराना।

(आर्य से उद्धृत)

ओ३म्

रण-आह्वान

(रच० कुं० रणजीतसिंह "तन्मय" एम० ए० एल. एल. बी.)

देवासुर संग्राम छिड़ा, की असुरों ने मनमानी है।
हिन्दी हिन्दू नाश करन की, उनने मन में ठानी है ॥१॥
ठौर ठौर अन्याय करे जो, उनकी कथा सुनानी है।
नर, नारी, ना बच्चे छोड़े जिनकी करुण कहानी है ॥२॥
चंडीगढ़, रोहतक, अकबरपुर, फिरोजपुर धिक्कार रहे।
दम्भी, कपटी, अन्यायी को, चीख चीख दुत्कार रहे ॥३॥
सुरगुरु ने समझाया पूरा नेहरू समझ न आई है।
भाषा पर प्रतिबन्ध न मानें, हठ धर्मी दिखलाई है ॥४॥
गाँधीवाद और पञ्चशील का, बढ़ बढ़ नाद लगाते हैं।
अत्याचारों को सुन कर तो, गाँधी बुद्ध लजाते हैं ॥५॥
सांप्रदायिक कहते औरों को, स्वयं अकाली को झुकते।
हिन्दू-घातक नीति इनकी, हमको रहे सदा बकते ॥६॥
आर्यवीर गण जाग उठते हैं, रण चण्डी का सुन आह्वान।
सिहर उठे हैं शीश सभी के, वेदी पर करने बलिदान ॥७॥
फड़क उठी हैं आज भुजायें अरिका मान मिटाने को।
माता सम भाषा रक्षा-हित, अपना रक्त बहाने को ॥८॥
वीर देवियाँ निकल पड़ी हैं, जौहर व्रत दिखलाने को।
कभी न पीछे हटें, बढ़ेंगी जल जल कर मर जाने को ॥९॥
फांसी की जंजीरों को ये, पुलकित होकर चूमेंगे।
मचकी दे दे धर्म प्रेम में, 'तन्मय' होकर झूलेंगे ॥१०॥
रणचण्डी हुंकार उठी है, वीर आर्यो डटे चलो।
असुरों को दहलाते गर्जो, निर्भय होकर बढ़े चलो ॥११॥
जगदीश्वर है मित्र तुम्हारा, निश्चय विजय दिलायेगा।
अन्यायों अत्याचारों के, घर का दिया बुझायेगा ॥१२॥

सुरगुरु=पू० स्वा० आत्मानन्द जी सरस्वती महाराज

मुख्य मन्त्री कैरों को संदेश

(श्री दयाराम रुदड़ौल, महेन्द्रगढ़)

टेक:—कैरों क्या उपहास करे तू आर्य साधु-संन्यासी का,
बदला लेकर छोड़ेंगे तेरी इस नाजाइज हाँसी का।

कुत्ते को क्या मालूम होता नारियल खाणे का,
भेड़ बिचारी क्या समझे, आनन्द बीणा बजाणे का।

गञ्जा क्या महत्व समझे, सिर में तेल लगाने का,
तू महत्व क्या समझे अनारी, इस केशरिया बाणे का।
तू मन्त्री पद के योग्य नहीं, काम करे बदमाशी का ॥१॥

२५ मई को जो पटियाला में बात बयान की,
उस भाषण में बातें थी आर्यों के अपमान की।

पर बोल-चाल से ही होती है परीक्षा इन्सान की,
आपने तो ऐसी बात कही जैसी पूंछ श्वान की।
मनमानी करने पर तुल गया लिया राज समझ घासी का ॥२॥

ऊपर का थूका हुआ कैरों, उलटा मुंह पर गिरता,
आर्यों से किया बैर बता किसका बहकाया फिरता।

साफ कहेंगे तू अन्यायकारी, न्याय नहीं करता,
आर्यों को मुर्दा समझे फिर खुल्ला भी चरता।
पर आर्यों से भिड़ने से पहले प्रबन्ध कर ले……का ॥३॥

दही के धोखे में कैरों कपास मत खा लेना,
निजाम की तरह माफी माँग के मुंह में घास मत दबा लेना।

तेरी सभ्यता से अब परिचय हो गये अपना यत्न बना लेना,
भविष्य में ऐसा बोला तो चण्डीगढ़ से बिस्तर ठा लेना।
क्या तुझे डर नहीं लगता हमारे आर्य साधु-संन्यासी का ॥४॥

सभ्यता के प्रतिकूल राज्य में कोई काम नहीं होने देंगे,
अपने बड़े-बुजर्गों की हम, शान नहीं खोने देंगे।

गुरुमुखी का बीज राज्य में कहीं नहीं बोने देंगे,
अब के ऐसा बोला तो तुझे सुख से नहीं सोने देंगे।
यह सन्देश है श्री 'दयाराम' रूदड़ौल निवासी का ॥५॥

खीर में मूली

(ले०—ब्र० सुदर्शनदेव 'उपाध्याय' गुरुकुल झज्जर)

विश्व में एक बहुत पुरानी नगरी है। जिसे पहले सभी देश वासी श्रद्धा की ऐनक से देखा करते थे। वही नगरी विश्व में एक मात्र ज्ञान-विज्ञान का स्रोत समझी जाती थी। काल ने पलटा खाया। वह नगरी दूसरों के हाथों में चली गई। वहाँ के निवासी पराधीन हो गये। अपनी भूलों से स्वतन्त्रता-रत्न को खो बैठे। कालान्तर में उसी नगरी में एक महर्षि ने जन्म लिया। गहरी निद्रा में सोती हुई उस नगरी को फिर से जगाया और उसे फिर से स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाया।

याद रहे उसी नगरी के एक घर में उस महर्षि के पाठ को याद कर अनेक-विभूति एवं नर-रत्न पैदा हुए। उन नर-रत्नों एवं देवताओं के घोर परिश्रम से उस नगरी को फिर स्वतन्त्रता के दर्शन हुए। जिससे सभी नगरी-निवासियों के आनन्द का ठिकाना न रहा। उस नगरी का वह घर "पाञ्च पानी वाला" नाम से प्रसिद्ध है।

एक दिन का समाचार है कि उस घर के निवासी तथा अन्य नगरी के सभी मुखियाजनों ने मिलकर सोचा कि अब तो हम स्वतन्त्र हो गये हैं। स्वतन्त्रता के उपलक्ष में हमें एक बड़ा सहभोज करना चाहिये। जिस सहभोज से सभी नगरी-निवासियों के हृदय में उल्लास पैदा हो।

अब विचारणीय विषय यह रहा कि सहभोज में क्या-क्या पदार्थ बनाये जायें। किसी ने लड्डू जलेबी किसी ने हलवा, किसी ने मोहन भोग, किसी ने कुछ और किसी ने कुछ बनाने की सम्मति दी। इतने में ही एक वृद्ध सज्जन ने उठकर कहा कि और कुछ बने या न बने किन्तु एक पदार्थ अवश्य बनना चाहिये। जिसे हमारे सभी पूर्वज बनाते और अत्यन्त प्रेम से सेवन करते आये हैं।

इतना कहते ही सभी ने बड़े कौतूहल से पूछा कि महा मान्य! कृपया बतलाइये उस पदार्थ का क्या नाम है। वृद्ध सज्जन शरीर से काँपते हुए बोले, यदि मेरी बात सबको मान्य हो तो मैं कहूँ! नहीं तो कहना न कहना समान है। यह सुन सभा में सन्नाटा छा गया। अन्त में "आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया" (बड़ों की आज्ञा अविचारणीय होती हैं) इसे याद करके सभी ने उच्च स्वर से कहा "तथास्तु" अर्थात जो आप कहें हमें स्वीकार है।

वृद्ध महाशय बोले कि मेरा कहना यह है कि सहभोज में खीर अवश्य बननी चाहिये। यह हमारे पूर्वजों का अत्यन्त प्रिय भोजन है। यह पुष्टिकारक बलवर्द्धक, स्वादिष्ट, रुचिकारक और बुद्धिवर्द्धक होता है इत्यादि। इसके बिना सहभोज अधूरा है। बात सबकी समझ में आ गई और सबने बड़े हर्ष के साथ स्वीकार की। सभा विसर्जित हुई। पकवान बनने लगे।

आपको याद होगा कि मातायें कहा करती हैं कि "निरभाग रूठे त्यौहार न" यहाँ भी सहभोज के समय एक निरभाग रूठ गया। यहां तक रूठा कि रोने में कोई कसर न रही। मां से जाकर कहने लगा कि ये लोग क्या खीर और नाना प्रकार के पकवान घोट रहे हैं। ये मुझे नहीं भाते। मेरे लिये तो आज एक न्यारी पतीली में मूली का शाक बनना चाहिये। माता ने उसे बहुत समझाया किन्तु सब व्यर्थ।

उधर गोले, किस्मिस आदि अनेक पदार्थ डालकर स्वादिष्ट खीर तथा अन्य पकवान तैय्यार हो रहे थे। उधर एक निरभाग रूठा बैठा था। अन्त में माता के बहुत समझाने पर कहने लगा कि यदि मेरी मूलियों के शाक की पतीली तुम आज न्यारी नहीं चढ़ाती हो तो न सही। किन्तु यह जो खीर बन रही है

(शेष पृष्ठ १५ पर)

ओ३म्

हरयाणा प्रान्त के प्रधान गुरुकुल आर्षपाठविधि के निश्शुल्क शिक्षण केन्द्र

गुरुकुल झज्जर (रोहतक) का

छत्तीसवां वार्षिक महोत्सव

फाल्गुन कृष्णा द्वादशी, त्रयोदशी सम्वत् २०१४ विक्रमीय, तारीख १५ और १६ फरवरी १९५८ ई० शनिवार, रविवार को बड़े समारोह के साथ मनाया जायेगा। भारी संख्या में पधार कर महोत्सव की शोभा को बढ़ावें।

इस शुभ अवसर पर आर्यजगत् के महान् नेता पूज्यपाद स्वामी आत्मानन्द जी महाराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री स्वामी धर्मानन्द जी महाराज, श्री स्वामी शान्तानन्द जी महाराज आर्य-समाज व्यावर, श्री स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी महाराज, श्री स्वामी सन्तोषानन्द जी महाराज, श्री पूज्य आनन्द-भिक्षु जी वानप्रस्थ, वैदिक विद्वान् श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यामार्त्तण्ड, सैद्धान्तिक विद्वान् श्री पं० जगदेवसिंह जी शास्त्री 'सिद्धान्ती' महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री आचार्य राजेन्द्रनाथ जी शास्त्री संस्थापक श्रीमद्दयानन्द वेदविद्यालय देहली, श्री पं० सत्यदेव जी वाशिष्ठ, श्री मुनि देवराज जी विद्यावाचस्पति, श्री प्रा० शेरसिंह जी भू० पू० विद्युत तथा सिंचाई मन्त्री पंजाब, आदि-आदि उच्चकोटि के विद्वानों तथा प्रान्तीय और केन्द्रिय धारासभाओं के कतिपय सदस्यों को निमन्त्रित किया गया है।

ऋग्वेद से महायज्ञ

पांच फरवरी बुधवार से ऋग्वेद से महायज्ञ प्रारम्भ होगा। इस शुभावसर पर यज्ञोपवीत ग्रहण करने वाले सज्जनों को यज्ञोपवीत प्रदान किये जायेंगे। महायज्ञ की सफलता के लिये हवन के प्रेमी सज्जन कम से कम एक समय का घृत अवश्य भेजें तथा पड़ोसियों एवं इष्टमित्रों से भिजवा कर पुण्य के भागी बनें।

नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश

राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा सब भाषाओं की आदि जननी देववाणी संस्कृत की शिक्षा एवं महर्षि दयानन्द जी द्वारा निर्दिष्ट पाठविधि के अनुसार वेद-वेदांगों के अध्ययन-अध्यापन का समुचित प्रबन्ध है। गुरुकुल की दश श्रेणी उत्तीर्ण कर आयुर्वेद महाविद्यालय में प्रविष्ट होने वाले छात्रों को विशेष सुविधायें दी जाती हैं। अतः अपने होनहार बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट करवाकर उनके जीवन को सफल बनावें। प्रवेशनियम और प्रार्थना-पत्र कार्यालय से मंगवा लें। प्रवेशार्थी सज्जन १४ फरवरी को सायंकाल तक गुरुकुल में पहुंच जावें।

निवेदक—

प्रधान	मन्त्री	आचार्य
रामकला कप्तान	प्यारेलाल आर्य	भगवान्देव

टि० १. "विद्यार्य गुरुकुल झज्जर" का साधारण वार्षिक अधिवेशन १५ फरवरी शनिवार को रात्रि के ८ बजे से प्रारम्भ होगा। सम्बन्धित महानुभाव यथासमय पधारने की कृपा करें।

२. सभा की सदस्यता का शुल्क १०) रु० वार्षिक है और १०१) रु० एक बार प्रदान करने वाले सज्जन आजीवन सदस्य कहलायेंगे।

३. ऋतु-अनुकूल बिस्तर अपने साथ लावें। भोजन का प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया जायेगा।

आर्य वीरों से

(ले०—ब्रह्मचारी महादेव सिद्धान्त शास्त्री सि० प्रभाकर)

पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन को चलाते हुए पूर्ण ७ मास हो गये हैं। जितना समय व्यतीत हो रहा है उतना ही आन्दोलन उग्र व व्यापक होकर पञ्जाब सरकार के कफन का साधन बनता जा रहा है।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन को कुचलने के लिए कैरों सरकार ने जो अन्याय वा अत्याचार किए हैं उसको लिखते हुए लेखनी कांपती है। हृदय सन्तप्त होता है। अत्याचारी कैरों सरकार ने इस आन्दोलन को कुचलने के लिए जितनी शक्ति थी सब लगा रखी है। इसने हमारे वीर सत्याग्रहियों को तपती हुई तारकोल की सड़कों पर घसीटा, बुरी तरह पीटा, भयानक से भयानक अरण्यों में छोड़ा, यहां तक ही नहीं, वीर सत्याग्रहियों को भूखा-प्यासा रखा गया, नहरों में बहाया गया, नोकीले पत्थरों और विषैले सांपों पर भी फेंका गया, परन्तु यह वीर कहां डरने वाले थे, आगे बढ़ते ही गये। परन्तु कैरों सरकार का अत्याचार यहीं तक सीमित नहीं रहा अपितु इसने हमारे परम पूजनीय संन्यासी वर्ग को बुरी तरह अपमानित ही नहीं किया अपितु पीटा पशु की भांति तपती हुई सड़कों पर घसीटा, यह ही नहीं यन्त्रविशेष को पेटों में मारकर उन्हें २० घन्टे तक निःसंज्ञ किया गया, इसे देखकर किसका हृदय न कांपेगा वा किस वीर को यह अत्याचार सहन होगा।

स्वतन्त्रता शताब्दि सदृश राष्ट्रीय पर्व पर जो बहु अकबरपुर ग्राम में घटना घटी, वहाँ अत्याचारी सरकार ने पाशविक अत्याचार किये उसका नग्न चित्र असह्य था वह स्वतन्त्र भारत पर कलंकका टीका सिद्ध होगा। इस पर भी इस कैरों सरकार की अत्याचार रूपी प्यास अभी शेष थी उसे पूरी करने के लिए इस ने २४ अगस्त को फिरोजपुर काण्ड रचा, इसमें इस अन्यायी ने क्या किया वह किसी से तिरोहित नहीं है। अहिंसक सत्याग्रहियों पर लाठी चार्ज किया, वीर सुमेरसिंह को मार कर वीरगति को भेजा, अन्य दर्जनों की दशा चिन्ताजनक थी इस घटना की जाँच करते हुवे कॉंग्रेस पालियामेन्ट के मन्त्री श्री अलगूराय शास्त्री एम० पी० ने रिपोर्ट दी थी, साथ ही यह भी कहा था कि यदि इसे नेहरू जी देखते तो अपना सिर दीवार से मारकर फोड़ लेते, परन्तु आश्चर्य का विषय है कि अहिंसा का पुजारी गाँधी जी का उत्तराधिकारी, पञ्चशील की रट लगाने वाले नेहरू ने इस घटना पर अपने दो आँसू भी नहीं बहाये।

इस घटना पर हरयाणा नर केशरी प्रो० शेरसिंह जी एम० एल० ए० ने कहा था कि इस घटना को सुनकर हमारा सिर शर्म के मारे झुक जाता है।" यह घटना आपने टेलीफून द्वारा कैरों को सुनाई तब कैरों ने कहा कि क्या ये सत्याग्रही लड्डू खाने गये थे। वहाँ तो इसी प्रकार होगा। ध्यान रहे इससे पूर्व जब रोहतक में मोर्चा खुला था तब प्रो० शेरसिंह जी ने कैरों को कहा था कि आप इस आन्दोलन को दबा नहीं सकते, तब आपने उत्तर दिया था कि—इसके दबाने में क्या लगा है, ४००-५०० के हाथ पाँव तोड़ने व ४००-५०० को जेल में डालने से आन्दोलन समाप्त हो जावेगा। परन्तु इस अत्याचारी को क्या पता था कि इस आन्दोलन को चलाने वाले बलिदान के लिये तैयार खड़े हैं। कैरों साहब को बता देना चाहता हूँ कि देश को आवश्यकता हुई तब सबसे आगे यह वीर रहे हैं।

इतने पर भी कैरों सरकार ने देखा कि भारत माता के सच्चे सबूत आर्यवीर इस प्रकार बस में नहीं आ रहे हैं और हमारे दांत खट्टे कर रहे हैं तब

नाक रगड़कर जेल भरना आरम्भ कर दिया। साथ ही नेताओं तथा कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारियां आरम्भ कर दीं गिरफ्तारी करने में सरकार ने अपनी बुद्धि के दीवालेपन का परिचय दिया है, सरकार ने जो ढग अपनाया है वह विचित्र है। हरयाणा केशरी श्री सिद्धान्त जी को डाका डालने का भाषा स्वातन्त्र्य समिति के मन्त्री श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री को बम्ब बनाने का अभियोग लगाकर पकड़ लिया। इसी प्रकार अन्य नेताओं की भी गिरफ्तारियां आरम्भ की, परन्तु कैरों को क्या पता था कि आर्यसमाज कार्यकर्त्ताओं और नेताओं की पिटारी है। यहां तो उस प्रकार कार्यकर्त्ता हैं जिस प्रकार कि प्याज में छिलके। छिलके में छिलका होता है उसी प्रकार कार्य कर्त्ताओं के पकड़ने पर दूसरा कार्यकर्त्ता विद्यमान है।

सारे पञ्जाब में दमन-चक्र है परन्तु विशेष हरयाणा, में हरयाणा में भी रोहतक जिले में। उदाहरणार्थ १ लाख ६० हजार रुपया दण्ड रूप में रोहतक जिले में किया है, जिसकी वसूली में पुलिस ने हल में चलते हुए बैलों को भी नहीं छोड़ा, वह उन्हें खोल कर ले गई है, यह है अत्याचार का नग्न नृत्य। इस प्रकार कैरों का दमनचक्र होते हुए भी हरयाणा के आर्यवीर इनकी परवाह न करते हुए आगे बढ़ते जा रहे हैं। परन्तु हे आर्यवीरो सत्याग्रह दबा दिया गया, इस आवाज को असत्य करने के लिए फिर हम अपनी अङ्गड़ाई तोड़कर शेर की भाँति अपनी याञ्चनाओं की गर्जना से कैरों सरकार की पुनः नींद हराम कर दें क्योंकि हम विजय द्वार पर पहुँचे हुए हैं कहीं आलस्य सेवा लालच सेवा भय से हम हम कर्त्तव्य से च्युत न हो जाएं।

हे आर्य वीरो! पुलिसियोंकी गीदड़ भबकियों से न डरना, कैरोंशाही को धराशायी करने के लिए तैयार हो जाओ। अपने-अपने स्थान से समान मन वाले होकर व आपस की फूट को मिटाकर जन-धन से इस आन्दोलन को तेज करो। इसको सफल करना हमारा धर्म है, नहीं तो हमारा अस्तित्व सर्वदा के लिए मिट जायेगा। इसकी सफलता में आर्य समाज का जीवन है। हे आर्य वीर! आर्यत्वकी रक्षा करने, स्वामी दयानन्द श्रद्धानन्द लेखरामादि के खूनसे सींचे हुवे आयसमाज की लाज बचाने, स्वामी आत्मानन्द जी की पुकार को पूरा करने में हिन्दी की रक्षा करने देवनागरी की लाज बचाने के लिए वीरो उठो, आगे बढ़ो।

"हे आर्य्य सन्तानों उठो अवसर निकल जावे नहीं।
देखो बड़ों की बात जग में बिगड़ने पावे नहीं॥
जग जान ले आर्य केवल नाम के नहीं।
वे नाम के अनुरूप ही करते सदा शुभकर्म ही॥

—०—

(पृष्ठ १२ का शेष)

इसमें कम से कम एक एक मन मूली अवश्य पड़नी चाहिये। माता की यह अनिच्छा होने पर भी यह स्वीकार करना पड़ा। माता शान्तिप्रिय थी। माता ने सोचा कि कभी यह रोने भी लग गया तो सब सहभोज भङ्ग हो जायेगा।

कई मन मूली मंगवाई गई। यदि कुछ कसर रह गई तो और डाल देंगे। मूली धो चीर कर तैयार हो गई। माता खीर में मूली डालने को तैयार हो थी कि घर में तथा सारी नगरी में कोलाहल (शोर) मच गया कि यह क्या पागलपन हो रहा है। यह सब गुड़ का क्यों गोबर किया जा रहा है।

उस रूठने वाले बालक का नाम श्री तारासिंह, खीर का नाम हिन्दी, और मूलियों का नाम पञ्जाबी या गुरुमुखी बतलाया जाता है। गुड़ को गोबर होने से बचाने वालों का नाम आप समझ ही गये होंगे।

—:०:—

सत्याग्रहमार्य्याणां निकषं वदन्ति

(लेखक--वेदपति शास्त्री सांगवेद विद्यालय नौनेर मैनपुरी उ० प्र०)

संस्कृत साहित्य में एक सूक्ति बहुत प्रचलित है "गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति" अर्थात् गद्य काव्यकारों की कसौटी है, इसी प्रकार आर्यों के परखने की कसौटी सत्याग्रह है,

क्योंकि आर्य समाज की आधारशिला ज्ञानकर्म की पृष्ठभूमि पर हुई, उसका कार्य-क्रम जीवनकाल से सत्य-प्रचार एवं असत्य व अज्ञान का उन्मीलन करना, क्रान्ति यज्ञ द्वारा जनता के पापतापों को भस्म कर आशा विश्वास एवं प्रेम का स्रोत प्रवाहित करना भारतीय संस्कृति एवं भारतीय सभ्यता की रक्षा के लिये बड़ी से बड़ी विकट स्थितियों का डटकर सामना करना रहा है।

इसी लक्ष्य पर चलते हुये आज उसके सामने एक समस्या आ खड़ी हुई, वह है—

पंजाब में हिन्दी रक्षार्थ सत्याग्रह !!!

यह कोई आर्यसमाज के लिये नयी बात नहीं, वह ऐसी परिस्थितियों में पड़कर ही आज इतना बड़ा हुआ, उसके इतिहास के प्रत्येक पन्ने पर ऐसी ऐसी परिस्थितियां अंकित हैं, उसको ऐसी उलझनों से कभी हानि नहीं हुई, वह ऐसे आन्दोलनों में जैसा पड़ा वैसे ही रंग निखरता गया, लोहे से कुन्दन बनता गया, जैसे सुवर्ण अग्नि में जितना तपाया जाता है उतना स्वच्छ हो जाता है, एतदर्थ वह ऐसी उलझनों में पड़कर पार होने का आदि है—

जहां इसने हैदराबाद में सत्याग्रह के अवसर पर जातिवाद, साम्प्रदायिकता, अन्धविश्वास से ओत प्रोत पशुबल के साथ डटकर मुकाबला करके, पशुता के घुटने टिकवा दिये थे—

वही आज बदलते संसार में, बदलती युगों की आधार शिलाओंमें जबकि आज शासक शासित का अस्तित्व मिटाने पर उतारू है, दूसरे शब्दों में-वर्ग सघर्ष का प्रवाह है, एक जनसमूह अन्यों के अस्तित्व को मिटाना चाह रहा है, "जिसकी लाठी उसकी भैंस" हो रही है, गुरुमुखी को तारासिंह मुखी का रूप देकर सिक्खिस्तान के लोलुप अकालियों द्वारा मातृभाषा हिन्दी का गला घोटा जा रहा है ऐसे आड़े समय में पंजाब अहिंसात्मक हिन्दी रक्षा सत्याग्रह का नेतृत्व कर रहा है।

जिसको चलते आज आधा साल व्यतीत हो गया, हजारों जेलों में बन्द हो गये, हजारों ने अनेकों कष्ट सहे, जितना ही वहां की सरकार ने साम्प्रदायिकताको बढ़ावा दिया उतना ही आन्दोलन तेज होता गया—

आज वहाँ का वातावरण सिख हिन्दू भेद से परिपूर्ण है। जहाँ राज्य का प्रमुख कर्तव्य शासन में शान्ति वा व्यवस्था का रखना, और प्रत्येक व्यक्ति के मौलिक अधिकारों के लिये न्याय पूर्ण संरक्षण प्राप्त करना है, वहाँ पंजाब सरकार ने प्रजातंत्रात्मक शासन प्रणाली की आड़ में, अवैधानिक सच्चर फार्मूला व पैप्सुफार्मूला बनाकर, ७० प्रतिशत हिन्दी भाषा जनता को ३० प्रतिशत सिखों के हाथों गिरवी रख दिया। हिन्दुओं के मौलिक अधिकारों पर हस्तक्षेप कर पिशाची साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन दिया, जिससे वहाँ की शान्ति व्यवस्था की दशा चिन्ताजनक स्थिति तक पहुँच गयी। ३० जुलाई के बाद की घटनायें अत्याचार एवं नृशंसता की मूर्तरूप हैं।

१५ अगस्त को जब सारा भारत स्वतंत्रता दिवस मना रहा था, पण्डित नेहरू लालकिले पर खड़े हो अहिंसा का पाठ पढ़ा रहे थे, उसी समय उनकी पुलिस बहुअकबरपुर ग्राम में भोले ग्रामीणों पर अत्याचार कर नादिरशाही राज्य का नमूना पेश कर रही थी।

इतने पर ही बस न किया, आगे चलिये—

फिरोजपुर जेल में हत्याकाण्ड जिसको देखकर

पाषाण हृदय भी पिघल जावे, जहाँ ५०० सत्याग्रहियों पर पूर्व नियोजित योजना के आधार पर खुंख्वार सिख कैदियों व पुलिस से १॥ घण्टे भीषण लाठीचार्ज कराया जिससे श्री सुमेरसिंह ने उसी दिन ऐहिक लीला समाप्त करदी। दो अपनी अन्तिम घड़ियां गिन रहे हैं, शेषकी हड्डी पसली तोड़ डाली। इतना सब होने पर "सत्तर चूहे खाके बिल्ली चली हज को" की उक्ति को चरितार्थ करते हुये पन्त व आजाद ने—

वहां के मन्त्रिमण्डल में—

भार्गव को घुसेड़ दिया, जिसके वहाँ शान्ति व्यवस्था के सम्बन्ध में सन्तुष्ट हो जाने की स्थिति उत्पन्न हुई, प्रत्युत इसके विरुद्ध आये दिन की घटनाओं के आधार पर जनसाधारण में यह भावना दृढ़ होती जा रही है, कि जिस प्रकार से शासन संचालित किया जा रहा है, उससे वहाँ अराजकता की सी स्थिति हो गयी है।

धर्म-निरपेक्ष वाद का झूठा ढकोसला पीटने वाली कांग्रेस सरकार, साम्प्रदायिकता के दल-दल में फंसा हुआ हाईकमान, हिन्दी रक्षार्थियों पर हो रहे अत्याचारों को रोकनेके बदले किराये के टट्टुओं द्वारा एवं खुद रात-दिन प्रोत्साहन दे रहा है। पैसों के टुकड़ों से कुछ हमारे में से ही मना करते व आन्दोलन को कोसते नहीं अघाते। ऐसी विकट परिस्थिति में आर्यसमाज का यह आश्चयजनक सत्याग्रह अग्नि परीक्षा है, यही उसके जीवन मरण का प्रश्न है।

यदि पंजाब में हिन्दुओं को समाप्त कर सिखिस्तान बनाने के प्रयत्नों को धूलिसात् करना है, यदि मातृभाषा हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकृत करना है, यदि नेहरू के "पागलपन" को पागलपन साबित करना है तो⋯⋯

"यदर्थं क्षत्रिया सूते स कालोऽयं समागतः" के अनुसार वह समय आ गया—इसके लिये हमें त्याग करना होगा, स्वार्थ का, संकीर्णता का, और अकर्मण्यता का।

यहां विश्व कवि रवीन्द्रके कुछ भाव देना अप्रासंगिक न होगा—"देवता की सवारी आ रही थी⋯⋯सोच रहा था इच्छानुसार वरदान मांग कर जीवन को सुखमय बना लूंगा ⋯रथ पास आया, देवता नीचे उतरे, मेरे पास बढ़कर उन्होंने अपना दाहिना हाथ फैला दिया और बोले ला तेरे पास कुछ देने का है⋯⋯समय अधिक न था। मेरा हाथ अपने जीर्ण-शीर्ण झोले में गया अन्न का छोटा कण बाहर निकला जिसे मैंने उसके हाथ में रख दिया मैं⋯⋯घर के अन्दर आया। जब मैंने झोला साफ किया तो उसमें उतना ही बड़ा सोने का कण निकला जितना मैंने अन्न का कण दिया। मैं सिर धुन कर रह गया और सोचने लगा कि⋯⋯

जो कुछ भी मेरे पास उस समय था मैंने वह सभी क्यों न दे डाला पर अब समय बीत चुका था⋯⋯"

विश्व कवी के भावों के साथ हम अपनी तुलना करें, समय आता और चला जाता है, पीछे पछताने के सिवाय कुछ हाथ नहीं रहता।

यह हमारा सौभाग्य है कि ऐसा समय उपस्थित हुआ, हम इसका स्वागत करें, और बढ़ें! आत्म विश्वास के साथ!!! निराशा को आशा के आलोक से नष्ट कर!!! सफलता मिलेगी⋯⋯

आज सत्याग्रह का महान् यज्ञ आत्माहुति की प्रतीक्षा कर रहा है। उसके लिये दयानन्द के असली शिष्य भट्टी में झुलसने के लिये तैयार खड़े चाहिये।

भारत में फैले आर्यवीरो! बढ़ो बलिदान के लिये पंजाब की धरती तुम्हारी बाट जोह रही है।

वह समय दूर नहीं जब कि सैकड़ो की हेकड़ी ढीली हो जावेगी, वर्तमान आर्य समाज दयानन्द का आर्य समाज बनेगा, विजय तुम्हारी प्रतीक्षा में है।

ओं—अश्मन्वती रीयते संरभध्वं उत्तिष्ठत्प्रतरत सखाया अत्रा जहीमोऽशिवाये असन् शिवान् वय मुत्तरेमाभिवाजान्—

सत्याग्रह

श्री सत्यदेव जी मन्त्री आर्यसमाज लूलोढ पुनः सत्याग्रह करेंगे। श्री सत्यदेव जी गुरुकुल के उत्साही कार्यकर्त्ता हैं। आपने २३ सितम्बर को रोहतक में सत्याग्रह किया और गिरफ्तार कर लिये गये। झज्जर के मजिस्ट्रेट ने निर्दोष समझकर अन्य १० साथियों सहित ३० अक्तूबर को छोड़ दिया। इन्होंने छोड़ते ही जेल के सन्मुख फिर सत्याग्रह कर दिया। इस बार क्रुद्ध होकर सरदार बलबीरसिंह रणधावा ने इनको तीन मास का कठोर कारावास और ४५०) जुर्माना कर दिया। अपील पर सैशन जज ने इनको छोड़ दिया। १८ दिसम्बर को अम्बाला जेल से छूटकर आप गुरुकुल झज्जर में पधारे, वहाँ आपके स्वागत में सभा की गई। आपने सभा में घोषणा की कि मैं पुनः तीसरी बार सत्याग्रह करूंगा और जब तक हमारी माँगें पूर्णतया नहीं मान ली जाती हैं तब तक चैन से न बैठेंगे।

हिन्दी रक्षा समिति झज्जर के मन्त्री श्री डा० सत्यवीर जी को २० अगस्त को झज्जर से गिरफ्तार कर लिया गया था। आपको छः मास का कारावास दण्ड मिला। आपकी माता जी रुग्ण थी अतः आप १ सप्ताह के लिये जमानत पर आये थे और २३ दिसम्बर को जमानत रद्द करवा कर पुनः जेल चले गये हैं।

श्री डा० सत्यवीर

गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी १८ अक्तूबर को रोहतक में सत्याग्रह कर गिरफ्तार हुए थे। सभी ब्रह्मचारियों को छः छः मास का कारावास दण्ड दिया गया। ब्र० सोमवीर जी रुग्ण होने के कारण जमानत पर आ गये थे किन्तु आपने २३ दिसम्बर को जमानत रद्द करवाकर पुनः जेल के द्वार खटखटा दिये।

—सम्पादक

श्रीमद्भगवद्गीता

(मुनि देवराज विद्यावाचस्पति)

गतांक का शेष

के लिये क्या प्रक्रिया आवश्यक है। गीता में इन तीन भावों को अलग-अलग करके समझाया है। 'मिट्टी' को क्षर, 'मन' को ज्ञानात्मक, स्वरूप को अव्यय और दोनों के बीच स्थापित करने वाले पदार्थ को अक्षर कहा है। "द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च" आदि श्लोकों में इसकी व्याख्या है। वह प्रकृति जिसके यह सब प्रकट होता है क्षर है। इसमें आठ चीजें हैं—"भूमिरापोऽनलोवायुः स्वमनो बुद्धिरेव च" अर्थात् पंच तत्त्व तथा मन बुद्धि और अहंकार इसका नाम अपरा प्रकृति है। यह अष्टधा प्रकृति क्षर पुरुष के नाम से वर्णित है। किन्तु यह क्षर और अक्षर पुरुष दोनों अलग होकर नहीं अपितु एक साथ अव्यय पुरुष के लिये हुए व्याप्त होकर रहते हैं। पुरुष का अर्थ है जो सब में पूर्ण होकर रहे। पूर्यांत इति पुरुषः। जिससे वस्तु बनती है वह क्षर है। क्षर सब भूत हैं तथा सब भूतों को मिलाकर समुदाय बनता है उसे कूट और उसमें रहने वाला कूटस्थ कहलाता है। वेद में इसे प्रजापति कहा है। अंग्रेजी में इसको (Cental gravit) कहते हैं। हर पदार्थ में जो केन्द्र (Center) है, जिस पर पूरा पदार्थ संतुलित है, उसे प्रजापति कहा है। सम्पूर्ण लोक एक केन्द्र बिन्दु पर संतुलित है, जिस प्रकार एक-एक पदार्थ एक-एक बिन्दु पर संतुलित है। धीर पुरुष अखिल ब्रह्मांड में उस केन्द्र बिन्दु का पता लगाकर उसे भली प्रकार देख लेते हैं। छोटे-छोटे पदार्थ भी अपना-अपना केन्द्र रखते हैं। उनमें विद्यमान जो शक्ति है उसे अक्षर कहते हैं।

प्राण शब्द की व्याख्या

धारण करने वाली शक्ति को प्राण कहते हैं। जिस समय दो पहलवान एक दूसरे से भिड़ते हैं तो उनकी प्राण शक्ति प्रतिफलित हो जाती है। प्राण जब जब कुछ करने लगता है तो क्रिया होती है। इसके तीन प्रकार (Steps) हैं। १. प्राण जब अपने शांत (inactive) रूप में विद्यमान होता है। २. जब प्राण बल के रूप में प्रकट होता है। ३. जब बल क्रिया का रूप धारण करता है। जगत् की प्राणमयी सत्ता प्रकृति की सत्ता को ज्ञानमयी सत्ता से मिलाती है। ज्ञानमयी सत्ता को अव्ययी अथवा पुरुषोत्तम करके कहा है। यह क्षर और अक्षर दोनों से ऊपर है अर्थात् अव्यय उत्तम पुरुष, अक्षर मध्यम पुरुष और क्षर प्रथम पुरुष है जिस प्रकार कुम्हार के मन में घड़े का ज्ञान, चित्रकार की बुद्धि में चित्र का ज्ञान विद्यमान होता है। जिसका वे बाह्य जगत् में प्रकाश करते हैं। जिसके मन पर अंकित यह सम्पूर्ण प्रकृति की सत्ता है वह ज्ञानमय पुरुष है। गीता में कहा है "नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।" जो वहाँ नहीं है वह यहाँ नहीं हो सकता। परमेश्वर में सब ज्ञान समाया है इसलिए उसे सर्वज्ञ कहा है जो कुछ उसमें है वही बाह्य जगत् में प्रकट हो सकता है। माप से परे होने से परमात्मा कहा है। उसमें कोई सीमा या limitation नहीं। अष्टधा प्रकृति से परे और इससे भिन्न जो प्रकृति है उसे परा प्रकृति कहते हैं। जीव शब्द का वास्तविक केवल शरीरस्थ जीव नहीं, अपितु प्राणों का धारण करने वाला है अर्थात् वह अक्षर जो सारे जगत् का उद्धारण करता है। क्षर के ज्ञान होने से अक्षर का ज्ञान होता है। जिस प्रकार वायु के चलने से जल में तरंग उत्पन्न होती हैं अर्थात् जल को तरंग का वास्तविक स्वरूप वायु से वर्तमान उसकी तरंग है। जल केवल वायु की तरंग को रूप देने वाला है।

इससे सम्बन्ध होने पर ही वायु की तरंग का पता चलता है। जल ही वायु का रूप हो जाता है। इसी प्रकार प्राण क्षर में परिवतन उत्पन्न करता है। क्षर केवल उसको सूचित करता है सिनेमा पर जो फिल्म पर्दे पर आती है उसका कारण उसके पीछे विद्यमान प्रकाश है। वह एक प्रकाश ही फिल्म की सहायता से अनेक दृश्यों में परिवर्तित हो जाता है। अर्थात् प्रकाश सत्य है और पर्दे पर चित्रित दृश्य छाया मात्र है। इसी प्रकार ज्ञानमयी चेतन सत्ता के अन्दर इस जगत् की फिल्म बनी हुई है और उसी में विद्यमान प्राणमयी सत्ता के द्वारा प्रकट किये गए अलग-अलग दृश्य वस्तुतः वहाँ सब सत्य ही विद्यमान हैं। इसलिए अपने आप सब होता चला जाता है। दार्शनिक भाषा में क्षर प्रकृति को उपादान, कारण या, अक्षर पुरुष को निमित्त और शेष को अव्यय कहते हैं। जैसे मिट्टी के घड़े का उपादान है। उसकी प्रक्रिया निमित्त और कुम्हार का ज्ञान अव्यय कहा जायगा। यह सब विचार की दृष्टि से ही अलग-अलग है। वस्तुतः एकत्वमयी सत्ता में ही यह तीनों विद्यमान हैं। इस प्रकार जो काय रुप में प्रकट होता है वह कारण का रूप ब्रह्म का ही प्रकाश है। अतः हम कह सकते हैं कि कुम्हार और हिमालय दोनों के ही दृष्टान्त अपने-अपने रूप में ठीक हैं।

जल लाने के लिये पात्र आवश्यक है। बिना आधार के जल नहीं रह सकता। इसी प्रकार जगत् के आलम्बन को अव्यय करके कहा है। गीता में वर्णित है "एतदा लम्बनम् श्रेष्ठम् एतदालम्बनम् परम् एतदालम्बनम् ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत्।" इस परम आलम्बन का ज्ञान प्राप्त करने पर मनुष्य को सब कुछ प्राप्त हो जाता है। क्षर और अक्षर दोनों कार्य करते हैं परन्तु इनके मेल-जोल का आलम्बन (अव्यय) न हो तो कुछ नहीं हो सकता। गीता में से बताने को अहम् या अस्मत् शब्द का प्रयोग है। इसके सातों विभक्ति के जो भी रूप आये हैं वे सब एक वचन में ही हैं, अर्थात् पुरुषोत्तम परमात्मा एक ही हैं। अहं सबका प्रभव है, वही सबका प्रवर्त्तक है क्योंकि उसी में शक्ति रुप से प्राण विद्यमान हैं और जिस प्रकृति से यह सब कुछ बनता है वह भी उसी में विद्यमान है। ऐसे भाव से युक्त जो ज्ञानी लोग हैं वे इसी भाव (Idea) को लेकर उसका भजन करते हैं। यदि यह टूट जाये तो भजन कैसा ? अन्य सब कुछ निराकरण करके, अन्य अपर अर्थात् इधर की सत्ता को हटाने से उस परम परम सत्ता का प्रवाह जो प्रकृति के आवरणों के कारण रुका है, वह स्वयं अनुभव में आ जाता है उसके भाव से युक्त होना ही भक्ति है। उस परमात्मा के भाव से अपने को भावित करना ही भजन है। यही श्रीकृष्ण का उपदेश है कि जिन अन्य कर्मों से घिरे हुए हैं, उन्हें हटाओ अपना प्राश्रय केवल मुझे ही बनाओ, मैं जितनी आवरण वृत्ति है उसे मुक्त कर दूँगा। इसी का का नाम भजन है और यही भक्ति-ज्ञान या कर्मयोग का सच्चा अर्थ है। शेष सब कुछ सांसारिक सकाम कर्ममात्र है।

सकाम और निष्काम कर्म

अब हम सकाम और निष्काम कर्म की व्याख्या पर आते हैं। मनु की व्याख्यानुसार "अकामस्य क्रियाषा दृष्यते नहि कर्हिचित्" अर्थात् जिसमें कामना नहीं ऐसे पुरुष की कुछ भी क्रिया संसार में नहीं देखी जा सकती। इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य जो कुछ करता है वह उसकी कामना का फल है। साथ ही हम देखते हैं कि गीता के निष्काम भाव पर बहुत जोर दिया है तो प्रश्न उठता है कि कर्म कैसे होता है और कामना से उसका क्या सम्बन्ध है ? पहले हम गहराई से विचार करें कि जो कुछ कर्म हम करते हैं वह कैसे होता है ? मनुष्य के अन्तःकरण और उसके अन्दर उसके चित्त में वासना का एक बड़ा भारी भण्डार है जिसमें जो कुछ हम करते हैं वह सब बीज रूप से सञ्चित होकर रहता है; वहाँ जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों से उत्पन्न हमारी वासनायें जमा हैं। इस चित्त में सात्विक राजसिक तथा तामसिक विकार उसमें उत्पन्न हुआ करते हैं।

(क्रमशः)

सच्चे वीर

(श्री रामस्वरूप 'आजाद' भजनोपदेशक)

भगवान्देव आचार्य सच्चे वीर बाल ब्रह्मचारी।
उनके तप और त्याग को जाने भारत के नर नारी ॥

जब-जब संकट पड़े मेरी हिन्दू जाति पर भाई,
किसी से पीछे नहीं वो आगे देता वीर दिखाई।
उनके पीछे पुलिस फिरे वारण्ट लिये हत्यारी ।१।

मान करे सिद्धान्ती जी का हरयाणे की जनता,
उनकी सेवा को भूलेगा जिस में हो कृतघ्नता।
ऐसे वीरों को कहते हैं धर्म, व्रत, तप-धारी ।२।

पंजाब केशरी शेरसिंह और बदलूराम अमर हों,
कूद पड़े मैदान के अन्दर बड़े-बड़े जहाँ समर हों।
आत्मानन्द सरस्वती जैसे होंय सन्त उपकारी ।३।

घनश्यामसिंह जी गुप्त सा नेता मुशकिल से पाता है,
बड़े भाग्य से कौम के अन्दर कोई नेता आता है।
सच्चा सेवक मिला कौम "आजाद" तुझे प्रचारी ।४।

भगवानदेव आचार्य सच्चे

समालोचना

उत्तरप्रदेश में चकबन्दी का ढङ्ग

ले० श्री महावीर सिंह एम० ए०, एल० एल० बी०, सिविल जज़। प्रकाशक तथा मुद्रक—दी इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स प्रा० लि० जीरो रोड, इलाहाबाद पृष्ठ २२२।

मूल्य २)

चकबन्दी के सम्बन्ध में इस पुस्तक में अच्छी जानकारी दी गई है। भाषा सरल है जिस को एक साधारण पढ़ा लिखा किसान भी सुगमता से समझ सकता है। श्री महावीरसिंह जी का प्रयास प्रशंसनीय है।

मस्तक विज्ञान

ले०—चंचलबहिन मणिकलाल पाठक
प्रकाशक—विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय गुरुकुल झज्जर (रोहतक)।
साइज $\frac{२० \times ३०}{८}$ पृष्ठ १२०।
सजिल्द पुस्तक का मूल्य ७)

हिन्दी साहित्य में बहिन जी का यह अपूर्व प्रयास है, आज मस्तकविज्ञान की कोई भी उत्तम पुस्तक हिन्दी में प्रकाशित नहीं हुई है। मस्तक की परीक्षा द्वारा मनुष्य के गुणावगुण की परीक्षा करने की विधि इस ग्रन्थ में बतलाई गई है। विषय को स्पष्ट करने के लिये साथ-साथ २०० चित्र भी दिये गये हैं। पुस्तक संग्राह्य है। --वेदव्रत सम्पादक

शिवरात्रि के उपलक्ष में विशेषोपहार

केवल तास मास (जनवरी, फरवरी, मार्च) के लिये मूल्य में भारी कमी

१—हमारी रसायनशाला द्वारा निर्मित सभी औषधियाँ १०) दस रुपये से अधिक माल लेने पर पौने मूल्य में दी जायेंगी।
२—१००) सौ रुपये या अधिक के आर्डर पर २५% कमीशन और मार्ग व्यय दिया जायेगा।
३—५००) का आर्डर देने पर ३०% कमीशन और मार्ग व्यय दिया जायेगा।
४—१० मुस सुर्मे की शीशियों के आर्डर पर ५०% कमीशन दिया जायेगा अर्थात् आठ आने की शीशी चार आने में दी जायेगी।
५—विशेष विवरण के लिये हमारा सूचीपत्र मुफ्त मंगवा कर पढ़े।

१—नेत्र ज्योति सुर्मा

लगाइये और नेत्र ज्योति पाइये। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंख दुखना,खुजली, लाली, जाला, फोला, रोहे, कुकरे, पास का कम दीखना (शार्ट साइट) दूर का कम दीखना (लांगसाइट), प्रारम्भिक मोतियाबिन्द आदि दूर हो जाते हैं। आंखों के सब रोगों की रामबाण औषधि है। यही नहीं किन्तु लगातार लगाने से दृष्टि (बीनाई) को तेज तथा आंखों को कमल की तरह साफ स्वच्छ रखता है। बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। प्रतिदिन जिसने भी लगाया उसी ने मुक्तकण्ठ से इस सुर्मे की प्रशंसा की है। मूल्य छोटी शीशी ।–) बड़ी शीशी ।।)

२—नेत्रामृत

लाली, कड़क, धुन्ध, ढलकवा, गरदोगुब्बार, रोहे तथा भयंकरता से दुखती आंखों के लिए जादू भरा विचित्र योग है।

मूल्य बड़ी शीशी ।।=) छोटी शीशी ।=)

३—स्वप्नदोषामृत रस

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषध इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे पीछे या बीच में वीर्य आने को बन्द कर देगी। मूल्य ५) तोला

सेवन विधि—प्रातः सायं एक-एक गोली गोदुग्ध या शीतल जल के साथ। विशेष—यदि स्वप्नदोष का रोगी अत्यन्त दुर्बल हो तो दूध के साथ और हृष्ट-पुष्ट हो तो जल के साथ सेवन करें। ब्रह्मचारी को जल के साथ सेवन करना चाहिए।

४—रोहितारिष्ट

यह अरिष्ट पुराने और बढ़े हुए प्लीहा (तिल्ली) यकृत जिगर के लिये अद्वितीय औषध है। जब किसी औषध से यह रोग ठीक न होते हों तो इसका चमत्कार (जादू) प्रयोग करके देखना चाहिये। यह उदर पीड़ा गोला वायु गोला आदि पेट में वायु का भरना, अजीर्ण, भूख न लगना, मलबद्धता आदि सभी पेट के रोगों को दूर करता है। सदैव रहने वाले मलबन्ध (कब्ज) को दूर करने की यह एक ही औषध है। यह जठराग्नि को दीप्त करता है। पाचन शक्ति को खूब बढ़ाता है। यह आयुर्वेद की रामबाण औषध है। १ पौण्ड मूल्य २)

५—कर्णरोगामृत

कान में पीप आना, बहरापन और प्रत्येक प्रकार की कर्ण पीड़ा को दूर करने के लिए यह अति उत्तम औषध है। प्रतिदिन सेवन करने से कानों का कोई रोग नहीं होता और मस्तिष्क की शुष्कता दूर होती है। मूल्य एक शीशी १)

६—स्वप्नदोषामृत चूर्ण

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषधि इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे-पीछे या बीच में वीर्य के निकलने को बन्द कर देती है।

मूल्य १) छटांक

७--व्रणामृत

भयंकर फोड़े, फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा अनेकों वर्षों के नासूर (सरह) आदि रोगों की अद्वितीय औषधि है। दिनों का काम घण्टों में, घण्टों का काम मिनटों में करती है। —मूल्य बड़ी शीशी १) छोटी ।।)

८—स्वास्थ्यवर्धक चाय

यह चाय स्वदेशी, ताजी एवं शुद्ध जड़ी-बूटियों से तैयार की गई है। वर्तमान चाय की भाँति यह नींद और भूख को न मारकर खाँसी, जुकाम, नजला सिरदर्द, खुश्की अजीर्ण, थकान, सर्दी आदि रोगों को दूर भगाती है। मस्तिष्क एवं दिल को शक्ति देती है। मूल्य १ छटांक ।-)

९—दन्तरक्षक मंजन

दाँतों से खून वा पीप का आना, दाँतों का हिलना, दाँतों के कृमि रोग, सब प्रकार की दाँतों की पीड़ा तथा रोगों को दूर भगाता है और नदाँतों को मोतियों के समान चमकाता है।—मूल्य एक शीशी ।।)

१०—बाल रोगामृत

बालकों के हरे-पीले दस्त, अपच, अजीर्ण (कब्ज) अरुचि, दाँत निकलते समय के रोग, सूखिया मसान रोग, वमन, निर्बलता, ज्वर आदि सभी रोगों को दूर कर बालकों को मोटा करता है। अतः प्रत्येक गृहस्थी घर में रखे। मूल्य एक शीशी ५)

११—संजीवनी तैल

मूर्च्छित लक्ष्मण को चेतना देने वाली इतिहास प्रसिद्ध बूटी से तैयार किया गया यह तैल घावों के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुये घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भर कर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है। मू० ।।=) नमूना

सेवन विधि—फाये में भर कर बार-बार चोट आदि पर लगायें।

१२—च्यवनप्राश

इसी ऋतु के ताजे आँवले से तैयार किया गया स्वादिष्ट, सुमधुर और एक दिव्य रसायन (टानिक) है। जिसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। परानी खाँसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक, सभी हृदय रोगों की अद्वितीय औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा अन्य सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका (निरन्तर) सेवन समूल नष्ट करता है। यह निबल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है।

मूल्य ७) सेर, ५ सेर लेने पर ६) सेर

१३—बलदामृत

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आ जाता है। पीनस (सदा रहने वाले जुकाम और नजले) की महौषध है। वीर्य वर्द्धक, कास (खाँसी) नाशक, राजयक्ष्मा (तपेदिक). श्वास (दमा) के लिये लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करती तथा अत्यन्त रक्त वर्द्धक है। निर्बलों कर बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ट बनाती है। यह अपने ढंग की एक ही औषध है। मूल्य ५) बड़ी शीशी २) छोटी शीशी

१४—ज्वरामृत

यह नये व पुराने सभी प्रकार के ज्वरों की रामबाण औषध है। बिगड़े हुए मलेरिया, विषम ज्वर को दूर करने में अद्वितीय औषध है। कुनेन भी इसके आगे तुच्छ औषध है। कुनेन का सेवन सिर दर्द, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है किन्तु यह औषध सब दोषों को दूर करती है किन्तु ज्वर की प्रत्येक अवस्था में दी जा सकती है। मलेरिया काल में सेवन की हुई मलेरिया को नहीं आने देती। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, सेवन करें और लाभ उठावें। मूल्य एक शीशी ५

शिवरात्रि के उपलक्ष [illegible] हार

केवल तीन मास के लिये (जनवरी, फरवरी, मार्च) मूल्य में भारी कमी

१—पांच रुपये से अधिक के आर्डर पर २५% कमीशन दिया जायेगा।
२—बीस २०) रुपये से अधिक के आर्डर २५% कमीशन और मार्ग व्यय।
३—पचास रुपये से अधिक के आर्डर पर ३०% „ „ „
४—सौ रुपये से अधिक के आर्डर पर ३३⅓% „ „ „
५—सुधारक के सभी प्राप्य विशेषाङ्क आधे मूल्य में दिये जायेंगे।
६—हमारा सूचि-पत्र मुफ्त मंगवाकर पढ़िये।

श्री सम्पादक जी "गुरुकुल पत्रिका" गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार

हमारा प्रकाशन

१ वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	३)
२ दृष्टान्त मञ्जरी	२)
३ आर्यकुमार गीताञ्जलि (प्रथम भाग)	≡)
४ „ „ द्वितीय भाग	≡)
५ आर्य सिद्धान्त दीप	१॥)
६ वैदिक धर्म परिचय	।≈)
७ छात्रोपयोगी विचारमाला	॥≈)
८ विदेशों में एक साल	२।)
९ आसनों के व्यायाम (सचित्र)	॥)
१० आदर्श ब्रह्मचारी	।)
११ कन्या और ब्रह्मचर्य	≡)
१२ हित की बातें	—)॥
१३ संस्कृत कथामञ्जरी	।)
१४ संस्कृताङ्कुर	१।)
१५ हम संस्कृत भाषा क्यों पढ़ें	।≈)
१६ संस्कृत वाङ्मय का सं० परिचय	॥)
१७ विरजानन्द चरित (हिन्दी)	१॥)
१८ विरजानन्दचरितम् सानुवाद संस्कृत पद्यकाव्यम्	१)
१९ स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी	२)
२० ब्रह्मचर्य शतकम्	॥≈)
२१ ब्रह्मचर्य महत्त्वम्	।)
२२ पंजाब की भाषा लिपि	—)
२३ राष्ट्र निर्माण में गुरुकुल का स्थान	॥)
२४ „ „ धर्म का स्थान	।—)
२५ नारायणस्वामिचरितम्	॥।)

आचार्य भगवान्देवजी द्वारा लिखित साहित्य

१ ब्रह्मचर्यामृत	=)॥
२ स्वप्नदोष चिकित्सा	=)॥
३ पापों की जड़ शराब	।—)
४ हमारा शत्रु तम्बाकू	≈)
५ नेत्र रक्षा	≡)
६ रामराज्य कैसे हो	≡)।
७ व्यायाम का महत्त्व	≡)
८ बिच्छू विष चिकित्सा	=)
९ ब्रह्मचर्य के साधन १-२ भाग	।—)
१० „ „ ३ भाग	≡)
११ „ „ ४ भाग	१)
१२ „ „ ५ भाग	।≈)
१३ „ „ ७-८ भाग	॥)
१४ „ „ ९ भाग	॥≈)

सुधारक के प्राप्याङ्क

१ भोजन विशेषाङ्क	१)
२ व्यायाम विशेषाङ्क	१)
३ गो-अङ्क	॥)

पता—विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक (पंजाब)

प्रकाशक आचार्य भगवान्देव गुरुकुल झज्जर ने सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली में मुद्रक जगदेवसिंह शास्त्री 'सिद्धान्ती' के प्रबन्ध से छपवाया।

वर्ष ५
अङ्क ६

गुरुकुल झज्जर (रोहतक) माघ २०१४ वि०
फरवरी १९५८, दयानन्दाब्द १३३

वार्षिक मूल्य २)
एक प्रति बीस नये पैसे

आदर्श सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

संस्थापक व सम्पादक
ब्र० भगवानदेव
आचार्य गुरु० झज्जर

सम्पादक—
ब्र० वेदव्रत भाषाचार्य
सिद्धान्तवाचस्पति

व्यवस्थापक
बलदेवसिंह बी०ए०
सि० प्रभाकर

सह-व्यवस्थापक
ब्र० सुदर्शनदेव
भा० सिद्धान्तवाचस्पति

विषय सूची

सुधारक के नियम

१—सुधारक अंग्रेजी महीने की १० ता० को डाकखाने में डाला जाता है। यदि २० ता० तक न मिले तो पोस्ट आफिस में पूछ-ताछ करनी चाहिये। फिर भी न मिले तो हमें लिखने पर और भेज दिया जायेगा।

२—छोटे लेख सारगर्भित तथा कागज के एक ओर सुन्दर और सुवाच्य लिखे हुये हों।

३—लेख में उचित परिवर्तन करना, प्रकाशित करना या न करना सब सम्पादक के आधीन है। अस्वीकृत लेख पोस्टेज भेजने पर ही वापिस लौटाया जा सकेगा।

४—वेद विरुद्ध लेखों का प्रकाशन सुधारक में न हो सकेगा।

५—सिद्धान्त विरुद्ध, अश्लील और मिथ्या विज्ञापनों के लिये 'सुधारक' में स्थान नहीं है। इतना होते हुये भी विज्ञापन की सत्यता का उत्तरदायित्व हम पर नहीं।

६—व्यवस्थापक सम्बन्धी सब पत्र-व्यवहार तथा मनीआर्डर आदि व्यवस्थापक-'सुधारक' के नाम से भेजने चाहियें, किसी व्यक्ति के नाम न भेजें। साथ ही ग्राहक अपनी संख्या अवश्य लिखें।

७—एजन्टों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है और ५ से कम की एजेन्सी नहीं दी जाती। विज्ञापन का धन अगाऊ भेजना आवश्यक।

८—सब पत्र व्यवहार हिन्दी तथा संस्कृत में ही करें उर्दू, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में पत्र व्यवहार न करें। पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड भेजें।

विज्ञापन दर

	पूरा पृष्ठ	आधा पृष्ठ	चौथाई पृष्ठ
एक बार	१६)	९)	५)
तीन बार	४०)	२४)	१३)
छः बार	७५)	४५)	२५)
१ वर्ष तक	१३०)	७५	४५)

टाईटिल अन्तिम १५% अधिक।
टाईटिल तृतीय १०% अधिक।
विशेषांक में सवाया कम से कम ४॥)

पाप-त्याग

यो नः पाप्मन् न जहासि तमु त्वा जहिमो वयम् ।
पथामनु व्यावर्तनेऽन्यं पाप्मानु पद्यताम् ॥ अ० ६।२६।२

हे (पाप्मन्) पापवृत्ते ! (यः) जो तू (नः) हमें नहीं (जहासि) छोड़ता है (उ) ऐसे (त्वा) तुझको (वयम्) हम (जहिमः) छोड़ते हैं। (पथाम्) मार्गों के (व्यावर्तने) बदलने पर (पाप्मा) पाप (अन्यम्+अनु) अन्य मार्ग को लक्ष्य करके (पद्यताम्) प्राप्त हो।

पाप का पन्था बड़ा विकट है। एक बार मनुष्य इस पाप पथ पर चल पड़े, इससे हटना बड़ा कठिन हो जाता है। पाप-पथ नदी के प्रवाह के अनुकूल चलता है। पाप मार्ग में चलने वाले को चलते समय आपाततः कोई हानि प्रतीत नहीं होती है अतः वह बेखटके इस पर चला जाता है। अब पापाचरण का अभ्यास इतना बढ़ गया है कि इच्छा न होते हुए भी उससे पाप हो जाते हैं क्योंकि पापाचार से उसके संस्कार ही ऐसे बन गये हैं कि उसे फिर वही व्यवहार करने पड़ जाते हैं। योग-दर्शन में इस संस्कार-व्यवहार चक्र को बहुत सुन्दर शब्दों में समझाया गया है।

तथा जातीयका संस्कारा
वृत्तिभिरेव क्रियन्ते संस्कारैश्च ।
वृतयः इति । एवं वृत्ति संस्कार-
चक्रमनिशमावर्तते ॥ (यो० द० १।५)

वृत्तियों से ही तदनुरूप संस्कार बनते हैं और संस्कार से पुनः वृत्तियाँ (व्यवहार) बनती हैं। इस प्रकार वृत्ति (व्यवहार) और संस्कार का चक्र दिन-रात चलता रहता है।

संस्कार को मारना सरल काम नहीं है तभी तो कहा—

"यो नः पाप्मन् न जहासि"

पाप तू हमें नहीं छोड़ रहा। पाप के संस्कार से निस्तार पाने का एक ही रास्ता (द्वार) है—वह है पाप संस्कार तथा पापाचार के विरुद्ध विचार। योग की परिभाषा में इसको "प्रतिपक्ष-भावना" कहते हैं। मनुष्य जब दृढ़ संकल्प करले तब कुछ भी असाध्य नहीं रहता। अतः दृढ़ प्रतिज्ञा की भावना से साधक कहता है—(तमु त्वा जहिमो वयम्) ऐसे तुझको हम त्यागते हैं। तू हमें नहीं त्यागता, हम तुझे त्यागते हैं, आरम्भ में पकड़ा भी हमने था, अब छोड़ेंगे भी हम ही।

पाप पुण्य का जहाँ चौराहा है, जहाँ से दोनों के मार्ग पृथक् हो जाते हैं वहाँ ही इसका त्याग किया जा सकता है। पाप की वासना पुण्य की वासना एक ही स्थान में रहती हैं, देखने की शक्ति निस्सन्देह आत्मा की है किन्तु दिखाती आँख है। इसी प्रकार भद्र-अभद्र विचार ने और करने का सामर्थ्य वास्तव में आत्मा में है, परन्तु आत्मा से कराता इसको मन है। इस दृष्टि से, जैसे चक्षुः सभी रूपों का एकायन=प्रधान ठिकाना है ऐसे मन ही सभी भले-बुरे विचारों का एकायन है। वेद के शब्दों में मन 'पथों का व्यवर्तन" है। यहाँ से ही मार्ग बदलते हैं। यहाँ से पाप पाप को दूसरे मार्ग पर चला दो, अर्थात् उसे उदय ही न होने दो, विनाश कर दो।

जैसे हम कह चुके हैं, पाप के संस्कार बड़े प्रबल होते हैं वे पुनः सामने आयेंगे। तब प्रतिपक्ष भावना से काम लो, योग दर्शन के भाष्य में व्यास जी ने लिखा है कि--

एवमुन्मार्ग प्रवणवितर्कज्वरेणातिदीप्तेन बाध्यमानस्त प्रतिपक्षान् भावयेत् । घोरेषु संसारांगारेषु पच्यमानेनमया शरणमुपगतो योगधर्मः स खल्वहं त्यक्त्वा वितर्कान पुनस्तानाददानस्तुल्यः श्ववृत्तेनेति-भावयेत् । यथा श्वावान्तावलेही तथा त्यक्तस्य पुनराददान इति ॥

इस प्रकार कुमार्ग के उन्मुख वितर्क (पाप) रूप अति ज्वर से पीड़ित मनुष्य प्रतिपक्षों का=विरुद्ध भावों का चिन्तन करे। अहो ! संसार रूप घोर अंगारों से जलते हुए मैंने किसी भाँति योग-धर्म की शरण ली। अब मैं उसे छोड़कर उन पापों को करूँ, सो यह कुत्तों के व्यवहार के समान है, ऐसा विचार करना चाहिए। कुत्ता अपने वमन (कै) को चाटता है, वैसा ही त्यागे हुए कार्य को पुनः अपनाने वाले को समझना चाहिये।

(स्वाध्याय सन्दोह से)

सम्पादकीयम्

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से पंजाब का हिन्दी-रक्षा सत्याग्रह जो कि विगत ७ मास से चल रहा था, कुछ काल के लिए स्थगित हो गया है। अभी सत्याग्रह ही स्थगित किया गया है, आन्दोलन नहीं, आन्दोलन बड़े वेग से, नहीं-नहीं, पूर्व से भी कहीं अधिक तीव्रतर गति से चालू है। स्थान-स्थान पर सत्याग्रहियों के स्वागत में जलसे-जुलूसों की भरमार है। एक भी दिन ऐसा नहीं कि जिस दिन हरयाणे में उत्सव न मनाया जा रहा हो, अपितु एक-एक दिन में कई-कई स्थानों पर उत्सव मनाये जा रहे हैं। पंजाब के आर्यों (हिन्दुओं) को इस बात पर गर्व है कि उन्होंने पंजाब में औरंगजेब से भी अधिक अत्याचारी एवं क्रूर शासन की जड़ें हिला दी हैं और वह शासन देखते ही देखते कुछ दिन में धड़ाम से नीचे गिरने ही वाला है। सभी हिन्दी-प्रेमियों को विशेषतया पंजाब निवासी भाइयों को अपनी सफलता पर अभिमान है और प्रसन्नता है इस बात की कि उनकी विजय हुई है और राष्ट्रभाषा हिन्दी के बन्धन सदा के लिए कट गये। अब चाहे राजा जी कितनी ही अंग्रेजी की वकालत करें अथवा अपनी पूरी शक्ति विदेशीय दासता की रक्षा में लगा दें, किन्तु पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन ने पंजाब ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण भारतवासियों को सचेत कर दिया है, इस आन्दोलन के कारण ऐसी जनक्रांति हुई है कि हिन्दी के विरुद्ध बकने वालों की कोई सुनने वाला ही नहीं रहा। यही अवस्था पंजाब के वर्तमान मन्त्री-मण्डल की हुई। हमने स्वयं देखा कि हिन्दी के विरोध में बोलने वाले मन्त्री की बात तक सुनने को लोग उद्यत न होते थे। अरे-गरे भाड़े के टट्टुओं की तो गणना ही क्या है। जहाँ भी ये हिन्दी के शत्रु पहुँचते थे वहीं पर इनका काले झण्डों से स्वागत किया जाता था। हरियाणानिवासियों का विगत सात मास तक हिन्दी विरोधियों की स्वागत सामग्री में सबसे पूर्व एवं प्रधान वस्तु कोई थी तो वह था काला झण्डा।

वर्तमान में भी अवस्था ऐसी है कि हिन्दी रक्षा आन्दोलन का विरोध करने वालों के प्रति सर्व साधारण जनता का विश्वास ही नहीं रहा है। हरयाणा निवासियों की दृष्टि में यदि कोई देश द्रोही है, गद्दार है, जनता का अविश्वासपात्र है अथवा सर्व निकृष्ट व्यक्ति है तो वह है जिसने इस आन्दोलन का विरोध किया। किसी भी मूल्य पर ऐसे व्यक्तियों से जनता समझौता करने के लिए तैयार नहीं। हिन्दी-प्रेमियों के दिल में इन हिन्दी के शत्रुओं के लिए कोई स्थान नहीं है। १ जनवरी ५८ को भी आचार्य भगवान्देव जी ने रोहतक सम्मेलन में कहा भी था कि "हिन्दी-रक्षा आन्दोलन के विरोधियों के लिए हरियाणे में कोई स्थान नहीं?" वास्तव में हो भी ऐसा ही रहा है। जो लोग हिन्दी-रक्षा आन्दोलन के विरोधी थे उनको आज मुँह छिपाने के लिए भी स्थान नहीं मिल रहा। अब हाथ मल-मलकर और सिर धुन-धुनकर पश्चाताप करते हैं। उन भोले भाइयों को क्या ज्ञान था कि यह आन्दोलन दबाने से न दब सकेगा और आर्यों का यह सत्याग्रह सफल हो जायेगा। उन अदूरदर्शियों ने यह स्वप्न में भी विचार नहीं किया था कि तुम्हारी ऐसी दुर्गति होगी कि तुम्हें कहीं मुँह छिपाने को भी ठौर न मिलेगा। अब समय चला गया, अब पछताने से क्या हो सकता है? जनता ने अपने और पराये की, असली और नकली की परीक्षा कर ली। जिन व्यक्तियों ने इस आन्दोलन का विरोध अपने से ऊपर के अफसरों को अर्थात् कैरों और नेहरू को प्रसन्न रखने के लिए किया, उनसे जनता प्रसन्न कैसे हो सकती है? क्योंकि यह किसी एक का नहीं, अपितु जनसाधारण का आन्दोलन था तथा जिन व्यक्तियों ने प्रजा के साथ मिलकर इस सत्याग्रह में भाग लिया उनको तो वर्तमान सरकार ने तत्काल ही दूध से मक्खी की भाँति निकाल कर फैंक दिया था। ठीक ही कहा है "नरपतिहितकर्त्ता द्वेष्यतां याति लोके, जनपद हितकर्त्ता त्यज्यते पार्थिवेन।"

—वेदव्रत

आज जिनकी चर्चा है

७ मास तक हिन्दी-रक्षा आन्दोलन एवं सत्याग्रह पञ्जाब में चलता रहा। इस सात मास के समय में दो मास तक तो आचार्य भगवान्देव जी ने प्रकट रूप में कार्य किया किन्तु १२ अगस्त को पञ्जाब सरकार ने इनको गिरफ्तार करने के लिये वारण्ट जारी कर दिये। जब आचार्य जी पुलिस के हाथ न लगे तो २० अगस्त को नरेला में जाकर पञ्जाब पुलिस ने आचार्य जी के घर पर ताला लगाकर मोहर लगा दी। पुनरपि आचार्य जी अप्रत्यक्ष रूप में अपना कार्य करते ही रहे। इस बीच में सरकार ने सभी उपाय (उचितानुचित) इनको पकड़ने के लिये किये। इनको 'इस्तिहारी इनामी मफरूर' घोषित किया। यहाँ तक सुना जाता है कि कुछ एक विरोधियों का षड्यन्त्र था कि आचार्य जी को गोली से उड़ा दिया जाये। किन्तु सभी प्रयत्न विफल हुए और ५ मास के गुप्तवास के पश्चात् १ जनवरी ५८ को श्री आचार्य जी रोहतक में जनता के समक्ष प्रकट हुए। हरयाणा प्रान्त की जत्था बन्दी का कार्य श्री आचार्य जी को दिया गया था। इन्होंने रोहतक से बाहर रहते हुए बहुत बुद्धिमत्ता पूर्वक हरयाणा के सत्याग्रह का सञ्चालन किया। आचार्य जी की इच्छा होते हुए भी भाषा स्वातन्त्र्य समिति की स्वीकृति न होने के कारण यह सत्याग्रह कर जेल में न जा सके।

आचार्य भगवान्देव

आन्दोलन के विषय में अधिक न लिखता हुआ दो शब्द आचार्य जी के पूर्व-परिचय के भी लिखना असङ्गत न होगा। आज हरयाणे में इनकी पर्याप्त चर्चा है। अस्तु।

आचार्य जी का पूर्व नाम भगवानसिंह था, किन्तु बचपन में उनको 'भानु' कहा करते थे। इनके पिता जी का नाम था चौ० कनकसिंह। आप गांव के नम्बरदार एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आचार्य जी की जन्मभूमि नरेला (देहली) है। आप अपने पिता के इकलौते पुत्र थे। पिता जी बहुत बड़े जमींदार थे।

सन् १९२९ में आचार्य आचार्य जी ने मैट्रिक परीक्षा पास की और मिशन कालेज देहली में प्रविष्ट हो गये। सन् ३१ में जब सरदार भक्तसिंह आदि को फांसी दी गई और देश में स्वतन्त्रता की लहर दौड़ी उस समय आपने कालेज छोड़ दिया।

कुछ वर्ष देश सेवा का काय करते रहे। इसके पश्चात् दयानन्द वेदविद्यालय देहली में श्री आचार्य राजेन्द्रनाथ जी के पास व्याकरणादि वेदाङ्गों का अध्ययन किया।

(शेष पृष्ठ १० पर)

भारतीय विद्यार्थी आन्दोलन की रूपरेखा और उसका भविष्य

(ले० श्री चन्द्रभानु गुप्त कोषाध्यक्ष उत्तरप्रदेश कांग्रेस कमेटी)

Every revolution the modern times has found students in forefront, because it is Powerful ought not be less attractive for that.

ये शब्द हमारे देश के महामानव विश्वबन्धु बापू ने विद्यार्थियों को सन १६२८ में प्रथम विद्यार्थी अधिवेशन के अवसर पर, सन्देश भेजते हुए कहा था—

विश्व की मानव-उन्मुक्त की हर क्रान्ति के अग्रदूत उस देश के विद्यार्थी रहे हैं। जब कभी भी किसी देश या मुल्क में, प्रतिक्रियावादी एवं प्रतिगामी ताकतों को ध्वंस करके उसके स्थान पर प्रगतिशील समाज की स्थापना का आन्दोलन उठ खड़ा हुआ है उसमें विद्यार्थी समुदाय सर्वदा अग्रिम दस्ते के रूप में रहा है। चाहे वह अमेरीका का स्वाधीन संग्राम हो, चाहे जर्मनी चीन तथा भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन अथवा सोवियत रूस की लाल समाजवादी क्रान्ति। इन देशों के राष्ट्रीय संघर्षों पर जब हम दृष्टिपात करते हैं और उसका विश्लेषण करते हैं तो हम इसी निराकरण पर पहुंचते हैं कि उन संघर्षों की प्राणवाहिनी शक्तियाँ युवक विद्यार्थी समुदाय का बलिदान और उनकी कर्तव्यनिष्ठा एवं आदर्श की वह महान् उच्चता ही रही है, जिसने सर्वदा उस आन्दोलन को प्रगति के पथ पर प्रशस्त करने में प्राणवाहिनी शक्ति का रूप धारण किया है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन भी इससे अछूता नहीं रहा है। हमारे राष्ट्रीय संघर्ष में विद्यार्थियों ने जिस वीरता, त्याग, निःस्वार्थ, बलिदान का परिचय दिया है वह इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में हमेशा के लिये अमर रहेगा। जब कभी भी देश की आजादी और भारत मां की पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने की पुकार उठी उस समय देश के विद्यार्थी वर्ग ने अपने को अगली कतार में ला खड़ा कर दिया। लाठी, गोली, फांसी आदि कोई दमन ऐसा नहीं था जिन्हें विद्यार्थियों ने हंसते-हंसते सहन न किया हो। एक तरफ जीवन की मधुर कल्पना व कामना तथा दूसरी तरफ देश के लिए बलिदान होने के आदर्शों पर उन्होंने हमेशा ही बलिदान को सहर्ष स्वीकार किया है। देश के राष्ट्रीय आन्दोलन चाहे वे सुधारवादी आन्दोलन रहे हों अथवा क्रान्तिकारी, इतिहास इसके ज्वलंत उदाहरण हैं।

विद्यार्थी आन्दोलन का प्रथम स्तर १८७४-१६१६

हम विद्यार्थी आन्दोलन को छः युगों में बांट सकते हैं। पहला स्तर का युग सन् १८७४ से १६१६ तक का है, जबकि विद्यार्थी आन्दोलन व्यक्तिगत स्तर तक ही सीमित था। सम्पूर्ण देश में सन् १८५७ के स्वाधीनता संग्राम की प्रतिक्रिया के समाप्ति के बाद जब देश ने करवट ली और आन्दोलन जब गुप्त क्रान्तिकारी संगठन में चलने लगा उस समय हमारे देश के विद्यार्थी व्यक्तिगत रूप से इन गुप्त आन्दोलनों एवं संगठनों में हिस्सा लेकर देश को आजाद करने के लिए कटिबद्ध थे। उस समय कोई भी संगठित विद्यार्थी आन्दोलन एक ठोस संघठन के रूप में नहीं था।

विवेकानन्द, दयानन्द, वंकिम बाबू तथा तिलक की देन

पिछली शताब्दी के अन्त में स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द, वंकिम बाबू तथा लोकमान्य तिलक के लेखों ने शिक्षा, यूरोपियन साहित्य की जन-प्रियता और सबसे अधिक पाश्चात्य देशों के उन देशभक्तों, जिन्होंने राष्ट्र और देश के लिए अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी, के ज्वलंत उदाहरणों ने विद्यार्थियों तथा नवजवानों में नवीन चेतना का संचार कर दिया।

विदेशी बायकाट की ज्वाला और आजादी की नई लहर

सन् १६०५ के प्रथम विदेशी बायकाट की प्रथम चिनगारी स्वयं लार्डकर्जन ने सुलगाई। जब उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय के कन्वैन्शन के अवसर पर बंगालियों की भावनाओं को "सौडावाटर के उभार" की संज्ञा दी। सारा पंडाल विरोध की आवाज से गूंज उठा, बंगाल का चप्पा-चप्पा वाइसराय के भाषण को अपने लिये अपमानजनक समझने लगा। कलकत्ता हाईकोर्ट के बार के नेता रासबिहारी घोष जिन्हें उस समय के बुद्धिजीवियों में प्रमुख माना जाता था, वे लार्डकर्जन के इस आक्षेप को राष्ट्र का अपमान बतलाया और खुले आम इसका विरोध किया।

इसी समय लार्ड कर्जन के "बांटो और राज्य करो" की नीति के अनुसार बंगाल विभाजन के प्रस्ताव ने देश में क्रान्ति की अग्नि की ज्वाला को और अधिक प्रज्वलित कर दी।

तत्कालीन अन्तराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव

दक्षिणी अफ्रीका में रहने वाले भारतीयों का अपमान, छोटे से राज्य जापान द्वारा रूस को शिकस्त, १६०४ व १६०५ का मंचूरिया युद्ध ने विप्लव की इस धधकती ज्वाला में घी का काम दिया। छोटे से राष्ट्र जापान ने अपनी देशभक्ति तथा वीरता द्वारा यूरोप के राष्ट्रों की तथाकथित उच्चता तथा महत्ता छिन्न-भिन्न कर दिया और सम्पूर्ण एशिया में उत्साह की एक लहर फैला दी। देश का विद्यार्थी वर्ग सक्रिय हो उठा। बंग-भंग के विरोध में समस्त देश में सभायें होने लगीं, सम्पूर्ण देश में बृटिश वस्तुओं का बहिष्कार होने लगा। धीरे-धीरे यह आन्दोलन स्कूल तथा कालेजों में फैलने लगा। इडेन हिन्दू होस्टल में लार्ड कर्जन का पुतला जलाया गया, बृटिश कपड़ों की होली जलाई गई। परीक्षाओं का बाईकाट होने लगा, सरकारी एवं विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने इसके विरुद्ध अनुशासन की कार्यवाही करने के लिये सरकूलर भेजे। फिर क्या था इसने अग्नि में घी का काम किया। रंगपुर में गवर्नमेन्ट स्कूल का बाईकाट कर राष्ट्रीय स्कूल की स्थापना की गई। विद्यार्थियों ने बुरी बाजार में बृटिश दुकानों पर पिकेटिंग करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे बंगाल तथा देश के सभी कालेजों में हड़ताल, बाइकाट एवं पिकेटिंग शुरू हो गई।

देश की इस विस्फोटक परिस्थिति में विद्यार्थियों तथा नौजवानों ने क्रान्तिकारी पार्टियाँ बनाना शुरू कर दिया। १६०१ में कलकत्ता व ढाका में दो अनुशीलन की स्थापना हुई, १६०६ में "युगान्तर" का निर्माण हुआ। महाराष्ट्र में यंग इण्डिया लीग की स्थापना हुई। इस प्रकार सम्पूर्ण उत्तरी भारत में करीब-करीब पांच सौ क्रान्तिकारी पार्टियों का जाल सा बिछ गया। कहने की आवश्यकता नहीं कि विद्यार्थी समुदाय इन तमाम संघठनों की रहनुमाई कर रहा था।

देश विद्रोह का नई मंजिल पर

इसी समय पंजाब में विद्यार्थियों एवं नौजवानों को संगठित करने के लिए पंजाब "नई हवा" नामक क्रान्तिकारी संगठन का निर्माण हुआ और इस समय तक श्यामाजी कृष्ण वर्मा तथा वी० डी० सावरकर ने इंगलैण्ड में विद्यार्थियों को देश में क्रांतिकारियों को सहायता करने के लिए संगठित करना शुरू कर दिया।

लार्ड मिन्टो के शासनकाल में विदेशी आन्दोलन सारे देश में फैल गया, यू० पी०, पंजाब, तामिलनाड, आन्ध्र, सी० पी०, महाराष्ट्र और बंगाल में यह आन्दोलन अपनी चरम-सीमा पर पहुंच गया।

बंगाल में एक मजिस्ट्रेट ने कोड़े से पिटवाया, पिटवाने के बाद उसका ट्रान्सफर मुजफ्फरपुर को हो गया, जहाँ खुदीराम बोस ने उसकी हत्या करने की कोशिश की।

इसी प्रकार सैंकड़ों क्रान्तिकारी घटनायें इस युग में हुई जिनका विवरण इस प्रकार छोटे से लेख में देना सम्भव नहीं है।

(क्रमशः)

पर्वों की उपयोगिता

[लेखक—ब्रह्मचारी महादेव सिद्धान्त शास्त्री]

पर्व सब भाषाओं की जननी देववाणी संस्कृत का शब्द है। "पर्व-पूरणे" अर्थ में भ्वादिगण की परस्मैपदी सेट् धातु से उणादिकनिन् प्रत्यय करने पर पर्व शब्द सिद्ध होता है। अथवा पॄ-पूरणे धातु से उणादिवनिन् प्रत्यय से पर्व शब्द सिद्ध होता है। पर्व शब्द निम्न अर्थों में कोषों में मिलता है।

पर्वस्यादुत्सवे ग्रन्थौ प्रस्तावे विष्णुवाहिष्णु
दर्शप्रतिपदयोः सन्धौ।

पर्व शब्द कोषों में उत्सव, ग्रन्थी, अर्थों में प्रसिद्ध है। अतःएव महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज अपने उणादिकोष की व्याख्या में इसकी निरुक्ति करते हैं कि—"पिपर्तीति पर्व, ग्रन्थि वा" अर्थात् जो पवित्र करे उसे पर्व कहते हैं।

क्योंकि ग्रन्थि पर्व का महत्त्व इतना है जितना कूये में पड़े हुए व्यक्ति के लिए ग्रन्थी युक्त रज्जु होने के कारण मनुष्य उस कूए से शीघ्रता व सुखपूर्वक निकलता है अन्यथा वह उसमें दुःख पाता है। ठीक इसी प्रकार इस संसार रूपी कूए में पड़े हुए के लिए पर्व रूपी रज्जु हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों ने निकलने का साधन बताया है। इसके द्वारा मनुष्य अपना जीवन सुख पूर्वक समाप्त कर सकता है।

पर्व इसलिए मनाते हैं कि अपने जीवन में जो नित्य परिश्रम करने से कमियाँ या कमजोरियाँ आती हैं, उसका उस समय विस्मरण करके आगे उन्नत-पथ पर चलने का साहस करते हैं। यथा—कूए में पड़ा हुआ आदमी जब ऊपर को आते समय ग्रन्थी के पास आता है तो वह आनन्दित होता है और वहाँ थोड़ा विश्राम करता है। वह पुनः दुगने जोर एवं उत्साह से आगे बढ़ता है। इस प्रकार करते हुए अपने स्थान पर पहुंच जाता है। ठीक इसी प्रकार इस जीवन-यात्रा में जब-जब भी पर्व आते है तब-तब पुरुष आनन्द विभोर हो जाता है और पूर्व का कष्ट भूलकर अधिक नवीन उत्साह को लेकर अपनी इष्ट प्राप्ति की ओर अग्रेसर होता है। वह लक्ष्य की पूर्ति करता है।

प्राचीनकाल में पर्व उन्नति का साधन था, परन्तु आज इस साधन को उन्नति का न मानकर अवनति का साधन माना जाता है। यथा-प्राचीन काल में हमारे पूर्वज इन दिनों में सभा आदि करके अपनी कमियों को जान उनको दूर हटाने का प्रयत्न व उन्नति के साधन सोचते थे और पूर्व की अपेक्षा अधिक उत्साह पूर्ण अग्रसर होते थे। परन्तु आज इनके स्थान पर नाच-गान करना मद्यादि मादक द्रव्यों का सेवन करना, तमाशा-साङ्ग-सिनेमा आदि का देखना, निरपराध पशुओं का वध करना, चोरी-जारी-डाके आदि डालनादि कुकर्मों को करके पर्व के महत्त्व को नष्ट करते हैं और अपने जीवन को भोग-विलास में फँसाते हैं।

पर्व चार प्रकार से मनाये जाते हैं—

१—आवश्यक कार्य के लिए यज्ञादि का रचना तथा रूढ़ार्थ बहद् यज्ञ का विधान। यथा—दर्शेष्टि, पौर्णमासि······।

२—किसी ऋतु परिवर्तन की सूचना दे देने के लिये।

३—सर्वसाधारण के मनोरंजन के लिये।

४—किसी युग-प्रवर्तक महापुरुषों की स्मृति के लिये।

चार ही वर्ण हैं, उस दृष्टि से भी चार प्रकार से पर्व मनाते हैं।

१—यज्ञ-देव पूजाङ्गतिकरण दानेषु=देव-पूजा—विद्वानों का सत्कारादि भी यज्ञ है, सुपात्रों को दान देना भी यज्ञ हैं। ब्राह्मण ग्रन्थ में कहा भी है कि—"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं उन सब कर्मों में यज्ञ कर्म सर्वश्रेष्ठ है। श्रेष्ठ कर्मों का करना मनुष्य का परम धर्म है क्योंकि इसके

बिना मनुष्य उन्नति के पथ पर नहीं चल सकता। अतः एव राजर्षि मनु महाराज कहते हैं—

ब्रह्मयज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृ यज्ञञ्च यथाशक्ति न हापयेत ॥

अर्थात्—ब्रह्मयज्ञ—सन्ध्या व स्वाध्याय करना। ब्रह्मयज्ञ कहलाता है। देवयज्ञ—अग्निहोत्रादि करना। भूतयज्ञ—भूतयज्ञ वह कहलाता है जो प्राणीमात्र पर दया की भावना से देखता हो तथा साथ ही सद्-व्यवहार करता हो। नृयज्ञ=अतिथियज्ञ—उसे कहते हैं कि जो अतिथि अपने घर पर आये उसकी सत्कार पूर्वक सेवा करना। अतिथि उसे कहते हैं—जिसको आने की कोई तिथि निश्चित न हो! पितृ-यज्ञ—अपने माता-पिता आदि श्रेष्ठों की सेवा करना पितृयज्ञ कहलाता है।

ब्राह्मण काल में यज्ञ का अधिक प्रचार था। जो हम अमावस्या को यज्ञ करते हैं उसे दर्शेष्टि यज्ञ कहते हैं और जो पूर्णिमा का यज्ञ है उसे पौर्णमा-सेष्टि यज्ञ कहते हैं। यह पाक्षिक यज्ञ वायुशोधनार्थ होते हैं। इसी प्रकार नया अन्न घर आने पर जो यज्ञ रचा जाता है वह शारदीय नवस्येष्टि यज्ञ तथा वासंती-नवस्येष्टि यज्ञ। ये क्रम से दिवाली तथा होली पर मनाये जाते हैं।

तथा सूर्य के दक्षिणायन होने पर या उत्तरायण होने पर जो यज्ञ रचा जाता है उसे संक्रान्ति कहते हैं। जब कभी अनावृष्टि होती है तब जो यज्ञ रचा जाता है उसे वर्षेष्टि यज्ञ कहते हैं। इसी प्रकार अतिवृष्टि में भी यज्ञ रचा जाता है। गृहस्थ के जब पुत्रादि नहीं होता तब पुत्रेष्टि यज्ञ रचा जाता है। इनके अतिरिक्त जो यज्ञ उत्सव, संस्कार आदि में किये जाते हैं वह सब पर्वों में ग्रहण किये जाते हैं।

२–ऋतु परिवर्तनों पर जो पर्व मनाये जाते हैं वे ऋतु-प्रवर्तनीय पर्व कहलाते हैं अथवा जो पर्व ऋतु समाप्ति वा आरम्भ की सूचना देवे उसे ऋतु प्रवर्तनीय पर्व कहते हैं। यथा–विजयादशमी का पर्व वर्षा ऋतु की समाप्ति का सूचक है। यह पर्व इसलिए मनाया जाता है कि वृष्टि के कारण जो वातावरण उत्पन्न हुआ था उसको शुद्ध करने तथा जो वृष्टि से घरादि खराब हो गये थे, वे इस पर पुनः ठीक-ठाक किये जाते हैं। याता-यात का भी कार्य वृष्टि के कारण ठप होता है क्योंकि प्राचीन काल में न तो इतनी सड़कें ही थीं, न आज-कल की भाँति यान ही थे। इसलिए जो वृष्टि के पूर्व शकटादि खोलकर रखे जाते थे, वे सब ठीक करके आज से व्यापारादि के लिये चलते थे। उस ओर क्षत्रिय भी वृष्टि के कारण अपनी विजय-यात्रा बन्द करते थे, अतः वे भी इस अवसर पर अपने शस्त्रादि ठीक करके, विजय-यात्रा के लिए चलते थे।

इसी प्रकार शिशिर के अन्त में ऋतुराज वसन्त का आगमन होता है। उसकी सूचना के लिए पूर्व ही वसन्त पंचमी का पर्व मनाया जाता है।

३—पर्व के मनाने का तीसरा कारण है मनोरं-जनार्थ व हृदय प्रसन्नतार्थ शरीर को स्वस्थ रखने के लिए यह परमावश्यक है कि अपने शरीर व मन को प्रसन्न रखें। यदि मन तथा शरीर से निरन्तर चिन्तादि में लगा रहे तो मनुष्य का स्वास्थ्य कभी ठीक नहीं रह सकता तथा वह सुखी भी नहीं रह सकता। क्योंकि कहा भी है कि "एकरसाभ्यासो दुर्बल कारणाम्" एक रस में रहना ही दुर्बल का कारण है। बारह महीने रात-दिन परिश्रम करना ठीक नहीं, कुछ दिन अवकाश भी चाहिए। शरीर को विश्राम देकर पुनः पूर्व से अधिक जोर से अपने आगे कार्य में लगें। मनुष्य का जीवन वही उत्तम है जो सर्वदा प्रसन्न रहे। यथा किसी कवि ने कहा भी है—

जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है।
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं॥

अतः हमारे पूर्वजों ने पर्व मनोरंजन के लिए भी बनाये हैं। उस दिन अपनी कार्यादि की चिन्ताओं को छोड़कर खूब आनन्दित होकर रहें। जो व्यक्ति सर्वदा चिन्ता में व्यस्त रहता है वह किस दशा को प्राप्त होता है, उसको मुनिवर चाणक्य जी कहते हैं कि—

चिन्ता चिता द्वयोर्मध्ये चिन्ता चैव गरीयसी।
चिता दहति निर्जीवं चिन्ता चैव सजीवकम्।

अर्थात् चिन्ता और चिता में चिन्ता ही बड़ी है, क्योंकि चिता निर्जीव को जलाती है और चिन्ता सजीव को जला देती है। उदाहरणार्थ—प्रशान्त महासागर के मारकीशन जाति ने जब से उत्सव पर्वादि मनाने छोड़ दिये तब से मृत्यु के मुख की ओर बढ़ रहे हैं। आज से पूर्व उनकी संख्या १ लाख ६ हजार थी, परन्तु आज वे २१०० से भी कम हैं।

इस उदाहरण से सिद्ध होता है कि जीवन-यात्रा में प्रसन्नता की कितनी आवश्यकता है। मनोरंजन सूचक पर्व वसन्त ऋतु है। जब यह विराजमान होता है तब प्रकृति की शोभा अवर्णनीय हो जाती है। चारों ओर पीली-पीली रेशमी चादर ओढ़े हुये स्त्री की तरह दिखाई देती है या भूमि माता ने पीली रेशमी साड़ी पहनी हो। इस समय चारों ओर सरसों के फूल फसल की शोभा बढ़ाते हैं। यही वसंत पंचमी है।

इसी प्रकार "हरियाली तीजों" भी वर्षा ऋतु में जब चारों ओर हरियाली ही हरियाली होती है, मेघ-मण्डलों से आकाश घिरा रहता है मानो कि आकाश मन को हरता हो।

४—महापुरुषों की यादगार में पर्व मनाये जाते हैं। जो जाति अपने पूर्वजों को याद नहीं करती वह कभी भी उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकती। जिस देश ने अपने मर्यादा पुरुषों का स्वागत किया उसके जीवन से शिक्षाग्रहण की, वही देश व जाति उठती है—यथा राम नवमी, कृष्ण जन्माष्टमी तथा माताओं में सीताष्टमी, यह तो प्राचीन काल के। आधुनिकों में स्वामी दयानन्द जी महाराज, पं० लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज आदि के बलिदान-दिनों पर पर्व मनाते हैं।

जिस प्रकार चार वर्ण हैं उसी प्रकार पर्व भी चार स्थानों में विभाजित किये हैं। उन उनमें वह वर्ण विशेष माना जाता है। यथा—ब्राह्मणों का श्रावणी, क्षत्रियों का विजयादशमी, वैश्यों की दीवाली और शूद्रों की होली।

—०—

(पृष्ठ ५ का शेष)

सन् १९३९ ई० में आप हैदराबाद सत्याग्रह में जेल में गये थे। अगस्त १९४२ में आपने गुरुकुल झज्जर के आचार्य पद को सम्भाला। तबसे आप इलाके में सेवा कार्य कर रहे हैं। गत वर्ष आप आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के उपप्रधान चुने गये। आप सफल चिकित्सक और अनुभवी रजिस्टर्ड वैद्य भी हैं।

सन् १९२९ से ४७ तक आप कांग्रेस के सदस्य रहे। किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात कांग्रेस से सर्वथा पृथक् हो गये। सन् २९ से ४७ तक अंग्रेज सरकार की सी० आई० डी० आचार्य जी के पीछे लगी रहती थी क्योंकि आचार्य जी ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के आन्दोलन में पर्याप्त भाग लिया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात आशा थी कि अब तो अपनी ही सरकार है, अब तो सी० आई० डी० से पिण्ड छूट जायेगा। किन्तु अब अपनी सरकार ने गुप्तचर लगा ही दिये।

आचार्य जी का त्याग और तप दोनों ही अपूर्व हैं। लाखों की जायदाद सम्पत्ति को छोड़कर आपने देश सेवा का व्रत ग्रहण किया है। रहन-सहन, वेष-भूषा, खान-पान, एकदम सादा। पहनने के लिये कौपीन, कटिवस्त्र और चादर यही आपके वस्त्र हैं। सदा खद्दर धारण करते हैं वह भी बहुत मोटा पतले वस्त्र को देखकर हंसी किया करते हैं कि "ऐसा प्रतीत होता है कि यह कफन आ गया।" खान-पान सर्वथा सात्त्विक है, नमक, मिर्च मसाला, गुड़ शक्कर, खांड इत्यादि किसी प्रकार का मीठा आदि का सर्वथा सेवन नहीं करते। घी, दूध, दही, छाछ आदि सब कुछ गाय का ही ग्रहण करते हैं भैंस का नहीं। यदि गाय का न मिले तो सूखा भोजन ग्रहण करते हैं।

आचार्य जी का आर्षपाठविधि पर बहुत श्रद्धा है। आर्यसमाज के प्रचार एवं महर्षि दयानन्द के कार्य को फैलाने के लिये रात-दिन लगे रहते हैं। कार्य करने की धुन और शक्ति इतनी है कि जब तक कार्य पूर्ण न हो जाये दिन-रात, सर्दी-गर्मी, वर्षा की परवाह नहीं करते। ऐसी तप और त्याग की साक्षात् मूर्ति को साक्षात् पूजनीय महान् देव को नतमस्तक श्रद्धाञ्जलि होकर हमारा कोटिशः प्रणाम!

आर्यसमाज का बहुमुखी संग्राम

(ले० कुन्दनलाल शर्मा "प्रभाकर" ततारपुर खालसा)

खूब चली भारत में वैदिक वीरों की तलवार।
कोई डटा ना रण में मानी विरोधियों ने हार॥ टेक

सबसे पहले ऋषि ने देखा देश पराया दास।
बृटिश की जड़ काट दई रच सत्यार्थ प्रकाश।
काँग्रेस तो अँग्रेजों की पार्टी थी खास।
वह मंत्र दिया फूँक ऋषि ने उनका ही किया नाश।

आर्यवीरों ने झेले दिल खोल कर अत्याचार॥१॥

ईसाई और यवन मिश्नरी खेल रही थी चाल।
आर्य जाति को फँसाने हेतु बिछा चुकी थी जाल।
वीर ऋषि जी डटे युद्ध में किया हाल बेहाल।
सभी जगह किए दुष्ट पराजित कर दिया खूब कमाल।

सूद सहित वापिस ले लिए फिर खोल शुद्धि का द्वार॥२॥

वेद का पढ़ना छूट गया था पढ़ते पोप पुराण।
भ्रम उत्पादक लिखी कथायें थीं जिनके दरम्यान।
धज्जी धज्जी उड़ा दई जब चले ऋषि के बाण।
झाड़ी सभी कँटीली काटी साफ किया मैदान।

पुनर्विवाह किया जारी जब विधवा की सुनी पुकार॥३॥

पशु असंख्य कटते थे देवी भैरव के नाम।
बता दिया वैदिक वीरों ने नहीं यह अच्छे काम।
सच्चा ओम् नाम बतला दिया रट सुबह और श्याम।
कुन्दनलाल कवि प्रभाकर ततारपुर खालसा ग्राम।

निज भाई कह गले लगा लिए भंगी और चमार॥४॥

हमारी हिन्दी सत्याग्रह यात्रा

(ले० ब्र० मनुदेव शिवरायण व्याकरण शास्त्री)
गुरुकुल झज्जर

जिस समय हिन्दी सत्याग्रह को चलते हुए चार मास से अधिक समय हो चुका था और सत्याग्रह में अभी तक हमारे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भाग नहीं लिया था किन्तु सभी की उत्कट इच्छा थी कि सत्याग्रह में भाग लें और जेलों को भर दें। श्री हरिशरण जी सत्याग्रह में जाने की इच्छा वालों के नाम लिखने लगे तो छोटे बड़े सभी ब्रह्मचारियों ने अपने अपने नाम लिखवा दिये।

नाम लिखवाने वालों में से केवल हम ११ ब्रह्मचारियों को प्रथम जत्थे में सत्याग्रह में जाने की आज्ञा प्राप्त हुई, जिनके नाम ये हैं—

ब्र० सोमवीर, ब्र० मनुदेव, ब्र० यशपाल, ब्र० देशपाल, ब्र० भीमसेन, ब्र० दयानन्द, ब्र० चन्द्रपाल, ब्र० सत्यदेव, श्री वेद प्रकाश और श्री माल्हाराम। हमारे नेता सर्व सम्मति से ब्रह्मचारी सोमवीर जी चुने गये।

१७ अक्टूबर १६५७ को सायंकाल के समय गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा अधिकारियों ने सत्याग्रहियों को शानदार विदाई दी। विदाई के समय श्री वेदव्रत जी अधिष्ठाता श्री हरिशरण जी व्यायामाचार्य श्री फतहसिंह जी भण्डारी पं० गंगाराम जी और बलदेवसिंह जी बी० ए० आदि महानुभावों के वक्तव्य हुए और सबने अपने कर्तव्य पर डटे रहने के लिये कहा। पुनः सत्याग्रहियों के भी वक्तव्य हुए और सभी ने प्रतिज्ञा की कि जबतक हमारी सम्पूर्ण मांगें न मान ली जायेंगी हम चैन से नहीं बैठेंगे।

१८ अक्टूबर को प्रातः ६ बजे हम गुरुकुल से सत्याग्रह यात्रा पर चल पड़े। उस समय रोहतक में पुलिस का दमनचक्र पञ्जाब के सब स्थानों से अधिक था, इसलिये रोहतक में ही सत्याग्रह करने का निश्चय किया। ८ बजे हम रोहतक पहुंच गये, वहां हमारे चित्र लिये गये। चित्र लेने के अनन्तर ११ बजे से झज्जर रोड रोहतक से ब्रह्मचारी सोमवीर जी के नेतृत्व में सत्याग्रह-प्रदर्शन प्रारम्भ कर दिया और २ घण्टे प्रदर्शन के पश्चात् १ बजे हिन्दी भाषा के नारे लगाते हुए तथा सत्याग्रह के विज्ञापन बांटते हुए सिटी पुलिस कोतवाली में हम गिरफ्तार कर लिये गये।

गिरफ्तार करके हम थाने में बिठा दिये गये, थोड़ी देर के अनन्तर एक सिख महाशय आये और डण्डा हाथ में लेकर प्रश्न पूछने प्रारम्भ किये तुम सत्याग्रह में अब से पहले क्यों नहीं आये? विद्यार्थियों को तो सत्याग्रह में भाग नहीं लेना चाहिये, हिन्दी पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है इत्यादि, इत्यादि प्रश्नों का समुचित उत्तर पाकर सिख महाशय चुप हो गये। कुछ काल पश्चात् फिर श्री आचार्य भगवान्देव जी का पता पूछने लगे, परन्तु किसी सत्याग्रही ने उनका पता नहीं बताया। और पता पूछने में सफल नहीं

हुए तो श्री आचार्य जी को बुरा-भला कहने लगे, "डाकू है, चोर है, सरकार के साथ गद्दारी करता है, त्यागी और तपस्वी कहलाता है परन्तु चोरों की तरह लुकता फिरता है, हमारे सामने आये हम देखें उसके त्याग और तप को" हमने कहा कि सत्याग्रह सफल होने के पश्चात देख लेना और हम देखेंगे कि उस समय आप उनका क्या करते हैं। अन्त में निराश होकर उठकर चले गये और हम बरामदे में बिठला दिये गये।

सायंकाल साढ़े चार बजे हम दो दलों में विभक्त कर दिये गये, प्रथम दल में थे "सोमवीर मनुदेव देशपाल, कंवरपाल, दयानन्द और सत्यदेव" इनको रात्री में झज्जर थाने में लाकर नरक के एकमात्र स्थान हवालात में रख दिया गया। दूसरे दल में थे यशःशाल, भीमसेन, चन्द्रपाल, वेदप्रकाश और माल्हाराम इनको रोहतक के सदर थाने की हवालात में रखा गया और १६-१० को मजिस्ट्रेट के सन्मुख पेश करके डिस्ट्रिक्ट जेल रोहतक में भेज दिया गया और १६-११-५७ को छः महीने की सजा सुना दी गई। प्रथम दल को १६ अक्टूबर को नरक (हवालात) से निकाल कर हथकड़ी लगा झज्जर मजिस्ट्रेट के आगे किया गया और मजिस्ट्रेट ने २० हजार की जमानत जो ३१ ता० को ५ हजार करदी गई थी सुना दी गई इसके पश्चात् सायंकाल रोहतक डिस्ट्रिक्ट जेल में रोकने के लिये रोहतक लाये परन्तु विलम्ब हो जाने के कारण जेल वालों ने नहीं लिये अतः रात्रि में फिर रोहतक सदर थाने के नरक (हवालात) में रखे गये। २० अक्टूबर को प्रातः काल फिर नरक से निकाल कर जेल में ले जाने लगे रास्ते में हम हिन्दी भाषा के गगन भेदी नारे लगाते हुए डिस्ट्रिक्ट जेल पहुंचे और १२ बजे रोहतक डिस्ट्रिक्ट जेल में हिन्दी भाषा अमर रहे के नारे लगाने के कारण बन्द कर दिये गये। ३१ अक्टूबर को हमारी पेशी हुई और धारा १०७-१५१ लगाई और अभियोग लगाये कि झज्जर में सिलानी रोड पर खड़े हुए, सिखाशाही नहीं चलेगी, नेहरूशाही नहीं चलेगी, सुमेरसिंह का बदला लेके छोड़ेंगे आदि नारे लगा रहे थे और लोगों को भड़का रहे थे, सिख दुकानदारों को मारने की तथा दुकानों को जलाने को कह रहे थे जबकि हमने रोहतक में सत्याग्रह किया था और हिन्दी रक्षा समिति के विरुद्ध कोई नारा नहीं लगाया था पुनः ६-११-५७ की पेशी लगा कर २५ अक्टूबर को छः महीने की सजा सुना दी गई।

जेल के अन्दर नित्यप्रति प्रातःकाल यज्ञ संध्या तथा उपदेश होते थे, सायंकाल को बाजे और ढोलक के सहित भजनोपदेश तथा व्याख्यान होते, जिसमें कैरोंशाही तथा नेहरूशाही की खूब निन्दा होती थी जेल की ओर से १ दरी, १ चटाई, १ कम्बल, १ सोड़ और भोजन करने के लिये लोहे की बाटी (थाली) दी जाती थीं। खेलने के लिये खेलने का सामान भी दिया जाता था भोजन के लिये १६ अंगुल चौड़ी रोटी तथा चावल दिये जाते थे।

इस प्रकार हमें २८ दिसम्बर ५७ को २ महीने १३ दिन डिस्ट्रिक्ट जेल रोहतक में रखकर रात के १२ बजे आर्यसमाज की विजय हो जाने पर छोड़ दिया गया। जेल के फाटक के आगे गुरुकुल अधिकारियों ने हमारा स्वागत किया और २६ दिसम्बर को झज्जर में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने तथा झज्जर की जनता ने सत्याग्रहियों का जलूस निकालकर भव्य स्वागत किया। तत्पश्चात् सायंकाल के समय सत्याग्रह सफल कर और आर्यसमाज की विजय का डंका बजाते हुए गुरुकुल में प्रवेश किया।

--०--

"हमारी राष्ट्रिय भाषा"

(ले० श्री कृपालचन्द्र बी० ए०)

आज हम पूर्णरूप से स्वतन्त्र हैं। भारत एक "सर्व प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य" बन चुका है। किन्तु हम यह सब कुछ होते हुए भी अपने आपको स्वतन्त्र नहीं कह सकते! क्यों? इसका उत्तर स्व० आदरणीय श्री प्रेमचन्द जी के शब्दों में अधिक स्पष्ट मिलता है। "हमारी पराधीनता का सबसे अपमानजनक, सबसे व्यापक, सबसे कठोर अंग अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व है। कहीं भी वह अपने नंगे रूप में नजर नहीं आता। सभ्य जीवन के प्रत्येक विभाग में अंग्रेजी भाषा ही मानो हमारी छाती पर मूंग दल रही है। यदि आप हम इसके प्रभुत्व को तोड़ सकें तो पराधीनता का आधा बोझ हमारी गर्दन से उतर जाएगा।" (श्री प्रेमचन्द्र जी अंग्रेजी भाषा के प्रभुत्व को आधी गुलामी समझते थे) अर्थात् अंग्रेजी का प्रभुत्व आधी गुलामी के बराबर है! आज स्वतन्त्र भारत में भी वह प्रभुत्व ज्यों का त्यों बना हुआ है। अतः हम कह सकते हैं कि हम समूचे रूप से स्वतन्त्र हैं।

राष्ट्रभाषा की अनिवार्यता

राष्ट्र और राष्ट्र भाषा का आत्मा और शरीर जैसा सम्बन्ध है। राजनीतिक और आर्थिक स्वतन्त्रता तो पत्ते और फूल इत्यादि के सदृश होती है। असली जड़ तो बौद्धिक स्थान स्वतन्त्रता होती है। हर पतझड़ में पत्ते इत्यादि सूख-सूखकर झड़ जाते हैं किन्तु फिर वसन्त जरूर आता है और वही सूखा पेड़ हरा-भरा हो उठता है! दूसरी ओर यदि किसी पेड़ की जड़ एक बार भी काट दी जाए तो वह सदा के लिए नष्ट हो जाता है। हजार ऋतुराज वसन्त भी उसे नहीं पनपा सकते! राजनैतिक औद्योगिक और आर्थिक विकास से कहीं ज्यादा जरूरी साहित्य और संस्कृति का विकास होता है।

भारतीय इतिहास के पन्ने पलटिये, देश पर कितने पतझड़ आए। कितनी बार इसकी हरियाली लूट ली गई। किन्तु हमारी सभ्यता और संस्कृति की पाताल तक पहुंची हुई जड़ इसे सदैव बचाए रखती थी! यहाँ अंग्रेज आए। यह रहस्य उनकी समझ में आ गया 'उन्होंने नाश के कीड़े उनकी जड़ में छोड़ दिए और आज हम उन कीड़ों को अपनी राजनैतिक, औद्योगिक और आर्थिक प्रगति में सहायक समझ कर पाल रहे हैं! ऐसा करके हम राष्ट्र को रसातल की ओर धकेल रहे हैं। साहित्य और संस्कृति का यथोचित विकास ही राष्ट्र को सबल बना सकता है। उसी जगद्गुरु, पारस पत्थर, और सोने की चिड़िया भारत तक पहुँचने के लिए हमें राष्ट्र-भाषा हिन्दी का पुल ही अपनाना पड़ेगा।

अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा की जगह प्रयोग करके हम आर्यावर्त को कब्र में धक्का दे रहे हैं। हमें उन विशाल हृदयों पर पूरा भरोसा और गर्व है जो कहते हैं कि हम सब काम अँग्रेजी द्वारा ही कर लेंगे। हाँ, बड़ा मनोहर होगा वह दृश्य जब ३७ करोड़ भेड़ें महाराणी अंग्रेजी के पीछे फिरती दीखेंगी और लोग कहेंगे कि यही है वह भारत जो कभी विद्या का भण्डार था, जगद्गुरु कहलाता था और जिसने हम जैसों को सदियों तक ज्ञान का प्रकाश दिखाया था। किन्तु आज सब कुछ खोकर भिखारी और नकलचियों का देश हो गया है। आज उसकी यहाँ तक बदतर हालत हो चुकी है कि उसकी कोई अपनी भाषा भी नहीं है।

एक दफा भाई परमानन्द जी एम० ए० के पास उनके मित्र का (भारत से) पत्र गया। जब उन्होंने लिफाफा फाड़ कर पत्र निकाला तो उनके एक अमरीकन मित्र बड़े गौर से उस पर टकटकी लगाए देख

रहे थे। दुर्भाग्यवश वह पत्र अंग्रेजी में था। तिस पर उस मित्र ने पूछा, "क्या आप भारतीयों की कोई भाषा नहीं है जिसमें आप अपनी घरेलू काम कर सकें? क्या किसी भी भारतीय की इस पर शर्म से गर्दन नहीं झुक जाएगी।

महत्त्व

एक अंग्रेज डब्ल्यु. एच. किंग ने कहा है, किसी भी राष्ट्र के विचार और भावनाओं का प्रतीक उस का साहित्य होता है और साहित्य बिना राष्ट्र और राष्ट्रभाषा के नहीं हो सकता है। साहित्य देश के प्रोटोप्लाजम हैं जिनमें उसका जीवन रहता है तभी तो चासर, सेक्सपीयर और डीकन्स को इंगलिस राष्ट्र की आत्मा कहा गया है। अतः राष्ट्र और राष्ट्रभाषा का शरीर और आत्मा वाला संबंध ही है।

यह सब कुछ भूलकर, सत्य पर पर्दा डालते हुए हम फिर भी "अंग्रेजी; अंग्रेजी" ही की रट लगाते हैं। बड़ी हमदर्दी है इस भाषा से। अच्छा तो चलो इसी को लेकर राष्ट्रभाषा के महत्व को समझें। चौदहवीं शताब्दी से प्रत्येक इङ्गलैंडवासी अपने पड़ोसी को पक्का और अपने जैसा ही अंग्रेज समझता है। आज वे भूल चुके हैं कि वे ब्रीटन्स, एङ्गल्स, सैक्सन्स, डैन्स नार्मन्स इत्यादि थे राष्ट्र-भाषा ने उन्हें एक बना दिया है। इसीलिये तो स्तालिन ने राष्ट्र के लिये परमावश्यक वस्तु भाषा को बताया है।

अभी हम भारतीयों का यह प्रथम कर्तव्य हो जाता है कि हम मिल-जुलकर इस परतन्त्रता के अन्तिम चिराग को बुझाकर राष्ट्रीय भावनाओं को जागरूक करने के लिये राष्ट्रभाषा हिन्दी की ज्योति जगादें और महात्मा जी के शब्दों को कार्यान्वित करने में जुट जायें। उन्होंने कहा था, यदि मुझमें शक्ति होती तो मैं अपने लड़के और लड़कियों को विदेशी माध्यम द्वारा शिक्षा आज ही बन्द कर देता और पाठशालाओं और विश्वविद्यालय के अध्यापकों से कहता कि यदि आज से भारतीय भाषाओं द्वारा पढ़ाना आरम्भ न करोगे तो तुम निकाल दिये जाओगे। विदेशी भाषा का माध्यम इतना बड़ा कलंक और पाप है कि इसको हटाने में विलम्ब नहीं होना चाहिये।

इस पवित्र कार्य में सफलता प्राप्ति के हित यदि किसी को किसी भी प्रकार भी आर्थिक या दूसरी हानियाँ होती हैं तो एक अच्छे नागरिक की भाँति हँस-हँसकर झेलनी चाहियें। हमें दूसरे स्वतन्त्र देशों से पाठ सीखना चाहिये। १२ अगस्त १९४५ को जापान के सम्राट् ने जापान रेडियो पर आत्म-समर्पण की घोषणा की तो जापान वालों की क्या दशा हुई यह डा० मिचिहिको हाचिया के शब्दों में सुनिए, "मैं सोचता था शायद खाइयाँ खोद कर अन्तिम दम तक लड़ते रहने की आज्ञा मिलेगी किन्तु सम्राट् द्वारा पराजय और आत्म-समर्पण कर देने की घोषणा सुनकर मैं खोया-सा रह गया—अस्पताल में थोड़ी देर तो चुप्पी रही (नागासाकी के एटमबम से घायल हुए) फिर फुस-फुसाहट और और हिचकियां सुना दीं। अकस्मात एक चीख सुन पड़ी, हम पराजित हो सकते हैं...... आत्म समर्पण शब्द ने अणुबम्ब से भी ज्यादा कष्ट दिया। मन में देखिये जापानी राष्ट्र के लिये सब कुछ देकर भी कितने खुशी रहते हैं किन्तु उनको राष्ट्र अपमान लाखों एटमबम्बों के गिरने से भी अधिक अखरता है और दूसरी ओर हम हैं जो राष्ट्र के नाम पर लगे कलंक को मिटाने के स्थान में उसे उजालने में व्यस्त हैं और चार-चार पैसों के लोभ के लिये हम इस राष्ट्र-कलंक को चिरस्थायी देखना चाहते हैं।

क्या दूसरी भाषा पढ़ना दोष है?

अब प्रश्न है या किसी भाषा का पढ़ना क्या जानना दोष है? कदाचित् नहीं। हाँ, किन्तु उसे बिना सोचे-समझे अनुचित पद पर ठोस देना दोष है। जहाँ आज अंग्रेजी है वहाँ उसका होना दोष-पूर्ण है यह राष्ट्र के लिये एक घातक कदम है।

अंग्रेजी राज्यभाषा क्यों और कैसे बनी

क्या कभी आपने सोचा कि अँग्रेजी को इस पद पर लाने के लिये जो सर तोड़ कोशिशें कीं वह सब किस लिये थीं ? शायद आप कहेंगे कि मानवता को मद्दे नजर रखकर पुराने आका ने हमें सभ्य बनाने के लिये, विज्ञान के युग में ले जाने के लिये और भारत की चहुँमुखी प्रगति योग्य बनाने के लिए ही अंग्रेजी सिखाई गई थी। चालू की गई थी। किन्तु इसके पीछे बड़े लम्बे-चौड़े रहस्य छुपे हैं। इसका स्पष्टीकरण अपने खैरख्वाहों के ही शब्दों द्वारा अधिक उचित लगेगा। सर चार्लस ट्रेनवली ने १९३८ में कहा (पुस्तक-ऑन दी ऐज्युकेशन आफ दी पीप्ल आफ इन्डिया) कि भारतीयों को जब तक अपनी पूर्व स्वाधीनता पर विचार करने का अवसर मिलता रहेगा तब तक वह अपनी स्थिति में सुधार करने का केवल एक ही उपाय उनकी समझ में आएगा और वह होगा सभी अंग्रेजों को एकदम देश से बाहर निकाल देना। प्राचीन पद्धति से पले-पनपे भारतीय देश-भक्त के हृदय में इसके अतिरिक्त और किसी भावना का उदय हो ही नहीं सकता है जिससे उसके देश की खोई हुई प्रतिष्ठा और समृद्धि पुनः लौट सके। अन्य किसी उपाय की ओर उसका ध्यान आकृष्ट नहीं किया गया है। योरुपीय विचार-धारा का प्रवेश करके ही इनकी राष्ट्रीय भावना को नई दिशा में मोड़ा जा सकता है।......हम इनको योरुपीय सुधारों की पद्धति पर ले चलें। तब वे पुराने ढंग की स्वतन्त्रता प्राप्त करने की भावना और विचार का परित्याग कर देंगे...... ...और तब पक्के रूप से भारत के साथ हमारा चिरकाल तक वर्तमान सम्बन्ध बना रहेगा।" और इसीलिए मैकाले के कथनानुसार ऊपर से हिन्दुस्तानी और अन्दर से अँग्रेज बनाने के लिए ही तो अंग्रेजी का जाल बिछाया था।

अंग्रेजी प्रसार का संक्षिप्त इतिहास

ईस्ट इंडिया कम्पनी के नौकर चार्लस ग्रांट ने सबसे पहले अंग्रेजी की आवाज उठाई थी। किन्तु उस समय की नीति कुछ और होने के कारण वह असफल रहा। फिर गैर सरकारी ढंग से ईसाई मिशनरियों ने इसका बीड़ा उठाया और मिशनरी विलियम कैरे ग्रांट का स्वप्न पूरा किया। धीरे-धीरे इस कार्य की ओर "कमेटी आफ पब्लिक इन्स्ट्रकशन" का ध्यान भी आकर्षित होने लगा। किन्तु इसकी थोड़े ही दिन बाद दो शाखाएं हो गई एक orientalist और दूसरी Auglicists चाहते थे कि सब पब्लिक फण्ड्स अंग्रेजी शिक्षा पर ही खर्च हों। शनैः शनः इसका जोर बढ़ता गया! १८३४ में टी० बी० मैकाले जब कौंसिल के प्रधान बने तो उन्होंने लार्ड बैंटिक को अपनी तरफ करके मार्च १८३५ को यह सरकारी तौर पर मंजूर हो गया। दूसरे ही दिन घोषणा हो गई "सब पब्लिक फण्ड्स' भारतीयों को इङ्गलिश माध्यम द्वारा इंगलिश साहित्य और विज्ञान की शिक्षा देने में ही व्यय होंगे।" लार्ड हार्डिङ्ग ने ऊंचे पद केवल इंगलिश पढ़े लिखे लोगों को ही दिए! चार्लस वुड ने १८५४ में एक रिपोर्ट पेश की जिसके अनुसार इसका प्रसार सब छोटे-बड़े ऊंचे-नीचे तक हो गया।

अंग्रेजी के प्रसार के बारे में स्व० मुंशी प्रेमचन्द जी कहते हैं "प्रभुता की इच्छा तो प्राणी मात्र में होती ही है। अंग्रेजी भाषा ने इसका द्वार खोल दिया। और हमारा शिक्षित समुदाय चिड़ियों के झुण्ड के समान उस द्वार के अन्दर घुस कर जमीन बिखरे हुए दाने चुगने लगा, परन्तु अब कितना ही फड़फड़ाए अब गुलशन की हवा नसीब नहीं। मजा यह है कि इस झुण्ड की फड़फड़ाहट बाहिर निकलने के लिए केवल जरा मनोरंजन के लिए है। उसके पर निर्जीव हो गए हैं। उनमें उड़ने की शक्ति नहीं रही। यह भरोसा भी नहीं रही रहा कि यह दाने

(शेष पृष्ठ १९ पर)

जय हो

(ले०—सुदर्शनदेव 'उपाध्याय' गुरुकुल झज्जर)

स्थान गांव की चौपाड़। गांव का नाम आर्य नगर। ता० २४-१२-५७। गांव के मुखिया तथा अन्य सभी लोग बैठे हुये हैं। कोई चारपाई पर बैठा है। कोई लेट रहा है। कोई काम से थका हुआ निद्रा की गोद में है। कुछ एक परस्पर बातें कर रहे हैं।

एक—भाइयो! यह जो झमेला चल रहा है इसका क्या हाल होगा?

दूसरा—कौन-सा झमेला, कैसा झमेला?

एक—अरे जाओ। तुम्हें आजतक इतना भी नहीं पता। तुम कौन-सी दुनिया में रहते हो?

तीसरा—इसे क्या पता है? यह तो नाज का बैरी है। इसे नहीं पता सूरज किस तरफ निकलता है। इसका तो नाम ही बुद्धूराम है।

बुद्धराम—ओ लहरी! मुँह सम्भाल के बोलना। तुझे पता है सारी दुनिया का, तू बता धरती का बिचाला कहाँ है?

लहरी—भाई बुद्धराम क्रोध में क्यों आते हो। यह बात तो मैंने हंसी में ही कही थी।

बु०—हंसी-ठट्टा कुछ नहीं। मनुष्य को तमीज से बातें करनी चाहियें। अच्छा, तुम्हीं बतलाओ तो जानें, वह कौन सा झमेला है।

ल०—आजकल और झमेला ही क्या हो सकता है? श्री छोटुराम जी सत्याग्रह को ही झमेला कह रहे होंगे।

छोटुराम—हां, हिन्दी सत्याग्रह! यह एक बड़ा भारी झमेला (समस्या) बन गया है। इसी के बारे में मैं कह रहा था कि इस झमेले का क्या हाल होगा?

बु०—ये जो लाल झाडियाँ उठाये फिरते हैं इन्हीं के बारे में तुम कुछ कह रहे हो ना। भला सरकार के सामने किसी की क्या चल सकती है? ये सब दो चार दिन में रो-पीटकर घर आ बैठेंगे, और क्या होना है?

छो०—भई साहब! तुम्हें पता होना चाहिए कि ७ महीने तो इस काम को चलते हुए हो गये हैं और अभी पता नहीं आगे कितना समय और लग जावे। आर्यसमाजी कभी पीछे नहीं हटना जानते।

चन्दगीराम—आर्यसमाजी मैंने बहुत देखें हैं। हजारों तो माफी मांगकर आ चुके हैं। आर्यसमाजी तो सब ठग···

सत्यपाल—(बीच में ही) मैं नहीं सुन सकता। यह क्या बकवास हो रही है। हम महर्षि दयानन्द के शिष्य हैं। जो ऐसे काम करता है वह आर्यसमाजी ही नहीं। सत्याग्रह में अवश्य सफलता मिलेगी।

वीरेन्द्र—(खड़ा होकर) आर्यसमाज सचाई पर कायम है। सिन्ध हैदराबाद और दक्षिण हैदराबाद का इतिहास साक्षी है। आर्यसमाज का कदम कभी पीछे नहीं हट सकता।

एक वृद्ध—(कांपता हुआ लाठी के सहारे से खड़ा होकर) यह आर्यों की न न नगरी है। कौन है जो आर्यसमाज के खिलाफ बो-बो बोल रहा···।

सब—ताऊ बैठ जाओ। ये तो यूँ ही आपस में बातें हो रही हैं।

ताऊ—तब तो ठी ठीक है।

छो०—मुझे तो अब ऐसा लगता है कि फैसला कुछ जल्दी ही हो जायेगा।

एक युवक—(लेटा हुआ) आर्यसमाज तो झगडालू है। इसे तो कोई न कोई झगड़ा चाहिए। आर्यसमाज और फैस···।

सब—चुप पड़ा रह। कल का छोकरा है। तुझे पता है क्या आर्यसमाज होता है।

दूसरा वृद्ध—(साफे का लपेटा लगाता हुआ) कौन सा बोला कि आर्यसमाज झ झ झगडालू।

स०—ताऊ! बैठ जाओ। यह तो एक नादान छोकरा था।

ताऊ—ये नये-नये छो छोकरे तो सब काम बि बि बिगाड़···।

सब—ठीक है ताऊ ठीक है। बैठ जाओ।

(गांव के पुरोहित जी का आगमन)

सब—(हाथ जोड़ कर) पुरोहित जी नमस्ते।

पुरोहित—(बद्धाञ्जलि) नमस्ते। नमस्ते। नमस्ते।

छो०—सत्यपाल जी! पुरोहित जी के लिए अन्दर से मुड्ढा मंगवाओ।

स०—सुरेश! अन्दर से जल्दी मुड्ढा निकाल कर लाओ।

सुरेश—जी अभी लाया।

(मुड्ढा बिछा दिया जाता है)

स०—(हाथ के इशारे से) पुरोहित जी यहाँ बैठिये।

पुरोहित—नहीं मैं तो यहीं खाट पर ही बैठ जाता हूँ।

सब—नहीं, नहीं आपके लिए मुड्ढा बिछा हुआ है। आप मुड्ढे पर बैठिये।

(पुरोहित जी मुढ्ढे पर बैठ जाते हैं)।

छो०—पुरोहित जी! आज कोई गर्म खबर तो सुनाओ।

(सभा में सन्नाटा छा जाता है)।

पुरोहित—आज हमारे लिए बड़ी प्रसन्नता का दिन है। सरकार ने घोषित कर दिया है कि एक सप्ताह में सभी सत्याग्रही बिना किसी शर्त के छोड़ दिये जायेंगे। हमारी मांगें भी सब स्वीकृत हो चुकी हैं।

धर्मपाल—(इतने में ही, खड़ा होकर) जो बोले ३ सौ अभय।

सब—वैदिक धर्म की जय हो।

ध०—महर्षि दयानन्द की।

सब—जय हो।

ध०—हिन्दी भाषा की।

सब—(बड़े जोर से) जय हो।

सभा—में हर्ष का सागर उमड़ आता है। प्रत्येक अपने मन में फूला नहीं समाता।

पु०—भाइयो सम्भव है आज हमारे गांव के सत्याग्रही भाई भी हिन्दी भाषा-युद्ध में विजय प्राप्त करके पधारेंगे। अतः उत्सव एवं उनके स्वागत की तैयारी करनी चाहिए।

यह सुनते ही सभी माला आदि बनाते हैं और स्वागत की सब सामग्री तैयार करते हैं।

(इतने में ही)

"हिन्दी भाषा अमर रहे" इत्यादि जय जयकारों की ध्वनि गांव के एक ओर से सुनाई पड़ती है।

पु०—ये सत्याग्रही भाई पधार गये हैं। शीघ्र स्वागतार्थ पहुँचिये।

सब हाथ में फूल-मालायें और ओम्-पताकायें

लेकर सत्याग्रहियों के स्वागतार्थ बड़ी उत्सुकता से पहुंचते हैं। वहां पहुँचते ही "हिन्दी भाषा अमर रहे" के नारों से गगन गूञ्ज उठता है सत्याग्रही भाइयों से सभी कोली भर-भर कर मिलते हैं।

सत्याग्रही भाइयों का ग्राम में बड़ा भारी जलूस निकाला जाता है। जय-घोषों से ग्राम गूंज उठता है। सभी ग्राम-वासी फूल-मालाओं से भूषित सत्याग्रहियों को हाथ जोड़कर नमस्ते कह रहे हैं।

जलूस-समाप्ति पर गांव की चौपाड़ में सत्याग्रही भाइयों के स्वागतार्थ एक बड़ा भारी जलसा होता है। बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। जलसा समाप्त होता है और—

धर्मपाल—(खड़ा होकर) जो बोले २ सो अभय।

सब—वैदिक धर्म की जय हो।

ध०—महर्षि दयानन्द की।

स०—जय हो।

ध०—अमर शहीद वीर सुमेरसिंह की।

स०—जय हो।

ध० श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त की।

स०—जय हो।

ध०—श्री पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती की।

स०—जय हो।

ध०—श्री आचार्य भगवान्देव जी की।

स०—जय हो।

ध०—वीर सत्याग्रही भाइयों की।

स०—जय हो।

ध०—(जोर से) हिन्दी भाषा की।

स०—(और जोर से) जय हो।

सब अपने-अपने घर चले जाते हैं।

———

(शेष पृष्ठ १६ का)

बाहिर मिलेंगे भी या नहीं। अब तो वही कमरा है वही कुल्हिया है और वही सैयाद।" आज वह सैयाद जा चुका है। पींजरा टूट चुका है। परन्तु न जाने फिर भी उसी कुल्हिया पर यह पड़कर जीवन का भार क्यों ढो रहे हैं।

इस प्रकार अंग्रेजी जल्दी ही भारत में अपना प्रभुत्व जमा गई। इसका परिणाम? कहां तक यह अपने पुत्रों के स्वप्न-पूर्ण करने में सफल हुई? यह स्व० आचार्य नरेन्द्रदेवजी के शब्दों में सुनिए, "शासकों को जनता की भावना का ज्ञान नहीं था। वे प्राचीन परम्परा के अनुयाइयों पर भी विश्वास नहीं कर सकते थे। अपने शासन को कायम रखने के लिए उन शिक्षित युवकों की ओर ही दृष्टि लगाए थे जिन्होंने उनके अंग्रेजी स्कूलों में पाश्चात्य ढंग की शिक्षा प्राप्त थी.........एक ऐसा अंग्रेजी का माध्यम वर्ग खड़ा हो गया जिसके हृदय में अंग्रेजी संस्कृति के प्रति प्रेम था। और जिसकी यह धारणा थी कि ईश कृपा से ही अंग्रेज राज्य भारत में हुआ है और उससे देश का कल्याण ही होगा।" यह है महारानी अंग्रेजी जिसने मोहिनी बनकर भारतीयों को डिगा दिया था।। हमें गुलामी की जंजीरों में जकड़वाने वाली यही देवी है।

अफसोस तो इस बात का है कि आज भी हमने उसे राज्य भाषा का स्थान देने या सदा के लिए अपनाए रहने की गंदी रट को बार-बार दुहराकर पुराने आका अंग्रेज को अपनी आकाभक्ति की सराहना करने को विवश करके व्यर्थ कष्ट दे रहे हैं।

आशा है कि भारतीय अपने भले-बुरे की पहचान करेंगे और सैयाद के चले जाने के बाद, पींजड़ा टूट जाने के पश्चात् कुल्हिया प्रेम को छोड़ कर गुलशन की हवा खाएंगे।

संस्था-समाचार

वार्षिक-महोत्सव

आर्षपाठविधि के केन्द्र, हरयाणा प्रान्त के प्रधान गुरुकुल झज्जर का वार्षिक महोत्सव फाल्गुन कृष्णा द्वादशी, त्रयोदशी, संवत २०१४ विक्रमीय, तदनुसार १५ और १६ फरवरी १९५८ ई० शनिवार, रविवार को बड़े समारोह के साथ मनाया जायेगा। इस महोत्सव में आर्य जगत् के महान् संन्यासी, विद्वान् उपदेष्टा एवं नेतागण पधार रहे हैं। भारी संख्या में पधार कर विद्वानों के उपदेश श्रवण द्वारा ज्ञान-पिपासा को शान्त करें और महोत्सव की शोभा बढ़ावें।

ऋग्वेद से महायज्ञ

५ फरवरी बुधवार से ऋग्वेद द्वारा महायज्ञ हो रहा है। इस शुभावसर पर यज्ञोपवीत ग्रहण करने वाले सज्जनों को यज्ञोपवीत दिये जायेंगे। महायज्ञ में प्रत्येक हवन-प्रेमी सज्जन यथाशक्ति अपनी आहुति डालकर पुण्य का भागी बने।

नये ब्रह्मचारियों का प्रवेश

वार्षिक महोत्सव नये छात्रप्रविष्ट किये जायेंगे। प्रवेशार्थी सज्जन १४ फरवरी सायंकाल तक गुरुकुल में पहुँच जायें।

भवन-निर्माण

गुरुकुल में भवन-निर्माण का कार्य पूर्व की भाँति निरन्तर चल रहा है। आयुर्वेद महाविद्यालय के लिए अभी भवनों की और आवश्यकता है। दानी महानुभाव अपने पूर्वजों की स्मृति में कमरा बनवा कर व पत्थर लगाकर यश के भागी बनें।

आयुर्वेद महाविद्यालय

दो वर्ष से आयुर्वेद महाविद्यालय चालू कर रखा है। द्वितीय वष की परीक्षायें मार्च मास में होने वाली हैं। नया प्रवेश मई ५८ से आरम्भ होगा। प्रवेशार्थी सज्जन नोट कर लें।

धन्यवाद

हिन्दी-रक्षा आन्दोलन के समय में गुरुकुल पर पर्याप्त कठिनाइयाँ आई हैं। आचार्य भगवान्देव जी के भूमिगत होने के कारण अर्थ संकट भी रहा रहा। ऐसे अवसर में श्री पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा अमृतधारा वालों ने गुरुकुल की सहायतार्थ ५०) दान दिया है। आप गुरुकुल को १०) मासिक सहायता भी प्रदान करते हैं। एतदर्थ पण्डित जी को भूरि-भूरि धन्यवाद।

५०) पण्डित विश्वप्रिय जी शास्त्री ने देहली से चन्दा एकत्रित कर भिजवाया है इसी आन्दोलन के समय में। अतः शास्त्री जी भी धन्यवाद के पात्र हैं।

निम्नलिखित ग्रामों से तथा व्यक्तियों से गुरुकुल की गोशाला के लिये पूलियाँ दान में मिली हैं।

२ गाड़ी पूली मिलकपुर ग्राम से।
१ गाड़ी पूली इन्द्रसिंह जी ठींठ।
१ गाड़ी पूली देशराज जी ठींठ।
१ गाड़ी पूली रामसिंह जी ठींठ।
२ गाड़ी पूली ठींठ ग्राम से।
१ गाड़ी पूली मल्लूराम जी इमलोटा।
१ गाड़ी पूली शीशराम जी इमलोटा।
४ गाड़ी पूली इमलोटा ग्राम से।
१ गाड़ी तूड़ सुमेरसिंह जी स्वरूपगढ़ सातौर।
१ गाड़ी पूली स्वरूपगढ़ ग्राम से।
१ गाड़ी पूली चुन्नीलाल जी लाडपुर।
१ गाड़ी पूली मोलड़सिंह जी साँखौल।
१ गाड़ी पूली शुभराम जी नम्बरदार मातनेहल।
१ गाड़ी पूली उमरावसिंह जी मातनेहल।
१ गाड़ी पूली जगराम जी मातनेहल।

इन सब सज्जनों को धन्यवाद।

निवेदक
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल झज्जर

शिवरात्रि के उपलक्ष में विशेषोपहार

केवल तीन मास (जनवरी, फरवरी, मार्च) के लिये मूल्य में भारी कमी

१—हमारी रसायनशाला द्वारा निर्मित सभी औषधियाँ १०) दस रुपये से अधिक माल लेने पर पौने मूल्य में दी जायेंगी।

२—१००) सौ रुपये या अधिक के आर्डर पर २५% कमीशन और मार्ग व्यय दिया जायेगा।

३—५००) का आर्डर देने पर ३०% कमीशन और मार्ग व्यय दिया जायेगा।

४—१० प्रस सुर्मे की शीशियों के आर्डर पर ५०% कमीशन दिया जायेगा अर्थात आठ आने की शीशी चार आने में दी जायेगी।

५—विशेष विवरण के लिये हमारा सूचीपत्र मुफ्त मंगवा कर पढ़ें।

१—नेत्र ज्योति सुर्मा

लगाइये और नेत्र ज्योति पाइये। इसके लगाने से आँखों के सब रोग जैसे आँख दुखना, खुजली, लाली, जाला, फोला, रोहे, कुकरे, पास का कम दीखना (शार्ट साइट) दूर का कम दीखना (लांगसाइट), प्रारम्भिक मोतियाबिन्द आदि दूर हो जाते हैं। आंखों के सब रोगों की रामबाण औषधि है। यही नहीं किन्तु लगातार लगाने से दृष्टि (बीनाई) को तेज तथा आँखों को कमल की तरह साफ स्वच्छ रखता है। बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। प्रतिदिन जिसने भी लगाया उसी ने मुक्तकण्ठ से इस सुर्मे की प्रशंसा की है। मूल्य छोटी शीशी ।—) बड़ी शीशी ॥)

२—नेत्रामृत

लाली, कड़क, धुन्ध, ढलकवा, गरदोगुब्बार, रोहे तथा भयंकरता से दुखती आंखों के लिए जादू भरा विचित्र योग है।

मूल्य बड़ी शीशी ।।=) छोटी शीशी ।=)

३—स्वप्नदोषामृत रस

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषध इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे पीछे या बीच में वीर्य आने को बन्द कर देगी। मूल्य ५) तोला

सेवन विधि—प्रातः सायं एक-एक गोली गोदुग्ध या शीतल जल के साथ। विशेष—यदि स्वप्नदोष का रोगी अत्यन्त दुर्बल हो तो दूध के साथ और हृष्ट-पुष्ट हो तो जल के साथ सेवन करें। ब्रह्मचारी को जल के साथ सेवन करना चाहिए।

४—रोहितारिष्ट

यह अरिष्ट पुराने और बढ़े हुए प्लीहा (तिल्ली) यकृत जिगर के लिये अद्वितीय औषध है। जब किसी औषध से यह रोग ठीक न होते हों तो इसका चमत्कार (जादू) प्रयोग करके देखना चाहिये। यह उदर पीड़ा गोला, वायु गोला आदि पेट में वायु का भरना, अजीर्ण, भूख न लगना, मलबद्धता आदि सभी पेट के रोगों को दूर करता है। सदैव रहने वाले मलबन्ध (कब्ज) को दूर करने की यह एक ही औषध है। यह जठराग्नि को दीप्त करता है। पाचन शक्ति को खूब बढ़ाता है। यह आयुर्वेद की रामबाण औषध है। १ पौण्ड मूल्य २)

५—कर्णरोगामृत

कान में पीप आना, बहरापन और प्रत्येक प्रकार की कर्ण पीड़ा को दूर करने के लिए यह अति उत्तम औषध है। प्रतिदिन सेवन करने से कानों का कोई रोग नहीं होता और मस्तिष्क की शुष्कता दूर होती है। मूल्य एक शीशी १)

६—स्वप्नदोषामृत चूर्ण

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषधि इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे-पीछे या बीच में वीर्य के निकलने को बन्द कर देती है।

मूल्य १) छटांक

७--व्रणामृत

भयंकर फोड़े, फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा अनेकों वर्षों के नासूर (सरह) आदि रोगों की अद्वितीय औषधि है। दिनों का काम घण्टों में, घण्टों का काम मिनटों में करती है। —मूल्य बड़ी शीशी १) छोटी ॥)

८—स्वास्थ्यवर्धक चाय

यह चाय स्वदेशी, ताजी एवं शुद्ध जड़ी-बूटियों से तयार की गई है। वर्तमान चाय की भाँति यह नींद और भूख को न मारकर खाँसी, जुकाम, नजला, सिरदर्द, खुश्की अजीर्ण, थकान, सर्दी आदि रोगों को दूर भगाती है। मस्तिष्क एवं दिल को शक्ति देती है। मूल्य १ छटांक ।=)

९—दन्तरक्षक मंजन

दाँतों से खून वा पीप का आना, दाँतों का हिलना, दाँतों के कृमि रोग, सब प्रकार की दाँतों की पीड़ा तथा रोगों को दूर भगाता है और दाँतों को मोतियों के समान चमकाता है।—मूल्य एक शीशी ॥)

१०—बाल रोगामृत

बालकों के हरे-पीले दस्त, अपच, अजीर्ण (कब्ज) अरुचि, दाँत निकलते समय के रोग, सूखिया मसान रोग, वमन, निर्बलता, ज्वर आदि सभी रोगों को दूर कर बालकों को मोटा करता है। अतः प्रत्येक गृहस्थी घर में रखे। मूल्य एक शीशी ५)

११—संजीवनी तैल

मूर्च्छित लक्ष्मण को चेतना देने वाली इतिहास प्रसिद्ध बूटी से तैयार किया गया। यह तैल घावों के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुये घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भर कर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है। मू० ॥=) नमूना

सेवन विधि—फाये में भर कर बार-बार चोट आदि पर लगायें।

१२—च्यवनप्राश

इसी ऋतु के ताजे आँवले से तैयार किया गया स्वादिष्ट, सुमधुर और एक दिव्य रसायन (टानिक) है। जिसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खाँसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक, सभी हृदय रोगों की अद्वितीय औषध है। स्वाप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा अन्य सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका (निरन्तर) सेवन समूल नष्ट करता है। यह निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है।

मूल्य ७) सेर, ५ सेर लेने पर ६) सेर

१३—बलदामृत

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आ जाता है। पीनस (सदा रहने वाले जुकाम और नजले) की महौषध है। वीर्य बर्द्धक, कास (खाँसी) नाशक, राजयक्ष्मा (तपेदिक), श्वास (दमा) के लिये लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करती तथा अत्यन्त रक्त वर्द्धक है। निर्बलों को बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ट बनाती है। यह अपने ढंग का एक ही औषध है। मूल्य ५) बड़ी शीशी
२) छोटी शीशी

१४—ज्वरामृत

यह नये व पुराने सभी प्रकार के ज्वरों की रामबाण औषध है। बिगड़े हुए मलेरिया, विषम ज्वर को दूर करने में अद्वितीय औषध है। कुनेन भी इसके आगे तुच्छ औषध है। कुनेन का सेवन सिर दर्द, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है किन्तु यह औषध सब दोषों को दूर करती है किन्तु ज्वर की प्रत्येक अवस्था में दी जा सकती है। मलेरिया काल में सेवन की हुई मलेरिया को नहीं आने देती। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, सेवन करें और लाभ उठावें। मूल्य एक शीशी ५

पता—आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला पो० गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक (पंजाब)

शिवरात्रि के उपलक्ष में विशेषोपहार

केवल तीन मास के लिये (जनवरी, फरवरी, मार्च) मूल्य में भारी कमी

१—पाँच रुपये से अधिक के आर्डर पर २५% कमीशन दिया जायेगा।
२— बीस २०) से अधिक के आर्डर २५% कमीशन और मार्ग व्यय।
३—पचास रुपये से अधिक के आर्डर पर ३०% ,, ,, ,,
४—सौ रुपये से अधिक के आर्डर पर ३३⅓% ,, ,, ,,
५—सुधारक के सभी प्राप्य विशेषाङ्क आधे मूल्य पर दिये जायेंगे।
६—हमारा सूचि-पत्र मुफ्त मंगाकर पढ़िये।

हमारा प्रकाशन

१ वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	३)
२ दृष्टान्त मञ्जरी	२)
३ आर्यकुमार गीताञ्जलि (प्रथम पत्र)	≡)
४ ,, ,, द्वितीय पत्र	≡)
५ आर्य सिद्धान्त दीप	१॥)
६ वैदिक धर्म परिचय	॥=)
७ छात्रोपयोगी विचारमाला	॥=)
८ विदेशों में एक साल	२।)
९ आसनों के व्यायाम (सचित्र)	॥)
१० आदर्श ब्रह्मचारी	।)
११ कन्या और ब्रह्मचर्य	≡)
१२ हित की बातें	—)॥
१३ संस्कृत कथामञ्जरी	।)
१४ संस्कृताङ्कुर	१।)
१५ हम संस्कृत भाषा क्यों पढ़ें	।=)
१६ संस्कृत वाङ्मय का सं० परिचय	॥)
१७ विरजानन्द चरित (हिन्दी)	१॥)
१८ विरजानन्द चरितम् सानुवाद संस्कृत पद्यकाव्यम	१)
१९ स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी	२)
२० ब्रह्मचर्य शतक	॥=)
२१ ब्रह्मचर्य महत्त्व	॥)
२२ पंजाब की भाषा लिपि	—)
२३ राष्ट्र निर्माण में गुरुकुल का स्थान	॥)
२४ ,, ,, धर्म का स्थान	।—)
२५ नारायणस्वामिचरितम्	।॥)
२६ मस्तिष्क विद्या	७)

आचार्य भगवान्देवजी द्वारा लिखित साहित्य

१ ब्रह्मगर्भामृत	=)॥
२ स्वप्नदोष चिकित्सा	=)॥
३ पापों की जड़ शराब	।—)
४ हमारा शत्रु तम्बाकू	।=)
५ नेत्र रक्षा	≡)
६ रामराज्य कैसे हो	≡)
७ व्यायाम का महत्त्व	≡)
८ बिच्छू विष चिकित्सा	=)
९ ब्रह्मचर्य के साधन १-२ भाग	।—)
१० ,, ,, ३ भाग	≡)
११ ,, ,, ४ भाग	१)
१२ ,, ,, ५ भाग	।=)
१३ ,, ,, ७-८ भाग	॥)
१४ ,, ,, ९ भाग	॥=)

सुधारक के प्राप्याङ्क

१ भोजन विशेषाङ्क	१)
२ व्यायाम विशेषाङ्क	१)
३ गो-अङ्क	॥)

पता—विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक (पंजाब)

रजि० नं० ई० पी० ५

'सुधारक' का आगामी विशालकाय विशेषाङ्क

'बलिदानाङ्क'

(अगस्त ५८ में प्रकाशित होगा)

इस विशालकाय विशेषांक की तैयारी आरम्भ हो चुकी है। चित्रों के लिए ब्लाक बनवाये जा रहे हैं। सुधारक का जो अंक आपके हाथ में है इसी आकार (साइज) के ५०० पांच सौ से अधिक पृष्ठ सथा १०० से अधिक रंगीन चित्र इस बलिदानांक में दिये जायेंगे। सरल भाषा और सुन्दर छपाई होगी।

इस विशेषांक में लगभग २०० दो सौ उन वीरों के जीवन और इतिहास की यशोगाथा लिखी जायेगी जो अपनी जन्मभूमि भारत की पराधीनता की शृङ्खलाओं को विशृङ्खलित करने के लिए बृटिश साम्राज्यवाद की जड़ काटने के लिए, स्वतन्त्रता की लहर को देश के कौने-कौने में पहुँचाने के लिए तन-मन में क्रान्ति की धूम मचाकर भारत को स्वाधीन बनाने के लिए हँसते-हँसते फांसी के तख्तों पर झूल गये। कारावास की भीषण विपत्तियों को सहन करते हुए भी जो बेड़ी तथा हथकड़ियों को आभूषण बनाकर झूम-झूमकर मस्ती से आजादी के गाने गाया करते थे। हिन्दी-रक्षा आन्दोलन के बलिदानों का भी इसमें उल्लेख किया जायेगा।

ग्राहक संख्या ५
सेवा में श्री सम्पादक जी
मु० गुरुकुल पत्रिका,
पो० गुरुकुल कांगड़ी
जि० हरद्वार

जिस स्वतन्त्रता को देखकर हम प्रसन्नता से फूले नहीं समाते, वह कितने बलिदानों के पश्चात् मिली है, कितने नवयुवकों ने अपने अमूल्य यौवन की आहुति दी हैं? यह सब इस "बलिदानांक" में पढ़िये। यह अंक अपने ढंग का अपूर्व तथा अद्वितीय होगा।

इस विशेषांक का मूल्य डाक व्यय सहित १०॥) होगा। किन्तु सुधारक के ग्राहकों को अग्रिम धन (पेशगी) भेजने पर ५॥) में ही घर बैठे ही रजिस्ट्री द्वारा मिल जायेगा। सुधारक का ग्राहक बनने के लिए २) में धनादेश से भेजें। जिन ग्राहकों का धन अगाऊ न मिलेगा उनको पीछे ८॥) में ही अंक प्राप्त हो सकेगा।

अंक परिमित संख्या में ही प्रकाशित होगा, हो सकता है कि समाप्त हो जाने पर पीछे आपको पछताना पड़। अतः ५॥) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करवा लें। इस मूल्य में ॥) डाक व्यय भी सम्मिलित है।

धन भेजन का पता—

व्यवस्थापक 'सुधारक'

पो० गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक (पंजाब)

प्रकाशक आचार्य भगवान्‌देव गुरुकुल झज्जर ने सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज देहली में मुद्रक जगदेवसिंह शास्त्री 'सिद्धान्ती' के प्रबन्ध में छपवाया।

वर्ष ५ | गुरुकुल झज्जर (रोहतक) फाल्गुन २०१४ वि० | वार्षिक मूल्य २)
अङ्क ७ | मार्च १९५८, दयानन्दाब्द १३४ | एक प्रति बीस नये पैसे

वीर सेनानी सरदार भगतसिंह

२३ मार्च १९३१ को सायंकाल सरदार भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव इन तीनों क्रान्तिकारी वीरों को फांसी पर लटका दिया गया था। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्म-कथा में लिखा है—

"उनकी लाशें रिश्तेदारों को नहीं दी गईं तथा उनको बड़ी बेपरवाही से मिट्टी का तेल डाल दिया गया।... सारा देश आंखों की पंखुड़ियां बिछाकर जिनका स्वागत करने को तैयार था, उन पुरुषसिंहों की साम्राज्यवाद ने इस प्रकार हत्या कर डाली। कितनी बड़ी गुस्ताखी और कितना बड़ा अपराध था!

संस्थापक सम्पादक—ब्र० भगवान्देव आचार्य गुरुकुल झज्जर
सम्पादक—ब्र० वेदव्रत भाष्याचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति
व्यवस्थापक—बलदेवसिंह बी० ए०, सि० प्रभाकर
सह-व्यवस्थापक—ब्र० सुदर्शनदेव शास्त्री व्याकरणाचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति

विषय-सूची

सुधारक के नियम

१—सुधरक अंग्रेजी महीने की १० ता० को डाकखाने में डाला जाता है। यदि २० ता० तक न मिले तो अपनी पोस्ट आफिस में पूछ-ताछ करनी चाहिये। फिर भी न मिले तो हमें लिखने पर और भेज दिया जायेगा।

२—लेख छोटे सारगर्भित तथा कागज के एक ओर सुन्दर और सुवाच्य लिखे हुये हों।

३—लेख में उचित परिवतन करना, प्रकाशित करना या न करना सब सम्पादक के आधीन है। अस्वीकृत लेख पोस्टेज भेजने पर ही वापिस लौटाया जा सकेगा।

४—वेद विरुद्ध लेखों का प्रकाशन सुधारक में न हो सकेगा।

५—सिद्धान्त विरुद्ध, अश्लील, और मिथ्या विज्ञापनों के लिये "सुधारक" में स्थान नहीं है। इतना होते हुये भी विज्ञापन की सत्यता का उत्तरदायित्व हम पर नहीं।

६—व्यवस्थापक सम्बन्धी सब पत्र-व्यवहार तथा मनीआर्डर आदि "व्यवस्थापक-'सुधारक" के नाम से भेजने चाहियें, किसी व्यक्ति के द्वारा न भेजें। साथ ही ग्राहक अपनी संख्या अवश्य लिखें।

७—एजन्टों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है और ५ से कम की एजेन्सी नहीं दी जाता। विज्ञापन का धन अगाऊ भेजना आवश्यक।

८—सब पत्र व्यवहार हिन्दी तथा संस्कृत में ही करें उर्दू, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में पत्र व्यवहार न करें। पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड भेजें।

विज्ञापन दर

	पूरा पृष्ठ	आधा पृष्ठ	चौथाई पृष्ठ
एक बार	१६)	९)	५)
तीन बार	४०)	२४)	१३)
छः बार	७५)	४५)	२५)
१ वर्ष तक	१३०)	७५	४५)

टाईटिल अन्तिम १५% अधिक।

टाईटिल तृतीय १०% अधिक।

विशेषांक में सवाया कम से कम ४॥)

वेद में क्षात्र-धर्म

(देवव्रत वानप्रस्थी ई० पो० सराय नई दिल्ली)

अग्निर्नः शत्रून् प्रत्येतु विद्वान्
प्रतिदहन्नभिशस्तिमरातिम् ।
स सेनां मोहयतु परेषां
निर्हस्तांश्चकृणवज्जात वेदः ॥अ, ३, ११

(अग्निः) सबसे अग्रणी और प्रधान योद्धा १ अथवा शत्रुओं की सेना को जलाकर भस्म करने वाला राजा का सेनापति जो कभी भी शत्रुओं पर स्नेह नहीं करता २, अपने सम्बन्ध में आये पदार्थों को सुखा देता है कभी गीला नहीं करता ३,(विद्वान) संधि विग्रह यान आसन आदि युद्ध कला में निष्णात (शत्रून प्रत्येतु) शत्रुओं पर आक्रमण करे प्रतिमुख जावे (प्रतिदहन्नभिशास्तिमरातिम्) मुख्य मुख्य प्रशस्त शत्रुओं को भस्मकरदे, हमारे कल्याण में विघा तक अदानशील शत्रुओं की टोली अथवा पुरुषों को भस्मसात् करदे ४, और (परेषां सेनाम्) शत्रुओं की सेना को (मोहयतु) विविध शस्त्रास्त्रों द्वारा बेहोश करदे (निर्हस्ताँश्च कृणवज्जातवेदः) और उनको निहत्थे करदे। परमात्मा आदेश करता है कि युद्ध में सेनापति और क्षत्रीय वीर शत्रु को ऐसा मारे कि उस के हाथ पाँव लड़खड़ा जावें और होश उड़ जावें।

यूयमुग्रा मरुत ईदृशेस्थाभिप्रेत मृणत सहध्वम्।
अमीमृणन वसवो नाथिता इमे
अग्नि र्ह्येषां दूतः प्रत्येतु विद्वान् ॥ ३. १. २

भाषार्थ—(यूयमुग्रा मरुतः ईदृशेस्थ) तुम उग्र उद्‌गूर्ण बल वाले, मरुतो संस्तम्भक, सम्मोहक संमारक प्रज्वालक सँदाहक सस्फोटक और विविध संतोद गुणों से युक्त मरुतो' गैसो तुम उद्‌गूर्ण बल वाले अजेय हो, विविध प्रकार की गैसों का प्रयोग करके शत्रूओं को मार डालो अथवा बेहोश करदो वा शत्रु दलों का सस्तम्भन आदि कर दो युद्ध में गैसास्त्रों का प्रयोग करो (ईदृशेस्थ) तुम ऐसे हो (अभिप्रेत) तुम शत्रुओं पर चारों ओर अक्रमण करो (मृणत सहध्वम् उनको मार डालो और उनका मुकाबला करो (इमे नाथिता वसवः) ये प्रार्थना किये हुए २५ पच्चीस वर्ष नवयुवक ब्रह्मचारी योद्धा इन शत्रूओं को (अमीमृणन मार डालें और (अग्निर्ह्येषां दूतः प्रत्येतु) और अग्रणी सेनापति अग्नि इनका दूत अनुचर होकर (विद्वान्) युद्ध कला को अच्छी तरह जानता हुआ शत्रूओं पर आक्रमण करे। इस मंत्र में दरशाया है कि सस्तंभक संमोहक आदि गैसों को प्रयोग कर शत्रुओं पर अग्नि वर्षा करके विजय लाभ का परमात्मा ने आदेश किया है।

३-१-१ मंत्र१ अग्रे नयनादग्रणी अग्निः राजा, (२) क्नूयी शब्दे उन्देवा, न क्नोपयति स्व सँवन्ध-पदार्थजातं अनार्द्र करोतीति, अपने संबन्ध में आये पदार्थों वा पुरुषों से जो पसीजता नहीं सदा शुष्क रहता है ऐसा राजा जो शत्रुओं पर कभी न पसीजे अक्नेपनो अस्नेहनो भवति जो शत्रुओं पर स्नेह न करे ऐसा राजा (३) विद्वान् संधि विग्रह यान आसनेषुनिष्णातः राजा (४) (अरातिम्) रादाने नराति न ददातीति अरातिः शत्रः

बहिष्कार

४ फरवरी की बात है। ग्राम भऊ (अकबरपुर) में एक विशाल सम्मेलन हिन्दी रक्षा समिति की ओर से श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्यसमिति की अध्यक्षता में किया गया। अध्यक्ष तथा अन्य आर्य नेताओं का बैल गाड़ियों में बैठाकर जलूस निकाला गया। जलूस में १०१ बैल थे और हजारों की संख्या में नर-नारी सम्मिलित थे।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन के समय में पंजाब की पापी पुलिस ने इस गांव के आबाल-वृद्ध वनिता पर जो अत्याचार किये हैं वे किसी से तिरोहित नहीं। अतएव यह ग्राम भऊ अपना विशेष महत्त्व रखता है। इस शुभावसर पर मैं भी इस पुण्यभूमि के दर्शन करने के लिए गया था। जलसे, जलूस और सम्मेलन तो बहुत देखे हैं किन्तु इस सम्मेलन में एक विशेष बात दृष्टिगोचर हुई। वह यह कि हिन्दी सत्याग्रह के काल में हरयाणा प्रान्त में विशेषतया रोहतक जिले में जो नियम विरुद्ध कार्यवाही मार-पिटाई जुर्माना, बेइज्जती आदि हुई उसके करवाने में तीन व्यक्तियों का विशेष हाथ बतलाया गया। उन कुख्यात नरतन धारियों के नाम यह हैं—१. श्री डी० आई० जी० रामसिंह टांडाहेड़ी वाला, २. श्री रणवीरसिंह एम० पी० सांघीवाला और श्री प्रतापसिंह दौलता एम० पी० चीमनी वाला।

इन तीनों पापियों ने जो पाप कैरों के झूठे टूक के लोभ में कमाये हैं वे अति भीषण और रोमांचकारी हैं। यदि कोई विदेशी यहाँ आकर ऐसा दुर्व्यवहार करता तो कुछ सह्य भी होता, क्योंकि उनकी तो मनोवृत्ति ही दूसरी थी। किन्तु इन तीनों ने तो अपने भाई-बहिन और मां बेटियों की इज्जत के साथ होली खेली और खिलवाड़ है। अपने भाई-बहिन और मां-बाप को इन नर-पिशाचों ने भाई बहन और मां बाप ही नहीं समझा। तभी तो घृणित दुर्व्यवहार थोड़े से लोभ वा लालच के वशीभूत होकर कर डाला।

इनके जघन्य पाप का दण्ड तीस चालीस हजार की उस पंचायत ने एक स्वर से यह कह दिया कि ये तीनों पुरुष-पामर आज से बहिष्कृत कर दिये गये। तथा निश्चय किया गया कि जब तक यह तीनों स्वयं इस ग्राम में पंचायत के सम्मुख आकर क्षमायाचना न करें तब तक इनके साथ रिश्ता नाता, रोटी बेटी का व्यवहार बन्द रहे।

पंचायत ने यह दण्ड उनके दुष्कर्मों के अनुसार उचित ही दिया है। किन्तु अब देखना यह है कि अपने वचन के पक्के कौन-कौन हैं और कुत्ते कौन। आपको ज्ञात होगा कि कुत्ता वमन करता है और फिर चाट लेता है अतएव उसको वान्तावल ही कहते हैं। इसी प्रकार जो छोड़े हुए का पुनर्ग्रहण करता है वह भी उस वान्तावले ही कुत्ते के समान ही नहीं अपितु उससे भी बहुत निकृष्ट और पतित समझना चाहिए। जिस पंचायत ने इन तीनों व्यक्तियों को पंचायत से बहिष्कृत किया है उसे चाहिये कि जब तक यह स्वयं अपने पापों का प्रायश्चित कर क्षमा याचना न करें तब तक उनको पतित समझकर अपने प्रण पर डटी रहे।

भाषा-समस्या

भाषा को लेकर आज भारत में स्थान-स्थान पर विवाद खड़े किये जा रहे हैं। पंजाब में तो भाषा की समस्या इतनी उलझा दी गई है कि कोई सुलझाने वाला ही नहीं मिलता। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी तथा मास्टर तारासिंह आदि को तो यह भी सह्य नहीं कि हिन्दी राष्ट्रभाषा बनी रहे। किन्तु

उनको ज्ञान होना चाहिये कि हिन्दी जैसी सुबोध और सरल तथा जनसाधारण में बोली जाने वाली दूसरी कोई भाषा है ही नहीं जो राष्ट्रभाषा का स्थान ले सकने में समर्थ हो।

यह सर्वसम्मत सिद्धान्त है कि किसी को कोई भी भाषा जबरदस्ती न पढ़ाई जाये। हमारे प्रधान मन्त्री पं० नेहरू भी अपने भाषणों में बार-बार यही रट लगाया करते हैं किन्तु पता नहीं पंजाब के बारे में उनकी क्या विचारधारा है। गुरुमुखी की अनिवार्यता को तो हटवाने के लिए ही तो विगत ७ मासों में यहाँ संघर्ष रहा और अभी तक स्थिति तनावपूर्ण है।

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। भाषा आयोग का सुझाव भाषा समस्या को सुलझाने के लिए हमारे विचार से बहुत ही उत्तम है। उसने सलाह दी है कि सभी भाषायें देवनागरी लिपि को स्वेच्छा से अपनावें। यदि सभी प्रान्तीय भाषाओं की एकलिपि देवनागरी हो जावे तो समस्या सुलझ सकती है। लिपि ज्ञान का बहुत कुछ बोझ हल्का हो जाता है। किन्तु अभी भारतीयों का यह दुर्भाग्य ही समझना चाहिए कि वे किसी उचित बात को अपनाने में हिचकते हैं और अपनी-अपनी नई-नई युक्तियाँ देते फिरते हैं। अभी १९ फरवरी को दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० वी० के० आर० वी० राव ने देश की भाषा समस्या पर प्रकाश डालते हुए सलाह दी है कि "भारत की राजभाषा हिन्दी ही हो सकती है और अहिन्दी भाषा-भाषी राज्यों में हिन्दी का शिक्षण उनकी अपनी अपनी लिपि में होना चाहिये।"

काका कालेलकर जो कि एक माने हुए भाषाशास्त्री हैं, बार-बार अंग्रेजी के विरोध में अपने विचार प्रकट करते रहते हैं। उन्होंने भाषा समस्या पर बोलते हुए कहा है—

"अंग्रेजी को इस देश के प्रशासन की भाषा, शिक्षा माध्यम और लोक-जीवन से सम्बन्ध रखने वाले विषयों की भाषा का दर्जा नहीं देना चाहिये। अंग्रेजी यहाँ एक अतिरिक्त भाषा के तौर पर रह सकती है, किन्तु उसका पठन-पाठन अनिवार्य नहीं होना चाहिये।"

उन्होंने तो यहाँ तक कहा कि "सब विषयों का ज्ञान यहाँ अंग्रेजी के माध्यम से कराया जाये, यह अत्याचार केवल इस देश में बर्दाश्त किया जा रहा है। मैं यहाँ स्वराज्य नहीं मानता अगर यहाँ का प्रशासन लोगों की भाषा में न होकर अंग्रेजी भाषा में चलता है।" (हिन्दुस्तान २० फरवरी ५८ ई०)

जिन भारतीयों की बौद्धिक दासता अभी तक समाप्त नहीं हुई है। वे तो अंग्रेजी को राजभाषा बनाने की रट लगाते रहते हैं। उनके अग्रणी हैं श्री राजगोपालाचार्य जी और जिन मन्द बुद्धियों पर प्रान्तीयता और पन्थ का भूत सवार है वे प्रान्तीय भाषाओं के लिए दिन प्रतिदिन नये-नये झगड़े खड़े कर रहे हैं। उनके नेता हैं मास्टर तारासिंह आदि। देश धर्म और राष्ट्र का चाहे सर्वनाश हो जाये किन्तु वे लोग अपनी आदतों को नहीं छोड़ते। हिन्दी विज्ञान सम्मत और सर्वश्रेष्ठ भाषा और लिपि है सौभाग्य से हमारी यही राष्ट्रभाषा भी बन चुकी है। इसको अपनाकर इसकी सर्वतोमुखी उन्नति करना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य बन जाता है। भाषा समस्या का यही हल सबसे उत्तम है कि किसी को कोई भाषा अनिवार्य रूप से न पढ़ाई जाये। सभी प्रान्तीय भाषायें स्वेच्छा से देवनागरी लिपि को अपनायें। इसी में राष्ट्र की एकता है।

—वेदव्रत

स्वावलम्बन

(लेखक–प्राध्यापक वा० विष्णु दयाल एम० ए० मोरीशस)

जो मानव स्वावलम्बी है वह सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र है। वही देश सबसे सुखी बताया जाता है जिसे बहुत कम वस्तुयें बाह्य संसार से मंगा कर अपने अभाव को दूर करना पड़ता है

जब जब प्राचीन काल में यात्री लोग भारत यात्रा करते थे तब वे अपने भ्रमणवृतान्त में लिखते थे कि भारत एक गोदाम है।

भारत स्वावलम्बी रहा, इसीलिए उसे किसी भी अन्य देश से कुछ भी लेना नहीं पड़ता था। यदि विदेशियों ने पक्षपात करके उसे कलंकित करते हुए लिखा कि वह दूसरों के सम्पर्क में रहना पसन्द नहीं करता मतलब यही है कि वे जान न पाये कि दूसरों के साथ सम्बन्ध तब स्थापित होता है जब उनसे कुछ लेना हो।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य नहीं है कि भारत ने अन्य देशोंसे सम्बन्ध स्थापित न किया। उनसे कुछ लेने के लिए नहीं, उन्हें बहुत कुछ देने के लिए। भारत ने अमेरिका, अफरीका, यूरोप से युग-युग में सम्बन्ध स्थापित किया था।

दो वस्तुओं के लिए एक देश दूसरे से मिलता रहता है, एक खाद्यवस्तु और दूसरी विद्या।

भारत में तो वे सब खाद्यवस्तुयें हैं जो अन्य देशों में पायी जाती हैं उस महान् देश में सबसे पहले विद्या का प्रकाश फैला, अतः उसे किसी अन्य देश से विद्या ग्रहण करने की आवश्यकता न पड़ी।

भारत ने अपने आचरण से ही नहीं सिखाया स्वावलम्बी होना सुखी होना है। उसके प्राचीन ग्रन्थों में स्वावलम्बन का पाठ दिया गया है।

जब हम रामायण का अवलोकन करते हैं हम भगवान् रामचन्द्र के वनवास की कथा जान लेते हैं उस कथा की क्या सीख है? यही न कि भगवान ने वन में रहकर एक मात्र वनवासी का सहारालिया १४ वर्ष के लिए बनवासी ही स्वजन हो गया था।

सबसे भारी संकट झेलना पड़ा जब सीताहरण हुआ। उस संकट के काल में भी भगवान् ने नगर वासियों से सहायता की याचना न की थी।

रावण के पास अनन्त बल था। उसके साथ लोहा लेने के लिए भगवान् ने सेवक हनुमान् को साथी बनाया।

भक्तवर हनुमान् वे आत्मा थे जिन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन किया था। वेदमें जो लिखा है कि क्या औषधियाँ; क्या पशु-पक्षी-सब ब्रह्मचारी हो गये हैं' इस प्रकार मनुष्य भी ऋतुगामी होकर ब्रह्मचर्य का पालन करे, उसके अनुसार चल कर, उसकी हनुमान् जी ने व्याख्या की स्कन्ध स्वामी, महीधराचार्य, सायनाचार्य या स्वामी दयानंद सरस्वती ने एक प्रकार की व्यवस्था संसार को दी और हनुमान् ने दूसरी प्रकार की उनका जीवन एक लम्बी व्याख्या थी। हनुमान् चरित्र सिखाता है कि कपि, पक्षी आदि के कण्ठ में बल है तब तो उनकी आवाज स्पष्ट होती है। क्या हम मनुष्य होकर ब्रह्मचर्य का पालन करके अपनी आवाज को सुमधुर न बनावेंगे?

रामायण का तिरस्कार किया जायगा तो भारत भारत न रहेगा वे भारतवासी शनैः शनैः स्वावलम्बन को परे फेंकने लगे हैं जिनके नेत्रों से राम और हनुमान् सरीखे स्वावलम्बन के देदीप्यमान आदर्श ओझल होरहें हैं। उन्हें अपना परिधान कम आकर्षक होने लगा है। क्या साड़ी से भी बढकर कोई परिधान सुन्दर हो सकता है? परन्तु लन्दन में

(शेष पृष्ठ २० पर)

अपना यह वोट उसे दिया नहीं जायेगा

(लेखक— तीर्थराम मोहल्ला गढी, रोहतक)

भोली भाली जनता को धोखा जो दिलायेगा।
अपना यह वोट उसे दिया नहीं जायेगा ॥
खेती बाड़ी अच्छी हो देश का कल्याण है,
घी दूध की नदियां बहें तभी रामराज्य है ।
पूज्य गोमाता पर छुरी जो चलवायेगा,
अपना यह वोट उसे··· ··· ··· ··· ··· ॥१॥

मेरे हिन्द देश की जनता गरीब है,
कांग्रेस की मोटर दौड़ें हालत अजीब है ।
जनता की कमाई को पट्रोल में गंवायेगा,
अपना यह वोट उसे ··· ··· ··· ··· ॥२॥

शिक्षा का प्रबन्ध हो मांग थी सरकार से ।
उसका कैसा उत्तर मिला लाठियों की मार से ।
फिरोजपुर का लाठीचार्ज भुलाया नहीं जायेगा,
अपना यह वोट उसे ··· ··· ··· ··· ॥३॥

हिन्दी का प्रबन्ध हो मांग थी सरकार से,
उसका कैसा उत्तर मिला गुण्डों की मार से।
माता और बहनों की साड़ी जो खिंचवायेगा,
अपना यह वोट उसे ··· ··· ··· ··· ॥४॥

हिन्दू-कोडबिल की कैसी बुरी मार है,
तलाकबिल पास किया कैसी यह सरकार है ।
(राज और सिकन्दर की शादी जो करवायेगा),
भाई और बहन की शादी जो करवायेगा,
अपना यह वोट उसे ··· ··· ··· ··· ॥५॥

स्वार्थपन्थ खतरे में

(रत्नसिंह आर्य बी० ए० छात्र)

मास्टर तारासिंह जी सर्वदा कुछ न कुछ बकते ही रहते हैं। जब आर्य समाज का परमपावन हिन्दी सत्यग्रह चल रहा था तो मास्टर जी रोज कहते थे 'सत्याग्रह बन्द कर दीजिये।' वह बन्द होते ही मास्टरजी ने कहना आरम्भ कर दिया कि यह सरकार ने आर्यसमाज को प्रोत्साहन दिया है। तात्पर्य यह है कि चाहे कुछ बन्द हो जाये या चलता रहे, मास्टर जी तो चलते (बकते) ही रहते हैं। उनमें कोई ऐसा गुण तो है ही नहीं जिससे वे लीडर माने जायें और समाचार-पत्र उनकी चर्चा करें। अतः वे बकते ही रहते हैं। कहीं लोग यह न समझलें कि मास्टर जी समाप्त हो गये।

लीडर बनने की भूख उन्हें सता रही है। इस स्वार्थ के पीछे वे मरे जाते हैं। वे कोई न कोई बहाना लोगों को भड़का कर लीडर बनने का सर्वदा ढूँढ़ते रहते हैं। अमृतसर के सरोवर में किसी मूर्ख द्वारा सिग्रेट फेंके जाने की सब सज्जन घोर निन्दा करते हैं परन्तु मास्टर जी ने इसे भी अपने स्वार्थ का सहारा बना लिया और नारा लगा दिया "उठो सिंहो जागो, सिख पन्थ खतरे में है"। ऐसी बातें सुनकर शंका होती है कि मास्टर जी ने लोगों को भड़का कर अपना लीडर बनने का स्वार्थ सिद्ध करने के लिए स्वयं तो यह कुचेष्टा नहीं करादी है ?

वे स्वार्थ पूरा करने के लिए बुरी बात कहने या करने को तैय्यार रहते हैं। उनको यदि स्वार्थी-टट्टू कहा जाये तो अनुचित न होगा। क्योंकि वे यहाँ तक कह चुके हैं कि पन्थ के लिए देश का नाश स्वीकार है। ऐसा कोई और पन्थ तो है नहीं स्वार्थपन्थ हो सकता है। जो उनका स्वार्थ पूरा करदे वही भला आदमी है और उसी पर मास्टर जी भरोसा करते हैं। नेहरू जी ने मास्टर जी की धमकी से डरकर उनका स्वार्थ पूरा कर दिया तो मास्टर जी कहते हैं "मुझे केवल नेहरू जी पर भरोसा है।" नहीं तो स्वार्थसिद्धि से पहले एक बार करोलबाग दिल्ली में भाषण देते हुए पंजाबी में पण्डित नेहरू के प्रति अपना प्रेम मास्टर जी ने यों प्रकट किया था— "नेहरू अखदा है पंजाबी सूबा नहीं बन सकदा, मैं आखनावां, बच्चू ऐह बनके रहगा।"

पण्डित नेहरू जी भय के कारण मास्टर जी के विषय में चुप हैं अन्यथा उनको जानते तो वे भी हैं, जैसा कि एक बार नेहरू जी ने भी कहा था "मास्टर जी से बात करने का सवाल ही पैदा नहीं होता, वे दिन में ग्यारह पैंतरे बदलते हैं।"

विचार करने से पता लगेगा मास्टर जी किसी के नहीं हैं क्योंकि वे स्वार्थान्ध हैं। अतः सिख भाई इस भूखे गीदड़ के चंगुल में न आयें अन्यथा दुःख पायेंगे। वे समझलें सिख-पन्थ नहीं मास्टर जी का 'स्वार्थ-पन्थ खतरे में है।'

मास्टर जी स्वार्थसिद्ध कर रहे थे तो आर्यसमाज ने मास्टरजी का कान आ पकड़ा इसीलिए तो मास्टर जी ने रोकर कहा है "सिख रहेंगे या आर्यसमाज" रहने वाले को मास्टर जी स्वयं सोचलें। अब आर्यसमाज ने डण्डा उठा लिया है अतः मा० जी समझलें कि उनकी स्वार्थरूपी उदरपीड़ा का एकमात्र चिकित्सक आर्यसमाज ही है और तो कोई रहेगा वह देखा जायेगा परन्तु मास्टर जी का स्वार्थपन्थ नहीं रहेगा।

—०—

सोवियत जनता का पक्षी-प्रेम

(ले० टी० कोरातोवा)

वसन्त आ गया है और मास्को के मार्ग सूर्य की चमकीली धूप में जगमगा रहे हैं। शहर के पार्क और बागबगीचों में, पगडंडियाँ सूख रही हैं, फूलों के पौधे लगाए जा रहे हैं तथा बड़े झाड़दार पेड़ों पर बच्चे चिड़ियों की अगवानी में घोंसले तैयार कर रहे हैं।

तुम्हें जल्दी करनी होगी क्योंकि देखो, बादलों के नीचे-नीचे सारसों का एक झुण्ड धीरे-धीरे उड़ता चला आ रहा है और यह क्या? दूसरी चिड़ियों का एक झुण्ड पास के छप्पर पर बैठा हुआ है।

मैना, स्वालो, सारस, जांघिल, बटिंग, सारिका और चीफचाफ आदि, मौसमी चिड़ियाँ दूरवर्ती देशों से पहले ही से आ रही हैं।

सोवियत संघ की बहुसंख्यक चिड़ियाँ मौसमी हैं। गर्मियों में वे अपने घोंसले बनाती और रहती हैं तथा जाड़ों में नातिशीतोष्ण जलवायु वाले देशों को चली जाती हैं। जाड़ों में रूस की तेज बर्फीली आंधी में जिन्दा रहना इनके वश की बात नहीं है। सिर्फ कुछेक चिड़ियाँ साल भर रहती हैं।

हर साल वसन्त ऋतु में दूर की कठिन उड़ान भरने के बाद चिड़ियाँ अपने परिचित स्थानों में पुराने घोंसलों में आ जाती हैं और यहीं अण्डे देती हैं।

सोवियत संघ के लोग पक्षियों से प्रेम करते हैं और उनकी रक्षा करते हैं।

यूक्रेन के सामूहिक कृषक के छप्पर पर लम्बी टांग वाले जांघिल अपना घोंसला बना रहे हैं।

मास्को के नजदीक गांवों, जंगलों और सघन जाड़ों तथा राजधानी के बागों और पार्कों में मैना, सारिका और कठखोलवा ने अपने घोंसले बना लिए हैं। यह पहला साल नहीं है जब चिड़ियों ने यहाँ घोंसले बनाए हैं और अण्डे दिये हैं। बहुधा कठिन समय में चिड़ियों के लिए अनाज की छोटी छोटी पोटलियाँ पेड़ों में बान्ध दी जाती हैं। जब जोरों की वर्षा होती रहती है तो चिड़ियाँ उड़कर खिड़की के पास चली आती हैं और उनके लिए रोटी के मुट्ठी भर टुकड़े फेंक दिये जाते हैं।

सोवियत संघ में पक्षी का घोंसला नष्ट करना एक बुरी बात समझी जाती है। हर साल वसन्त ऋतु में जंगलों, उद्यानों और बाग-बगीचों में इस तरह की सूचनाएँ लटका दी जाती हैं। जंगल के मित्र पक्षियों की रक्षा करो। पक्षियों की रक्षा करो, क्योंकि शानदार फसल पैदा करने में वे हमारे सहायक हैं, संक्षेप में, यह लिखा होता है। "पक्षी हमारे मित्र हैं।"

जंगल तथा पेड़ पौधों को बर्बाद करने वाले कीड़ों के विरुद्ध संघर्ष करने में चिड़ियां इनसान को भारी मदद पहुँचाती हैं। गाने वाली अधिकांश छोटी चिड़ियां कीड़ों को स्वयं भक्षण करती हैं और अपने बच्चों को खिलाती हैं। पखेरू होने तक मैना के बच्चों का एक जोड़ा ७५०० से अधिक कीड़े-मकोड़ों को हजम कर जाता है। मध्य एशिया के गुलाबी रंग की मैना २०० ग्राम टिड्डी हजम कर जाती है। खेत जोतने के समय डोमकौवा एक दिन में ४००० कीड़े जो मीठे चुकन्दर के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं, चट कर जाता है।

पक्षी अत्यन्त उपयोगी हैं। उल्लू और गरुड़, चूहे तथा गिलहरियाँ का खात्मा कर देते हैं। एक चूहा साल में २-३ कीलोग्राम अनाज नष्ट करता है तथा एक गिलहरी १६ कीलोग्राम अनाज खा जाती है। इससे यह अनुमान लगाना सहज है कि वे कितनी हानि करते हैं। यदि हमारे दोस्त, ये पक्षी न होते तो हमें इससे भी कहीं अधिक हानि उठानी पड़ती। यूक्रेन का उल्लू एक महीने में १०० से १३० चूहे चट करता है तथा पखेरू होने तक उसके बच्चे लगभग १८० गिलहरी और १०० चूहे हजम करते हैं।

बेशकीमत जंगलों को हानि पहुँचाने वाले विभिन्न प्रकार के कीड़े-मकड़ों से रक्षा करने में भी चिड़ियां उपयोगी हैं।

(सोवियत दूतावास नई दिल्ली द्वारा प्राप्त)

धर्म की महिमा

(ले० ब्रह्मचारी महादेव सिद्धान्त शास्त्री, सि० प्रभाकर गुरुकुल झज्जर रोहतक पंजाब)

विश्वशान्ति का एक मात्र उपाय धर्म को अपनाना है।

धर्म=इमान या विश्वास का विषय नहीं, घुटनों का टेकना, जप-व्रत, तिथि, तिलक, छाप, देवी देवताओं का अर्चनादि धर्म के पर्याय वाचक नहीं हैं। इनके करने से मनुष्य कभी भी धर्मात्मा नहीं हो सकता। धर्म शब्द सब भाषाओं की जननी संस्कृत का है "धृञ्=धारणे" धातु से धर्म शब्द बनता है, अतः व्यास जी महा राज ने कहा है।

धारणद्धर्म इत्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः।
यत्स्याद् धारणासयुक्तं स धर्म इति निश्चयः॥

धारण करने से इसका नाम धर्म्म है, धर्म्म ही प्रजा को धारण करता है वही निश्चय से धर्म है। महामुनि कणाद ने कहा है—

यतोऽभ्यूदय निश्श्रेयससिद्धिः स धर्म्मः।

जिससे इस लोक तथा परलोक दोनों स्थानों पर सुख मिले वही धर्म है। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने अपने स्वमन्तव्यामन्तव्य में धर्म की व्याख्या इस प्रकार की है—

जो पक्षपात रहित न्यायाचरण, सत्यभाषणादि युक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है उसको धर्म्म कहते हैं और जो पक्षपात सहित अन्यायाचरण मिथ्याभाषणादि, ईश्वराज्ञा, भङ्ग वेद विरुद्ध है उस अधर्म मानता हूँ। जो मनुष्य धर्मयुक्त व्यवहार में ठीक-ठीक वर्तता है उसको सर्वत्र सुख लाभ होता है, और जो इससे विपरीत वर्तता है, वह सदा दुःखी होकर अपनी हानि उठाता है। परन्तु आज तो इस मङ्गलमय धर्म्म का आचरण न कर, धर्म तथा अध्यात्म संस्कृति प्रधान भारत में सर्वत्र भौतिकवाद-नास्तिकता है, इसी कारण आज अशान्ति दुःख, अन्न वस्त्रादि का अभाव तथा अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्पादि दैवी उपद्रव हो रहे हैं। मानव दानव वदाचरण कर रहा है। "धर्मेण हीना पशुभि समानाः" के अनुसार मनुष्य पशु बनता जा रहा है। सुख व शान्ति चाहने वाले को चाहिये कि वह धर्म का पालन करे क्योंकि मुनिवर चाणक्य ने कहा है—"सुखस्य मूलं धर्मः" अर्थात् सुख का मूल धर्म है। धर्म की आवश्यकता बताते हुये राजर्षि मनु कहते हैं।

धर्म शनैर्निश्चनुयाद् वल्मीकमिव पुत्तिकाः।
परलोक सहायार्थं सर्व भूतान्य पीडयन्।

यथा दीमक बाम्बी को बनाती है वैसे सब प्राणियों को पीड़ा न देकर परलोक अर्थात् परजन्म के लिये धर्म का सचय करें।

नामुत्र सहायार्थं पिता माता च तिष्ठतः।
न पुत्र दारा न ज्ञातिर्धर्म्मस्तिष्ठति केवलः॥

परलोक में न माता, न पिता, न पुत्र, न स्त्री और न सम्बन्धी सहायक होते हैं परन्तु धर्म ही सहायक होता है। यथा कहा भी है।

मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठ समंक्षितौ।
विमुखा बन्धवा यान्ति धर्मस्तमनु गच्छति॥

जब कभी किसी का सम्बन्धी मर जाता है, तब उसको लकड़ी वा मिट्टी के समान भूमि पर छोड़कर बन्धुवर्ग विमुख होकर चला जाता है, कोई उसके साथ नहीं जाता किन्तु धर्म ही उसका अन्त का साथी होता है। अन्यच्च—

चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चले जीवितयौवने।
चला चलेति संसारे धर्म एकाहिनिश्चलः॥ चाणक्य

माया, लक्ष्मी भी चलायमान है और जीवन भी चलायमान है, इस चराचर जगत् में केवल धर्म ही

एक अचल है। इसी प्रकार सब धनादि यहीं धरा रह जाता है, साथ कुछ नहीं चलता, केवल धर्म ही अन्त का साथी है। जैसे कहा है:—

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे-भार्यागृहद्वारि जनाः श्मशाने।
देहश्चितायां परलोकमार्गे-धर्मानुगो गच्छति जीव एकः॥

धन भूमि में पड़ा रहता है, पशु गोशाला में, स्त्री-गृह द्वार पर और जन श्मशान तक देह चिता में जल जाता है, परन्तु परलोक में जीव के साथ केवल धर्म ही जाता है। अन्यच्च—

यौवनं जीवितं चित्तं छाया लक्ष्मीः स्वामिता-।
चंचलानि षडेतानि ज्ञात्वा धर्मपरो भवेत्॥

यौवन, जीवन, चित्त, छाया, लक्ष्मी, स्वामित्व-इन छः को चंचल जानकर धर्म में रत होवें।

जीवन्तं मृतवन्मन्ये देहिनं धर्म वर्जितम्।
मृतो धर्मेण संयुक्तो दीर्घजीवी न संशयः॥

धर्म से विहीन शरीर को जीते हुए भी मरे हुए के समान मानता हूँ। धर्म से युक्त मरे हुये को निसशय से दीर्घ जीवी मानता हूँ।

तस्मात् धर्म्मं सहायार्थं नित्यं संचिनुयाच्छतैं।
धर्मेण हि सहायेन तमस्तरति दुस्तरम्।

इसलिए इस लोक और परलोक में सुख प्राप्ति और सहायार्थ नित्य धर्म का संचय धीरे-धीरे करें, यतोहि धर्म के सहाय से बड़े-बड़े दुस्तर दुःख-सागर को जीव तर सकता है। परम सुख की प्राप्ति धर्म्म से होती है, धर्म मनुष्य के लिये इतना आवश्यक है जितना मीन के लिये जल।

परन्तु आजकल के नवयुवक जो कि पाश्चात्य शिक्षा के रङ्ग में रङ्गे हुये हैं उनको प्रायः यह भ्रम है कि अंग्रेजादि अधर्मी होते हुये भी आज सुखी हैं। परन्तु उन्हें ज्ञान होना चाहिए कि जिस समय कोई अधर्म या पाप करता है, उस समय उसको उस पाप का फल नहीं मिलता, इसलिए मूर्ख लोग यह समझ बैठे हैं पाप का फल सुख है, पापी का पापाचरण उसको सुख के रूप में बढ़ता दिखाई देता है। मनु जी कहते हैं—

अधर्मेणैधत्ते तावत्ततो भद्राणि पश्यन्ति।
ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति॥

जैसे तालाब का जल बन्धन को तोड़कर चारों ओर फैलता है वैसे ही पापी धर्म-मर्यादा छोड़कर मिथ्याभाषण, कपट, पाखण्ड तथा वेदों का खण्डन विश्वासघातादि कर्मों से पराये धनादि पदार्थों को लेकर बढ़ता है, पश्चात् धनादि ऐश्वर्य से खान पान, वस्त्र, आभूषण, मान-प्रतिष्ठादि सांसारिक ठाठ-बाठ को प्राप्त होता है। कभी अन्याय से शत्रु तक को भी जीतता है। कुछ समय के लिये राज्य भी भोग सकता है, किन्तु वह जड़ कटे वृक्ष के समान शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। धर्म के पालन से ही मनुष्य सुख पा सकता है, अन्यथा नहीं। अतः ऋषि-महर्षियों के बताये हुये धृत्यादि धर्म के लक्षणों का पालन किये बिना हम सुखी नहीं हो सकते। वेद-शास्त्र प्राचीन ऋषि-मुनि तथा इस युग के विधाता आदर्श सुधारक महर्षि दयानन्द जी महाराज भी धर्म को सुख का साधन मानते हैं। और साथ में धार्मिक बनने का उपदेश करते हैं किन्तु देश के नरनारी दिन प्रतिदिन प्रायः आचार-हीन और पापी बनते जा रहे हैं और धर्म से कोसों दूर भाग रहे हैं।

हमारे धर्म ग्रन्थकारों ने धर्म के लक्षण जानने के निम्न प्रकार बताये हैं।

आर्षंधर्मोपदेशं च वेदशास्त्राविरोधिना।
यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्म्मं वेदनेतरः॥

अर्थात्—ऋषि महर्षियों का आचार और धर्मों के आदेश का जो वेद, शास्त्र का विरोध न करने वाले तर्क से अनुसंधान करता है वही धर्म को जानता है अन्य नहीं।

अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परम श्रुति॥ मनु० २।१३

जो पुरुष अर्थ=स्वर्ण रत्नादि, कामः स्त्री सेवन आदि में नहीं फंसते हैं उन्हीं को धर्म का ज्ञान होता है। जो धर्म जानने की इच्छा करें वे वेद द्वारा धर्म का निश्चय करके क्योंकि धर्माधर्म का निश्चय विना वेद के नहीं होता। धर्म के लक्षण—

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥ मनु २।१२

वेदस्मृति अनुकूल सत्पुरुषों का आचार जो सनातन अर्थात् वेद संमत कर्म और जो निज आत्मानुकूल हो यह चार धर्म के लक्षण हैं। अर्थात् इन्हीं के द्वारा धर्माधर्म का ज्ञान होता है। जो पक्षपात रहित न्याय का सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग रुपाचरण है उसी को धर्म कहते हैं।

"दशलक्षणेको धर्मः सेवितव्य प्रयत्नतः"—राजर्षि मनु जी के कहे दशलक्षणवान् धर्म का प्रयत्नपूर्वक सेवन करना चाहिये—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥ मनु० ६।९४॥

धृति—१ धैर्य, २ क्षमा=कष्ट सहने की शक्ति, ३ दम=मनोविकारों का दमन करना, ४ अस्तेय=चोरी न करना। ५ शौचम्=सफाई। ६ इन्द्रिय निग्रह=जितेन्द्रिय ७ धी=ज्ञान विज्ञान के धारण की शक्ति, ८ विद्या=विधा, ९ सत्यम्=सचाई, १० अक्रोध=अहिंसा, ये दश धर्म के लक्षण हैं।

—०❀०—

कवित्त –१–

बहू! अकबरपुर और फिरोजपुर के हत्याकाण्ड,
हिटलरशाही के प्रबल सबूत हैं।
देशहित करके सर्वस्व बलिदान अपना,
अलग-थलग बैठे सावरकर से सपूत हैं।
साम्प्रदायिक पक्षपाती निर्दयी अयोग्य दुष्ट,
सत्ता हथियाये बैठे कैरों से कपूत हैं।
पिट कर चुनाव में भी प्रान्त के गवर्नर बनें,
कांग्रेस सरकार की ये काली करतूत हैं।

कवित्त –२–

बां बां करती गउवों की गर्दन पर छुरी चलाते,
ये कांग्रेसी निर्दयी या पत्थर के बुत हैं।
हिन्दी सत्याग्रह को राजनैतिक स्टण्ट कहा,
सञ्चालक जिसके सर्वत्यागी अवधूत हैं।
पक्षपाती नेहरू ने चार सिक्ख मिनिस्टर लिये,
हिन्दु पंजाब के ना किये आहूत हैं।
कट्टर अकाली रात रात कांग्रेसी बने,
कांग्रेस सरकार की ये काली करतूत हैं।

(पं० ताराचन्द शर्मा कविस्थल महेन्द्रगढ)

भारतीय विद्यार्थी आन्दोलन की रूपरेखा और उसका भविष्य

(ले० चन्द्रभानु गुप्ता कोषाध्यक्ष उत्तरप्रदेश कांग्रेस कमेटी)

[गताङ्क से आगे]

विद्यार्थी आन्दोलन का द्वियीय युग १६१६-२८

१६२० की ४ सितम्बर को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन को संचालित करने के लिए एक उपसमिति बनाई गई। और इस कमेटी ने सरकारी स्कूलों से विद्यार्थियों को अलग कर राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना का कार्य-क्रम बनाया। गाँधीजी तथा अली भाइयों ने सारे देश में इसके लिए दौरा किया।

असहयोग आन्दोलन और विद्यार्थी

सारे देश में स्कूलों और कालेजों का बहिष्कार होने लगा। अलीगढ़, पंजाब, बम्बई, देहली, ढाका, बनारस तथा कलकत्ता आदि नगरों में यह आन्दोलन बड़ी तेजी चल पड़ा। हर जगह प्रदर्शन, बाइकाट तथा स्कूलों द्वारा सरकारी सहायता का बाइकाट होने लगा।

यू० पी० के कालेज विद्यार्थियों का पहला अधिवेशन आगरा में हुआ जिसमें करीब चार सौ डेलीगेटों ने भाग लिया। एक असहयोग विद्यार्थी समिति बनाई गई और एक डेली बुलेटिन निकाला जाने लगा।

२५ दिसम्बर १६२० को लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में अखिल भारतीय विद्यार्थी अधिवेशन हुआ, और इसके नेतृत्व में सम्पूर्ण देश में सरकारी स्कूलों तथा कालेजों का बायकाट होने लगा।

इसी प्रकार पंजाब, बम्बई, मद्रास तथा अहमदाबाद आदि नगरों भी विद्यार्थियों की कान्फ्रेंसें हुई और असहयोग आन्दोलन का कार्यक्रम बनाया गया। इस समय तक सारे देश में विद्यार्थी आन्दोलन यद्यपि संघठित रूप से चलने लगा था और विद्यार्थी वर्ग संघठित रूप से कार्य भी करने लगा था, परन्तु अभी तक देशव्यापी स्तर पर किसी भी विद्यार्थी संगठन का निर्माण नहीं हुआ था।

विद्यार्थी आन्दोलन का तृतीय युग १६२८-३४

यह युग सन् १६२८ से प्रारम्भ होता है। ३ फरवरी १६२८ को साइमन कमीशन बम्बई में उतरा। कांग्रेस महासमिति ने देश वासियों को इसके बायकाट के लिये आह्वान किया। सारे देश में उबालसा आ गया। हर जगह बायकाट होने लगा। विद्यार्थी वर्ग आगे बढ़कर इस आन्दोलन को संचालित करने लगा।

साइमन कमीशन वाइकाट और विद्यार्थी

विद्यार्थियों के इस नवीन उत्साह को विद्यार्थी वर्ग के फायदे के लिए इस्तेमाल करने के अभिप्राय से एक अखिल बंगाल विद्यार्थी एसोसिएशन के निर्माण करने का विचार किया गया। सर्वप्रथम कलकत्ते के विभिन्न कालेजों के विद्यार्थी प्रतिनिधियों को लेकर इसका निर्माण किया गया है। इसने अपना एक विधान बनाकर सारे बंगाल के विद्यार्थियों की एक कान्फ्रेन्स बुलाई।

कान्फ्रेंस २३ सितम्बर १६२८ को पंडित जवाहरलाल नेहरू के सभापतित्व में हुई इसमें बंगाल के प्रायः सभी कालेजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और अखिल बंगाल विद्यार्थी एसोसिएशन का निर्माण किया। इस सघठन के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के मस्तिष्क में सारे भारत में एक ऐसा संघठन करने की बात थी जो स्वयं विद्यार्थियों द्वारा संचालित होवे तथा विद्यार्थियों का हित साधन कर सके और सही माने में एक विद्यार्थी आन्दोलन विकसित हो सके।

इस प्रकार इसने बड़ी तेजी से प्रगति की और अपने कदम बढ़ाये और देखते-देखते एक साल के अन्दर करीब २० हजार सदस्यों को इसने भर्ती कर लिया।

इस संघठन ने "इन्डिया टूमारो" नामक एक अंग्रेजी पत्र भी निकालना प्रारम्भ कर दिया।

विदेश में विद्यार्थियों से सम्पर्क

इस संस्था ने विदेश में भी विद्यार्थियों से सम्पर्क स्थापित किया तथा कुछ विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिये विदेश में भेजा भी। शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिये भी इस संस्था ने प्रयास किया।

यह संघठन विद्यार्थियों की मांगों को लेकर अपनी असाधारण कामयाबी करता रहा। उसी समय १९३० में महात्मा गांधी का सत्यग्रह आन्दोलन शुरू हो गया। सत्याग्रह से सारे देश में बृटिश वस्तुओं का बायकाट होने लगा। देश के विद्यार्थियों ने अपने को इस कार्य में झोंक दिया और इसे बड़ी खूबी के साथ निभाया। बंगाल के इस विद्यार्थी संघठन ने इस कार्य भार को अपने हाथों में लिया, स्कूल और कालेजों को छोड़कर हजारों विद्यार्थी इस कार्य में जुट गये। पुलिस दमन भी अपनी चरम सीमा पर था। कलकत्ते का अंग्रेज व्यापारीवर्ग तिलमिला उठा और इसके लिये सेक्रेटरी आफ स्टेट के पास दो बार रिपोर्ट भेजी। परिणामस्वरूप अखिल बंगाल विद्यार्थी एसोसियेशन गैर कानूनी घोषित कर दिया गया।

विहार विद्यार्थी कान्फ्रेन्स

४ अक्तूबर को श्री वासवानी की अनुपस्थिति में श्री राजेन्द्रप्रसाद के सभापतित्व में विहार विद्यार्थियों की कानफ्रेन्स मोतीहारी में हुई। वासवानी ने अपने सन्देश भाषण में जर्मनी, इटली व रूस के विद्यार्थी आन्दोलन पर प्रकाश डाला और मुसोलिनी की संघठन शक्ति की तारीफ की।

अखिल भारतीय विद्यार्थी कान्फ्रेन्स

कांग्रेस के १९३० के लाहौर अधिवेशन के समय सम्पूर्ण देश के विद्यार्थियों की भी एक कान्फ्रेंस हुई और इसमें एक अखिल भारतीय विद्यार्थी संघठन के निर्माण करने का प्रस्ताव लिया गया।

१९३१ के कराची कांग्रेस के अवसर पर विद्यार्थियों की दूसरी कान्फेन्स पंडित जवाहरलाल नेहरू के सभापतित्व में हुई। इसमें अखिल भारतीय विद्यार्थी फेडरेशन नामक संघठन बनाना निश्चित किया गया और इसकी शाखायें सारे देश में फैलाने का प्रस्ताव लिया गया। इसमें करीब ७०० डेलीगेटों ने भाग लिया था।

विद्यार्थियों में विप्लवी भावनाओं का श्रोत

यह समय देश में संघर्ष का समय था, गांधी जी का बायकाट सत्याग्रह अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था। देश के सारे संगठन गैर कानूनी करार दे दिये गये थे। बहुत से विद्यार्थी फरार हो गये और वे गुप्त क्रान्तिकारी संस्थाओं शामिल होने लगे।

वीर छात्रायें भी आजादी को बलिवेदी पर

बंगाल के गवर्नर श्री स्टेनले जैकसन पर ६ जुलाई, १९३२ को जब वे कलकत्ता यूनिवर्सिटी के कन्वकेशन के अवसर पर बोल रहे थे। एक छात्रा बीनादास ने उन पर पाँच गोली का फायर किया परन्तु वे बाल-बाल बच गये।

५--अगस्त को स्टेटस्मैन के एडीटर की अतुल कुमार सेन नामक एक विद्यार्थी ने गोली से हत्या की। यह विद्यार्थी बंगाल के विद्यार्थी संगठन का सक्रिय सदस्य था। सन् १९३३ के अगस्त में बंगाल में ५ छात्राओं को बिना लाइसेन्स के पिस्तौल रखने के अभियोग में गिरफ्तार कर लिया गया। इसी वर्ष अक्तूबर में ज्योतिकान्ता नामक एक और बी० ए० की छात्रा को रिवाल्वर रखने के अभियोग में गिरफ्तार कर चार वर्ष का कठोर कारावास दिया गया।

इस प्रकार इस युग में विद्यार्थियों ने भारतीय विद्यार्थी आन्दोलन में वीरतापूर्ण पार्ट अदा किया और विद्यार्थी संघठन की अखिल भारतीय पैमाने पर संघठित होने के लिए पृष्ठभूमि तैयार हो गयी। इस युग में विद्यार्थी आन्दोलन की यही प्रमुख विशेषता थी। (क्रमशः)

संस्था-समाचार

गुरुकुल झज्जर का ३६वाँ वार्षिक महोत्सव १५, १६ फरवरी शिवरात्रि के पुण्य पर्व पर बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया गया। इस महोत्सव में आर्य जगत् के महान् सन्यासी विद्वान् एवं उपदेशक पधारे। जिन के प्रवचन और उपदेशों द्वारा ज्ञानपिपासु सज्जनों ने उपदेशामृतपान कर अपनी पिपासा शान्त की। उनमें निम्नलिखित सज्जनों के नाम विशेषतया उल्लेखनीय हैं—श्री स्वामी धर्मानन्द जी महाराज श्री स्वामी सन्तोषानन्द जी महाराज, श्री प० बुद्धदेव जी विद्यामार्तण्ड, प्रो० शेरसिंह जी, चौ० बदलूराम जी, आचार्य राजेन्द्रनाथ जी शास्त्री, श्री पं० विश्वप्रिय जी शास्त्री, श्री पं० युधिष्ठर जी मीमांसक श्री पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती, आचार्य भगवान्देव जी, पं० सत्यदेवजी वासिष्ठ, मुनि देवराज विद्यावाचपति, स्वामी नित्यानन्द जी महाराज।

आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब की भजन मण्डलियों के भजनोपदेश हुए, जिनमें श्री पं० ब्रह्मानन्द जी श्री पं० हरीश्चंद्र जी का नाम विशेषोल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त कुंवर जोहरीसिंह, चंदगीराम, चौ० नरसिंह, पं० रामपत और म० प्यारेलाल आदि के भी भजन हुए।

ब्रह्मचारियों के वाद-विवाद एवं अन्त्याक्षरी हुई तथा आसन, मोगरी आदि के व्यायामों का प्रदर्शन किया गया। इनमें ब्रह्मचारियों को पारितोषिक भी दिया गया। १५ फरवरी को सायंकाल ला० हरिशरण जी ने जादू के खेलों का भी प्रदर्शन किया।

उत्सव के प्रधान थे चौ० जयसिंह जी ठेकेदार मदीनानिवासी। आपने अपने प्रिय गुरुकुल को ११००) दान दिया और ३००) छात्रवृति प्रदान की। पं० सत्यदेव जी वासिष्ठ भिषक केसरी ने भी १०) मासिक छात्रवृत्ति एक वर्ष तक देने का वचन दिया

महोत्सव से १२ दिन पूर्व ऋग्वेद से महायज्ञ प्रारम्भ हुआ था, जिसकी पूर्णाहुति १६ फरवरी को प्रातःकाल दस बजे हुई। ब्रह्मा का आसन मुनि देवराज जी विद्या बाचस्पति ने किया। पूर्णाहुति के समय यज्ञोपवीत-संस्कार करवाये गये तथा उपस्थित सज्जनों ने दुर्व्यसनों के त्याग और सद्गुण ग्रहण करने का व्रत ग्रहणपूर्वक आहुतियां डालीं।

श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज अस्वस्थ होने के कारण उत्सव में सम्मिलित न हो सके। श्री स्वामी आनन्दभिक्षु जी ने १५, १६ फरवरी का समय अन्यत्र दे दिया था अतः आप १३ और १४ फरवरी को महायज्ञ में सम्मिलित होकर उत्सव से पूर्व ही वापिस चले गये।

श्री चौ० मनफूलसिंह जी की अध्यक्षता में १६ फरवरी को हरयाणा सत्याग्रही सम्मेलन हुआ जिस में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ (क) यह सम्मेलन पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सम्बन्ध में चालू किये गये सत्याग्रह में अपने प्राणों की आहुति देनेवाले वीर सुमेरसिंह आदि १६, हुतात्माओं के प्रति श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता है तथा सत्याग्रह में जेल जाने वाले सत्याग्रहियों के प्रति आभार प्रकट करता है। (ख) यह सम्मेलन उन सब सज्जनों के प्रति आदर प्रकट करता है कि जिन्होंने सत्याग्रह के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का सहयोग प्रदान किया है। (ग) यह सम्मेलन वीर हुतात्माओं की स्मृति में दयानन्द मठ रोहतक तथा उन उनकी जन्मभूमि में बनाये जाने वाले स्मारकों के लिये पूर्ण शक्ति से धनादि का सहयोग देने के लिए समस्त जनता से प्रबल अनुरोध करता है।

वार्षिक महोत्सव पर लगभग छः हजार रुपया दान आया। १५ फरवरी को रात्रि में आठ बजे से "विद्यार्य सभा गुरुकुल झज्जर" का साधारण वार्षिकाधिवेशन प्रधान रामकला कप्तान की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। जिसमें उपस्थिति के

(शेष पृष्ठ बीस पर)

"सुधारक" के सम्पादकादि का विवरण

फार्म ४

(सी रूल ८)

१—प्रकाशन का स्थान	गुरुकुल झज्जर (रोहतक)
२—प्रकाशन का अवधिक्रम	प्रतिमास
३—मुद्रक का नाम	पं० जगदेवसिंह "सिद्धान्ती"
राष्ट्रीयता—	भारतीय
पता—	सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली।
४—प्रकाशक का नाम	आचार्य भगवान्देव
राष्ट्रीयता—	भारतीय
पता—	गुरुकुल झज्जर (रोहतक)
५—सम्पादक का नाम	आचार्य भगवान्देव
राष्ट्रीयता—	भारतीय
पता—	गुरुकुल झज्जर (रोहतक)
उन शेयर होल्डरों के नाम और पते जिनके पास कुल पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक शेयर हैं।	प्रकाशनादि का सम्पूर्ण व्यय गुरुकुल झज्जर करता है। अन्य कोई हिस्सेदार नहीं है।

मैं आचार्य भगवान्देव यह घोषित करता हूँ कि ऊपर दिया गया विववरण जहाँ तक मैं जानता हू तथा मेरा विश्वास है सत्य है।

ता० १६-२-५८

प्रकाशक के हस्ताक्षर

—आचार्य भगवान्देव

अब तो सुध लो तुम विश्वपिता !

(प्रणेता— ब्र० सुदर्शनदेव व्याकरणाचार्य)

(१)

अब छोड़ दिया पढ़ना लिखना
नित यज्ञ करें न पढ़ें द्विज ना।
सुख देखन को न मिले अधुना
अब तो सुध लो तुम विश्वपिता ॥

(२)

बलहीन बने अपने खतरी
जनता—परिपालन छोड़ बरी।
तब भारत को निंगलें न अरि ?
अब तो सुध लो तुम विश्वपिता ॥

(३)

सब वैश्य कु लोभ-समुद्र धसे
धन जोड़ लिया अब जाल फसे।
जग को करना सब नंज वसे
अब तो सुध लो तुम विश्वपिता ॥

(४)

अब शूद्र वराकन दोष नहीं
वह भी जगती गति देखत ही।
दुनियां करती करता हूँ वही
अब तो सुध लो तुम विश्वपिता ॥

(५)

सब वर्ण-सुरीति कुरीति मिली
व्यभिचार तना सुख शान्ति जली।
दुःखदायक राग बसा सुबली
अब तो सुध लो तुम विश्वपिता ॥

(६)

जग में अब भोग विलास घना
सगरा जग है श्रुतिपाठ विना।
तब मानव रोग-निधान बना
अब तो सुध लो तुम विश्वपिता ॥

श्रीमद्भागवद्गीता

(मुनि देवराज)

(गताङ्क से आगे)

सत्व शान्ति का, रजस-चंचलता का तथा तमस अन्धकार का या आवरण का चिह्न है। लालटेन से हमें उपयोगी प्रकाश तभी मिल सकता है जब वह स्थिर हो, उस पर कालिमा न हो, कोई आवरण न आ गया हो और उसकी चिमनी साफ हो। इसी प्रकार मन में स्थिरता हो और विकारों का आवरण उस पर न हो तभी उससे ज्ञान का बोध हो सकता है। रंगीन चिमनी केवल अपने रंग का ही प्रकाश फैलाती है। इसी प्रकार विकारयुक्त मन अपने स्वभाव के अनुसार ही अपने जगत् को प्रभावित करेगा। लालटेन में जलने वाला तैल भी शुद्ध होना चाहिए अन्यथा उस के धुएँ में दुर्गन्ध व्याप्त होगी। अर्थात् जिस वस्तु से हमें प्रकाश लेना है वह स्वतः स्वरूप से ही निर्मल होनी चाहिए। इसके साधन उपनिषद् में वर्णित हैं। प्रकृति का जैसा गुण हमारे अन्तःकरण में विद्यमान होगा वैसा ही वह अच्छा या बुरा प्रभाव उत्पन्न करेगा। मनुष्य के अन्तःकरण में आत्म-ज्योति का प्रकाश विद्यमान है। आत्मा ज्ञान-स्वरूप है तो प्रश्न है कि उसमें बाधाएँ कहाँ से उत्पन्न होती हैं। मनुष्य के आत्मा का प्रकाश ही बाहर प्रकट होता है, उसके मन-बुद्धि, चित्त पर प्रकाश डालता है। इस अन्दर से उत्पन्न प्रकाश के बहिर्प्रभाव में हमारे चित्त-गत संस्कारों से बाधायें उत्पन्न होती हैं। चित्त वासनाओं का भण्डार है और यही सामने आकर खड़ी हो जाती हैं। वासनाएँ सात्विक, राजसिक, तामसिक तीन प्रकार की होती हैं। हमारी जैसी वासना होगी उसी के अनुसार हमारे अन्तःकरण का प्रकाश प्रकट होगा। हमारा चित्त जैसी वासना से वासित होगा वैसी ही उसकी प्रवृत्ति होगी। जाग्रत हुए संस्कार का नाम वृत्ति है और जब यह वृत्ति इन्द्रियों के द्वारा प्रकट होती है तो उसे प्रवृत्ति कहते हैं। संस्कार द्वारा वृत्ति और वृत्ति द्वारा प्रवृत्ति का जन्म होता है।

अब यह देखना है कि हम प्रवृत्त क्यों होते हैं। जब हमें भूख की कमी अनुभव होती है अर्थात् इसका संस्कार जाग्रत होता है और वह कमी रूप वृत्ति बनती है तो हम भोजन की खोज में प्रवृत्त होते हैं। हम जिस वस्तु की कमी अपने अन्दर देखते हैं उसे दूर करने को बाहर प्रवृत्त होते हैं। यह कमी अशना कहलाती है। 'अशम् नयते इति अश्नाय।' अश अर्थात् जाग्रत संस्कार की पुष्टि करने वाला, भोजन। अशना का दूसरा अर्थ है इच्छा। इच्छा जिस प्रकार तुष्ट हो वैसा कर्म हम करते हैं। कर्म का कारण अपने अन्दर कमी का अनुभव होना है और उसे पूरी करने के लिए जो हमारी गति होती है और वह काम कहलाती है। क अर्थात् सुख, उसका हेतु भूत पदार्थ जिससे हमारी इच्छा शान्त होती है काम कहलाता है। अर्थात् जब तक इच्छा न होगी, कर्म न होगा। जो भी हम करते हैं वह काम की चेष्टा है। यह मनु के मन्तव्य की व्याख्या हुई।

अब देखना है कि सकामता और निष्कामता क्या है? जिस अपूर्णता के भाव को लेकर हममें काम की उद्गति होती है, जिसे लेकर हम बाह्य चेष्टा करते हैं वह यदि दूर हो जाये तो हम निष्काम हो जायें। वह कैसे हो? हम यदि, जिसमें कामना नहीं है, जो पूर्ण-काम है उसके रूप में यदि हो जायें तो ऐसा सम्भव है। पूर्ण काम, आप्त काम और काम यह तीन शब्द आये हैं। आप्त काम अर्थात् जिसने कामना प्राप्त करली है। कृष्ण भगवान् अपने लिए

(क्रमशः)

कहते हैं कि मुझे कुछ करना नहीं है और न मुझे कुछ प्राप्त करना है। परमेश्वर का स्वरूप बताया है कि सब कुछ उसमें विद्यमान है। जो वस्तु नहीं है उसीकी इच्छा या कामना सम्भव है। जहाँ पूर्णता है, जिसके पास सब कुछ है उसे कोई कामना नहीं। संसार में कोई भी प्राणी सच्चे अर्थ में सुखी या शान्त प्रतीत नहीं होता। एक बड़ा खेल चल रहा है। केवल इसको देखने वाला ही इसका आनन्द ले सकता है। मनुष्य की दो अवस्थाएँ हैं--पूर्णता की और अपूर्णता की। अपूर्णता की अवस्था देखकर मनुष्य पूर्ण होना चाहता है किन्तु एक अपूर्णता दूर होती है तो दूसरी आ खड़ी होती है। गर्मी में गर्मी और सर्दी में सर्दी से व्याकुल हो हम परिवर्तन की इच्छा करते हैं। बरसात में भी अनेक बाधाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। वास्तव में हमें विभिन्न समय वा परिस्थिति में अनुकूल अपने को रखने (adaptation) का सामर्थ्य बढ़ाना चाहिए। दूसरों से मिलकर रह सकना एक बड़ा भारी गुण है। इस गुण को बढ़ाते जायें तो अपूर्णता को जीता जा सकता है। प्रकृति पर विजय तभी प्राप्त हो सकती है जब अपूर्णता का अनुभव न हो। प्रकृति अपना स्वरूप लेकर हमारे सम्मुख उपस्थित होती है। हम उससे कह सकें कि हमें कुछ नहीं चाहिये 'स्वस्थ' होने पर आत्म-स्थिति सम्भव है। स्व के अतिरिक्त जो पर है, अनात्म है उसमें हम स्थित न हों ऐसा अभ्यास करते जाइए जब तक स्वरूप स्थिति पूर्णता की प्राप्ति न हो। आत्मस्थ होने का अर्थ है कि स्व और पर का भेद मिट जाये या इसका विवेक हो जाये। रूपात्मक योग की पराकाष्ठा में पहुंच कर भी व्यक्ति आत्मस्थ हो गया हो यह आवश्यक नहीं। जब अन्य वस्तुओं को अपनाने की प्रवृत्ति अभ्यास के द्वारा निवृत्त हो जाए तब ही स्वस्थ कहा जायेगा। अन्यथा जिस रूप में प्रकृति उसके पास होगी उससे उकता कर वह दूसरे रूप में इस प्रकार वह एक रूप को छोड़कर अन्य रूपों को चाहेगा। स्वरूप में स्थित होना ही परमात्मा की प्राप्ति है। आत्मा भी ज्ञान ज्योतिमय है और परमात्मा भी। हमारा विश्व बड़े विश्व का ही छोटा रूप है अतः परमात्मा में स्थिति या प्रलय में स्थिति एक ही बात है। जब तक आत्मा में स्थिति न होगी तब तक अपूर्णता का भाव बनता ही रहेगा। आशना या कामना बनी रहेगी और तदनुसार वैसे ही कर्म हम करते रहेंगे यह है सकाम प्रवृत्ति।

परमात्मा स्थित रहकर जो कर्म करता है उसे निष्काम कर्म कहते हैं। अनेक काम करते हुये भी माता का ध्यान बालक पर रहता है। इसी प्रकार जब तक शरीर है तब तक कार्य करना पड़ता है किन्तु चित्त उस आत्म-स्थिति को पकड़े रहता है जगत् में कार्य करते हुए उलझता नहीं आत्म-निवृत्ति द्वारा उसका निराकरण होता रहता है, पुराने संस्कारों को भोग कर ज्ञान द्वारा नया संस्कार पैदा नहीं होने दिया जाता। श्रीकृष्ण ने कहा है "न मे पार्थ अस्ति कर्त्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन ? नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त्त एव च कर्मणि।" अर्थात न मेरा कोई कर्त्तव्य है न मुझे कुछ चाहिये, फिर मैं काम करता हूँ। उन्होंने आगे और कहा है यदि मैं कार्य न करूँ तो संसार में उलट-पुलट हो जाये मैं मर्यादा के साथ कार्य करता हूँ परन्तु उसका फल मुझे नहीं लगता। निर्वासना पूर्वक कर्म करने से उसका फल हमारे पास नहीं आता। अहंकार जब एक कर्म को अपनाता है तभी उसका फल संस्कार के रूप में चित्त में बैठता है। जब अहंकार है तो किये कर्म की वासना मन में रहती है। अन्यथा वह वृत्ति या संस्कार नहीं बनता यह निष्काम-स्थिति है। जब वह निष्काम हो गया तो कर्म के बन्धन से छूट जायगा अन्यथा कर्म का फल उत्पन्न होकर बन्धन का कारण बनेगा। बिना कर्म किये रह नहीं सकते परन्तु जो कर्म करे वह बन्धन कारक न हो इसके लिये आत्म-स्वरूप को पहचान कर आत्मस्थ होना होगा। निर्द्वन्द्व अवस्था में पहुंच कर बड़ी आसानी से बंधन छूट जाता है। कर्मफल रूप दुःख रूप बन्धन नहीं

रहता। अहं पर विजय पाकर जो कर्म करते हैं वह बन्धन कारक नहीं होता। दूसरे शब्दों में अन्तर्मुखी वृत्ति द्वारा निष्काम भाव और बहिर्मुखी वृत्ति से सकाम भाव रहता है। आत्मस्थिति में मनुष्य वासनाओं से रहित रहता है और नीचे प्रकृति की स्थिति में मनुष्य कामना से प्रवृत्त होता है उसे अपूर्णता का अनुभव होता है, ये दोनों चीजें साथ-साथ नहीं चल सकती। श्रीकृष्ण ने बताया है कि आत्मस्थ हो जाओ। ऐसा ही व्यक्त मुनि कहलाता है और बंधन मुक्त होता है। उसका फिर पुनरावर्तन नहीं होता। संस्कारों के कारण जिन बन्धनों से वह खिंचता था वह बन्धन समाप्त हो जाता है। जहाँ उसे पहुंचना था वहाँ पहुँचने के पश्चात् केवल शारीरिक कर्म होते हैं। जिससे उसका शरीर चलता रहे। "शरीरं केवलं कर्म कुर्वन् नाप्नोति किल्बिषम्" "इसे कहते हैं अनिवर्त्तन—फिर पीछे न लौटना" "यं गत्वा न निवर्त्तन्ते" जिसे प्राप्त करके फिर लौटते नहीं। शरीर के छूटने का नाम मोक्ष नहीं है अपितु कार्य करते हुए भी बन्धन में न आना ही मोक्ष है।

अब हम निर्वाण के विषय में विचार करते हैं। गीता के पाचवें अध्याय में इसका विशेष वर्णन है। निर्वाण शब्द में वण धातु है जिससे वाणी शब्द बनता है। शब्द का स्वरूप तरङ्ग (viburation) के और कुछ नहीं है। क्रमशः

(पृष्ठ ६ का शेष)

पहुँचकर इसे त्याग दिया जा रहा है। जब से उडन तश्तरी की चर्चा देश में चल पडी है कई अन्वेषकों ने ग्रन्थ और लेख लिखकर सिद्ध किया है कि भारत में विज्ञान ने भी उन्नति की थी हमारी ज्ञान ज्योति का ज्योंही प्रसार हुआ समस्त संसार को अभूत पूर्व लाभ हुआ।

हम दाता को दूसरों से बहुत कम लेना पडा है हमने जो दिया उससे बहुत कम लिया यदि हम स्वावलंबी बनकर अपने यहाँ के ज्ञान की खोज करते हमें दीख पड़ता की औरों से ज्ञान उपलब्ध करना शोभा नहीं देता।

यदि भारतवासी स्वतंत्र हुए उन्हें अब राज नीतिक स्वतंत्रता से सन्तुष्ट होना नहीं चाहिए उन्हें पुनर्वार भारत को जगद गुरु के आसन पर बिठाकर ही दम लेना चाहिए वे सँभल कर चलने लग जायें तो स्वयं स्वावलम्बी बन कर दूसरों को स्वावलँबन का पाठ देंगे और चिरकाल तक सुख का उपभोग करेंगे। पाठक पढ़ चुके हैं कि लब्धप्रतिष्ठ विचारक एवं लेखक श्री जोड ने स्पष्ट कह दिया है कि पश्चिम को भारतवर्ष की ओर देखना है। भारत इस योग्य बने कि भारतेतर देश उसे गुरु समझकर उस से सीख लिया करें।

(पृष्ठ १६ का शेष)

पश्चात् वार्षिक आय-व्यय लेखा (हिसाब) सुनाया गया। अधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्योंका चुनाव सर्वसम्मति से यथापूर्व ही रहा, केवल निम्न लिखित परिवर्तन हुए—

१—उपप्रधान ठाकुर हरफूलसिंह जी के स्थान में सुबे० घड़सीराम जी चुन गये।

२—उपमन्त्री मा० दीपचन्द जी के स्थान में भीष्मप्रताप जी शास्त्री चुने गये।

३—अन्तरंग सदस्य मा० होशियारसिंह जी के स्थान में चौ० मनफूलसिंह जी वकील चुने गये।

४—अन्तरंग सदस्य श्री रिसालसिंह जी के स्थान में मेजर मेहरचन्द जी चुने गये।

५—अन्तरंग सदस्य दफेदार दुलीचन्द जी के स्थान में महावीर सिंह जी बोहर चुने गये।

६—अन्तरङ्ग सदस्य धर्मदेव जी के स्थान में सुबे० जुगलाल जी सुवाना चुने गये।

७—अन्तरङ्गसदस्य जमादार अखेराम जी के स्थान में श्री पहलादसिंह जी भदानी चुने गये।

इसके पश्चात् ग्राम और व्यक्तियों की ओर से अन्न और धन लिखवाया गया और ११। बजे शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

निवेदक—
मुख्याधिष्ठाता – गुरुकुल झज्जर

शिवरात्रि के उपलक्ष में विशेषोपहार

केवल तीन मास (जनवरी, फरवरी, मार्च) के लिये मूल्य में भारी कमी

१--हमारी रसायनशाला द्वारा निर्मित सभी औषधियाँ १०) दस रुपये से अधिक माल लेने पर पौने मूल्य में दी जायेंगी।

२----१००) सौ रुपये या अधिक के आर्डर पर २५% कमीशन और मार्ग व्यय दिया जायेगा।

३—५००) का आर्डर देने पर ३०% कमीशन और मार्ग व्यय दिया जायेगा।

४---१० ग्रस सुर्मे की शीशियों के आर्डर पर ५०% कमीशन दिया जायेगा अर्थात आठ आने की शीशी चार आने में दी जायेगी।

५--विशेष विवरण के लिये हमारा सूचीपत्र मुफ्त मंगवा कर पढ़ें।

१–नेत्र ज्योति सुर्मा

लगाइये और नेत्र ज्योति पाइये। इसके लगाने से आँखों के सब रोग जैसे आँख दुखना,खुजली, लाली, जाला, फोला, रोहे, कुकरे, पास का कम दीखना (शार्ट साइट) दूर का कम दीखना (लांगसाइट), प्रारम्भिक मोतियाबिन्द आदि दूर हो जाते हैं। आंखों के सब रोगों की रामबाण औषधि है। यही नहीं किन्तु लगातार लगाने से दृष्टि (बीनाई) को तेज तथा आँखों को कमल की तरह साफ स्वच्छ रखता है। बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। प्रतिदिन जिसने भी लगाया उसी ने मुक्तकण्ठ से इस सुर्मे की प्रशंसा की है। मूल्य छोटी शीशी ।–) बड़ी शीशी ।।)

२–नेत्रामृत

लाली, कड़क, धुन्ध, ढलकवा, गरदोगुब्बार, रोहे तथा भयंकरता से दुखती आंखों के लिए जादू भरा विचित्र योग है।

मूल्य बड़ी शीशी ।।=) छोटी शीशी ।=)

३–स्वप्नदोषामृत रस

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषध इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे पीछे या बीच में वीर्य आने को बन्द कर देगी। मूल्य ५) तोला

सेवन विधि—प्रातः सायं एक-एक गोली गोदुग्ध या शीतल जल के साथ। विशेष—यदि स्वप्नदोष का रोगी अत्यन्त दुर्बल हो तो दूध के साथ और हृष्ट-पुष्ट हो तो जल के साथ सेवन करें। ब्रह्मचारी को जल के साथ सेवन करना चाहिए।

४–रोहितारिष्ट

यह अरिष्ट पुराने और बढ़े हुए प्लीहा (तिल्ली) यकृत जिगर के लिये अद्वितीय औषध है। जब किसी औषध से यह रोग ठीक न होते हों तो इसका चमत्कार (जादू) प्रयोग करके देखना चाहिये। यह उदर पीड़ा गोला, वायु गोला आदि पेट में वायु का भरना, अजीर्ण, भूख न लगना, मलबद्धता आदि सभी पेट के रोगों को दूर करता है। सदैव रहने वाले मलबन्ध (कब्ज) को दूर करने की यह एक ही औषध है। यह जठराग्नि को दीप्त करता है। पाचन शक्ति को खूब बढ़ाता है। यह आयुर्वेद की रामबाण औषध है। १ पौण्ड मूल्य २)

५–कर्णरोगामृत

कान में पीप आना, बहरापन और प्रत्येक प्रकार की कर्ण पीड़ा को दूर करने के लिए यह अति उत्तम औषध है। प्रतिदिन सेवन करने से कानों का कोई रोग नहीं होता और मस्तिष्क की शुष्कता दूर होती है। मूल्य एक शीशी १)

६–स्वप्नदोषामृत चूर्ण

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषधि इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे-पीछे या बीच में वीर्य के निकलने को बन्द कर देती है।

मूल्य १) छटांक

७--व्रणामृत

भयंकर फोड़े, फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा अनेकों वर्षों के नासूर (सरह) आदि रोगों की अद्वितीय औषधि है। दिनों का काम घण्टों में, घण्टों का काम मिनटों में करती है। —मूल्य बड़ी शीशी १) छोटी ।।)

८—स्वास्थ्यवर्धक चाय

यह चाय स्वदेशी, ताजी एवं शुद्ध जड़ी-बूटियों से तैयार की गई है। वर्तमान चाय की भाँति यह नींद और भूख को न मरकर खाँसी, जुकाम, नजला, सिरदर्द, खुश्की अजीर्ण थकान, सर्दी आदि रोगों को दूर भगाती है। मस्तिष्क एवं दिल को शक्ति देती है। मूल्य १ छटांक।-)

९—दन्तरक्षक मंजन

दाँतों से खून वा पीप का आना, दाँतों का हिलना, दाँतों के कृमि रोग, सब प्रकार की दाँतों की पीड़ा तथा रोगों को दूर भगाता है और दाँतों को मोतियों के समान चमकाता है।—मूल्य एक शीशी ।।)

१०—बाल रोगामृत

बालकों के हरे-पीले दस्त, अपच, अजीर्ण (कब्ज) अरुचि, दाँत निकलते समय के रोग, सूखिया मसान रोग, वमन, निर्बलता, ज्वर आदि सभी रोगों को दूर कर बालकों को मोटा करता है। अतः प्रत्येक गृहस्थी घर रखे। मूल्य एक शीशी ५)

११—संजीवनी तैल

मूर्छित लक्ष्मण को चेतना देने वाली इतिहास प्रसिद्ध बूटी से तैयार किया गया। यह तैल घावों के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भर कर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है दिनों का काम घण्टों और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है। मू० ।।≈) नमूना

सेवन विधि—फाये में भर कर बार-बार चोट आदि पर लगायें।

१२—च्यवनप्राश

इस ऋतु के ताजे आँवले से तैयार किया गया स्वादिष्ट, सुमधुर और एक दिव्य रसायन (टानिक) है। जिसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खाँसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक, सभी हृदय रोगों की अद्वितीय औषध है। स्वाप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा अन्य सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका (निरंतर) सेवन समूल नष्ट करता है। यह निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है।

मूल्य ७) सेर, ५ सेर लेने पर ६) सेर

१३—बलदामृत

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आ जाता है। पीनस (सदा रहने वाले जुकाम और नजले) की महौषध है। वीर्य बर्द्धक, कास (खाँसी) नाशक, राजयक्ष्मा (तपेदिक). श्वास (दमा) के लिये लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करती तथा अत्यन्त रक्त वर्द्धक है। निर्बलों कर बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ट बनाती है। यह अपने ढंग का एक ही औषध है। मूल्य ५) बड़ी शीशी
२) छोटीशीशी

१४—ज्वरामृत

यह नये व पुराने सभी प्रकार के ज्वरों की रामबाण औषध है। बिगड़े हुए मलेरिया, विषम ज्वर को दू करने में अद्वितीय औषध है। कुनेन भी इसके आगे तुच्छ औषध है। कुनेन का सेवन सिर दर्द, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है किन्तु यह औषध सब दोषों को दूर करती है किन्तु ज्वर की प्रत्येक अवस्था में दी जा सकती है। मलेरिया काल में सेवन की हुई मलेरिया को नहीं आने देती। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, सेवन करें और लाभ उठावें। मूल्य एक शीश ५

पता—आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला पो० गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक (पंजाब)

शिवरात्रि के उपलक्ष में विशेषोपहार

केवल तीन मास के लिये (जनवरी, फरवरी, मार्च) मूल्य में भारी कमी

१—पाँच रुपये से अधिक के आर्डर पर २५% कमीशन दिया जायेगा।
२— बीस २०) से अधिक के आर्डर २५% कमीशन और मार्ग व्यय।
३—पचास रुपये से अधिक के आर्डर पर ३०% ,, ,, ,,
४—सौ रुपये से अधिक के आर्डर पर ३३१/२%,, ,, ,,
५—सुधारक के सभी प्राप्य विशेषाङ्क आधे मूल्य पर दिये जायेंगे।
६—हमारा सूचि-पत्र मुफ्त मंगाकर पढ़िये।

हमारा प्रकाशन

१ वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	३)
२ दृष्टान्त मञ्जरी	२)
३ आर्यकुमार गीताञ्जलि (प्रथम पत्र)	≡)
४ ,, ,, द्वितीय पत्र	≡)
५ आर्य सिद्धान्त दीप	१॥)
६ वैदिक धर्म परिचय	॥=)
७ छात्रोपयोगी विचारमाला	॥=)
८ विदेशों में एक साल	२।)
९ आसनों के व्यायाम (सचित्र)	॥)
१० आदर्श ब्रह्मचारी	।)
११ कन्या और ब्रह्मचर्य	≡)
१२ हित की बातें	—)॥
१३ संस्कृत कथामञ्जरी	।)
१४ संस्कृताङ्कुर	१।)
१५ हम संस्कृत भाषा क्यों पढ़ें	।=)
१६ संस्कृत वाङ्मय का सं० परिचय	॥)
१७ विरजानन्द चरित (हिन्दी)	१॥)
१८ विरजानन्द चरितम् पद्यकाव्यम्	१)
संस्कृत पद्यकाव्यम्	१)
१९ दैनिक सन्ध्या यज्ञ पद्धति	—)॥
२० स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी	२)
१ ब्रह्मचर्य शतक	॥=)
२२ ब्रह्मचर्य महत्त्व	॥)
२३ पंजाब की भाषा लिपि	—)
२४ राष्ट्र निर्माण में गुरुकुल का स्थान	॥)
२५ ,, ,, धर्म का स्थान	।—)
२६ नारायणस्वामिचरितम् पद्यपाकाव्यकम्	।॥)
२७ मस्तिष्क विद्या (सचित्र)	७)

आचार्य भगवान्देवजी द्वारा लिखित साहित्य

१ ब्रह्मचर्यामृत	=)॥
२ स्वप्नदोष चिकित्सा	=)॥
३ पापों की जड़ शराब	।—)
४ हमारा शत्रु तम्बाकू	।=)
५ नेत्र रक्षा	≡)
६ रामराज्य कैसे हो	≡)
७ व्यायाम का महत्त्व	≡)
८ बिच्छू विष चिकित्सा	=)
९ ब्रह्मचर्य के साधन १-२ भाग	।—)
१० ,, ,, ३ भाग (दन्तरक्षा)	≡)
११ ,, ,, ४ भाग (व्यायाम)	१)
१२ ,, ,, ५ भाग	।=)
१३ ,, ,, ७-८ भाग (सत्संग स्वाध्य)	॥)
१४ ,, ,, ९ भाग (भोजन)	॥=)

सुधारक के प्राप्याङ्क

१ भोजन विशेषाङ्क	१)
२ व्यायाम विशेषाङ्क	१)
३ गो-अङ्क	॥)
३ पंचमहायज्ञविधि व्याख्यांक	॥)
४ नारायण स्वामि चरितांक	॥।)
५ ब्रह्मर्षि विरजानन्द चरितांक	॥।)

पता—विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक (पंजाब)

'सुधारक' का आगामी विशालकाय विशेषाङ्क

बलिदानाङ्क

(अगस्त ५८ में प्रकाशित होगा)

इस विशालकाय विशेषांक की तैयारी आरम्भ हो चुकी है। चित्रों के लिए ब्लाक बनवाये जा रहे हैं। सुधारक का जो अंक आपके हाथ में है इसी आकार (साइज) के ५०० पाँच सौ से अधिक पृष्ठ तथा १०० अधिक रंगीन चित्र इस बलिदानांक में दिये जायेंगे। सरल भाषा और सुन्दर छपाई होगी।

इस विशेषांक में लगभग २०० दो सौ, उन वीरों के जीवन और इतिहास को यशोगाथा लिखी जायेगी जो अपनी जन्मभूमि भारत की पराधीनता की शृङ्खलाओं को विशृङ्खलित करने के लिए, बृटिश साम्राज्यवाद की जड़ काटने के लिए, स्वतन्त्रता की लहर को देश के कोने-कोने में पहुँचाने के लिए तन-मन से क्रान्ति की धूम मचाकर भारत को स्वाधीन बनाने के लिए हँसते-हँसते फाँसी के तख्तों पर झूल गये। कारावास की भीषण विपत्तियों को सहन करते हुए भी जो बेड़ी तथा हथकड़ियों को आभूषण बनाकर झूम-झूमकर मस्ती से आजादी के गाने गया करते थे। हिन्दीरक्षा आन्दोलन के बलिदानों का भी इसमें उल्लेख किया जायेगा।

ग्राहक संख्या

सेवा में श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति

मु० श्रद्धानन्द प्रतिष्ठान

पो० गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

जि० (सहारनपुर)

जिस स्वतन्त्रता को देखकर हम प्रसन्नता से फूले नहीं समाते, वह कितने बलिदानों के पश्चात् मिली है, कितने नवयुवकों ने अपने अमूल्य यौवन की आहुतियाँ दी हैं? यह अंक इस "बलिदानांक" में पढ़िए। यह अंक अपने ढंग का अपूर्व तथा अद्वितीय होगा।

इस विशेषाँक का मूल्य डाक व्यय सहित १०।।) होगा। किन्तु सुधारक के ग्राहकों को अग्रिम धन (पेशगी) भेजने पर ५।।) में ही घर बैठे ही रजिस्ट्री द्वारा मिल जायेगा। सुधारक का ग्राहक बनने के लिए २) में धनादेश से भेजे। जिन ग्राहकों का धन अगाऊ न मिलेगा उनको पीछे ८।।) में ही अंक प्राप्त हो सकेगा।

अंक परिमित संख्या में ही प्रकाशित होगा, हो सकता है कि समाप्त हो जाने पर पीछे आपको पछताना पड़े। अतः ५।।) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करवा लें। इस मूल्य में ।।) डाक-व्यय भी सम्मिलत है।

धन भेजने का पता—

व्यवस्थापक 'सुधारक'
पो० गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक (पंजाब)

प्रकाशक आचार्य भगवानदेव गुरुकुल झज्जर ने सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली में मुद्रक जगदेवसिंह शास्त्री 'सिद्धान्ती' के प्रबन्ध में छपवाया।

वर्ष ५ | गुरुकुल झज्जर (रोहतक) चैत्र २०१५ वि० | वार्षिक मूल्य २)
अङ्क ८ | अप्रैल १९५८, दयानन्दाब्द १३४ | एक प्रति बीस नये पैसे

सार्वदेशिक गोरक्षा आंदोलन के अमर शहीद (लोहपुरुष)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

लगभग चार वर्ष पूर्व पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को सार्वदेशिक गोरक्षा-आंदोलन का सर्वाधिकारी सर्वसम्मति से चुना गया था। आर्यसमाज ने भारत से गोहत्या बन्द कराने के लिये यह आन्दोलन प्रारम्भ किया था, किन्तु दुर्भाग्य था भारतवासियों का, ३ अप्रैल १९५५ ई० को स्वामी जी महाराज का देहान्त हो गया और उक्त आन्दोलन नेता के अभाव में खटाई में पड़ गया।

१९३९ के हैदराबाद सत्याग्रह की विजय का श्रेय स्वामी जी महाराज का ही है। यदि स्वामी जी महाराज आज हमारे बीच में होते तो पञ्जाब की यह दुर्दशा न होती।

संस्थापक सम्पादक—ब्र० भगवान्देव आचार्य गुरुकुल झज्जर
सम्पादक—ब्र० वेदव्रत व्याकरणाचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति गीता उपनिषदलंकार
व्यवस्थापक—ब्र० बलदेवसिंह बी० ए०, सि० प्रभाकर
सह-व्यवस्थापक—ब्र० सुदर्शनदेव शास्त्री व्याकरणाचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति

विषय-सूची

सुधारक के नियम

१—सुधारक अंग्रेजी महीने की १० ता० को डाकखाने में डाला जाता है। यदि २० ता० तक न मिले तो अपनी पोस्ट आफिस में पूछ-ताछ करनी चाहिये। फिर भी न मिले तो हमें लिखने पर और भेज दिया जायेगा।

२—लेख छोटे सारगर्भित तथा कागज के एक ओर सुन्दर और सुवाच्य लिखे हुये हों।

३—लेख में उचित परिवर्तन करना, प्रकाशित करना या न करना सब सम्पादक के आधीन है। अस्वीकृत लेख पोस्टेज भेजने पर ही वापिस लौटाया जा सकेगा।

४—वेद विरुद्ध लेखों का प्रकाशन सुधारक में न हो सकेगा।

५—सिद्धान्त विरुद्ध, अश्लील और मिथ्या विज्ञापनों के लिये "सुधारक" में स्थान नहीं है। इतना होते हुये भी विज्ञापन की सत्यता का उत्तरदायित्व हम पर नहीं।

६—व्यवस्थापक सम्बन्धी सब पत्र-व्यवहार तथा मनीआर्डर आदि "व्यवस्थापक-'सुधारक" के नाम से भेजने चाहियें, किसी व्यक्ति के द्वारा न भेजें। साथ ही ग्राहक अपनी संख्या आदि लिखें।

७—एजन्टों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है और ५ से कम की एजेन्सी नहीं दी जाती। विज्ञापन का धन अगाऊ भेजना आवश्यक है।

८—सब पत्र व्यवहार हिन्दी तथा संस्कृत में ही करें उर्दू, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में पत्र व्यवहार न करें। पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड भेजें।

विज्ञापन दर

	पूरा पृष्ठ	आधा पृष्ठ	चौथाई पृष्ठ
एक बार	१६)	६)	५)
तीन बार	४०)	२४)	१३)
छः बार	७५)	४५)	२५)
१ वर्ष तक	१३०)	७५	४५)

टाईटिल अन्तिम १५% अधिक।
टाईटिल तृतीय १०% अधिक।
विशेषांक में सवाया कम से कम ४॥)

वेद में क्षात्र—धर्म

(देवव्रत वानप्रस्थी ई० पो० सराय नई दिल्ली)

अमित्रसेनां मघवन्नस्मा ञ्छत्रूयतीमभि।
युवं तान्निद्र वृत्रहन्नग्निश्चदहतं प्रति ॥ अ० ३.१.३

(वृत्रहन्) शत्रुओं का नाशक परमैश्वर्य शाली राजा वा सेनापति (इन्द्र) शत्रुओं के देशों को भस्मसात् करने वाले इन्द्र और अग्नि तथा बलशाली राजा वा सेनापति आप (अस्मान् शत्रूयतीम्) हम से शत्रुता करने वाली (अमित्र सेनाम्) शत्रु सेना को (युवं अभिदहतम् प्रति) तुम दोनों चारों ओर से जला दो किसी प्रकार से बच न सकें।

परमात्मा आदेश करता है कि प्रति मुख खड़ी हुई शत्रु सेना को विद्युतास्त्रों तथा आग्नेयास्त्रों द्वारा जलाकर ऐसे भस्मसात् कर देना चाहिये कि उनका कोई भी पुरुष बचने न पावे

प्रसूतइन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्रते व्रजः प्रमृणन्नेतु शत्रून्।
जहि प्रतीचो अनूचो पराचो विष्वक् सत्यङ्कृणुहि चित्तमेषाम् ॥ ३.१.४

(इन्द्र शत्रुओं के देशों अग्निस्फोट अणुस्फोट तथा अन्य शस्त्रास्त्रों द्वारा तोड़ फोड़कर भग्नसात् और भस्मसात् करने वाला राजा या सेनानी योधा इन्द्र तुम्हारा रथवान (हरिभ्यां प्रवता प्रसूत) बड़े तीव्र गति वाले कठिन से कठिन रुकावटों से भी न रुकने वाले यानों द्वारा शत्रुओं की सेना के मैदान में रोकटोक चले आओ विस्फोट तोप बन्दूक की मार और नाना प्रकार के गैसास्त्रों तथा अन्य आयुधोंद्वारा शत्रुओं के देशों को भग्नसात् करदो कोई शत्रु उन्हें रोक न सके ईश्वर आदेश करता है कि हे क्षत्रियवीरों तुम शत्रु के देश में बे रोकटोक बढ़ते चले जावें ४ (ते वज्रः शत्रून् प्रमृणन् प्रैतु) तुम्हारे वज्र सरीखे ५ संस्तंभक सम्मोहक सम्मारक आदि आवर्जक शस्त्रास्त्र शत्रुओं को मारते हुवे अनिरुद्ध गति से शत्रुओं का संहार करते जावें जिस ओर तुम्हारे शस्त्रास्त्र गिरें शत्रुओं का संहार करें कोई भी शत्रु बचने न पावे (जहि प्रतीचः अनूचाः पराचः) शत्रुओं को पीछे से आगे से ऊपर से नीचे से चारों ओर से मार डालो। (रथां चित्तं सत्यं विष्वक् कृणुहि) इनके चित्त को सच मुच अव्यवस्थित सत्या सत्य ज्ञान शून्य करदे उनके हृदय में ऐसी विभीषिका छा जावे कि उनकी बुद्धि अस्त व्यस्त हो जावे। महर्षि व्यास जी ने कहा भी है।

क्षुरो भूत्वा हरे प्राणान् संशितः काल साधनः।
प्रतिच्छन्नो लोमहारी द्विषतां परिकीर्तनः

समय आने पर तेज छुरावनकर शत्रुओं के प्राणों को छिपाकर अपहरण करे जिस प्रकार छुराबालों को काटता है, शत्रुओं को काट डाले।

——

पत्र व्यवहार में असुविधा

आपकी सेवा में निवेदन है कि पत्र विलम्ब से प्राप्त होने से पत्रोत्तर देने में कठिनाई होती है, अतः किसी प्रकार की सेवा के लिये निम्न पते से पत्र व्यवहार करें।

स्वामी सुरेन्द्रानन्द
वैदिक आश्रम
चरखी दादरी।
जिला महेन्द्रगढ़

सम्पादकीयम्—

"हरियाणा का देव बन्दी"

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान और गुरुकुल झज्जर के आचार्य भगवान् देव जी को २१ फरवरी को अचानक गिरफ्तार कर लिया गया। आचार्य जी बलियाना में भाषण देकर जाट कालेज में भाषण देने के लिए रोहतक आये थे। क्योंकि कालेज के प्रिंसिपल ने आपको "मनोविज्ञान" पर भाषण देने के लिये निमन्त्रित किया था। आचार्य जी कालेज में भाषण देकर अपराह्न में लगभग ४ बजे वापिस बलियाना जा रहे थे वहाँ से गुरुकुल भैंसवाल के उत्सव पर जाना था। देहली रोड पर नहर के पास जब आचार्य जी के ड्राइवर ने जीप बलियाना की ओर मोड़ी तो एस० पी० ने अपनी मोटर आगे अड़ा कर रोक लिया। जब बन्दी बनाने लगे तो साथ के लोगों ने आचार्य जी से कहा कि गिरफ्तारी के वारण्ट तो देख लें। आचार्य जी ने उत्तर दिया कि कोई आवश्यकता नहीं। आचार्य जी को बन्दी बनाकर ले गये।

सायंकाल हरयाणा प्रचार समिति के मन्त्री म० भरतसिंह जी ने एस० पी० की कोठी पर टेलीफोन द्वारा पूछा कि आचार्य जी कहां हैं? तो उत्तर मिला—"बीमार हैं, खाट में पड़े हैं।" उसी समय चौ० बदलूरामजी ने फिर पूछा तो उत्तर मिला—सिटी थाने से पूछो। सिटी थाने से पूछा तो उत्तर मिला कि हमें पता नहीं।

स्वामी सोमानन्द जी ने विचार किया कि सदर थाने में जाकर ही पूछ लूँ, यदि आचार्य जी का पता लग जाये। तो भोजन वस्त्रादि का प्रबन्ध कर दिया जाये। स्वामी जी सदर थाने में गये, तो वहां हिन्दी सत्याग्रह के समय का जेल का परिचित अधिकारी मिल गया, उससे पता लगा कि आचार्य जी सदर थाने की हवालात में बन्द हैं। २४ घण्टे पश्चात् २२ ता० को आचार्य जी रोहतक जेल भेज दिये गये।

आचार्य जी की गिरफ्तारी का कारण बतलाया जाता है कि जालन्धर-गोलीकाण्ड के सम्बन्ध में रोहतक की एक सभा में आपने कुछ कह दिया।

जालन्धर गोली काण्ड वास्तव में एक निन्दनीय दुर्घटना घटी है, जो सत्य और अहिंसा का दम्भ भरने वाली पूज्य महात्मा गांधी के नाम को भी बदनाम करने वाली इस कैरों सरकार के माथे पर बड़ा भारी कलंक है। ८ फरवरी को वहां जालन्धर में एक ओर तो हाथ करघा प्रदर्शनी का उद्घाटन हो रहा था, जहां सत्य और अहिंसा की मिट्टी पलीद की जा रही थी, ठीक उसी बराबर में माननीय नेता घनश्यामसिंह गुप्त के सम्मान में निकाले गये हिन्दी प्रेमियों के जलूस पर ईंट रोड़े अश्रुगैस के गोले और गोलियां चलवाई जा रही थीं। जिसके परिणाम-स्वरूप दो हिन्दी-प्रेमी श्री सोमनाथ जी और श्री गिरधारीलाल जी शहीद हो गये हैं। ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो इस दुर्घटना की निन्दा न करे। यदि आचार्य भगवानदेव जी ने भी इसके सम्बन्ध में दो शब्द कह दिये तो कौन-सा अपराध कर दिया कि उनको बन्दी बना लिया जाये? सभी सज्जन उस काण्ड की निन्दा करते हैं अतः क्या सभी सत्पुरुषों को बन्दी बना कर जेलों में बन्द कर देना चाहिए?

पीछे आन्दोलन के समय ५ मास तक श्री आचार्य जी को पुलिस पकड़ न सकी थी। अतः उनके दिल में बात खटकती थी। प्रसङ्गवश मुझे एक डूम की बात याद आ गई। एक डूम था उसे शीत-

काले (जाड़े) में रिजाई नहीं मिली थी और उष्ण-काल (गर्मी) में कहीं मिल गई। जब डूम ज्येष्ठ के मास में रिजाई ओढ़कर सोता तो पसीने में तर हो जाता। तब डूम रिजाई से कहता कि अब कितनी ही रो ले, मैं जाड़े की सब कसर निकाल कर छोड़ूँगा। हरयाणा में भी कुछ एक डूम हैं जो कि आचार्य जी को पकड़वाने का कोई न कोई बहाना ढूँढ़ रहे थे। पंजाब पुलिस और अधिकारी कितने सत्य के पुजारी हैं यह पीछे सत्याग्रह के समय में सब देख चुके हैं। आचार्य जी की गिरफ्तारी पंजाब सरकार के लिये बहुत ही मंहगी पड़ेगी।

हिन्दी सत्याग्रह का निर्णय अभी केन्द्रीय सरकार ने नहीं सुनाया है। केन्द्रीय सरकार और समिति के बीच जो सद्भावना पूर्ण विचार विनिमय चल रहा था, उसमें कैरों सरकार ने आचार्य जी को बन्दी बनाकर दुर्भावना का परिचय दिया है। श्री आचार्य जी की गिरफ्तारी कोई साधारण बात नहीं। इससे सम्पूर्ण आर्य जगत में क्षोभ और रोष की लहर दौड़ गई है। वीर अर्जुन और प्रताप वृत्तपत्रों पर और स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज पर भी मुकद्दमा चलाया जा रहा है। कैरों सरकार हिन्दी, हिन्दू और हिंदी-प्रेमियों के प्रति जितनी दुर्भावना दिखला रही है उसकी उतनी ही लम्बी कबर खुदती जा रही है।

आचार्य भगवानदेवजी को बन्दी बनाने का एक कारण तो मैं लिख ही चुका हूँ कि पंजाब सरकार पिछला बदला ले रही है, दूसरा मुख्यतम कारण यह है कि सरकार को अथवा उसके पिट्ठुओं को यह भय हो गया है कि यदि इसी भाँति आर्य समाज का प्रचार होता रहा और आचार्यजी को प्रतिदिन पाँच-पाँच सौ और हजार हजार की थैलियाँ मिलती रहीं तो तुम्हारी दाल नहीं गलेगी। किसी भी भाँति इस महापुरुष को बन्दी बनाया जाये।

आचार्य जी के मुकदमे की तारीख २४ फरवरी लगी। आचार्य जी को दोनों हाथों में हथकड़ी लगाकर के० के० पुरी के न्यायालय में उपस्थित किया गया। जमानत की बात चल रही थी तो सरकारी वकील ने कहा कि जमानत पर छोड़ने में हमें सबसे पहली आपत्ति यह है कि यह ऐसा आदमी है जो कि धन सम्पत्ति आदि की तो कोई परवाह नहीं करता। अपनी लाखों की जायदाद किसी गुरुकुल के नाम करवा दी है। पीछे पाँच छः मास तक यह पञ्जाब पुलिस के हाथ न आया था। अब यदि इसको जमानत पर छोड़ दिया तो फिर हाथ नहीं आयेगा। इसके पश्चात् श्री पुरी ने २०००) बीस हजार की जमानत (दस दस हजार की पृथक् पृथक्) के लिये कहा। श्री जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती और कप्तान जयसिंह जी ने जमानत दे दी और ४॥ बजे श्री आचार्य जी को छोड़ दिया गया। आचार्य जी के लिये जेल के आगे ही इनकी जीप पहुँच गई और यह उसी समय सीधे भालोठ के उत्सव में पहुँच गये। इनका तो एक मात्र ध्येय ही आर्य समाज का प्रचार है।

२४ के पश्चात् २८ फरवरी की तारीख लगाई। २८ को कोई निर्णय नहीं किया और ७ मार्च तारीख लगा दी। तत्पश्चात् ११ मार्च तारीख लगाई। ११ को अगली १२ तारीख लगा दी। १२ मार्च को पुलिस ने एक नया केस ५ मार्च का जूआ ग्राम का बनाया और उसी के अन्तर्गत आचार्य जी की जमानत कैंसिल करने की अपील की। १२ मार्च को पुरी के न्यायालय में जमानत कैन्सिल कर दी गई और आचार्य जी को पुनः बन्दी बना लिया गया। यह मैं पहले ही लिख चुका हूं कि कैरों सरकार की यह अभिलाषा है कि किसी भी भान्ति आचार्य जी को फँसा कर जेल में रखा जाये।

इधर हिन्दीरक्षा समिति के प्रचार के प्रभाव को मिटाने के लिये रोहतक जिले में लोक सम्पर्क विभाग की ओर से उत्सव किये जा रहे हैं जिन में स्वयं सरदार कैरों तथा दूसरे मन्त्री और कांग्रेसी विधान सभाई भी सम्मिलित होते हैं। शेरों को पिञ्जरे में बन्द कर सूने जङ्गल में शिकार खेलना हीजड़ों का काम है, इस में कोई वीरत्व की झलक नहीं। यदि

वास्तव में कुछ दम है, सत्य और अहिंसा पर विश्वास है तो क्यों नहीं मुकाबले में आते।

आचार्य भगवान् देव और स्वामी रामेश्वरान्द आदि पर मुकदमा चलाने और इनको बन्दी बनाने पर भी कैरोंशाही नहीं चलेगी'। अभी पीछे आन्दोलन के समय में भी हिन्दीरक्षा आन्दोलन के नेताओं को नजरबन्द कर सरकार ने उसका परिणाम देख लिया है।

यदि कुछ कमी रह गई हो तो फिर देखले। यहाँ पर नेताओं की कमी नहीं है एक के पीछे एक तैयार बैठा है। १२ मार्च की बात है। के० के० पुरी की अदालत में आचार्य जी के केस पर वकीलों का वादविवाद हो रहा था। हम बाहर बैठे बातें कर रहे थे तो एक चौधरी ने कहा कि ऐसे महात्माओं और साधुओं को सरकार नहीं छोड़ेगी। सब से पहले इन को ही पकड़ती है। इतने में ही दूसरे सज्जन ने मुस्कराते हुए कहा यदि ऐसी ही बात है तो "क्या हमें मूंछ कटानी नहीं आतीं?"

अर्थात हम भी इसी प्रकार जेल जाने के लिये तैयार हैं। जब तक कैरों की साम्प्रदायिक नीति समाप्त नहीं होती तब तक पंजाब में शान्ति नहीं हो सकती। समय का तकाजा है और पंजाब के बहुमत की मांग है कि कैरों अपनी विषैली साम्प्रदायिक नीति को बदले अन्यथा कैरों को ही बदल दिया जाये। प्रजातन्त्र में बहुमत का विरोध होते हुए भी कांग्रेस उच्चसत्ता ऐसे शासक को नहीं हटाती यह संविधान का अपमान है। क्या इसी का नाम प्रजातन्त्र है?

— वेदव्रत

सर्वनाश का कारण (बाल विवाह)

[कुन्दन लाल शर्मा प्रभाकर ततारपुर खालसा]

बच्चों का विवाह रचाना, बर्बाद करके छोड़ेगा। टेक

भारतवासी अल्पायु बच्चों का विवाह रचाते हैं।
निर्दोषी बच्चों के सर पर तेज कटार चलाते हैं।
यह इतना जुल्म कमाना, बर्बाद करके छोड़ेगा ॥ १॥

बो कर कच्चा बीज स्वादिष्ट फल की बाट जोहते हैं।
अर्जुन भीम दयानन्द से फिर यहाँ बलवान टोहते हैं।
यह कच्चा बीज उगाना ॥२॥

कच्चे वीर्य से मूर्ख नर गर्भ स्थापना करते हैं।
रोगी होकर आप मरें और बालक शीघ्र ही मरते हैं।
फिर झूँठे भगत बुलाना ॥ ३ ॥

तपेदिक हो लड़के को तब तो कुनबा घबराता है।
वैद्य डाक्टर बुला बुला लड़के को दवा दिलाता है।
यह रोगों का बढ़ जाना ॥ ४ ॥

बाल विवाह की बुरी प्रथा को भारतवासी तोड देवो।
गलत रास्ते गाडी चल रही इसको वापिस मोड देवो।
यह गलत रास्ते जाना ॥ ५ ॥

पच्चीस वर्ष से पूर्व यहां नहीं किसी बच्चे की शादी हो।
फिर देखें किस तरह हमारे राष्ट्र की बर्बादी हो।
कवि "कुन्दन" को बुरा बताना ॥ ६ ॥

विवाहादि संस्कार विधान समिति

(श्री देवराज मुनि विद्यावाचस्पति)

भारतवर्ष में विवाह आदि संस्कारों की बड़ी दुर्दशा है। जितने भी संस्कार बालकों और युवकों के कराये जाते हैं, उनके लिए योग्यता का ध्यान प्रायः नहीं रखा जाता। संस्कार कराने वाले सज्जन अपनी कमाई की दृष्टि से संस्कार के महत्व को समझाने का कष्ट नहीं करते। उनको इसकी परवाह भी नहीं होती कि जिनका संस्कार किया जा रहा है, वे संस्कार करा लेते हैं, परन्तु उस संस्कार के विषय में कुछ नहीं जानते होते। संस्कार कराने वाले ब्राह्मण आदि को संस्कार कराने के बाद अपनी दक्षिणा प्राप्त करने से मतलब होता है। दक्षिणा मिल गई तो वह समझ लेता है कि सब काम ठीक हुआ। कभी-कभी तो मन्त्रों का ठीक तरह से उच्चारण भी नहीं किया जाता और मन्त्रों के स्थान में किन्हीं स्तोत्रों के श्लोकों का पाठ मात्र कर दिया जाता है और संस्कार करवाने वाली मूर्ख मंडली खूब बहकाये में आ जाती है। उनको कुछ पता नहीं लगता कि (मूर्ख) पण्डित जी ने किस प्रकार उनको बहका दिया है। वे तो समझते हैं कि पण्डित जी बड़े योग्य व्यक्ति हैं, इधर-उधर लाल-पीली रेखाएँ बनाकर पास रखे हुये कलश (घड़े) का पूजन कर डालते हैं, और रंगीन डोरों से उसको सजाते हैं। ऐसे ही गणेश जी की मूर्ति का पूजन करते हैं। बाह्य शोभा खूब रहती है, परन्तु संस्कार के ऊपर कुछ नहीं प्रकाश डाला जाता। जितना प्रयत्न बाहर के आडम्बर में किया जाता है उतना यदि संस्कार के सम्बन्ध में समझाने का प्रयत्न किया जाये तो जिनका संस्कार हो रहा है उनको और सामान्य जनता को भी बड़ा लाभ हो।

जैसे शरीर की शुद्धि स्नानादि के द्वारा तथा वस्त्रालंकार आदि के द्वारा शरीर का संस्कार किया जाता है जैसे रोगी के शरीर में से दूषित पदार्थों को बाहर निकाल कर तथा शुद्ध धातुओं की स्थापना करके शरीर का संस्कार किया जाता है, जैसे औषधि निर्माण प्रक्रिया में औषधियों को कूट कर कपड़छान करके तैयार किया जाता है, और जैसे क्वाथ, अवलेह, घृत, तेल आदि पदार्थ बनाने के लिए एक-एक प्रक्रिया पर बड़ी सावधानी रखनी होती है जिससे कि संस्कार युक्त औषधि अच्छी बनकर रोगियों को लाभ पहुंचाती है वैसे ही मनुष्य के जीवन को उत्तम बनाने के लिये सोलह संस्कार ऋषि मुनियों ने तैयार करके परम्परा से हम तक पहुंचाये हैं। यह संस्कार उत्तम जीवन के निर्माण के लिए हैं। अतः इसका सम्बन्ध न केवल शरीर से है परन्तु अपने अन्तरात्मा को संस्कारी बनाने में विशेष सम्बन्ध है। इसलिये मानव आदि धर्मशास्त्रों में इन पर विशेष बल दिया गया है। जो माता पितादि बालक बालिका के सम्बन्धी इन संस्कारों को न जानते हैं और न इनके महत्व को पहचानते हैं, वे जैसे-तैसे रूढ़ी को पूरा करके अपने आपको कृत कृत्य समझ लेते हैं। इससे लाभ तो कुछ भी नहीं होता प्रत्युत हानि बहुत होती है।

एक बार की सत्य घटना निम्नलिखित प्रकार से घटी। विवाह संस्कार हो रहा था, फेरे फिरवाये जा रहे थे कि फिरते-फिरते वर की धोती की लांग खुल गई। सामान्य रीति से उसने अपनी लांग बांध ली। कुछ समय के बाद दूसरे किसी विवाह का प्रसंग पड़ा। पहले विवाह में जो वृद्धा माताएं हाजिर थी वे दूसरे विवाह में भी उपस्थित थी। वहां भी जब फेरे फिरने लगे तब वर की लांग नहीं खुली। इस पर फेरों के समाप्ति से पहले एक वृद्धा ने वर की

लांग खोल दी। उसको बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि लांग नहीं खुली तो विधि अधूरी रह जायेगी। और विधि अधूरी रहने से बड़ा अनिष्ट होगा। इस लिए उसने अपनी समझ से साहस पूर्वक वर की लांग खोल कर विधि पूरी कर डाली। ऐसी ऐसी कुप्रथायें हमारे संस्कारों में न जाने मूर्खतावश कितनी घुसी पड़ी हैं। इससे देश के युवकों और युवतियों में बड़ा अनिष्ट उत्पन्न हो रहा है। बालक बालिकाओं के विवाह करा दिये जाते हैं जिनको पता भी नहीं होता कि उनका विवाह हुआ है या नहीं। और विवाह किसे कहते हैं। विवाहित दम्पति के क्या कर्तव्य गृहस्थाश्रम में होंगे। समाज और राष्ट्र के प्रति उनके क्या कर्तव्य हैं। वे कुछ नहीं जानते। जो उनका शिक्षा ग्रहण करने का समय है उसी में उनको सम्बद्ध कर दिया जाता है। धीरे धीरे जब उनकी बुद्धि का विकास होना शुरू होता है तब उनको उनके माता-पिता तथा सम्बन्धी उन्हें विवाहित हुए बताते हैं। स्वतन्त्र बुद्धि वाले युवक और युवति इस प्रकार के सम्बन्धों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। और माता-पिता तथा सम्बन्धियों के प्रति अनुराग-शून्य हो जाते हैं। और एक प्रकार से उनमें वैमनस्य तथा कलह खड़ा हो जाता है।

यह अवस्था किसी एक प्रान्त में नहीं प्रत्युत कुछ उलट फेर से प्रायः सभी प्रान्तों में है। इसका अन्य कारणों के साथ एक मुख्य कारण भारतीयों की दरिद्रता है। गरीब घरों के माता-पिता अपने लड़के लड़कियों का भरण पोषण नहीं कर सकते और न उन्हें शिक्षा दिला सकते हैं। क्योंकि शिक्षा दिलाने में भी स्कूल की फ़ीस तथा पुस्तकों के क्रय (खरीदना) के लिये मूल्य देना पड़ता है। जिसका बोझ वे उठा नहीं सकते।

इसके अतिरिक्त अपने लड़के लड़कियों से कृषि तथा मेहनत मजदूरी कराकर अपना तथा उनका भरण पोषण करने का यत्न करते हैं। उद्योग हुनर करने वाले माता पिता अपने लड़का लड़कियों को अपने कुल परम्परागत उद्योग में डालकर कमाई को बढ़ाते हैं। इत्यादि कारणों से भारत की जनता में शिक्षा का अभाव हो रहा है। जो माता पिता अपनी लड़कियों का बोझ नहीं सम्भाल सकते, वे उन लड़कियों को शीघ्र ही दूसरे घर में भेज देने का संकल्प कर लेते हैं। इस प्रकार विवाहित होने की योग्यता से पहले ही उनका वाग्दान (सगाई) तथा विवाह करना उचित समझते हैं। इस प्रकार के माता पिता अपने लड़का लड़कियों को शिक्षित नहीं करते और करना उचित भी नहीं समझते।

इस अवस्था को बदलने के लिये आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है तथा इसके लिये महान् संघर्ष अपेक्षित है जो कुछ शिक्षण की दृष्टि से किया जाना उचित प्रतीत होता है। वह अधो लिखित से स्पष्ट हो जायेगा। हो सकता कि अन्य अनेक विचारक हमारे विचार से सहमत न हों तो वे जैसा विचार उचित समझें वैसा प्रकाशित कर सकते हैं। परन्तु समस्या का हल तो किसी भी प्रकार से होना ही चाहिये।

हम उचित समझते हैं कि हर एक राज्य में वहां की राज्य परिषद् के आधीन चुने हुये मन्त्रियों की एक उप-समिति बनाई जानी चाहिये। इसका नाम "विवाहादिसंस्कार विधान समिति" रखा जा सकता है। इसके आधीन एक ऐसी समिति होनी चाहिये। जिसके सब सभ्य पुरोहित हों। इन पुरोहितों के लिये आवश्यक हो कि वे पुरोहित होने के लिये निर्धारित परीक्षा में उत्तीर्ण हों। जिस लड़का व लड़की ने विवाह करना हो वे एक निर्दिष्ट फार्म पर अपने हस्ताक्षर करके 'विवाहादि संस्कार विधान समिति' के पास भेज दें। इस फार्म में उन्हें अपना गोत्र अपनी आयु अपनी शिक्षा, संस्कृत की योग्यता और हुनर उद्योग का शिक्षण तथा अपनी मासिक अर्जन-शक्ति अंकित करनी चाहिये। इसकी स्वीकृति पूर्वोक्त समिति से मिल जाने पर ही वे वाग्दान (सगाई) और विवाह करने के अधिकारी हो सकते हैं। संस्कार विधि में जो मन्त्र बोले जाते हैं। वे मन्त्र दोनों कुमार

(औ)र कुमारी को याद होने चाहियें। जहाँ उन्होंने (शि)क्षा पाई हो वहाँ के आचार्य मुख्याध्यापक वा (अ)ध्यापक का कर्तव्य है कि संस्कृत भाषा की योग्यता (उन)की इतनी करा दें तथा संस्कार विधि गत संस्कारों (को) याद करा दें तथा उनका रहस्य समझा दें कि (सं)स्कार के समय वे अपनी योग्यता से संस्कृत होने (क)ी सामर्थ्य प्रकट कर सकें। विवाह आदि संस्कार (वि)धान समिति' जिनका संस्कार कराने की योग्यता (घ)ोषित करे उसकी सूचना पुरोहित समिति के (अ)ध्यक्ष व मन्त्री को देवे कि वे किसी पुरोहित को (अ)मुक स्थान में भेज कर संस्कार करा दें। इस प्रकार (क)रने से वर्तमान समय में जो अव्यवस्था हो रही है, (व)ह मिट सकती है। आज कल के ग्रामीण पण्डित जिन्होंने प्रायः शास्त्रों का अवलोकन भी नहीं किया होता वे अपनी दक्षिणा की दृष्टि संस्कार कराने वालों की योग्यता और अयोग्यता का कुछ विचार न करके संस्कार करा डालते हैं। जिससे देश की सामाजिक अवस्था हीन होती जा रही है। जो पूर्वोक्त विधि विधान से उन्नति की ओर प्रेरित की जा सकती है। और जो दुष्परिणाम प्रकट हो रहे हैं उनसे बचाव हो सकता है।

इस योजना की कुछ विशेषताएं निम्न प्रकार हैं:—

१—शिक्षा के सम्बन्ध में संस्कृत भाषा का प्रचार इस योजना से होगा।

२—संस्कृत भाषा किसी एक प्रान्त की न होने से सब प्रान्तों का परस्पर सम्बन्ध होकर राष्ट्रिय एकता सम्पन्न तथा सुदृढ़ होगी।

३—संस्कृत भाषा के साथ अन्य प्रान्तीय भाषाओं को उन्नत होने के लिए बल मिलेगा।

४—सभी प्रान्तीय भाषाओं का साहित्य सर्व दिशाओं में समुन्नत होगा।

५—संस्कृत भाषा की उन्नति के साथ हम वेदों के अधिक निकट पहुँच सकेंगे।

६—संस्कारों की विविध प्रणालियाँ जो देश में प्रचलित हैं, उनमें सरूपता उत्पन्न होगी।

७—बाल-विवाह की प्रथा का पूर्ण रूप से विनाश होगा। तथा अनमेल विवाह और वृद्ध विवाह भी लुप्त-प्रायः हो जायेंगे।

८—जिनका विवाह होगा वे अपनी जिम्मेवारी पर विवाह करेंगे।

९—अपने भरण पोषण के लिए सभी को उद्योग हुनर, किसी न किसी प्रकार का सीखना ही पड़ेगा।

१०—विवाह वे ही कर सकेंगे जो अपने पांव पर आप खड़े हो सकेंगे।

११—इस प्रकार से इस योजना के द्वारा देश में उद्योग तथा शिल्प का विकास होगा।

१२—देश में योग्य सन्तानों का निर्माण होगा।

१३ जनता की औसत आयु बढ़ जायेगी।

१४—रोगों के निवारण की सहनशक्ति बढ़ जाने से स्वास्थ्य उन्नत होगा।

१५—जनता अधिक बलिष्ठ बनेगी, तथा अपने लिए पूर्व की अपेक्षा अधिक भोग्य सामग्री उत्पन्न करने में समर्थ होगी।

१६—दरिद्रता और अशिक्षा का अभाव होकर लोगों का जीवन स्तर उन्नत हो जायेगा।

विवाहादि संस्कार विधान समिति-निर्माण

हम उचित समझते हैं कि प्रान्तीय विधान-परिषद् के आधीन चुने हुए मन्त्रियों की एक समिति बनाई जाय। जिस में शिक्षा मन्त्री, स्वास्थ्य मन्त्री, और विधि मन्त्री हों। इस समिति के आधीन प्रान्त के पुरोहितों की एक समिति व सभा होनी चाहिये। पुरोहितों के पास संस्कार करवाने का प्रमाण-पत्र होना चाहिए। पुरोहित बनने के लिए उचित स्तर की परीक्षा किसी उत्तम संस्था की उत्तीर्ण करनी अनिवाय होनी चाहिये। जन्म से कोई भी व्यक्ति पुरोहित बन सके। इस पुरोहित सभा के आधीन प्रत्येक प्रान्त में जिला, तहसील, वा ताल्लुका के पुरोहितों की उपसमितियाँ होनी चाहिए। ये पुरोहित केवल विवाह ही नहीं अपितु सभी संस्कार करवाया करें। पुरोहितों की १०) से १००) के बीच में दक्षिणा निर्धारित होनी चाहिए। विवाहितों की ओर से जितना दान दिया

जाये उसका चौथाई भाग राजकीय समिति में जाये और उतना ही चौथाई भाग उस संस्था को मिलना चाहिए जिस संस्था की जिस पुरोहित ने परीक्षा पास की है और कुल का आधा भाग पुरोहित की इच्छानुसार वितरित होना चाहिए, किसी सामाजिक वा पुस्तक प्रकाशनादि कार्य के लिए वा अपने पास भी रख सकता है वा इसी प्रकार के किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए किसी अन्य योग्यतम व्यक्ति को दे सकता है।

जिस युवक वा युवति ने विवाह करवाना हो वह एक निर्दिष्ट फार्म पर हस्ताक्षर करके अपनी तहसील की पुरोहित-उपसमिति के प्रधान के पास भेज दे। और वह उसको विवाहादि संस्कार विधान समिति के पास भेज कर स्वीकृति प्राप्त करे।

मानव धर्म शास्त्र (मनुस्मृति) के अनुसार कम से कम २५ वर्ष का लड़का और १६ वर्ष लड़की की आयु का नियम होना चाहिए। इस फार्म में गोत्र, आयु, विद्या की योग्यता, तथा शिल्प आदि कार्य की योग्यता का उल्लेख होना चाहिए। जिस प्रकार आज कल अध्यापिकादि की नियुक्ति के लिये परीक्षा में और ट्रेनिङ्ग निश्चित हैं अर्थात् निर्धारित ट्रेनिङ्ग का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के पश्चात् ही वह अध्यापक लगाया जा सकता है। इसी प्रकार विवाह करवाने के इच्छुक युवक युवतियाँ भी विवाहादि संस्कार विधान समिति से प्रमाणपत्र स्वीकार करें। तभी वे विवाह करवा सकते हैं। बिना प्रमाण पत्र प्राप्त किये जो विवाह करवायें वे राज्य की ओर से दण्डनीय हों।

सन्तति नियमन

आजकल यह प्रश्न बहुत से विचारकों के मनमें देर से उठ रहा है कि भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या को किसी प्रकार नियन्त्रित किया जाए। क्योंकि जनसंख्या के बहुत बढ़ जाने से खाद्य पदार्थों का वितरण कठिन हो गया है तथा देशवासी प्रायः विदेशियों के ऊपर निर्भर रहते हैं। स्वतन्त्र भारत के लिए यह बड़ी पराधीनता है। जो योजना हमने ऊपर बनाई है उसी के द्वारा इस समस्या का बहुत कुछ हल किया जा सकता है। कुछ अन्य निर्देश भी इस सम्बन्ध में करने आवश्यक प्रतीत होते हैं।

१—कोई माता पिता अपने लड़का लड़की के विवाहादि संस्कार के समय अपने निकटतम सम्बन्धियों को ही संस्कार में आमन्त्रित करें। अन्य सभी लोग केवल दर्शक के रूप से उपस्थित रह सकते हैं। आमन्त्रित नहीं समझे जा सकते। विवाह-कार्य में लगभग १०००) रुपये से अधिक व्यय नहीं होना चाहिये।

२—संस्कार कराते या करवाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि घृत दुग्ध आदि का उपयोग यथा सम्भव गाय का ही किया जाये। इससे गो-पालन एवं गो-रक्षण का गृहस्थाश्रमियों का कर्तव्य हो जाता है, ऐसा न होने से बड़ा दोष उत्पन्न हो जाता है। भैंस आदि का दुग्ध घृतादि कुछ तामसिक तथा बुद्धि मान्द्य जनक होने से मनुष्यों में असहनशीलता और लड़ाई झगड़ा तथा वैमनस्य उत्पन्न करता है।

३—भैंस का दूध घी आदि पदार्थ अधिक कामोत्तेजक होने से विषय-वासना को विशेष उत्पन्न करता है। इसलिए यह आवश्यक है कि गाय का घी दूधादि पदार्थ सेवन किया जाये, जिससे कि संयमी जीवन बनें और गृहस्थियों के बालक ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करने में समर्थ हो सकें। आज कल के गृहस्थी लोग प्रायः भैंस पर पलते हैं। इसलिए उनमें से अनेक तो ब्रह्मचर्याश्रम का ही विरोध करते हैं। इसलिये सन्तति नियमन की बड़ी आवश्यकता हो रही है।

४—गृहस्थी लोग अधिक सन्तान पैदा न करें। और संयमी जीवन व्यतीत करें। इसके लिये आवश्यक है कि बर्थ कन्ट्राल आदि कृत्रिम उपायों का प्रयोग न करके, न करवा के सन्तानोत्पत्ति के ऊपर आर्थिक दण्ड राज्य को लागू करना चाहिए।

(शेष पृष्ठ २१ पर)

सनातन संस्कृति के नाशक कौन

भीष्मप्रताप राठी, शास्त्री, प्रभाकर सि० वाचस्पति

संस्कृति का अर्थ सभ्यता; अनुशासन शिष्टाचार आदि हैं। इसी का अनुकरण करते हुए अंग्रेजी में लैटिन भाषा से कलचर शब्द आया और उर्दू में तहजीब। प्राचीन काल में मानव की क्या नृप की भी पहचान का प्रधान कारण यही था इसी विशिष्टता के कारण भारत का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य था। यही एक कारण था कि राजा प्रजा का पुत्रवत् परिपालन करता था। यह काल महाभारत से पहले का है जिसमें राजा शर्याति, विक्रम, और हरिश्चन्द्र का अनुपम उदाहरण मिलता है। इससे कुछ आगे अश्वपति महाराज का इतिहास मिलता है इस समय में भी भारत में चोर, डाकू, दुराचारी कोई भी न था। तक्षशिला, नालन्दा जैसी शिक्षण संस्थाएँ थीं जिनमें १० हजार के लगभग विद्यार्थी शिक्षा पाते थे। और वर्णन मिलता है कि किसी समय भी किसी अध्यापक को दण्ड देने का अवसर ही प्राप्त न हुआ इस प्रकार का अनुशासन था। आज की शिक्षण संस्थायें सामने हैं उनकी शिक्षा, वातावरण और अनुशासन भी। चाणक्य से राजनीतिज्ञ भी इस भारत भूमि पर हुए। अशोक सरीखे राजा का शासन भी यहां था जिसका अनुसरण हमारी वर्तमान सरकार करने का गर्व करती है इससे आगे वह समय आया कि भारत का पतन काल आरम्भ हुआ। जिससे हम महाभारत के नाम से याद करते हैं—परस्पर चचेरे भाइयों का तुमुल युद्ध मचा और १८ ही दिन में संसार मानव हीन हुआ। जिसे सभी जानते हैं ऐसी घटना संसार के इतिहास के पन्नों को उथलने पर भी नहीं मिलती। भारत के पतन का श्रीगणेश यहीं से होता है इसके आगे एक वह भी समय आया जबकि विदेशी यात्री भी भारत की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते थे। दूध की नदियाँ बहती थी, पानी के स्थान पर दूध पीने को मिलता था जहाँ आज इसका स्थान चाय ने ग्रहण किया है। तदुपरान्त मुगल साम्राज्य का दमनचक्र चला कोई ६०० वर्ष। जिससे प्रताप, शिवा, छत्रसाल सरीखों ने भारत की संस्कृति बचाने के हेतु अपना बलिदान दिया। औरंगजेब की क्रूरता ने चरम सीमा को लांघा अत्याचार हुए जुल्म ढाये गये, अनर्थ किये गये, स्त्री अपहरण हत्यायें, जिन्दा जीव दीवार में चिनवाये गये हकीकत से बालक को तलवार के घाट उतारा गया। इतना दुर्दमन होने पर भी भारतीय संस्कृति की ज्योति जगमगाती रही। इसी दौर में अकबर भी प्रेम की पैनी छुरी चलाकर चला गया। १४४३ ई० में एक अंग्रेज लेखक ने लिखा कि इस समय भी भारत में चोरी नहीं है। यहीं से उन लोगों का आधिपत्य आरम्भ हुआ। जिन्हें हम अंग्रेज प्रभु के नाम से पुकारते हैं। इसको बीते हुए बहुत समय नहीं हुआ सन् १८५७ की क्रांति सब को याद है-इसके क्रूर अत्याचारों ने हद करदी—जलियां वाला बाग लाला लाजपतराय, बीकेदत्त, भक्तसिंह राजगुरु, सुखदेव, चन्द्रशेखर सरीखे नो जवानों को फांसी के तख्ते पर झुलाया गया। कूयें लाशों से भर गये, मशीनगनें, तोपें तक दागी गई। रानी झांसी को भी भारत भूमि को अन्तिम प्रणाम करना पड़ा बहादुरशाह और नादिरशाह को भी जहनुम में पहुंचाया गया। कितनों को देश निकाला हुआ इतनी कठोर से कठोर यातनायें भोगने के बाद भी भारत की सनातन संस्कृति को जीवित रखा।

इतना अत्याचार और अमानुषिक बर्बरता को सहन करने के बाद भी जो अपनी संस्कृति सभ्यता नहीं छोड़ी उसका कारण था। भारतीयों में सहिष्णुता, साहस, धैर्य, धर्म कट्टरता ही तो थी। जिससे आज भी राजधानी देहली के चारों ओर यही लोग निवास कर रहे हैं अपनी उसी वेशभूषा में,

भाषा भी वही ठेठ हिन्दी लोभ और स्वार्थपरायणता ना छू तक न पाई थी सच है "लोभः पापस्य कारणम्" जिसके कारण यहां की संस्कृति, सभ्यता भाषा छीनी न जा सकी। परन्तु आज आपा-धापी है—रोज का तमाशा सभी देख रहे हैं।

अब वह समय आ पहुंचा जब कि १५ अगस्त सन् १९४७ को भारत को लंगड़ी स्वतन्त्रता मिली जिसकी खातिर लाखों नर नारियों का रक्त प्रवाह हुआ—बेघर प्रजाजन हुआ, क्या बच्चा क्या बूढ़ा सभी स्त्री पुरुषों को दुर्दान्त दुख का मुँह देखना पड़ा तिस पर अहिंसा की पुकार सुनकर मस्तक शर्म के मारे झुक जाता है। क्या कलिंग के भीषण संग्राम की याद ताजा नहीं हुई। जिससे अशोक ने सन्यास ग्रहण किया। खैर! अभी अंग्रेज द्वारा किया गया १९०१ का ब्रह्मा प्रथकत्व का घाव भर भी न पाया था कि पूर्वी व पश्चिमी पाकिस्तान उधर काशमीर विभाजन में भी वे ही अग्रणी रहे और उनकी बात मानकर भारतमाता की तड़पती हुई दशा इस लेख द्वारा प्रकट करना मुख्य उद्देश्य है।

लीजिये—भारत तीन भागों में विशेष रूप से विभक्त हुआ—इन टुकड़ों से होने वाली तड़प थी तो उस वीर सेनानी के दिल में उसी ने बिखरे टुकड़ों को मिलाया वीरता एवं साहस से निर्भीकता से। उसने किसी की एक न मानी और दिल में समाया दिमाग में आया वही किया। किन्तु खेद कि वह आज वीर गति को प्राप्त हुआ जिसे संसार याद करता है लोह पुरुष के नाम से। अंग्रेज तो खिण्ड मिण्ड सौदा करके चल गया और बो गया बीज साम्प्रदायिकता का चूंकि स्वराज्य भी तो साम्प्रदायिकता के ही आधार पर भारत को मिला। एक दूसरा साथी इन्हीं के समान उग्र विचारों का कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने वाला भी खप चुका है सिंघापुर और इम्फाल की पहाड़ियों में जिसे जमाना याद करता है नेता जी के नाम से। ज्यों ही इन वीरों का नाम जबान पर आता है उधर आँसू आँखों से ढुलकने लगते हैं, क्यों? इसका उत्तर देना कठिन है। हृदय ही इसके रहस्य को जानता है। अन्दर ही अन्दर घुलकर बुझ सा जाता है। महात्मा गाँधी जी भी भगवद्भक्ति करते करते परलोक सिधारे। विचारे? क्या इन सभी ने ऐसे ही (वतमान) भारत के लिए अपने प्राणों की अमूल्य आहुतियाँ दी थी। नहीं! नहीं! नहीं! आज वर्तमान शासकों के कुकृत्यों को देखकर उनकी आत्मायें तड़फ रही हैं। उन्हें यदि निर्लेप नारायण के नाम से याद किया जाय तो भी थोड़ा है। ऐसी जीती जागती भव्य मूर्तियाँ आज भी हमारे मध्य विद्यमान हैं जिन्होने देश की खातिर ३३ साल तक भारत के लिए बिदेशों की खाक छानी, १०० १०० मील का समुद्र तैरना पड़ा भला उनके दिलों पर क्या बीत रही होगी इसे तो वही जान सकते हैं हमारा तो अनुमान ही हो सकता है।

लेखक यह लिखने का साहस करता है कि—साम्प्रदायिकता को ही आज दिन प्रतिदित प्रोत्साहित किया जा रहा है अपने अपराध को छिपाने के लिए नारा लगाते हैं समाजवाद का साम्प्रदायिकता को निर्मूल करने का। परन्तु स्वराज्य की आड़ में शिकार खेला जा रहा है भारत की प्राचीन संस्कृति सभ्यता और भाषा को मिटाने का। और नया ही (गाँधी जी से लेकर) इतिहास रचने का। यह कैसे, प्रत्यक्ष में प्रमाण की आवश्यकता नहीं—रोना आता है अतीत को याद करके जबकि नृप स्वयं वेश बदल कर प्रजा में घूमता था वास्तविक स्थिति की जानकारी प्राप्त करते थे। ताकि प्रजा पीड़ित न हो सके ठीक इसके विपरीत आज शासक स्वयं रक्षक होता हुआ भक्षक बन बैठा। किसी पर अभियोग दे गबन का घोटाले का, किसी के भतीजे पर किसी के लड़के ही लूटमार में व्यस्त हैं। कोई करे तो क्या करे जब बाड़ ही खेत को खावे। तुलसीदास का यह कथन सत्य ही सिद्ध हो रहा है कि—नहि कोऊ जन्मा अस जगमाहीं। प्रभुता पाहि जाहि मद नाहीं। इनके तो पौबारह हैं पड़े न मालूम फिर ऐसे हाथ गड़े या न गड़े आखिर बच्चा शक्का ने भी तो दो

घन्टे के राज्य में चमड़े का सिक्का चला ही दिया था। फिर इनके लिए पाँच साल।

कहाँ दशरथ सरीखे राजा—जो ऋषियों मुनियों के सामने अवाक् तो रहते थे ही उनकी रक्षा के हेतु अपने जिगर के टुकड़ों को भी उन्हें सौंप देते थे। यज्ञ की रक्षा के लिए। आज के अधिकारी इसके विपरीत पवित्र धार्मिक स्थानों को अपवित्र करवाते हैं जैसा कि चन्डीगढ़ व दयानन्द मठ रोहतक में यज्ञ की वेदी को जूतों के द्वारा अपवित्र किया गया। इतना ही नहीं ऋषि, महात्माओं को जेल सीखचों के अन्दर डाला गगा। मन माने क्रूर कृत्य किये गये, अनाचार, दुराचार में हद कर दी गई और औरङ्गजेब के अत्याचारों की याद ताजा की गई। १५ अगस्त १६५७ को बहु अकबर पुर में फिर फिरोजपुर जेल के जुल्म की समता में पुराना इतिहास मौन ही है। जबकि अंग्रेज के समय में इसी प्रकार के हंगामे पर सभी अधिकारियों को दन्ड दिया गया था। परन्तु यहाँ रुहाई न दुहाई। न्यायाधीश के निर्णय पर भी कुत्तों ने मूता। यही आशा जालन्धर के गोली कांड के जाँच पर की जा सकेगी चूंकि देहली से भी तो पिछले दिनों एक हरिजन की मृत्यु को भी ठीक ही ठहराया था। क्या राजा की यही सहानुभूति है कि एक शहीद के प्रति सम्वेदना भी नहीं अपराधी को दण्ड की बात ही क्या। परन्तु याद रखना चाहिए कि अन्याय करने से अन्याय सहना बड़ा पाप है। अतः अन्याय को कभी सहन नहीं करना चाहिये चाहे प्राण ही क्यों न जावें। क्या उसे भूल गये जबकि आज के गाँधीवादी प्रभु "नजर बन्दी" को काला कानून कहा जाता था। देखा पिछले दिनों घोर विरोध के बाद भी गृह मन्त्री ने उसे पतित किया और जनता जनार्दन के नेतृत्व को अनसुना किया गया। यही है लोकतन्त्र और प्रजा तंत्र? भारत में न कानून न सुरक्षा मनमानी चल रही है। खैर। शान्ति का फल मीठा अन्त तो निश्चित है ही अन्यायी का।

इससे अधिक साम्प्रदायिकता का क्या प्रमाण हो सकता है कि राजकीय कालिज का आचार्य किसी विशेष सम्प्रदाय का व्यक्ति ही हो सकता है अन्य नहीं। यह सभी घटनायें अग्नि में घी कासा काम कर रही हैं। हमारे हिंदू शास्त्र तो सत्य का मार्ग बतलाते हैं परन्तु हर्बर्ट स्पेन्सर जैसे अंग्रेजों ने इन की भी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। हिंदू कोड बिल बला क्या है? हमारी सांस्कृति को मिट्टी में मिलाने का एक तरीका यथा सगोत्र विवाह की प्रथा चलाना जब कि मनु महाराज ने कम से कम तीन गोत्र छोड़ने को लिखा। निरुक्त ने तो स्पष्ट ही कह दिया "दुहिता दुहिता" इसी कोड बिल में दाय विभाग लड़की का अधिकार पिता की सम्पत्ति में करके बहन और भाई में कटु शत्रुता को जन्म दिया। एक दूसरे को परस्पर प्रेम के स्थान पर शत्रु बना दिया। संसार में सबसे घनिष्ठ सम्बन्ध को छिन्न भिन्न किया गया। अर्थात् अंग्रेज की भाँति घर-घर में फूट की चिंगारी सिलगाई। लिखते हुए लेखनी काँपती है "क्षते क्षारमिव" उक्ति के अनुसार घाव पर नमक छिड़कने का काम "तलाक" ने किया। पिता पुत्र वधु और पुत्र को अदालत में एक दूसरे की आबरू छीनने में साक्षी देकर छीना झपटी करवाना। आप अनुमान लगाओ आखिर इस पतन का अन्त किस ठौर होगा। संस्कृति के फलित वृक्ष को विषाक्त जल से सींचा जा रहा है और आशा की जाती है इस वृक्ष के फलने फूलने की—भला बालू के तेल निकालने के समान असम्भव नहीं तो और क्या है। यहाँ तो हमारी सरकार ने मुगल साम्राज्य को मात कर दिया। जिसे कोसते अघाते नहीं।

जरा और पग बढ़ये पुराना इतिहास याद दिलाता है महाराज दिलीप की जिन्होंने गुरु वशिष्ठ की आज्ञा मानकर कामधेनु की रक्षा करते हुए ओजस्वी, प्रतापी, पुत्र रत्न को पाया था। जिस धेनु का गोबर, मूत्र, दूध, दही, घी मक्खन सभी अत्यन्त उपादेय है। गोधन का किस प्रकार विनाश हो रहा है। यह बम्बई और कलकत्ते में चल रहे हत्थों की दीवारें पुकार पुकार कर कह रही हैं। जिनमें प्रति वर्ष लाखों गौओं का अन्त किया जाता है। इसका

सारा पाप सरकार को तो है ही परन्तु कुछ अंश तक पाप के भागी वे लोग भी हैं जो कर्म का प्रयोग करते हैं। विशेषकर वे लोग हैं जो फैशन में आकर बहुमूल्य बूट, दस्ताने, बिस्तर बन्द, बटुवे आदि को अपनाते हैं। अतः गोवंश की रक्षा हेतु हमें इस कुर्म के प्रयोग से परहेज करना चाहिए। इतना ही नहीं घड़ी का फीता भी तो हमें कुर्म का ही अच्छा लगता है। जोकि हमारे भोजन तक को अपवित्र करता है और भोजन का प्रभाव सारे शरीर पर होता है। इसी रोग को समाप्त करने के लिए १८५७ का राष्ट्रीय संग्राम प्रमाण है जिसमें गौ की चरबी से मढ़े कारतूसों को चलवाया गया और भयंकर संग्राम मचा। क्या अब हम अपने ही लिए इतनी भी कुर्बानी नहीं कर सकते कि इन्हें प्रयोग में न लायें। प्रत्येक भारतवासी का कर्त्तव्य गो रक्षा करना है। यही गोवंश का परिणाम था कि हमारी बुद्धि, शक्ति आयु सभी उन्नत थे। राम राज्य की रट लगाने वाला, लंगोटी धारी, ईश्वर विश्वासी भी नहीं रहा आज केवल इनके अन्धश्रद्धालु भक्त ही अवशिष्ट हैं। जिन्होंने मुर्गी, मछली की पैदावार को बढ़ावा देने के लिए ४००रुपये तक का पारितोषिक दिया। यही कारण है कि अण्डे मांस और मदिरा का प्रचार बढ़ा "बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारीत दुच्यते के अनुसार बुद्धि समाप्त हुई और राक्षस पना ही शेष रह गया। रामराज्य के साथ गाँधी जी का नाम जोड़ कर उन्हें बदनाम करना नहीं तो क्या है? मखौल उड़ाना किसे कहते हैं? नेहरूजी कहते हैं दूध मनुष्य की खुराक नहीं। हो सकता है वे भूल गये होंगे गाँधी जी की बकरी को। सच कहा है "out of sight out of mind" देश में भुखमरी का शोर मचता है। गोवंश के ह्रास से तो यही हा हा कार ही मचेगा। स्मरण ही होगा श्रीकृष्ण का गोपाल नाम क्यों हुआ था। किसान की सम्पत्ति गौ है उन पर कटारी चलाना फिर टैक्सों के बोझ ने भी उसकी कमर तोड़ दी। भला ऐसे राज्य में "दुर्भिक्ष, मरणं भय" न हो तो समृद्धि कहाँ से आये यही नहीं संस्कृति के उपासकों को, पूर्वजों को डाकू छली, कपटी नाम देकर उनका हास्य नहीं तो क्या है? क्या शिवजी ऐसे ही थे? सचमुच शासकों की बातें सुनकर रोना आता है। कहना ही होगा जिस टहनी पर बैठे उसी को काटे तो गिरे बिना नहीं रह सकता। आज भारत और भारतवासी एवं शासक यदि जीवित हैं तो अपनी उस पुरानी संस्कृति के कारण स्वराज्य मिला तो उसके कारण। लड्डू कहने से मुँह मीठा नहीं होता, अशोक चक्र लगाने से अहिंसा नहीं फैलती। कर्त्तव्य की भावना ही समादरित होती है।

जनता जनार्दन को याद रखना ही होगा कि अपराधी को दो बार ही क्षमा किया जाता है तीसरी बार तो दण्ड ही देना चाहिए यदि बार बार छोड़ा गया तो पृथ्वीराज जैसी ही अवस्था समाज की बनेगी। वर्तमान शासक सेना को भी दो अवसर प्राप्त हो चुके हैं। भारत सदा से ही सत्य और सदाचार पर आश्रित रहा है। सत्य के कारण हरिश्चन्द्र की क्या दशा हुई थी सब जानते हैं। भीष्म पितामह ने भी अपनी मृत्यु विपत्तियों को बताई। सुकन्या को च्यवन ऋषि की सेवा में प्रायश्चित्त स्वरूप रहना पड़ा था। परन्तु यहाँ तो यह सब जल्पमात्र ही है कपोल कल्पित कथायें मानी जाती हैं आज का तो बाबा आदम ही निराला है। आज का सफल राजनीतिज्ञ उसे ही माना जाता है। जो अधिक झूठ बोले और वचनों से मुकर जाये रघुवंश की प्रतिज्ञा-प्राण जाहीं पर वचन न जाहीं॥ को तो पंत जी ने ताक में ही रख दिया। मैं लिखता कि यदि प्राचीन सांस्कृति से घृणा है तो कम से कम अंग्रेज प्रभुओं से ही सीख लेना चाहिये जैसा कि कर्नल स्लीमेन ने लिखा है कि मेरे सामने आये जिनमें सारी सम्पत्ति जप्त होने तक का भय था फिर भी भारत वासियों ने कभी भी असत्य नहीं बोला। महाभारत में श्लोक आता है कि-नैव राज्यं न राजासीन् न दण्डो न च दण्डिकः। धर्मेणैव प्रजाः सर्वाः रक्षन्ति परस्परम्। यहाँ कोई राजा नहीं था

परन्तु धर्म के द्वारा ही सारी प्रजा की रक्षा होती थी। आज के शासकों का कोई धर्म नहीं भारत को भी धर्म हीन राज्य घोषित किया 'Secular state' कहकर सत्य और सदाचरण के कारण मानव ईश्वर विश्वासी हो जाता है और ईश्वर विश्वासी होने के कारण ही आत्म-बल प्राप्त होता है यही एक कारण था कि महात्मा गांधी जी लंगोटी चद्दर में इंग्लैंड के सम्राट से मिले जबकि ऐसी अवस्था में किसी को आज्ञा नहीं मिलती थी। वृक्ष के मूल को काटकर पत्तों पर पानी डाला जा रहा है। इस प्रकार कब तक हरा भरा रखा जायेगा। किस के मत्थे दोष मढ़ें कोई बहाना भी नहीं स्वयं भारतीय शासक जो ठहरे। चरित्र निर्माण वाली शिक्षा को भी इन यमदूतों ने अछूता न छोड़ा। इसमें भी अनाचार, दुराचार का सम्मिश्रण किया। सह-शिक्षा का प्रचार। बहाना किया जा रहा है अल्पव्यय और बचत का। ऋषियों और मुनियों ने तो इसका प्रबल विरोध किया था। कि पांच वर्ष से ऊपर का बच्चा व बच्ची एक दूसरे की पाठशाला में न जावें। यहां बच्चों की तो बात ही दूर रही शिक्षिकायें भी नियुक्त की गईं। इसका परिणाम शिक्षण संस्थायें अखाड़ा बन गईं। नित्य नये विवाद सुनने और देखने को मिलते हैं। अब तो इन सत्ता धारियों को देश पर दया करनी चाहिये। एक ओर तो प्रश्न बचत का है दूसरी ओर श्रमिक लोगों की खून बूंद की मानिन्द रुपया भव्य भवनों के निर्माण पर पानी की भांति बहाया जा रहा है। फिर भी रट्टा समाजवाद का। और तूती बोल रही है पूंजीवाद की। कहां चाणक्य के पर्ण कुटीर (झोंपड़ी) में बैठ कर राज काज करता था। श्री कृष्ण गोपालन करते हुए कितने उच्च कोटि के नीतिज्ञ थे। कोई दुखी नहीं था। सब आनन्द में थे। कहाँ वे मन्त्री जिनके भवनों पर लाखों रुपये व्यय होने पर भी कमी ही रह जाती है सजावट की आखिर यह कमी कहां पूरी होगी, कब पूरी होगी, कैसे पूरी होगी इसका अनुमान जनता को स्वयं करना है। कहां मयूर ध्वज महाराज-राजा रानी दोनों ने पुत्र को आरे से चीरा। अपराधी होने के कारण। कहां आज के मंत्रियों के पुत्रों की अवस्था कार से नीचे पैर नहीं रखते-चाहे स्कूल जायें या घर को जायें। इनसे तो औरंगजेब ही भला था जो कभी भी राज्य कोष से एक पाई भी नहीं लेता था "कुरान शरीफ" की आयतें लिखकर निर्वाह किया करता था। क्या यही हैं वे पंचशील का ढोल पीटने वाले, संसार शांति स्थापना करने के ठेकेदार; समाजवाद के जन्म दाता, गांधी जी के बुगले भगत। इन्हें याद होना चाहिये कि यह देश धर्म प्रधान देश है अन्यायी नृप कहीं सुख शांति नहीं ला सकता। यही कारण है कि आज भारत में चहुं ओर अशांत वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा रहा है शासकों की दौड़ बढ़ चढ़ कर धांधली मचाने में है। सम्प्रदायवाद को जगाने में है। उत्पात मचवाने में है। खेद ! कि भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी घोषित होने पर भी ये सूरमा उसे उन्नत न कर पाये क्या पञ्जाब, क्या मद्रास का विवाद सब इनकी अदूरदर्शिता और अज्ञता का भाव है। उसे पीछे ही पीछे धकेला जा रहा है। यदि अब भी अपनी कूट नीति को नहीं छोड़ा और समझदारी से काम न लिया तो सन्देह नहीं फिर जल्दी ही बरबादी के बादल भारत पर मंडराये बिना नहीं रह सकते चाहे कितनी ही योजनायें बनायें पंचशील का शोर मचायें। प्रभाव तो कार्य करने पर होता है इनकी तो औकात ही क्या सिकन्दर महान् को भी व्रतधारी ब्राह्मण के सामने झुकना पड़ा था और स्वीकार किया था हार को। अतः सद्भावना, दृढ़संकल्प, धैर्य और साहस को बनाये रखिये वरना पछताना होगा, चीखना होगा, पुकारना होगा और यज्ञ करते हुए सिर धुनना होगा कि:—

इब्तिदाये इश्क है रोता है क्या—
आगे आगे देखना होता है क्या॥

×❀×

दश लक्षण को धर्म्मः

(ले० ब्रह्मचारी महादेव सिद्धान्त शास्त्री, सि० प्रभाकर गुरुकुल भज्जर) रोहतक

पाठक गण आपकी सेवा में गताङ्क में धर्म्म की महिमा लिखी थी। इस अङ्क में धर्म्म के दश लक्षणों की क्रमशः व्याख्या की जावेगी।

१—धृति

धृति=धैर्य धर्म्म का प्रथम लक्षण है। किसी कार्य को साहस पूर्वक प्रारम्भ करना या विपत्ति आने पर भी उसका परित्याग न करना धृति वा धैर्य कहलाता है यथा—

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥भर्तृहरिः

नीति निपुण लोग भी धैर्यवान की चाहे निंदा करें वा प्रशंसा करें, लक्ष्मी चाहे आवे वा चली जाये, चाहे आज मृत्यु हो जाये वा युगान्तर में हो, किन्तु जो धीर पुरुष होते हैं वे न्याय के पथ से कभी विचलित नहीं होते जैसे महर्षि दयानन्द जी महाराज, स्वामी शंकराचार्य आदि।

२—क्षमा

क्षमा=कष्ट सहने की शक्ति को क्षमा कहते हैं। क्षमा से बड़े बड़े शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। यथा—

क्षमा शस्त्रं करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति।
अतृणे पतितो वह्नि स्वयमेव विनश्यति ॥

अर्थात् क्षमा का पवित्र शस्त्र जिसके हाथ में है इसका दुष्ट पुरुष क्या कर सकता है, वह तो स्वयमेव उस प्रकार नष्ट होता है जिस प्रकार तृण रहित भूमि पर पड़ी हुई अग्नि।

३—दमः

दमः=मनोविकारों को दमन करना वा मन को उचित मार्ग पर चलाना।

इन्द्रियाणां हि चरतां येन मनोऽनुधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥

अर्थात्=इन्द्रियाँ विषयों की ओर दौड़ती हैं ऐसी अवस्था में भी मन इन्द्रियों के पीछे पीछे भागता है तब वह मनुष्य की बुद्धि को इस प्रकार नाश करता है यथा वायु नाव को नष्ट करता है। मन को अधर्म मार्ग से दूर कर धर्म में लगाना ही श्रेयस्कर है।

४—अस्तेय

अस्तेय=चोरी न करना, अथवा निर्बल का बलात्कार से धन लूटना। इस विषय में वेद भगवान कहते हैं—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥यजु० ॥४०।१॥

अर्थात्=इस अपार संसार में जो कुछ है वह सब ईश्वर का ही है। इसलिये हे मनुष्यो! ईश्वर जो कुछ देता है वह कर्म करने पर ही देता है अतः एव ईश्वर ने जो दिया उसी का उपभोग करना चाहिये। और दूसरे के धन पर गीध की भाँति मन चला नहीं होना चाहिये। अन्यच्च—

"पर द्रव्येषु लोष्ठवत्" अर्थात् पराये धन को मिट्टी के समान देखना चाहिये। "अस्तेय प्रतिष्ठायाँ सर्वरत्नोपस्थानम् ॥ यो० २। ३८॥

महर्षि पातञ्जल जी महाराज कहते हैं-जो अस्तेय में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है उसको संसार में सब रत्नों की प्राप्ति होती है।

(क्रमशः)

हिन्दी-रक्षा

(रचयिता—पं० ताराचन्द 'आर्योपदेशक' महेन्द्रगढ़)

है प्रजातन्त्र राज, देश में आज
सुनो वीरो जो बर्बाद कर रहे हो। टेक।

इंग्लिश की जगह राष्ट्रभाषा हिन्दी बनकर आई
बीस करोड़ मनुष्यों की मातृ-भाषा यह कहलाई
किया इसके संग में बैर, क्यों बनकर गैर,
सुनों वीरो गुरुमुखी लाद रहे हो। १।

पूर्ण भाषा हिन्दी है यह सब दुनियाँ बतलाती
एक अक्षर में दो अक्षर से गुरुमुखी बोली जाती
आड़ा ऊड़ा ज्ञान, दो दो पहिचान,
सुनों वीरो क्यों कर ये फिसाद रहे हो। २।

मजहबी भाषा है यह गुरुमुखी और प्रान्तीय भाषा
हमें पढ़ा रहे हो जबरन करने क्या लगे तमाशा
ये हिंदू और सिख एक, समझ कर देख
सुनो वीरो भुला एतकाद रहे हो। ३।

मातृ भाषा हित गुरुओं ने लाखों कष्ट उठाये
शीश कटे और दूध मुँहे बच्चे भीतों में चिनवाये
आज निज भाइयों के संग करने को जंग
सुनो वीरो यह कर सिंहनाद रहे हो। ४।

हम चाहते हैं जिस भाषा को जो भी पढ़ना चाहे
किसी के ऊपर जबरन भाषा कोई न लादी जाय
सरकार करे इन्साफ, समझकर आप
सुनों वीरो फैला उन्माद रहे हो। ५।

जो हिन्दी को नष्ट करेगा यूं आतंक जमा कर
आर्यवीर करेंगे रक्षा सिर की भेंट चढ़ाकर
यह आर्यों का ऐलान, 'शर्मा' का गान
सुनो वीरो क्यों बन सैयाद रहे हो। ६।

भारतीय विद्यार्थी आंदोलन की रूपरेखा और उसका भविष्य

[गताङ्क से आगे]

[ले० चन्द्रभान गुप्ता कोषाध्यक्ष उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी]

विद्यार्थी आंदोलन का चतुर्थ युग १९३४-४१

सन १९३५ तक देश का क्रान्तिकारी आन्दोलन अपनी चरम सीमा तक पहुंच चुका था किन्तु उसके बाद जब यह कुछ ठंडा पड़ने लगा तब कांग्रेस का नौजवानदल कांग्रेस के तरीकों में कुछ बुनियादी परिवर्तन लाने के लिए कांग्रेस के अन्दर ही एक नवीन संस्था को जन्म देने की बात सोचने लगा।

विद्यार्थी आंदोलन का सैद्धान्तिक पहलु समाजवाद की ओर

इस समय तक रूस के कई पंचसाला प्रोग्राम सफल हो चुके थे, देश में नौजवानों के अन्दर समाजवादी विचारधारा का प्रभाव बढ़ रहा था। इससे प्रभावित होकर कुछ कांग्रेसियों ने कांग्रेस समाजवादी पार्टी को जन्म दिया। इसी समय कम्युनिस्ट पार्टी की भी स्थापना हुई। यह समाजवादी विचारधारा देश में चलने वाले सुधारवादी तथा क्रान्तिकारी दोनों प्रकार के आन्दोलनों को प्रभावित करने लगी। विद्यार्थी आन्दोलन पर भी प्रभाव डाला। सन् १९३६ में श्री जिन्ना के सभापतित्व में लखनऊ कांफ्रेन्स में अखिल भारतीय विद्यार्थी संगठन संगठित रूप में लोगों के सामने आया।

विद्यार्थी आंदोलन में विभिन्न विचारधारायें

विद्यार्थियों का यह अखिल भारतीय संगठन केवल समाजवादी विचारधारा के ही असर में नहीं बल्कि इसके अन्तगत और भी उनके विचारधाराओं के विद्यार्थी सम्मलित थे, परन्तु नये-नये राजनैतिक दल अब इस संगठन पर अपना प्रभाव जमाये रखने की चेष्टा करने लगे। इस संगठन में बहुमत बामपंथियों का था जो आपस में एक दूसरे से वाग्युद्ध में ही संलग्न थे। इस प्रकार सन १९३८ में ही इसमें फूट पड़ने की संभावना प्रतीत होने लगी परन्तु नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के बीच में पड़ने के कारण इसमें फूट न पड़ सकी।

स्टूडेण्ट फेडरेशन की चौथी कांफ्रेन्स सन् १९४० में देश की राजधानी दिल्ली में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की अध्यक्षता में हुई। इसमें दूसरे विश्व युद्ध को साम्राज्यवादी युद्ध घोषित किया गया और इसे दो साम्राज्यवादियों के बीच बाजारों के बटवारे का संघर्ष माना गया।

नागपुर अधिवेशन की ऐतिहासिक महत्ता

विद्यार्थियों का अगला अखिल भारतीय अधिवेशन नागपुर में होना निश्चित हुआ। इसी समय भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने फेडरेशन पर कब्जा करने के लिए एक सरकुलर अपने विद्यार्थी प्रतिनिधियों के पास भेजा। सरकुलर इस प्रकार था "विभिन्न प्रान्तों के हमारे विद्यार्थी प्रतिनिधि पहुंचने के बाद ही एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित करें, अखिल भारतीय पार्टी की विद्यार्थी कमेटी एक छोटी कमेटी का निर्माण करेगी जो इस कानफ्रेन्स में पार्टी की तरफ से प्रमुखता तय करेगी। प्रस्ताव बनायेगी तथा चुनाव के समय पदाधिकारियों का निश्चय करेगी। ...अगर हम लोगों ने इसमें ठीक तरह से कार्य किया तो इसमें कोई संदेह नहीं कि हम इस संगठन पर कब्जा कर दूसरे तत्त्वों को समाप्त कर सकने में समर्थ हो सकेंगे।"

कम्युनिस्टों द्वारा विद्यार्थी आन्दोलन को ले डूबने का असफल प्रयत्न

कम्युनिस्ट पार्टी ने रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस

द्वारा मजदूर आन्दोलन को दफनाने का घृणित प्रयत्न करके अब विद्यार्थी आन्दोलन पर भी हाथ लपकाया। अपने षड्यंत्र भूल कर जन-युद्धवादी कार्य क्रम को ये विद्यार्थियों में ले जाने के लिए कमर कमकर १६४० में नागपुर अखिल भारतीय विद्यार्थी सम्मेलन में उतर पड़े। विद्यार्थी कार्यकर्ताओं ने इस नीति का डट कर विरोध किया, फलत; इन्होंने दाल गलती देख अपने कुछ अन्धानुकरणशील छात्रों को लेकर एक कठपुतली छात्र संगठन की रचना कर डाली। इस नकली छात्र संगठन को बनाते समय जन-युद्धवादियों के एक मशहूर नेता डा० असरफ ने नागपुर में अपना वक्तव्य देते समय छात्र संगठन की उपर्युक्त फूट की ऐतिहासिक आवश्यकता के नाम पर भूरि-भूरि प्रशंसा की इस तरह विद्यार्थी आन्दोलन में फूट का बीज डाल कर कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने आंचल में विश्वासघात का एक और दाग लगाया।

विद्यार्थी आन्दोलन का पांचवाँ स्तर १९४१-४७

इस युग की यह विशेषता थी कि नागपुर में विद्यार्थी फेडरेशन दो भागों में बट चुका था। एक था राष्ट्रवादियों का संगठन जिसमें देश के सभी साम्राज्यवाद विरोधी राजनैतिक विचार धारा के लोग सम्मिलित थे और दूसरा था कम्युनिस्टों का। सम्पूर्ण देश में विद्यार्थियों को अपने अपने प्रभाव में लेने के लिए इन दोनों फेडरेशनों में तुमुल संघर्ष होने लगा परन्तु राष्ट्रवादी शक्तियों के अनवरत परिश्रम के परिणाम स्वरूप वे विद्यार्थियों का विश्वास प्राप्त करने में सफल रहे। यह बात स्मरण रखने की है राष्ट्र की इस संकट वेला में तमाम राष्ट्रवादी शक्तियाँ कांग्रेस, पी० एस० पी०, आर० एस० पी०, फारवर्ड ब्लाक आदि एक तरफ थी दूसरी तरफ थे कम्युनिस्ट।

इसी समय हिटलर ने रूस पर हमला कर दिया। बस क्या था ? फासिस्ट जर्मनी द्वारा कम्युनिस्ट रूस पर आक्रमण होने के साथ ही साथ रातों रात साम्राज्यवादी युद्ध 'जन युद्ध' में परिवर्तित हो गया। इसी बीच १९४२ में भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महान नारे 'करो या मरो' 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' की ध्वनि से अंतरिक्ष गूँज उठा। सारे भारत में फिरंगी साम्राज्यवाद के विरुद्ध जनता ने अगड़ाई ली और साम्राज्यशाही के माध्यम शासन को जनता ने काटना शुरू कर दिया। जनता ने जहाँ तक एक तरफ विदेशी साम्राज्यवाद को उखाड़ फैंकने की अपनी चेष्टा को क्रियात्मक रूप दिया वहीं साम्राज्यवादी "युद्ध में रुकावटें पैदा हुईं फिर जन-युद्धवादी कम्युनिस्ट शान्ति से कैसे बैठे रहते? उन्होंने भारतीय जनता के इस पवित्र यज्ञ में रोड़े अटकाये। कम्युनिस्टों ने मजदूरों और विद्यार्थियों के आंदोलनों के साथ खुली गद्दारी करने के बाद अब पूरी जनता और राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ गद्दारी की। बम्बई में नेताओं की सामूहिक गिरफतारी के बाद सारे देश में बगावत की आग प्रज्वलित हो उठी। रेलें, तार आदि कटने लगे, पुलिस चौकियों खजानों; डाकखानों पर हमले हुए, ब्रिटिश जुल्म भी ताण्डव नृत्य करने लगा। देखते देखते सारा देश जीवन और मरण के संघर्ष में रत हो गया। सितार, मेदनीपुर, बलिया आदि में सरकारी अफसरों को गिरफ्तार कर आजादी की घोषणा कर दी गई। अंग्रेजों ने जुल्म करने में कोई कसर नहीं रक्खी, स्त्रियों का अपमान किया गया, देशभक्तों के घर खण्डर बना दिये गये, गांव के गांव आग में भस्म कर दिये गये, खड़ी फसलें जला दी गई। इस प्रकार सारा देश एक संकटापन्न अवस्था से आच्छादित हो गया। फिर भी सम्पूर्ण देश आजादी की बलिवेदि पर बलिदान होने के लिये और देश की स्वतंत्रता कराने के लिये एक सूत्र में मजबूती के साथ बधा हुआ था।

लेकिन जहाँ एक तरफ देश आजादी के लिये अपने प्राणों की आहुति दे रहा था, वहीं दूसरी तरफ विदेशी एजेण्ट पंचगामी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों और सरकार के वैतनिक नौकर रैडिकल

डेमोक्रेटिक पार्टी के लोग राष्ट्रीय आन्दोलन की पीठ में छुरा भोंक रहे थे।

कहने की आवश्यकता नहीं, कि कम्युनिस्ट सम्बन्धित विद्यार्थी संघ भी अपने इन कम्युनिस्ट नेताओं के पद चिन्हों पर ही चल रहा था। इस प्रकार कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बन्धित विद्यार्थी फेडरेशन ने विद्यार्थी समाज के मुख पर कलंक की कालिमा पोतने का प्रयास किया, परन्तु हमारे इस संघर्ष में शहीद हुए राजनारायण मिश्र, लाल पद्मधर और हेमू कलानी आदि सैंकड़ों विद्यार्थी शहीदों के खून ने उनके इस नापाक षड्यन्त्र को सफल न होने दिया।

वर्तमान विद्यार्थी आन्दोलन की विभिन्न धारायें

देश की आजादी के बाद विद्यार्थी आन्दोलन विभिन्न राजनैतिक विचार धाराओं में बंध चुका है। जिसमें सर्व प्रथम है युवक कांग्रेस, जो सरकार के रचनात्मक कार्यों में सहयोग कर शान्ति पूर्वक ढंग से समाजवादी ढाँचे के समाज के निर्माण कार्य में लगे हुए हैं। इस विचार धारा का प्रतिनिधित्व युवक कांग्रेस आदि कर रहे हैं।

दूसरे हैं वे विरोधी संगठन, जो सरकार को पूंजीवादी सरकार कहकर इसके विरोध तक ही अपने को सीमित रखे हुए हैं। इन संगठनों में पी० एस० पी० तथा सोशलिस्ट पार्टी द्वारा संचालित यंग सोशलिस्ट लीग तथा आर० एस पी० द्वारा संचालित प्रगतिशील विद्यार्थी यूनियन ही प्रमुख है।

तीसरे हैं वे जाति विद्वेषक एवं साम्प्रदायिक विद्यार्थी संगठन जो देश में प्रगति के पहिये को पीछे की तरफ घसीटना चाहते हैं। चौथे हैं रूस की वैदेशिक नीति के "जी हूजूर" विद्यार्थी फेडरेशन के छात्र जो शरीर, वेशभूषा तथा नारेबाजी में भारतीय हैं परन्तु दिल, दिमाग और कार्यों में रूस की वैदेशिक नीति के पाँचवें दस्ते हैं।

समय की माँग

आज संसार अनेकानेक विपत्तियों के घटनाचक्र से गुजर रहा है। हमारा देश भी उन्हीं विपत्तियों और घटनाचक्रों के बीच में है उसे भी अपनी व्यवस्था में परिवर्तन लाना है। क्या वे परिवर्तन उन तरीकों से लाये जावेंगे जो तरीके एकतन्त्रवादी देशों में बरते गये हैं या उन तरीकों से लाये जायेंगे जो गणराज्य के तरीके हैं और जिनकी भित्ति शान्ति और अहिंसा का मन्त्र है। अपने देश ने ऐसा नेतृत्व पाया है जो नये विचारों का प्रतिपादन कर रहा है, जो संसार में शान्ति की व्यवस्था स्थापित कर र सके और अपने पंचशील के सिद्धांतों के द्वारा मानवता की रक्षा कर सके। देश के नवयुवकों को निर्णय करना है कि वे किन मान्यताओं को अपने जीवन में अधिक स्थान देंगे। हमारी क्रान्ति के अनोखे तरीके क्या हमारे देश के नवयुवकों बीच में प्रमाणित किये जायेंगे या हमारे नव जवान के उन देशों की नकल करेंगे जहाँ वैयक्तिक स्वतन्त्रता के लिए कोई स्थान नहीं है, जहां मानवीय शक्तियों का, प्रयोग एक मशीन की नाई किया जा रहा है। युवक कांग्रेस के युवकों को इन बातों का उत्तर देना है और नई कार्य प्रणाली और क्षमता अपने अन्दर पैदा करनी है जो सही माने में इस अणु और हाईड्रोजन तथा सेटीलाइट के युग में पीड़ित मानवता की सहायता कर सके। हमारे देश के भावी निर्माताओं की कल्पना इन नवीन विचारों की तरफ दौड़ रही है, युवक कांग्रेस को उन विचारों का अगुवा बनना है जो हमारे देश में स्थायी ढंग से समाजवादी व्यवस्था की रचना कर सकें। गांधी जी का शान्ति और अहिंसा का मंत्र और उसके द्वारा देश तथा समाज का निर्माण क्या वह प्रकाश नहीं है जो सब जगह जगमगाता हुआ हमारे बीच में नई परम्पराओं को स्थापित कर सके ? यदि ऐसा है तो क्या युवक कांग्रेस अपने सदस्यों के बीच उन गुणों को नहीं पैदा करगी जो देश के नव युवकों में विचारों की ईमानदारी पैदा कर सके और एक नई क्षमता उन विचारों के विपरीत खड़ी कर सके, जो हमारी परम्पराओं के विरुद्ध है। भारत भी अपने जीवन और मरण के संघर्ष में रत है। देश में

बढ़ती हुई बेकारी, भुखमरी तथा आर्थिक संकट हमारे राजनैतिक विचारों पर भी प्रभाव डाल रहे हैं। आज हमें देश के निर्माण कार्य में जुट जाना है तभी हम इन समस्याओं का समाधान करने में समर्थ हो सकेंगे। दूसरी पंचसाला योजना हमारे समक्ष है। यह जिस कठिनाई में होकर गुजर रही है वह भी सर्व विदित है इसको सफल बनाने के लिए हमें त्याग, अनवरत परिश्रम तथा एक दिल व दिमाग की आवश्यकता है।

जनता का बौद्धिक तथा सांस्कृतिक विकास और उनके जीवन स्तर को उठाने का प्रश्न भी हमारे सामने है। जिस त्याग और बलिदान के साथ साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में विद्यार्थिवर्ग ने अपना पार्ट अदा किया है, उसी त्याग, बलिदान और उत्साह के साथ आज कार्य करने की आवश्यकता है, जिससे राष्ट्र का मस्तक ऊँचा उठे और तभी हम सही माने में समाजवादी ढाँचे के समाज के निर्माण में अपना योगदान देकर उसको सफल बनाने में हो सकेंगे।

देश के नवयुवक और नवयुवतियों को उत्साह और ईमानदारी के साथ बदलती हुई परिस्थितियों के अनुकूल अपने को बनाना होगा, क्योंकि पराधीनता के दिनों की राजनीति में और आज की राजनीति में बड़ा ही अन्तर है। उन दिनों हमारी राजनीति भाषण देने, प्रस्ताव पास करने और उन प्रस्तावों को क्रियात्मक रूप देकर आजादी की लड़ाई को आगे बढ़ाने तक सीमित थी, किन्तु आज की राजनीति वहीं तक सीमित नहीं है। आज उसकी ज्वाला को समाज के हर अंग में प्रज्वलित करना है और राष्ट्र निर्माण के महान् कार्य को ही उसका आधार बनाना है। सही माने में यही आज देश की सच्ची राजनीति है। अतः इस राजनीति में देश के युवक और युवतियों को जुट जाना होगा, यही आज देश की मांग है।

(पृष्ठ १० का शेष)

५—हर एक गृहस्थी को यह समझना लेना चाहिये कि उसमें अपने से उत्तम एक सन्तान उत्पन्न करनी है। यदि संस्कार विधि तथा आयुर्वेद के अनुसार ठीक ठीक नियमों का पालन किया जाये तो यह पूर्ण सम्भव है कि प्रत्येक गृहस्थी संसार को अपने से उत्तम एक सन्तान दे दे। इतना हुआ तो बस बहुत। बहुत अधिक सन्तान उत्पन्न करने से स्त्री और पुरुष दोनों को बहुत हानि होती है। इसलिये गृहस्थियों का भी यथावत् सन्तान उत्पन्न करके संयमी जीवन का पालन करते हुये ब्रह्मचारी ही रहना होता है। ब्रह्मचारी रहने का अभ्यास मनुष्यों को ब्रह्मचर्याश्रम में करना होता है। जिसका ब्रह्मचर्याश्रम ठीक नहीं, मानव धर्म शास्त्र (मनुस्मृति) के अनुसार उसे गृहस्थाश्रम करने का अधिकार नहीं। इसलिये गृहस्थियों को चाहिये कि वे अपने बच्चों को अधिक से अधिक ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का पालन करना सिखाएँ।

६—जो गृहस्थी जिम्मेवारी के साथ प्राजापत्य व्रत का पालन नहीं करते और गृहस्थाश्रम को केवल खिलवाड़ का आश्रम समझते हैं उनको दण्ड अवश्य होना चाहिए वे दण्ड के पूर्ण अधिकारी हैं, क्यों कि वे राष्ट्र की तथा संसार की हानि करते हैं। उनके बालक बालिकाओं का प्रथम को छोड़कर अन्य सब सन्तानों के संख्या के अनुसार दुगना, तिगुना, चौगुना इत्यादि क्रम से उनके पुरोहित की दक्षिणा तथा दान भी दुगना, तिगना, चौगुना इत्यादि क्रम से माता-पिता से आर्थिक दण्ड के रूप में राज्य द्वारा दिया जाना चाहिए। ऐसा करने से सर्वथा नहीं तो बहुत अंशों में समाज का तथा राष्ट्र को लाभ होगा। दूसरा उपाय यह भी हो सकता है कि उनकी सन्तानें उनके अधिकार से लेकर राज्य की साधारण प्रजा के रूप में राजकीय संस्थाओं की ओर से उनका भरण पोषण तथा पालन और शिक्षण संस्कार आदि करवाये जायें। इन सब का व्यय उन माता पिताओं को अपने हुनर उद्योग आदि के द्वारा पूरा करना आवश्यक होगा।

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला (रजि०) गुरुकुल झज्जर की अचूक औषधियाँ

१–नेत्र ज्योति सुर्मा

लगाइये और नेत्र ज्योति पाइये। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंख दुखना, खुजली, लाली, जाला, फोला, रोहे, कुकरे, पास का कम दीखना (शार्ट साइट) दूर का कम दीखना (लांग-साइट), प्रारम्भिक मोतियाबिन्द आदि दूर हो जाते हैं। आंखों के सब रोगों की रामबाण औषधि है यही नहीं किन्तु लगातार लगाने से दृष्टि (बीनाई) को तेज तथा आंखों को कमल की तरह साफ स्वच्छ रखता है। बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। प्रतिदिन जिसने भी लगाया उसी ने मुक्त कण्ठ से इस सुर्मे की प्रशंसा की है। मूल्य ।|) शीशी

२–नेत्रामृत

लाली, कड़क, धुन्ध, ढलकवा, गरदोगुब्बार, रोहे तथा भयंकरता से दुखती आंखों के लिये जादू भरा विचित्र योग है।

मूल्य बड़ी शीशी ।|=) छोटी शीशी ।=)

३–रक्तपित्तामृत

रक्तपित की अचूक औषधि है। शरीर के किसी भी आन्तरिक भाग से रक्त आने को कुछ ही मात्रा देने से रोक देती है। पित्तज्वर, हाथ पांवों की जलन, हृदय व दिल की धड़कन, आदि पित्त के सभी रोगों में रामबाण है।

मात्रा—१ से २ तोले तक दोनों समय भोजनोपरान्त बराबर जल मिलाकर सेवन करें !!

४—स्वप्नदोषामृत चूर्ण

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषधि इस रोग के दूर करने में बहुत लाभ दायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे पीछे या बीच में वीर्य के निकलने को बन्द कर देती है।

मूल्य २) छटांक

५ ब्राह्मी घृत

यह घृत आयुर्वेद शास्त्र की विधि के अनुसार बनाया गया है। इसका सेवन कुष्ठ (कोढ़) मृगी (हिस्टीरिया) मस्तिष्क की निर्बलता चक्कर आना, याद किये हुए पाठ तथा सुनी हुई बात का भूल जाना, रखी हुई वस्तु याद न रहना, आदि को जड़ से नष्ट कर देता है। स्कूल के विद्यार्थी दफ्तर के बाबू और वकील आदि मस्तिष्क का काम करने वालों के लिये अत्यन्त लाभदायक है। स्वप्नदोष सब प्रकार के धातु प्रमेह को दूर करता है। इसके सेवन से स्मरण शक्ति खूब बढ़ती है।

मू० आध पाव ४) चार रुपये।

सेवन विधि—६ माशे से १ तोले तक दूध में डालकर अथवा मिश्री मिलाकर प्रातः-सांय सेवन करें।

६ कर्ण रोगामृत

कान में पीप आना, बहरापन और प्रत्येक प्रकार की कारण पीड़ा को दूर करने के लिए यह अति उत्तम औषधि है। प्रतिदिन सेवन करने से कानों का कोई रोग नहीं होता और मस्तिष्क शुष्कता दूर होती है। मूल्य एक शीशी १) रुपया

७- व्रणामृत

भयंकर फोड़े फुंसी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा अनेकों वर्षों के नासूर (सरह) आदि रोगों की अद्वितीय औषधि है। दिनों का काम घण्टों में घण्टों का काम मिनटों में करती है।

मूल्य एक शीशी एक रुपया

८ स्वास्थ्यवर्धक चाय

यह चाय स्वदेशी, ताजी एवं शुद्ध जड़ी बूँटियों से तैयार की गई है। वर्तमान चाय की भांति यह नींद और भूख को न मारकर खांसी, जुकाम, नजला, सिरदर्द, खुश्की अजीर्ण, थकान, सर्दी, आदि रोगों को दूर भगाती है। मस्तिष्क एवं दिल को शक्ति देती है। मूल्य १ छटांक ।–)

१०—पाचनामृत

मन्दाग्नि, अरुचि, अजीर्ण (कब्ज) पेट का फूलना, पेट का भारीपन, शूल, जी मिचलाना, वमन खट्टी डकार आदि पेट के सभी रोगों को नष्ट कर भूख को बढ़ाता है। आंतों के सब रोगों को दूर कर पाचन शक्ति को बल देता है। पुरानी से पुरानी तिल्ली जिगर की अचूक औषधि है। मूल्य एक शीशी ४)

११—ब्राह्मी आँवला तैल

इसकी मालिश से मस्तिष्क की निर्बलता और उष्णता दूर होती है। इसका निरन्तर सेवन सफेद बालों को काला करता है तथा गंज, बालों का झड़ना आदि रोगों को दूर करता है। मृगी पागलपन और स्त्रियों के हिष्ट्रिया रोग के लिए भी यह अत्युत्तम औषध है। शारीरिक दुर्बलता दूर करने के लिए इसका सारे शरीर पर मर्दन किया जा सकता है। मूल्य १) छटांक

१२—बाल रोगामृत

बालकों के हरे-पीले दस्त, अपच, अजीर्ण (कब्ज) अरुचि, दाँत निकलते समय के रोग, सूखिया मसान रोग, वमन, निर्बलता, ज्वर आदि सभी रोगों को दूर कर बालकों को मोटा करता है। अतः प्रत्येक गृहस्थी घर रखे। मूल्य एक शीशी ४)

१३—संजीवनी तैल

मूर्छित लक्ष्मण को चेतना देने वाली इतिहास प्रसिद्ध बूटी से तैयार किया गया। यह तैल घावों के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भर कर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है दिनों का काम घण्टों और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है। मू० ।।=) नमूना

सेवन विधि—फाये में भर कर बार-बार चोट आदि पर लगायें।

१४—च्यवनप्राश

इस ऋतु के ताजे आँवले से तैयार किया गया स्वादिष्ट, सुमधुर और एक दिव्य रसायन (टानिक) है। जिसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खाँसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक, सभी हृदय रोगों की अद्वितीय औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा अन्य सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका (निरंतर) सेवन समूल नष्ट करता है। यह निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है।

मूल्य ७) सेर, ५ सेर लेने पर ६) सेर

१५—बलदामृत

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आ जाता है। पीनस (सदा रहने वाले जुकाम और नजले) की महौषध है। वीर्य वर्द्धक, कास (खाँसी) नाशक, राजयक्ष्मा (तपेदिक), श्वास (दमा) के लिये लाभकारी हैं। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करती तथा अत्यन्त रक्त वर्द्धक है। निर्बलों को बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ट बनाती है। यह अपने ढंग की एक ही औषध है। मूल्य ५) बड़ी शीशी
२) छोटीशीशी

१६—ज्वरामृत

यह नये व पुराने सभी प्रकार के ज्वरों की रामबाण औषध है। बिगड़े हुए मलेरिया, विषम ज्वर को दूर करने में अद्वितीय औषध है। कुनेन भी इसके आगे तुच्छ औषध है। कुनेन का सेवन सिर दर्द, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है किन्तु यह औषध सब दोषों को दूर करती है किन्तु ज्वर की प्रत्येक अवस्था में दी जा सकती है। मलेरिया काल में सेवन की हुई मलेरिया को नहीं आने देती। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, सेवन करें और लाभ उठावें। मूल्य एक शीश ४)

पता—आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला पो० गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक (पंजाब)

रजिस्ट्रेशन सङ्ख्या डी० पी० ५०

'सुधारक' का आगामी विशालकाय विशेषाङ्क

बलिदानाङ्क

(अगस्त ५८ में प्रकाशित होगा)

इस विशालकाय विशेषांक की तैयारी आरम्भ हो चुकी है। चित्रों के लिये ब्लाक बनवायें जा रहे हैं। सुधारक का जो अंक आपके हाथ में है इसी आकार (साइज) के ५०० पांच सौ से अधिक पृष्ठ तथा १०० अधिक रंगीन चित्र इस बलिदानांक में दिये जायेंगे। सरल भाषा और सुन्दर छपाई होगी।

इस विशेषांक में लगभग २०० दो सौ, उन वीरों के जीवन और इतिहास को यशोगाथा लिखी जायगी जो अपनी जन्मभूमि भारत की पराधीनता की शृङ्खलाओं को विशृङ्खलित करने के लिए, ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जड़ काटने के लिए, स्वतन्त्रता की लहर को देश के कोने-कोने में पहुँचाने के लिए तन-मन से क्रान्ति की धूम मचाकर भारत को स्वाधीन बनाने के लिए हँसते-हँसते फाँसी के तख्तों पर झूल गये। कारावास की भीषण विपत्तियों को सहन करते हुए भी बेड़ी तथा हथकड़ियों को आभूषण बनाकर झूम-झूमकर मस्ती से आजादी के गाने गाया करते थे। हिन्दीरक्षा आन्दोलन के बलिदानों का भी इसमें उल्लेख किया जायेगा।

ग्राहक संख्या ५

सेवा में श्री सम्पादक जी

मु० गुरुकुल पत्रिका

पो० गुरुकुल कांगड़ी

जि० हरद्वार

जिसका स्वतन्त्रता को देखकर हम प्रसन्नता फूले नहीं समाते, वह कितने बलिदानों के पश्चात् मिली है, कितने नवयुवकों ने अपने अमूल्य यौवन की आहुतियाँ दी हैं? यह अंक इस "बलिदानाङ्क" में पढ़िए। यह अंक अपने ढंग का अपूर्व तथा अद्वितीय होगा।

इस विशेषाँक का मूल्य डाक व्यय सहित १०।।) होगा। किन्तु सुधारक के ग्राहकों को अग्रिम धन (पेशगी) भेजने पर ५।।) में ही घर बैठे ही रजिस्ट्री द्वारा मिल जायेगा। सुधारक का ग्राहक बनने के लिए २) मे धनादेश से भेजे। जिन ग्राहकों का धन अगाऊ न मिलेगा उनको पीछे ८।।) में ही अंक प्राप्त हो सकेगा।

अंक परिमित संख्या में ही प्रकाशित होगा, हो सकता है कि समाप्त हो जाने पर पीछे आपको पछताना पड़े। अतः ५।।) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करवा लें। इस मूल्य में ।।) डाक व्यय भी सम्मिलित है।

धन भेजने का पता—

व्यवस्थापक 'सुधारक'

पो० गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक (पंजाब

प्रकाशक आचार्य भगवान्देव गुरुकुल झज्जर ने सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली में मुद्रक जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धान्ती के प्रबन्ध में छपवाया।

वर्ष ५ अङ्क ११ | गुरुकुल झज्जर (रोहतक) आषाढ़ २०१५ वि० जुलाई १९५८, दयानन्दाब्द १३४ | वार्षिक मूल्य २) एक प्रति बीस नये पैसे

आर्ष-शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक गुरुवर विरजानन्द सरस्वती

प्राचीन आर्ष शिक्षापद्धति से विमुख और अनार्ष भ्रान्ति जाल-ग्रन्थों में लिप्त शिक्षित समाज को आर्ष शिक्षणपद्धति के द्वारा वेदभानु के आलोक से आलोकित करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती के ज्ञानदाता, स्वातन्त्र्य-संग्राम के मन्त्रदाता, महा विद्वान्, प्रज्ञाचक्षु गुरुवर परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री स्वामी विरजानन्द जी महाराज।
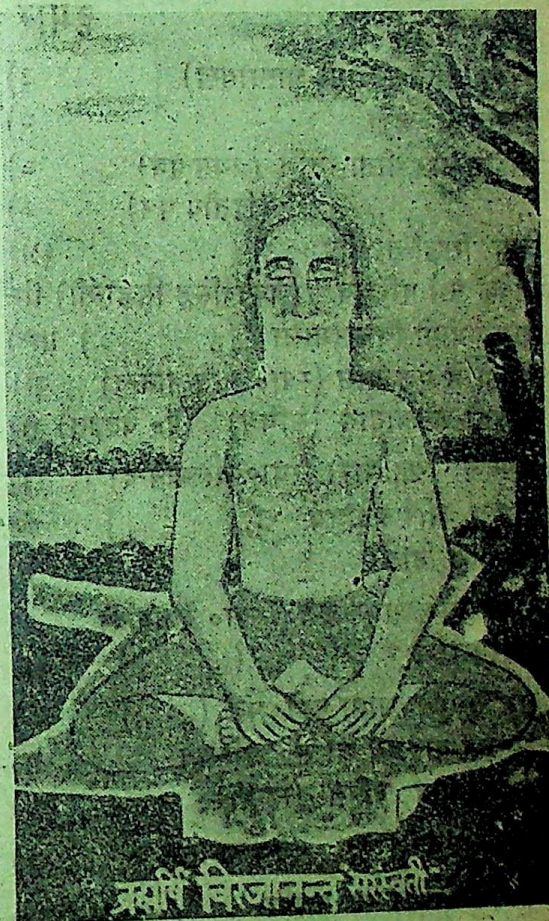
ऋषि विरजानन्द सरस्वती

संस्थापक व सम्पादक—ब्र० भगवान्देव आचार्य गुरुकुल झज्जर
सम्पादक—ब्र० वेदव्रत व्याकरणाचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति गीता उपनिषदलंकार
व्यवस्थापक—ब्र० बलदेवसिंह बी० ए०, सि० प्रभाकर
सह-व्यवस्थापक—ब्र० सुदर्शनदेव शास्त्री व्याकरणाचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति

विषय सूची

हमारे प्रकाशन

मृत्यु को जीतने का उपाय ब्रह्मचर्य

(श्री स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक)

मृत्योरहं ब्रह्मचारी यदस्यि निर्याचन् भूतात् पुरुषं यमाय ।
तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेणानयैनं मेखलया सिनामि ॥

(अथर्व० ६ । १३३ । ३)

ऋषिः—अगस्त्य=अगः—पाप एवं शरीर रूप वा संसाररूप वृक्ष को त्यागने वाला निष्पाप संयमी नैष्ठिक ब्रह्मचारी ।

देवता—मेखला=कौपीन पट्टी एवं संयमवृत्ति संयम की दृढ़ धारणा ।

(यन्) यतः-क्योंकि (अहम्) मैं (यमाय) नियन्ता परमात्मा के लिये-उसके प्रति समर्पणार्थ (भूतात्) भूतमय-भौतिक शरीर से (पुरुषं निर्याचन्) आत्मा को निकालने के हेतु (मृत्योः-ब्रह्मचारी-अस्मि) मृत्यु का ब्रह्मचारी हूँ उससे युद्धरूप आलिङ्गन करने को ब्रह्मचारी हूं । गृहिणी का ब्राह्मचारी नहीं हूं । गृहिणी के लिये मेरा ब्रह्मचर्य नहीं है । किन्तु (अहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेण-अनया मेखलया तं सिनामि) मैं ब्रह्म-वेदज्ञान, तप, विहित कर्म, इस मेखला-संयम-डोरी संयम की दृढ़ धारणा से इसे बांधता हूँ—संयमयुक्त करता हूँ ।

भौतिक देह रूप बन्धन से छूटने का उपाय ब्रह्मचर्य ही है, ब्रह्मचर्य का ऐसा दृढ़ व्रत ले कि शरीर से निकालूंगा तो आत्मा को परमात्मा के प्रति समर्पणार्थ सदा के लिये निकालंगा ब्रह्मचर्य को नहीं । ब्रह्मचर्य पालन के लिये यहाँ मन्त्र में प्रदर्शित चार उपाय हैं वेदज्ञान, तप, लोकसेवा, मेखला-संयम, वस्त्र धारण । ऐसे दृढ़ व्रती मरण-पर्यन्त ब्रह्मचारी विरले जन ही हुआ करते हैं । जिनकी मृत्यु से बचने की दृढ़ धारणा हो जाती है, वे अपने परिवार में या अन्यत्र मृत्यु के दृश्य देख कर व्याकुल हो उठते हैं उससे बचने के उपाय ढूंढने में लग जाते हैं पर उससे बचने के वास्तविक उपाय वेद का बताया आमरण ब्रह्मचर्य पालन ही है वे अपने जीवन में ब्रह्मचर्य को इतना धारण कर लेते हैं कि उनके अन्दर ब्रह्मचर्य आपूर भरपूर हो जाया करता है वेश्याओं तक की भी उनके दिव्य ब्रह्मचर्य तेज को देख कर काया पलट जाती है वेश्या वृति छोड़ देती है, स्त्रीसह वस तो क्या आकस्मिक संस्पर्श भी उन ऐसे महात्माओं को अभीष्ट नहीं होता किन्तु ज्ञान, ध्यान, तप, त्याग, और संयम सेवा में निरन्तर रहा करते हैं, काम वासना का संस्कार भी उनको छू नहीं पाता । इस प्रकार ऐसे विरले महात्मा महा पुरुष, महर्षि मृत्यु के बन्धन से छूट कर विश्वनियन्ता, विश्वात्मा, आनन्दघन परमात्मा को प्राप्त हो जाते हैं ।

(वैदिकवन्दन से)

सम्पादकीय—म्

स्वाध्याय और—

हम आर्य हैं, वेद का पढ़ना और पढ़ाना और सुनना सुनाना हमारा परम धर्म है। इस परम धर्म को निभाने के लिए अपने जीवन को ऊँचा उठाने के लिए हमें नित्य प्रति वेद का स्वाध्याय करना चाहिये, इतना ही नहीं दूसरों को भी पढ़ाना चाहिये। यदि हम स्वयं इस योग्य नहीं कि वेद को पढ़ें और अन्यों को पढ़ा सकें तो हमें दूसरों से सुनना चाहिए और अपने आप को इस योग्य बनाना चाहिये।

हमारे शास्त्रकारों ने बतलाया है—"सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र्याणि मोक्षमार्गः" सम्यक्दर्शनज्ञान, और उच्च चरित्र का होना, यह मोक्ष का मार्ग है, सरल सोपान है। साँख्यदर्शनकार महर्षि कपिलाचार्य ने भी "ज्ञानान्मुक्तिः" ज्ञान से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है यह स्वीकार किया है। इतना ही नहीं योगिराज भगवान् कृष्ण ने भी ज्ञान को ही सर्वोत्तम माना है—

"नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।"
(गीता)

यों तो संसार में ज्ञान प्राप्ति के अनेक साधन हैं, किन्तु स्वाध्याय एक ऐसा सुगम, सुलभ, सरल, सस्ता और श्रेष्ठतम साधन है जिसके द्वारा एक साधारण व्यक्ति भी महान् पण्डित बन सकता है। आपने पढ़ा और सुना होगा कि संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं वे सभी स्वाध्याय के ही कारण इतने ऊँचे उठ सके हैं महापुरुषों की श्रेणी में आ सके हैं। यदि हम स्वाध्यायशील बनें तो उन्हीं महापुरुषों की पंक्ति में हम भी पहुँच सकते हैं। क्योंकि स्वाध्याय से अच्छी अच्छी बातों का ज्ञान होता है "सुष्ठु-अध्ययनं स्वाध्यायः" और स्वाध्याय का दूसरा अर्थ उस पढ़े लिखे के अनुसार आचरण करना भी हो जाता है—"स्वमध्ययनं स्वाध्यायः" अपनी आत्मा का भी अध्ययन करना चाहिये तथा दुर्गुणों का त्याग एवं सद्गुण ग्रहण करने चाहियें। महर्षि व्यासजी ने कहा है—

"स्वाध्यायाद्योगमासीत योगात्स्वाध्यायमामनेत्।
स्वाध्याययोगसम्पात्या परमात्मा प्रकाशते॥"

पाठक! आपके पढ़ लेने से और मेरे लिख देने मात्र से ही काम न चलेगा। कार्य सिद्धिः सफलता लिख पढ़ कर तदनुसार आचरण करने से होती है। अतः आइये अपने आपको स्वाध्याय यज्ञ का यज्ञमान बनाकर आज ही नहीं, नहीं नहीं अभी से ज्ञानाग्नि का आधान करें। और नित्य प्रति नियमित रूप से ज्ञानाग्नि को समिद्ध करते जायें। ऐसा न हो कि किसी दिन हम आलस्य प्रमाद के वशीभूत होकर ज्ञानाग्नि का आधान अपनी आत्मा में न कर सके और आग बुझ जाये, शान्त हो जाये। स्वाध्याय की लड़ी टूट जाये। ऐसा होने पर सब किया कराया निष्फल हो जायेगा। सब गुड़ गोबर बन जायेगा। यह एक दिन का व्यवधान न होगा, अपितु फिर से न ये सिरे से यज्ञ प्रारम्भ करना होगा। मन को व्रत तोड़ने का दुरभ्यास हो जायेगा तथा पवित्र आत्मा पर कलंक का धब्बा लग जायेगा।

अतः हे अध्यात्मपथ के पथिक! सावधान होकर स्वाध्याय यज्ञ को प्रारम्भ करना और इसको अखण्डित रूप से आजीवन चलाते रहना, इसी में तेरा कल्याण है।

श्रावणी

श्रावणी का पर्व ब्राह्मण पर्व कहलाता है क्योंकि इसका सम्बन्ध विशेषतया ब्राह्मण वर्ण से ही है। इस पर्व पर स्वाध्याय को सर्वाधिक महत्त्व

दिया गया है। अथर्ववेद में २८ नक्षत्रों का वर्णन आया है उनमें बाईसवां नक्षत्र 'श्रवण' है। श्रवण नक्षत्र से युक्त पौर्णमासी को श्रावणी कहते हैं, वह श्रावणी पौर्णमासी जिस मास में हो उसको श्रावण कहा जायेगा (श्रवणाया युक्ता पौर्णमासी श्रावणी साऽस्मिन् मासे इत्यण।) श्रवण शब्द की व्युत्पत्ति महर्षि दयानन्द जी ने उणादि कोष की वृत्ति में "शृणोत्यनया सा श्रवणा नक्षत्रं वा" [उ० २।७६] जिसके द्वारा सुना जाये वह श्रवणा होती है अथवा नक्षत्र का नाम भी श्रवणा है।

श्रावण वर्षा ऋतु का मास है। वर्षा ऋतु में अनेक जीव जन्तु उत्पन्न हो जाते हैं और शब्द भी बहुत करते रहते हैं। मेंढकों की ध्वनि तो वर्षा में प्रसिद्ध ही है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी लिखा है—

दादुर ध्वनि चहुँ ओर सुहाई।
वेद पढ़ें ज्यों बटु समुदाई ॥

अनेक विद्वानों का मत है कि सृष्टि की उत्पत्ति भी वर्षा ऋतु में ही हुई। सृष्टि के आदि में भगवती श्रुति (वेद) का आविर्भाव हुआ और वह ऋषि परम्परा से एक दूसरे को सुनाई गई। वेद के पठन पाठन के सम्बन्ध में भगवान् पतञ्जलि ने लिखा है—"ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मःषड्ङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्चेति (व्याकरणमहाभाष्य) ब्राह्मण का अर्थात् द्विजमात्र का निष्करण धर्म है कि वह साङ्ग वेद का अध्ययन करे।

इस श्रावणी के पुण्य पर्व से वेद का स्वाध्याय प्रारम्भ करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। मनुस्मृति में लिखा है—

श्रावण्यां प्रौष्ठपद्यां वाप्युपाकर्म यथाविधि।
युक्तश्छन्दांस्यधीयीत मासान् विप्रोऽर्धपञ्चमान्
(अ० ४-९५)

श्रावण व भाद्रपद मास की पूर्णिमा को यथा विधि उपाकर्म करके साढ़े चार मास तक वेदों का अध्ययन करना चाहिये। कूर्म पुराण में भी ऐसा ही विधान मिलता है—

उत्सृज्य ग्राम नगरं मासान् विप्रोऽर्धपञ्चमान्।
अधीयीत शुचौ देशे ब्रह्मचारी समाहितः ॥
(उपविभाग अ० १३)

साढ़े चार मास तक ग्राम नगर आदि से पृथक् स्वच्छ स्थान में जाकर एकाग्र चित और जितेन्द्रिय होकर वेदों का स्वाध्याय करना चाहिये।

इसी प्रकार याज्ञवल्क्य-स्मृति, बोधायन-स्मृति वसिष्ठ स्मृति, बाल्मीकि-रामायण तथा आश्वलायन, पारस्कर, लोगाक्षि आदि गृह्य सूत्रों में भी श्रावण मास में वेदाध्ययनः = विशेषतया वेद के स्वाध्याय का विधान मिलता है।

श्रावणी पर किया क्या जाता है? पुराने का त्याग नवीन का ग्रहण। पुराने जीर्ण यज्ञोपवीत, मेखलादि का विसर्जन और स्वाध्याय क्रम में परिवर्तन किया जाता है। श्रावण से पौष तक चार पांच मास तक विशेषतया वेदों का स्वाध्याय किया जाता है और तदन्तर वेदाङ्गों का। श्रावणी के आने पर द्वितीय वर्ष पुनः पूर्ववत् वेदों का स्वाध्याय प्रारम्भ कर दिया जाता है।

श्रावणी का विशेष महत्त्व वेदों के अध्ययन के ही कारण है। वेद सभी सत्य विधाओं के मूल ग्रन्थ हैं। संसार की सभी विधायें सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान कला, कौशल, बीज रूप से वेदों में निहित हैं।

स्वाध्याय का क्रम अपनी योग्यता के अनुसार स्वयं ही निश्चित करना चाहियें, यदि सम्भव हो तो किसी विद्वान् आचार्य गुरू आदि से पूछकर भी निश्चित किया जा सकता है। स्वाध्याय क्रम निश्चित करने में योग्यता ही मान दण्ड है। यदि प्राथमिक पाठशाला का बच्चा महाविद्यालय व विश्वविद्यालय की कक्षा में सम्मिलित होगा तो उसको कुछ न मिल सकेगा। अतः शनैः शनैः अपनी योग्यता बढ़ानी चाहिये। मनुस्मृति में लिखा है—

यथा यथैवहिनरः शास्त्रं समधिगच्छति।
तथा तथा विजानामि विज्ञानं चास्य रोचते ॥

मनुष्य जैसे-जैसे शास्त्रों का परिशीलन करता जाता है वैसे ही वैसे उत्तरोत्तर उसके ज्ञान की

(शेष पृष्ठ २० पर)

बाल-विवाह

(श्री आचार्य भगवान्देव जी गुरुकुल झज्जर)

हमारे देश में अनेक कुप्रथायें चली हुई हैं, उनमें से बाल-विवाह सब से भयंकर कुप्रथा है। माता-पिता सन्तान उत्पन्न कर उनका विवाह कर देना ही अपना कर्त्तव्य समझ बैठे हैं। ६५ प्रतिशत माता-पिता केवल शीघ्र ही विवाह हो जावे—इस विचार से अपने लड़कों को स्कूल पढ़ाते हैं। ६० प्रतिशत विद्यार्थियों का विवाह दशवीं श्रेणी से पहिले ही कर दिया जाता है। बी० ए०, एम० ए० तो कोई-कोई ही कुमारावस्था में कर पाता है।

सामान्य लोगों की बात जाने दें, स्वयं आर्यसमाज भी बालविवाह के चक्र में फंसे हुए हैं। हरयाणे में ऐसे गिने-चुने बहुत ही थोड़े घराने हैं जिनका २५ वर्ष से पूर्व विवाह न करने का व्रत है।

१६ वर्ष की कन्या और २५ वर्ष का पुरुष विवाह करे तो वह निकृष्ट विवाह कहलाता है। इससे पूर्व विवाह करने का तो शास्त्र में विधान ही नहीं है। महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है—

"सोलह और पच्चीस में विवाह करे तो निकृष्ट, अठारह-बीस की स्त्री, तींस-पैंतीस वा चालीस वर्ष के पुरुष का मध्यम, चौबीस वर्ष की स्त्री और अड़तालीस वर्ष के पुरुष का विवाह होना उत्तम है। जिस देश में इसी प्रकार बिवाह की विधि श्रेष्ठ और ब्रह्मचर्य, विद्याभ्यास अधिक होता है वह देश सुखी और जिस देश में ब्रह्मचर्य विद्याग्रहण रहित, बाल्यावस्था में विवाह होता है वह देश दुःख में डूब जाता है। क्योंकि ब्रह्मचर्य विद्या के ग्रहण पूर्वक विवाह के सुधार से ही सब बातों का सुधार और बिगड़ने से बिगाड़ हो जाता है।" (स० समु० ४)

"वेदादि शास्त्र विद्या के बिना ईश्वर और धर्म को न जान के अधर्म से कभी नहीं बच सके। इसलिये वे ही धन्यवादाई और कृतकृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावें।"

'राजा को योग्य है कि सब कन्या और लड़कों को उक्त समय से उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रखके, विद्वान् कराना। जो कोई इस आज्ञा को न माने तो उसके माता-पिता को दण्ड देना अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लड़का वा लड़की किसी के घर मैंने रहने पावें, किन्तु आचार्य कुल में रहे, जब तक विवाह न होने पावे।"

(स. समु. ३)

समालोचना

'को वेदानुद्धरिष्यति'

ले० आचार्य राजेन्द्रनाथ शास्त्री, श्री दयानन्द वेद-विद्यालय, नई दिल्ली—१६, मूल्य १५ नये पैसे

'वैदिक वाङ्मय आस्थानी' का वेद के सम्बन्ध में यह प्रथम प्रयास प्रशंसनीय है, हम आशा करते हैं कि यह प्रयत्न निरन्तर चालू रहेगा और उत्तरोत्तर वैदिक वाङ्मय के विकास में सहायक सिद्ध होगा।

ब्रह्मचारी की अमर सन्तान

(रचयिता—गोपी चन्द शर्मा, कविस्थल, महेन्द्रगढ़)

घनघोर रात अति अन्धकार
बस्ती से दूर महाकान्तार
वन-मध्य कुटी एक बन्द द्वार
समाधिष्ठ मुनि एक तपाधार ।

कान्तिमय देह विस्तृत ललाट
वय शताधिक पुनरपि युवा परिव्राट्
भव के सब बन्धन चुके काट
कुछ भी न पास पर जग-सम्राट् ।

समाधि से थी आँखें खुली ज्यों
झांकी पड़ी एक देवी की त्यों
आश्चर्य चकित बोले ऋषि यों
मेरी कुटी में ऐ माता क्यों ?

किया विघ्न तुम्हें मैंने यहां आन,
दिया कष्ट मुनि करो क्षमा दान,
पर माता न लावो जबान,
मैं तो आपकी (लज्जा से न कर सकी बयान)।

नहीं विघ्न हुआ नहीं दिया कष्ट,
जो कहना कह निश्शङ्क निपट
'मातृवत् परदारेषु' स्पष्ट,
इस सभ्यता को नहीं करें नष्ट ।

महात्मन् ! मैं आपकी दासी सती,
आप योगी राज हैं मेरे पति,
शब्द सुन ये चौंक कर बोले यति,
क्या कह रही हो ठिकाने है मति ?

जो कुछ कहा बिल्कुल सही,
वर्षों बीते आपकी शादी हुई,
उस समय थी हाथ में पुस्तक यही,
वेदान्त शाङ्कर भाष्य जो सम्मुख रखी ?

टीका करने में इसकी बहे,
विवाह तक को तुम भूल गये,
सेवा में रही चाहे दुख सहे,
क्या अब भी शङ्कित भये ?

देवी ! तेरी इच्छा पूर्ण,
किया हमने पुत्र उत्पन्न,
पुत्र से पितृनाम चलन
किन्तु इससे तव ही रक्षण

शङ्कर का जो भाष्य वेदान्त,
उसी पर यह टीका निर्भ्रान्ति,
भामति-भाष्य हरे जगध्वान्त,
न होने देवे तव नामान्त ।

धन्य धुनी वाचस्पति,
दिन रात दर्शन में गति,
धन्य इन्द्रिय जय धन्य माता "भामती"
कर्त्तव्य पथ में रत रही तज कर रति ।

ब्रह्मचारी का विद्या पुत्र अमर,
करे शाङ्कर सिद्धान्त प्रसर,
आज के विद्वानों का फ़ख़र,
करें इसके आगे नमन सर ।

ओह ! ठीक मुनि बोले विचार,
अपराध किया तुम को बिसार,
की नीरस तव जीवन झङ्कार,
कहो देवी की कैसे गुजार ?

महात्मन् करके शिक्षादान,
किया तव और निज का गुजरान,
ब्राह्मण वर्ण का कर्त्तव्य जान,
दिये उपदेश में दिवस बितान ।

नहीं है इसमें तव कुछ दोष,
नहीं ईश्वर का समझूं रोष,
प्रभु के नियम बने हैं ठोस,
कर्मफल होते नहीं रूपोश ।

शेष केवल एक अभिलाषा,
क्या रक्खूं उसकी कुछ आशा ?
महात्मा देवें दिलासा
समझ, कर चिन्तन बरासा ।

"ऋषि जीवन की झांकियां"

(लेखक श्री बाबूराम गुप्त लुधियाना)

मधुर परिहास—(१) आगरा निवास काल में ऋषि दयानन्द एक ऐसे व्यक्ति को देखने गए जिसे बचपन में कोई भेड़िया उठाकर ले गया था। वहीं उसकी पालना हुई किन्तु अब कुछ वर्ष से वह मनुष्यों में रहकर उनके रहन-सहन सीख चुका था। स्वामी जी के जाते समय वह कुरता पहने था परन्तु चेष्टाएँ अर्ध जंगली की-सी थी। उसने स्वामी जी को प्रणाम करते हुए पैसा माँगने के लिए हाथ उठाया। ऋषि ने हंसते-हंसते कहा—

"अरे रे तुम इतने साल पशुओं में रहकर भी पैसे के मोह को नहीं भूले।"

(२) मुंगेर में स्वामी जी के पास एक मौनी साधु आकर बैठ गया, पूछने पर भी कुछ न बोला। जब भोजन के लिए पूछा तो संकेत से अपनी इच्छा प्रकट की भोजन हो चुकने पर स्वामी जी ने मौनी बाबा से कहा "देख अगर तो तू मूर्ख है तब तो तेरा चुप रहना ही अच्छा है और पण्डित है तो कुछ बातचीत कर" इस पर वह बोलने लगा।

(३) काशी में गंगा किनारे गंगाप्रसाद का गुरु स्वामी जी की कुटिया पर कपड़े उतार कर गंगा स्नान को जाने लगा तो उसकी भुजा में "अनन्त" पहना हुआ देखकर पूछा "यह तुमने क्या पहन रखा है" बोले यह अनन्त है। तब स्वामी जी उठे और समीप जाकर उसके अनन्त को अंगुलियों से नापकर बोले "अरे यह तुम्हारा अनन्त तो अंगुलियों से ही नापा जा सकता है, तुम इसे अनन्त कहते हो" अनन्त तो केवल एक ईश्वर है भाई। आश्चर्य है, तुम जैसा विद्वान् भी ऐसी बातों का विश्वासी है, उस पर इतना प्रभाव हुआ कि वह कल्पित अनन्त को उतार एक सच्चे अनन्त ईश्वर का उपासक हो गया।

(४) गोविन्द नाम के एक वैरागी साधु अपने शिष्यों को गोमुखी देकर "हरि भजो सब छोड़ो धन्धा" इन शब्दों का जाप कराया करते थे। हंसी हंसी में एक दिन स्वामी जी ने कहा "तुम यह क्या जाप करवाते हो "सब छोड़ो धन्धा सब छोड़ो धन्धा" भला शुभ कर्म कैसे छुड़ाते हो। विचार करके देखो सब काम मनुष्य छोड़ भी कैसे सकता है? क्या भोजन इत्यादि सब छूट सकते हैं?

(५) दानापुर के ठाकुरदास ने अपनी एक स्त्री के होते दूसरा विवाह कर लिया था उसने स्वामी जी से एक दिन कहा "महाराज! मुझे भी योग की विधि बतलाइये, ऋषि ने कहा "तुम एक विवाह और कर लो फिर तुम्हारा योग ठीक हो जायेगा।"

(६) साधु कैलाशगिरि ऋषि दयानन्द के बड़े प्रेमी थे जब ऋषिवर सोरों से आए तो कैलाशगिरि को अपनी कुटियों में बैठा देखकर कहने लगे "अरे इतना बड़ा कैलाश ऐसी छोटी कुटिया में कैसे समा गया" सुनकर कैलाश जी भी हंसने लगे।

(७) एक व्यक्ति के नाम पूछने पर उसने अपना नाम बतलाया "कुड़ामल" हंसते हुए ऋषि ने कहा "कूड़ा क्या कम था जो उस पर भी "मल" की आवश्यकता पड़ी।"

दश लक्षण को धर्मः

(ले० ब्र० महादेव सि० शास्त्री सि० प्रभाकर गुरुकुल झज्जर)

(गतांक से आगे)

९—सत्यम्

सत्यम्=मन वचन कर्म से जैसी वस्तु देखी हों उसको उसी प्रकार कहना सत्य है। हमारे शास्त्रकार सत्य की महिमा गाते हुवे कहते हैं "नास्ति सत्यात्परोधर्म्मः अर्थात् सत्य से बढ़कर कोई धर्म्म नहीं है। "सत्यमेव जयते नानृतम" सत्य की विजय होती है। असत्य की नहीं "सत्येन धारयते धर्म्मः" अर्थात् धर्म से ही धारा जाता है। अन्यच्च—सत्य प्रतिष्ठायां क्रिया फला श्रयताम् ॥योग० २।३६॥

जो मनुष्य सत्य भाषण करता है उसकी वाणी अमोघ होती है। अतएव सत्यवादी के आगे संसार नत मस्तक होता है। सत्य किस प्रकार का बोलना चाहिये इस विषय में राजर्षि मनु जी कहते हैं—

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्न वूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः ॥
मनु० २।२४०

अर्थात् सदा प्रिय बोले और सत्य बोले। परन्तु सत्य अप्रिय कभी न बोले यदि कोई लगंड़ा हो तो उसे लगंडा न कहे। और प्रिय असत्य भी न बोले यही हमारा सनातन धर्म है।

१०—अक्रोध

अक्रोध=क्रोध न करना क्रोध करने से मनुष्य की बुद्धि नष्ट होती है और अन्त में उसका नाश होता है। यथा भगवान् श्री कृष्ण जी महाराज कहते हैं—

क्रोधाद्भवति संमोहं संमोहोत्स्मृति विभ्रमः।
स्मति भ्रशाँत् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यशति
गीत २।६२

क्रोध करने से पुरुष में विष बढ़ता है वह शरीर को नष्ट करता है क्रोध में इतना विष बढ़ता है कि यदि उसके रक्त को सुञ्चयन्त द्वारा खरगोश को दिया जाय तो ५ सिनट में मर जाता है। अतः हमारे पूर्वजों ने क्रोध करना मना किया है। अतः हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं—

मधुमन्मे निष्क्रमणं मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमदं भूयसि मधुसन्दृशः ॥
अर्थ० १।३४।३

अर्थात् हमारा आचरण मधुरता से पूर्ण हो हमारे सभी कार्य मधुरता से युक्त हों हम दिन रात मधुर वाणी बोलें। अन्यच्च—

प्रिय वाक्य प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं बचने का दरिद्रता ॥

अर्थात्—प्रियवाणी बोलने से सब प्राणी सन्तुष्ट होते हैं इसलिए सर्वदा प्रिय ही बोले, बोलने में भी क्या दरिद्रता करनी।

———
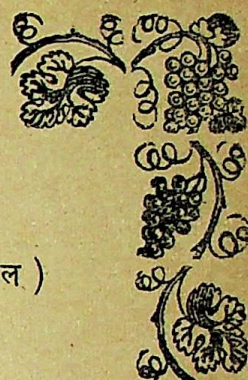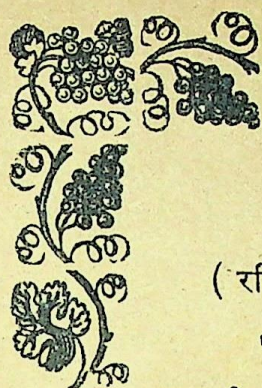
विषय-विष

(रचियता—पं० ताराचन्द शर्मा 'आर्योपदेशक' कविस्थल)

फंसे विषयों में नरनार नष्ट करें जिन्दगानी ।टेक।

तन दीपक है आयु बत्ती और वीर्य तैल;
जब तक तैल रहे दीपक में बना रहेगा खेल।
तैल बिन हो हानि ।१।

इन्द्रिय घोड़े बुद्धि सारथी मन को समझ लगाम,
बिन काबू में किए ये घोड़े कर डालें बदनाम।
लगाम गर नहीं तानी ।२।

बाल उमर में शादी करते कैसे हों नौज्वान,
बच्चों के बच्चे हों पैदा कहां उत्तम सन्तान।
चेहरे पर नहीं नूरानी ।३।

हुक्का, बीड़ी, सिग्रेट, सुलफा पीते भंग शराब,
हानिकारक सभी पदार्थ सेवन करें खराब।
नशे दुश्मन जानी ।४।

सांग, सिनेमा रहें देखते करते हैं उत्पात,
ताराचन्द उपदेशक कितने रहो बकते दिन-रात।
बात एक ना मानो ।१।
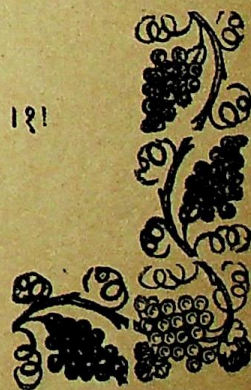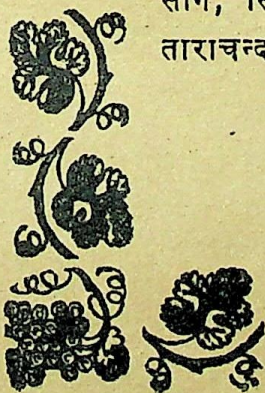
विरजानन्द संस्कृत परिषद्

सीताराम बाजार, दिल्ली

प्रिय महोदय; नमस्ते।

यह आप भली-भांति जानते हैं कि संसार को भ्रातृत्व, एकता, उदारता, सुख एवं शान्ति का पाठ पढ़ाने वाला अधिकतम साहित्य संस्कृत भाषा में ही है। इस कारण यह अति आवश्यक है कि संसार में संस्कृत भाषा का प्रचार अधिक से अधिक हो। संस्कृत भाषा और वैदिक संस्कृति के प्रचारार्थ एवं वर्तमा- युग में संस्कृत के आदि प्रचारक महात्मा विरजानन्द के स्मारक रूप में २५-११-१९५१ को विरज "संस्कृत परिषद्" की स्थापना हुई थी जिसकी ओर से संस्कुत-प्रसून, संस्कृत विनोद, स विज्ञ तथा संस्कृत प्रवीण—इन चार संस्कृत परीक्षाओं का आयोजन किया गया है।

साथ ही जो किसी कारण से संस्कृत न पढ़ सकें उन्हें वैदिक संस्कृति एवं धर्म से परिचित कराने के लिए सिद्धान्त प्राज्ञ, सिद्धान्त मणि, सिद्धान्त वागीश और सिद्धान्त प्रभाकर—इन चार परीक्षाओं को हिन्दी भाषा के माध्यम द्वारा १३ नवम्बर १९५५ से चालू किया गया है।

इन परीक्षाओं में छः मुख्य विशेषताएँ ये हैं—

१. प्रत्येक परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र एवं उसकी उपाधि दी जाती है।

२. प्रत्येक व्यक्ति चाहे जिस परीक्षा में बैठ सकता है। वह चाहे तो एक साथ संस्कृत तथा हिन्दी की परीक्षा में बैठ सकता है क्योंकि ये आगे पीछे होती हैं।

३. इन्हें इस प्रकार बनाया गया है कि घरेलू काम-काज एवं साधारण शिक्षा प्राप्त करते हुए भी परीक्षार्थी इन्हें दे सकें।

४. सभी पाठ्य पुस्तकें शिक्षात्मक एवं ज्ञान वर्धक हैं।

५. परीक्षा शुल्क बहुत ही कम है अर्थात् क्रमशः १), २), ३), तथा ४) है।

६. विशेष पद प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को पारितोषिक भी मिलता है।

आपसे विनीत प्रार्थना है कि आप इन परीक्षाओं का प्रचार अपने गुरुकुलों, स्कूलों, कालिजों, पाठ-शालाओं पुस्तकालयों, समाजों, आर्य कुमार सभाओं एवं अन्य संस्थाओं और धर्म स्थानों में करने की कृपा करें, और साथ ही स्थानीय स्त्री-पुरुषों, बालक-बालिकाओं को प्रेरित करें कि वे अधिक से अधिक संख्या में इनमें सम्मिलित हों। आठों परीक्षाओं में मिलाकर जहां न्यून से न्यून ५ परीक्षार्थी हो जायें। और कोई विश्वस्त सज्जन केन्द्राध्यक्ष बनना स्वीकार कर लें, वहां केन्द्र स्थापित कर दिया जाता है। इन परीक्षाओं की पाठविधि की नियमावली, केन्द्र स्थापनार्थ आवेदन पत्र, तथा परीक्षार्थी-आवेदन-पत्र डाल कर निःशुल्क मंगवाये जा सकते हैं।

आपको सूचनार्थ निवेदन है कि ये परीक्षा प्रति वर्ष दशहरे के पश्चात् पड़ने वाले रविवारों को होती हैं। निश्चित तिथि की सूचना बाद में दी जावेगी।

परीक्षार्थी-आवेदनपत्र प्रति वर्ष २० जौलाई तक बिना विलम्ब शुल्क के तथा, ३१ जौलाइ तक ।) प्रति आवेदन पत्र विलम्ब शुल्क सहित स्वीकार किए जाते हैं। इस वर्ष विशेष रूप से ३१ अगस्त तक बिना विलम्ब शुल्क के ही स्वीकार किये जायेंगे।

आशा है इस पवित्र कार्य में परिषद् को आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

भवदीय
जगन्नाथ
परीक्षा मन्त्री।

चतुर्थ कक्षा

परिक्षा—परिणामः

पत्र संख्या—			१	२	३	४	५
जयदेव	१		६७	६८	५२	६६	६८=३२१/५००
राजवीर	२		५२	४६	६७	५९	६३=२७७/५००
आनन्ददेव	३		७२	४६	५०	५४	५७=२७९/५००
धर्मवीर	४		५२	३६	५७	५५	६८=२६८/५००
रणवीर	५	प्रथम	७३	८९	७७	६०	८५=३८४/५००
सुखवीर	६		७४	६३	४०	७४	५६=३०७/५००
जयपाल	७		५८	४२	५१	५१	६८=२७०/५००
ब्रह्मदेव	८		६८	६२	५१	५०	६६=२९७/५००
रामदेव	९		७८	५४	६७	५८	८३=३४०/५००
सर्व तृतीय							
भीमसेन	१०		६६	३५	७५	५१	८८=३१५/५००
देवदत्त	११	द्वितीय	६४	७९	७९	५०	८५=३५७/५००

नवम-कक्षा-परीक्षा-परिणाम

पत्र संख्या—	१	२	३	४	५	६	७	८
१—सोमवीर	२५	२०	२५	२७	३०	५१	५४	६१=२९३/५५०
२—मनुदेव (तृतीय)	२३	२८	२२	२५	२३	५४	७०	८३=३२८/५५०
३—यशपाल (प्रथम)	३७	३२	३६	३०	३३	५०	६०	९२=३७०/५५०
४—धर्मपाल (द्वितीय)	३१	२७	२६	३५	२८	५३	५९	७५=३३४/५५०
५—मनुदेव	१७	२७	२८	२५	२६	५५	४६	६१=२८५/५५०

मुख्याध्यापक—मुदर्शनदेव

महाविद्यालय गुरुकुल भज्जर (रोहतक) की षष्ठ कक्षा का परीक्षा परिणाम

पत्र संख्या—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	योग
१—ब्र० सोमदेव,	८३	८४	८४	७१	८६	८८	८८	८८	४३	९१=७७६/१०००	७८%
२—ब्र० सत्यव्रत,	६१	७६	७९	७५	७९	५७	७६	८७	६१	६०=७११/१०००	७१%
३—ब्र० विद्याव्रत,	६२	६१	५८	५३	६१	५८	६९	५५	३४	६९=५७०/१०००	५७%
४—ब्र० देशपाल	७६	८६	८६	८०	७५	६४	७३	८५	७२	५५=७५२/१०००	७५%

अष्टम कक्षा का परीक्षा परिणाम [व्याकरण शास्त्री]

पत्र संख्या—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	योग
१—ब्र० वेदपाल,	२६	२६	३२	२८	२८	२३	३०	३२	८३	६०	७४=४४२/७००	६६%
२—ब्र० धर्मव्रत,	३३	३१	३४	३८	३३	२९	३२	३५	८५	५६	७४=४८०/७००	६८%

छात्रों ने अध्ययन में अच्छा परिश्रम किया है। छात्रों का परीक्षा-परिणाम श्लाघ्य है। निवेदक—

मुख्याध्यापक गुरुकुल भज्जर

शृङ्गार

(रचियता—पंकज वर्मा "पथिक" रेवाड़ी)

जो सुमार्ग से भ्रष्ट करता क्यों उसे शृङ्गार कह दूँ।
जब मनुजता नष्ट करता क्यों न भ्रष्टाचार कह दूँ॥

शृङ्गार में जो फंस गया इस रोग का रोगी बना,
घमण्ड काम औ क्रोध को इससे मिलेगी सान्त्वना।

रोग को दे प्रोत्साहन क्यों उसे उपचार कह दूँ॥१॥

मूँछ कटवाई व दाढ़ी हीजड़ों का पहन बाना,
पश्चिमी में रङ्ग गये सब छोड़ अपना मग पुराना।

अत्तर भी है और बाल सुन्दर क्यों न फिर नार कह दूँ॥२॥

धूम्रपान औ शराब द्वारा आयु हाय घट गई,
हा विदेशी वेशभूषा बन शृङ्गार डट गई।

गौराङ्ग महाप्रभु दे गये तो क्यों इसे उपहार कह दूँ॥३॥

भारतीय सभ्यता का विश्व में प्रचार हो।
हम करें विरोध तो शृङ्गार का संहार हो॥

वातावरण विशुद्ध हो तो क्यों न शुद्ध आचार कह दूँ॥४॥

पुस्तकालोचन

"बृहदारण्यक-उपनिषद् कथामाला"

ले०—श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी परिव्राजक। प्रकाशक—गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क दिल्ली। पृष्ठ संख्या २३६। मूल्य ३)

इस पुस्तक में बृहदारण्यकोपनिषद् को अध्यात्म सम्बन्धी १६ कथायें हैं। यह उपनिषद् अन्य सभी उपनिषदों से बड़ी है, इस में से केवल १६ आध्यात्मिक प्रकरणों की व्याख्या की गई है, विषय को पाठकों के लिये रोचक बनाने की दृष्टि से कथा रूप में प्रस्तुत किया है। इससे पूर्व स्वामी ब्रह्ममुनि जी ईश, केन, कठ और माण्डूक्योपनिषद् की भी व्याख्या लिख चुके हैं।

अध्यात्म विषयों के व्याख्याता के रूप में लेखक प्रसिद्ध हैं और प्रस्तुत पुस्तक भी उनकी ख्याति के अनुरूप ही है। कथाओं के साथ-साथ अनेक विवादास्पद स्थलों को भी सुस्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। यदि स्वामी जी सम्पूर्ण ग्रन्थ की व्याख्या लिखते तो हमारे विचार से और भी उत्तम होता। पुनरपि लेखक और प्रकाशक का प्रयत्न प्रशंसनीय है तथा पुस्तक प्रत्येक अध्यात्म प्रेमी सज्जन के लिये संग्रहणीय है।

—वेदव्रत

चन्द्र को चक्की में पीस दिया

(लेखक—सुदर्शनदेव शास्त्री 'उपाध्याय' गुरुकुल झज्जर)

विश्व में सङ्घर्ष नाम की वस्तु अद्भुत है। सङ्घर्ष में ही जीवन है, अथवा यूँ कहिये जीवन सङ्घर्षमय है। शान्त बैठा दिखाई देता हुआ भी मानव अतुल सङ्घर्ष में लीन रहता है। कभी मन के साथ, कभी बुद्धि के साथ और कभी इन्द्रिय के साथ लैंथ पैंथ रहता है। जो सङ्घर्ष नहीं करते वे उन्नति-शिखर पर नहीं चढ़ते यह वास्तविक सत्य है। वीरों के इतिहासों के पन्नों की पंक्तियों का सार सङ्घर्ष है। सङ्घर्ष करने वाले ही संसार में चमकते हैं।

निकटभूत में ही सूर्य और चन्द्र का ऐसा सङ्घर्ष हुआ कि जिसे देखकर लोग अवाक् रह गये। आप कहेंगे कि क्या सूर्य और चन्द्र की भी कभी आपस में ठन सकती है। चन्द्र तो सूर्य से ही प्रकाश पाता है। सूर्य के कारण ही चन्द्र का अस्तित्व है। क्या कोई कभी अपने पैरों में भी कुल्हाड़ी मार सकता है। आपकी बात मिथ्या है।

आपकी बात सर्वथा सत्य है किन्तु आज के इस अधर्म-दिगम्बर राज्य में सब असम्भव भी सम्भव हो रहा है। अस्ति भी नास्ति है और नास्ति भी अस्ति है।

वास्तव में घटना इस प्रकार से बतलाई जाती है कि गुरु जी के ग्राम में जिसका प्राधान्य था उसका स्वर्ग या नरक वास हो चुका था। वहां सूर्य निकला ही न था। चन्द्र ने उस गुरु-ग्राम में अपने प्राधान्य एवं अधिपत्य की तूती बजानी चाही। उन्होंने प्रचार प्रारम्भ किया कि संसार में मुझ से अधिक गुणशाली एवं प्रकाशमान तथा सर्व हितैषी कोई नहीं है। अतः सब को योग्य है कि सब मेरे वचन का पालन करें और मेरी आराधना करें। उसने अनेक टिमटिमाते नक्षत्रों (तारों) को अपना साथी बना लिया। यहां तक कि अपनी प्रभुता स्थापन करने में कोई कसर रख न छोड़ी। धर्म अधर्म के विवेक को खूँटी पर लटका दिया।

कर्ण परम्परया सूर्य को विदित हुआ कि गुरु ग्राम में कृतघ्न चन्द्र अपना आधिपत्य बना रहा है। और अधर्म का विस्तार कर रहा ह। श्री सूर्य जी धर्म, आर्य, सज्जन, प्रकाश, सत्य आदि शस्त्र एवं शुभ साधनों को सिर पर धर तत्काल गुरुग्राम पहुँचे और चन्द्र के घमण्ड और अधर्म विस्तार—अन्धकार को प्रकाश के वीर—सूर्य ने धर्म के प्रकाश से केवल दो दिन में ही समूल नष्ट कर दिया। इस शुभ कार्य में—भगवान ने भी दिन रात एक करके प्रकाश की पूरी सहायता की।

विश्वस्त सूत्रों से विदित हुआ है कि चन्द्र को नीति की चक्की में पीस दिया है।

विरजानन्द संस्कृत परिषद देहली का चुनाव

विरजानन्द संस्कृत परिषद्, दिल्ली का वार्षिक चुनाव दिनांक २२-६-५८ को निम्न प्रकार से हुआ।

प्रधान—श्री स्वामी आनन्द भिक्षु जी महाराज (परिव्राजक)

उपप्रधान—१. श्री आचार्य भगवान्देव जी (गुरुकुल झज्झर)

२. श्री जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धान्ती (दिल्ली)

मन्त्री—श्री श्रीकृष्ण वर्मा शास्त्री दिल्ली)

उप मन्त्री—श्री श्यामलालजी सिद्धान्त शास्त्री (दिल्ली)

परीक्षा मन्त्री—क्षी जगन्नाथ जी बी.ए. एल.एल. बी.

सहायक परीक्षा मन्त्री—श्री वेदव्रत जी भाष्याचार्य सिद्धांत वाचस्पति (गुरुकुल झज्झर)

साहित्य मन्त्री—श्री श्रीकृष्ण वर्मा शास्त्री (दिल्ली)

प्रचारमन्त्री—श्री रणजीतसिंह जी एम. ए. एल. एल. बी. (जयपुर)

कोषाध्यक्ष—श्री ज्ञानचन्द जी, बी. काम एल. एल. बी. (दिल्ली)

अन्तरङ्ग सदस्य—१. श्री स्वामी विरजानन्द जी महाराज (गुरुकुल चित्तौड़)

२. श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री (दिल्ली)

३. श्री रामेश्वर जी, बी. एस. सी. एल. एल. बी. (दिल्ली)

भवदीय,
श्रीकृष्ण वर्मा शास्त्री मन्त्री

भारत के उद्धार के मार्ग प्रदर्शक—

व्याकरण-दिवाकर स्वा० विरजानन्द प्रज्ञाचक्षु

(प्रो० भीमसेन शास्त्री एम० ए०, जयपुर सिटी)

हमारे परिव्राजकाचार्य का जन्म, आज से १८० वर्ष पूर्व हुआ था। ये पूर्वीय पंजाब के कर्तारपुर (जलन्धर नगर जंक्शन से ६ मील पश्चिम) के समीप, छोटी सी बोई नदी के किनारे, गंगापुर ग्राम के निवासी थे। इनका जन्म सं० १८३५ में, तृतीय चरण के अन्तर अथवा चतुर्थ चरण के आदि में हुआ प्रतीत होता है। यह भव्य बालक छोटी अवस्था में ही शीतलाक्रान्त हो नेत्र-विहीन हो गया था। पिता पं० नारायणदत्त ने आठवें वर्ष में उपनयन कर इन्हें पढ़ाना आरम्भ कर दिया था पर भाग्य ने इन्हें ३-४ वर्ष में ही माता-पिता से वंचित कर दिया था भाई भावज के अतीव व्यथक शासन से पीड़ित हो, इस नयन-गिहीन बालक को शीघ्र ही घर त्यागना पड़ा।

दो तीन वर्ष साधुओं के साथ भ्रमण कर, ये, हृषीकेष (हरिद्वार से १४ मील उत्तर) पहुँचे। वहां तीन वर्ष तक गंगाजल में खड़े होकर गायत्री का अनुष्ठान किया फिर इन्होंने हरिद्वार जाकर स्वा० सम्पूर्णानन्द सरस्वती से अध्ययन किया और संभवतः संन्यास दीक्षा भी इन्हीं से ली यहां से चलकर इन्होंने काशी, गया तथा कलकत्ता में अध्ययन किया। ये तीस वर्ष की अवस्था से पूर्व ही पण्डित-मूर्धन्यों में परिगणित हो गये थे।

कलकत्ते से चलकर ये पुनः हरिद्वार तक आए। यहां से चलकर पहिले दो बार देखे हुए, शूकर क्षेत्र (सोरों। जि० एटा) में पहुंचे। वहाँ रहकर भगवद्-भक्ति तथा अध्यापन करते रहे। यहाँ के शिष्यों में बदरिया निवासी अंगदराम प्रसिद्ध पण्डित हुए हैं।

सं० १८८६, वैशाख वदि में, अलवर नरेश विनयसिंह तीर्थ यात्रार्थ सोरो गए थे। वे इनकी गुण-गरिमा से आकृष्ट हो, अतिशय अनुनय-विनय पूर्वक इन्हें अलवर लिवा ले गए। इस समय प्रज्ञाचक्षु जी का चौअनवाँ वर्ष चल रहा था। यहां विरजानन्द ने, विनयसिंह को पढ़ाने को 'शब्द बोध' नामक अभिनव व्याकरण ग्रन्थ संकलित किया। ये ३-४ वर्ष अलवर रहे। यहाँ से प्रस्थित होकर ६ मास भरतपुर तथा तीन मास मुरसान ठहरते हुए, पुनः सोरों आ गए।

सोरों के द्वितीय निवास काल के शिष्यों में पीली भीत के अंगद बड़े अभिमानी पंडित हुए हैं। यहाँ के प्रज्ञाचक्षुजी सं० १६०२ के प्रारम्भ में अतिरुग्ण हुए। जीवन की आशा न रही। अंगदराम ने उनको गंगाधारा के निकट डलवा दिया और उनकी पुस्तकें व अन्य सामग्री समेट कर चम्पत हुए। परम कारुणिक

जगदीश्वर की इच्छा से तथा साधुवर्य मथुरादास बैरागी की सेवा शुश्रुषा से उनकी जीवन रक्षा हो गई। इसके पश्चात् दण्डी जी सोरों न ठहरे। एक पैसा तक भी पास न होते हुए भी एक भृत्य नियत करके व बैलगाड़ी किराए लेकर मथुरा को चल पड़े। कुछ दूर पर ही एक भक्त, बिलराम निवासी दिल सुखराय कुलश्रेष्ठ अपनी घोड़ागाड़ी में कासगंज से सोरों जाते हुए मिले। उन्होंने पाँच जयपुरीय अशर्फियें तथा आठ रुपये भेंट किये। इस प्रकार दंडी जी की यह यात्रा सुखपूर्वक हो गई।

मथुरा में विरजान्द चौक बाजार के समीप, गूजरमल जी की कोठी में ठहरे। कुछ समय पश्चात् गतश्रम नारायण के मन्दिर में रहने लगे। मथुरा के एक रईस, लाला केदारनाथ खत्री, इस स्थान से उन्हें अपने गृह पर ले गए और अपने घर के एक स्वतन्त्र भाग में अतिशय समादर पूर्वक उन्हें रखा। यहां पर दण्डीजी, शेष जीवन सुखपूर्वक रहे। अध्यापन सत्र निर्बाध चलता रहा। श्री दण्डीजी के निर्वाणोत्तर उनके भक्त शिष्य युगलकिशोर ने चिर-पर्यन्त इसी गृह में शब्दानुशासन-महाभाष्य का अध्यापन सत्र चलाया। यह घर अब पूर्णतया गिर चुका है। उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा ने, बड़े प्रयास से, इस स्थान को हस्तगत कर लिया है।

प्रज्ञाचक्षु जी को मथुरा में पढ़ाते १४ वर्ष हो गए थे। तब सं० १९१६ में भगवदिच्छया एक विल-क्षण घटना घटित हुई। मथुरा में चूड़ी वाले सेठों का परिवार समृद्धि तथा धर्मनिष्ठा में विख्यात था। सेठ राधाकृष्ण पहले जैन थे, फिर वे रङ्गाचारी से दीक्षा लेकर वैष्णव धर्म में प्रविष्ट हुए। इन्होंने

वृन्दावन का सुवर्णमय रंग जी का मन्दिर बनवाकर भक्ति भाजन गुरुवर्य को समर्पण किया था। इन प्रसिद्ध विद्वान् रंगाचारी के व्याकरण तथा न्याय के गुरु, कुरुक्षेत्र मण्डल निवासी, कृष्ण शास्त्री, वृन्दा-वन में अपने प्रसिद्ध शिष्य के अतिथि हुए। सेठ राधाकृष्ण ने भी अपने प्रगुरु को मथुरा में निमंत्रित कर, उनका भक्तिपूर्ण आतिथ्य कर अपने को कृत-कृत्य माना। यहाँ अनेक विद्वज्जन ने कृष्ण शास्त्री से पढ़ना आरम्भ कर दिया।

एक दिन श्रान्त घाट पर सायंकालिक यमुना-नीराजना के पश्चात् दण्डी जी के शिष्य गंगादत्त व रंगदत्त कुछ वाग्विलास परायण थे। वहीं कृष्णशा-स्त्री के शिष्य लक्ष्मण शास्त्री और पण्डया मुरमु-रिया आ निकले। दोनों दलों में शास्त्रार्थ छिड़ गया विचार 'अजाद्युक्ति' शब्द के समास पर था। दण्डी जी के शिष्यों ने षष्ठी तत्पुरुष बताया पर कृष्ण शास्त्री की शिष्य मण्डली सप्तमी तत्पुरुष पर आग्र-हाविष्ट रही। दोनों पक्ष स्वगुरुजन के पास गए। गुरुजन ने भी स्वशिष्यों के पक्ष का समर्थन किया। कृष्णशास्त्री इस अवसर पर दण्डी जी को शास्त्रार्थ के लिए आहुत भी कर बैठे। शास्त्र समर के सतत भूखे प्रज्ञाचक्षु जी ने आह्वान को सहर्ष स्वीकार किया। शीघ्र ही शास्त्रार्थ का स्थान व तिथि भी निश्चित हो गई। जनता उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगी। पर सेठ राधाकृष्ण अपने विद्वन्मूर्धन्यप्रगुरु के पराजय की आशङ्का से परित्रस्त थे। उन्होंने प्रसिद्ध कर दिया कि पण्डया मुरमुरिया व लक्ष्मण कृष्णशास्त्री की ओर से शास्त्रार्थ करेंगे। यह सुन विरजानन्द ने कहला भेजा—'हम कृष्णशास्त्री से ही शास्त्रार्थ करेंगे।' अब सेठ राधाकृष्ण ने कह-लाया—'कृष्ण शास्त्री २००) शर्त के रखते हैं। दंडी

जी भी २००) रखें तो शास्त्रार्थ होगा।' दंडी जी ने तुरन्त २००) भेज दिये। इन ४००) में १००) सेठ राधाकृष्ण ने और मिलाये और ये ५००) शास्त्रार्थ विजेता के लिए जमा कर दिये।

नियत तिथि को, निश्चित समय से पूर्व, प्रज्ञाचक्षु जी ने अपने दो शिष्य, गतश्रम नारायण के मन्दिर (शास्त्रार्थ स्थल) में भेज दिये थे कि कृष्ण शास्त्री के आते ही उन्हें बुला ले जांय। सेठ राधाकृष्ण तो आ गए, पर कृष्ण शास्त्री को न लाए। मध्यस्थ ने उभयपक्ष के शिष्यों के शास्त्रार्थ का थोड़ा सा ढोंग रचा कर विरजानन्द के पराजय की घोषणा कर दी और शर्त ५००) चौबों में बांट दिये। उन्होंने तीन लाख रुपये व्यय करके काशी पण्डित मण्डली से व्यवस्था मंगा ली कि 'अजाद्युक्ति में सप्तमी तत्पुरुष है। दण्डी जी को सुन महान् विस्मय हुआ। कई दिन उन्होंने पढ़ाना बन्द रखा और एकान्त में विचार-परायण रहे। अन्त में उन्होंने निश्चय किया कि 'अनार्ष ग्रन्थ भ्रान्तियों के जनक हैं। इनमें असत्पक्षों को भी आश्रय मिल जाता है।' उस दिन से उन्होंने अनार्ष ग्रन्थों का पढ़ाना सर्वथा बन्द कर दिया। अस्सी वर्ष की अवस्था में समग्र महाभाष्य कण्ठस्थ किया और उस दिन से यावज्जीवन शब्दानुशासान (अष्टाध्यायी)—महाभाष्य ही पढ़ाया। दण्डी जी का यह निश्चय ही वस्तुत धर्म व विद्या क्षेत्र के यावत् महाव्याधियों का सच्चा निदान है।

काशी से व्यवस्था लाने वाले पण्डया मुरमुरिया का देहान्त शास्त्रार्थ के कुछ मास पश्चात् बड़े कष्ट से हुआ। इसके थोड़े पश्चात् सेठ राधाकृष्ण भी चल बसे।

परिव्राजकाचार्य के भक्त विद्वान् शिष्य देशकालज्ञ मतिमान् अलवरेन्द्र विनयसिंह का देहान्त तो दो वर्ष पूर्व सं० १९१४ में हो चुका था। विरजानन्द ने जयपुर, ग्वालियर तथा काश्मीर के नरेशों को प्रेरणा की कि 'ग्रन्थों की मर्यादा स्थापित करने के लिये, भारत भर के विद्वानों को निमन्त्रित कर, महती सभा की आयोजना करें।' कहीं भी सफलता न मिलने पर इंग्लेंडेश्वरी विक्टोरिया को भी पत्र लिखा। सर्वत्र प्रयत्न किया पर देश के दुर्भाग्य से कहीं भी सफलता नहीं मिली। दण्डी जी मथुरा में आए विद्वानों को तो आर्ष ग्रन्थों की उपकारिता तथा अनार्ष ग्रन्थों के घोर अपकार का निश्चय सदा कराते रहते थे पर सातिशय वार्धक्य तथा नेत्र विरह भ्रमण करने में अशक्त थे। वे विद्वानों तथा नर-पतिवृन्द की मन्दमति को देख बड़े निराश थे। हाँ अपने अध्यापन सत्र को सतत् अव्याहत चलाते जाते थे।

सं० १९१७ में योगिवर्य स्वा० दयानन्द सरस्वती मथुरा में आकर प्रज्ञाचक्षु जी के शिष्य बने उनकी गुण-गण गरिमा ने श्री प्रज्ञाचक्षु जी के हृदय में पूर्ण आशा का संचार किया। जब ये शिष्य चूड़ामणि विद्या समाप्त कर विदा होने लगे तो गुरु चक्रवर्ती ने गुरु दक्षिणा में देश अन्धकार दूर करने की प्रतिज्ञा ली। मुमुक्षुरत्न दयानन्द ने श्रद्धास्पद आचार्यवर्य के आदेश को शिरोधार्य कर शेष संपूर्ण जीवन देश तिमिर तिरोधान में व्यतीत किया। उनके प्रतिज्ञा पूर्ति के महान प्रयत्न का ही फल—आर्य समाज, उसकी गुरुकुलादि अनेक विधि अत्युपयोगी बहुसंख्यक संस्थाएँ महर्षि दयानन्द का आर्य-समाज का विशाल महत्वपूर्ण वाङ्मय तथा अन्य

व संस्कृति रक्षा के विविध महिमशाली महोपकारी कार्य है। देश स्वतन्त्रता के आन्दोलन में, स्वदेशी वस्तु व्यवहार में राष्ट्रभाषा के प्रचार में, एवं गो-के महोपकारी प्रयत्न में आरम्भिक व सबसे बड़ी प्रेरणा महर्षि दयानन्द की थी तथा इन सब क्षेत्रों में सबसे बड़ी निःस्वार्थ सेवा आर्य पुरुषों की है।

ऋषिकल्प विरजानन्द का स्वर्गवास सं० १९२५ आश्विन कृष्णा १३, सोमवार (१४-९-१८६८) को हुआ था। वह तिथि इस वर्ष, सं० २०१३ में, दो अक्टूबर को पड़ी है, जिसे हम महात्मा गांधी की जन्म तिथि रूप में मनाते हैं। बात यह है कि दण्डी जी के निर्वाण के एक वत्सर पश्चात् सं० १९२६ आश्विन व० १२ शनि (२-१०-१८६९) को गाँधी का जन्म हुआ था। गांधी जन्म विरजानन्द निर्वाण तिथि में एक ही दिन का अन्तर है। पर हमारा राष्ट्र गांधी जयन्ती को देशी तिथि से मनाकर अंगरेजी तरीका (२ अक्टूबर) को मना रहा है। इस वर्ष गांधी जन्म तिथि है (आश्विन व. १२) १ अक्टूबर को है, और विरजानन्द निर्वाण (अश्विन व. १३) २ अक्टूबर को जो कि गांधी जन्म दिवस रूप में मनाया जाता रहा है।

विरजानन्द निर्वाण के दिन हमें उनके गुण गण पर विचार करना चाहिये और अपने मार्ग को ठीक करना चाहिये। प्रज्ञाचक्षु जी की सबसे बड़ी देन आर्ष अनार्ष ग्रन्थ विवेक हैं। आर्य-समाज ने इस दिशा में अपने कर्तव्य का यथावत् पालन नहीं किया है। अब उसे विषय में अवश्य जागरुक होना चाहिये। संसार के कल्याण का साधन सद्-विद्या के प्रसार से ही होगा और वह है साध्य एक मात्र आर्ष ग्रन्थों के प्रचार से।

परम कारुणिक जगदीश्वर महती कृपा से हम महर्षि दयानन्द की जन्म तिथि निश्चय करने में पूर्ण सफल हो गए हैं, पर महर्षि के गुरु के विषय में अब तक के प्रयत्नों से कोई उपयोगी सामग्री प्राप्त नहीं हो सकी है। आशा की केवल एक क्षीण रेखा शेष है। प्रज्ञाचक्षु जी के निर्वाण से कुछ समय पूर्व एक वसीयत नामा लिखा व रजिस्ट्री कराया था। उसका अभिलेख अब आगरे में मिल सकता है। यदि उसमें देवयोग से विरजानन्द ने अपने वय में वर्ष, मास, दिन—तीनों बातें लिख दी हों (जिसकी आशा विशेष नहीं है)। तो उनकी जन्म तिथि ज्ञात हो जायगी। वैसे भी यह वसीयतनामा उनके जीवन वृत्तांत के लिये अतीव उपयोगी होगा। आशा है कि सार्वदेशिक सभा अथवा तन्नियुक्त कोई व्यक्ति विशेष अथवा सभा विशेष इस विषय में सर्वात्मना प्रयत्न-वान् होंगे। यदि जन्म दिवस का पता न लग सके तो निर्वाण-तिथि को ही विरजानन्द दिवस रूप में मनाना उचित होगा।

एक शब्द श्री दण्ड जी के चित्र के विषय में थी। श्री दण्ड जी के अलवर से चले आने पर, विषण्ण हृदय विनयसिंह (अलवरेन्द्र) ने अपने किसी यवन चित्रकार से उनका कलमी चित्र बनाया था। वह अद्लवर के अभुतालय में विद्यमान है इसकी छाया प्रति महर्षि-भक्त श्री जगदीशसिंह जी गहलोत की कृपा से आर्यजगत् को प्राप्त होकर मुद्रित हो चुकी है। इस चित्र में यवन चितेरे ने (वैरागी—आदि साधुओं के अनुकरण में) भूल से परिव्राज—काचार्य को यज्ञोपवीत भी पहना दिया है। यह दण्डी जी के ५७-५८ वर्ष के वय का चित्र समझना चाहिए।

श्री दण्डी जी का मथुरा में निर्माण, होने पर इनके भक्तों ने उनके शव का शयान अवस्था में एक यन्त्र-चित्र (फोटो) खिंचवाया था। वह प्रसिद्ध महर्षि-भक्त महाध्यवसायी श्री मामराज जी के पास संगृहीत है। यह मेरठ के आर्य सम्मेलन की प्रदर्शनी में रखा गया था। परिव्राजकाचार्य जी के प्रिय भक्त शिष्य श्री पं० युगलकिशोर जी ने उसी के आश्रय से दण्डी जी का समासीन अवस्था में चित्र तैयार कराया था। वही आर्यसमाज में चिरकाल से प्रचारित रहा है। शवचित्राश्रित होने से ही वह महा भयंकर है।

मुद्रित विरजानन्द जीवनियों में तथा हमारे उपर्युक्त संक्षिप्त वर्णन में, विज्ञ पाठक, घटना-क्रमादि में कई स्थानों पर कुछ भिन्नता तथा अनेक नवीनताएं भी देखेंगे। हमने पर्याप्त खोज करके विरजानन्द का विस्तृत जीवन चरित्र लिखा है। उसके प्रकाशित होने पर, भक्त जन, सर्व विज्ञान घटनाओं को यथार्थ रूप में तथा सविस्तार पढ़ सकेंगे।

आर्य जनता तथा नेताओं से एक निवेदन भी है। आर्य युगप्रवर्तिनी सं० १६१६ की घटना, उनके जीवन की सबसे महत्व पूर्ण घटना है। वह एक युगान्तकारिणी घटना है। उस घटना का ही फल आर्यसमाज का अस्तित्व है। उसके बिना, न विरजानन्द को कोई जानता और न दयानन्द को और वेदों, वैदिक धर्म, संस्कृत वाङमय के अद्वितीय रक्षक आर्य समाज का तो जन्म भी न होता। ऐसी महत्वपूर्ण घटना को हुऐ ६८ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और दो वर्ष में १०० पूरे हो जायेंगे। हमारी तुच्छ मति में सं० २०१६ में आर्य समाज को मथुरा में उसे युगान्तर कारिणी घटना की शताब्दी अवश्य अवश्य मनानी चाहिए। इसके लिए उपयुक्त अवसर श्रावणी अथवा दीपावली हो सकता है।

आशा है आर्य पुरुष इस प्रस्ताव पर गम्भीरता से विचार करेंगे।

—०—

(पृष्ठ ५ का शेष)

वृद्धि होती जाती है और उसकी रुचि भी शास्त्रों के प्रति बढ़ती जाती है। सामवेद में स्वाध्याय का फल बतलाया है—

पावमानीः स्वास्त्ययनीस्ताभि र्गच्छति नान्दनम्।
पुण्यांश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति॥
(साम० उ० अ० १० खं० ६)

ये पावमानी ऋचायें कल्याण कारिणी हैं, इन के द्वारा मनुष्य आनन्द को प्राप्त करते हैं, इन ऋचाओं अर्थात् वेद का स्वाध्याय करने वाला इस लोक में उत्तम भोग का उपभोग करता हुआ मोक्ष का अधिकारी बन जाता है।

महर्षि पतञ्जलि लिखते हैं—
"स्वाध्यायादिष्टदेवता सम्प्रयोगः"
(योगदर्शन २।४४)

स्वाध्याय के द्वारा मनुष्य इष्ट देवता=यथेच्छ दिव्य गुण की प्राप्ति कर सकता है, जो महापुरुष संसार में विद्यमान नहीं हैं उसके ग्रन्थों का स्वाध्याय कर हम उनसे उनके विचारों से यथेष्ट लाभ उठा सकते हैं। इस सूत्र का भाष्य करते हुए महर्षि व्यास लिखते हैं—

"देवा ऋषयःसिद्धाश्च स्वाध्यायशीलस्य दर्शनं गच्छन्ति, कार्येचास्य वर्तन्ते।"

विद्वान् ऋषि महर्षि आदि स्वाध्यायशील के दर्शन ज्ञान में आते हैं और इसके कार्य को सिद्ध करते हैं। अर्थात् उनके ग्रन्थों का स्वाध्याय करके स्वाध्यायशील व्यक्ति अपने कार्य को सिद्ध कर लेता है। इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण, मनुस्मृति प्रभृति ग्रन्थों में भी स्वाध्याय की महिमा का अति विस्तार से वर्णन किया गया है। मैं आशा करता हूँ कि प्रत्येक विचारशील व्यक्ति स्वाध्याय की महिमा और गुणों को दृष्टि में रखता हुआ श्रावणी के इस पर्व से वेदादि सत्य शास्त्रों का यथाशक्ति स्वाध्यायसत्र प्रारम्भ कर आत्मोन्नति के लिए प्रयत्नशील होगा। शास्त्रकारों ने तो ऐसी नौकरी आदि करने का भी निषेध किया है जो स्वाध्याय में बाधक हों "त्यजदर्थान् स्वाध्यायस्यविरोधिनः"

—वेदव्रत

बिना गुरु के वैद्य बनाने वाले ये चिकित्सा-ग्रन्थ

तत्काल फलप्रद प्रयोग	प्रथम,	द्वितीय,	तृतीय,	चतुर्थ,	पंचमभाग
राजसंस्करण	×	२॥)	२॥)	२।)	४॥)
साधारण संस्करण	१॥)	२)	२)	२)	३॥)

सौ रोगों का सरल इलाज (नया संस्करण) दो रुपया मात्र ।
धर्मार्थ औषधालयों में प्रयोग (चुने योग) १) मात्र
धर्मार्थ औषधालयों के चिकित्सानुभव (नया ग्रन्थ) १॥) रुपया ।
उपदेश सूजाक चिकित्सा (६५० योग) साधारण १) राज संस्करण १।)
कुमारी-विज्ञान (केशटेकिंग चार्ट युक्त) १२५ से अधिक प्रयोग ।=)
तिलस्मी औषध भण्डार (डाक्टरों और वैद्यों के पेटेन्ट प्रयोग १॥)
पथ्यदर्शक (३२ पृष्ठ वाली सदोपयोगी पुस्तिका) ।)
आठ औषधों से दवाखाना दस आना मात्र ।

(पोस्टेज पृथक् होगा । पेशगी आये बिना पुस्तकें न भेज सकेंगे)

कागज का भाव अन्धाधुन्ध बढ़ जाने पर भी, हम ने मूल्य नहीं बढ़ाया है । हमारी कोई भी पुस्तक किसी प्रकार ना पसन्द आने पर मनीआर्डर से भेज कर १०) से ग्रन्थ मंगाने वालों को पोस्टेज माफ । आज ही लिखिये—

वैद्य पं० चन्द्रशेखर जैन शास्त्री, लाखाभवन, पुरानी चरहाई, जबलपुर

आयुर्वेद चिकित्सक

छः वर्ष से प्रकाशित होने वाला 'मासिक-पत्र' नियमित ६ वीं तारीख को निकलता है । ठोस एवं सर्वोपयोगी सामग्री देना इसकी विशेषता है । वार्षिक मूल्य ४।) रुपया मनीआर्डर से भेजिये । वी० पी० से ५) होंगे । नमूने के लिये आठ आने मनीआर्डर से भेजिये ।

फाइलें सन् ५३-५४ और ५५ की ही प्राप्त हैं । मूल्य ५) प्रतिफाइल १।) पोस्टेज प्रतिफाइल अलग होगा । तीनों फाइलें एक साथ १५) भेजकर मंगाने से पोस्टेज माफ । पुस्तकों के साथ फाइलें न भेजेंगे ।

३५) मनीआर्डर से भेजकर सारी पुस्तकें व फाइलें रजिस्टर्ड पार्सल से मंगाइये ।

पं० चन्द्रशेखर शास्त्री । व्यवस्थापक—आयुर्वेद चिकित्सक, लाखाभवन, जबलपुर

सुधारक के प्राप्य-विशेषांक

१. भोजन विशेषाँक	१)
२. व्यायाम विशेषाङ्क	१)
३. गो-अङ्क	॥)
४. पंचमहायज्ञविधि व्याख्यांक	।॥)
५. नारायण स्वामी चरितांक	।॥)
६. ब्रह्मर्षि विरजानन्द चरितांक	।॥)

मूल्य मनी आर्डर से भेज देने पर डाक व्यय माफ ।

"सुधारक"
में
विज्ञापन देकर
अपने व्यापार को उन्नत
और
विस्तृत कीजिये

विज्ञापन दर अन्तिम टाइटिल पर देखें ।

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला (रजि०) गुरुकुल झज्जर की

अचूक औषधियाँ

१—नेत्र ज्योति सुर्मा

लगाइये और नेत्र ज्योति पाइये। इसके लगाने से आँखों के सब रोग जैसे आँख दुखना, खुजली, लाली, जाला, फोला, रोहे, कुकरे, पास का कम दीखना (शार्ट साइट) दूर का कम दीखना (लांग-साइट), प्रारम्भिक मोतियाबिन्द आदि दूर हो जाते हैं। आंखों के सब रोगों की रामबाण औषधि है। यही नहीं किन्तु लगातार लगाने से दृष्टि (बीनाई) को तेज तथा आंखों को कमल की तरह साफ स्वच्छ रखता है। बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। प्रतिदिन जिस ने भी लगाया उसी ने मुक्त कण्ठ से इस सुर्मे की प्रशंसा की है। मूल्य ।।) शीशी

२—नेत्रामृत

लाली, कड़क, धुन्ध, ढलकवा, गरदोगुब्बार, रोहे तथा भयंकरता से दुखती आंखों के लिए जादू भरा विचित्र योग है।

मूल्य बड़ी शीशी ।।=) छोटी शीशी ।=)

३—रक्तपित्तामृत

रक्तपित्त की अचूक औषधि है। शरीर के किसी भी आन्तरिक भाग से रक्त आने को कुछ ही मात्रा देने से रोक देती है। पित्तज्वर, हाथ पांवों की जलन, हृदय व दिल की धड़कन, आदि पित्त के सभी रोगों में रामबाण है।

मात्रा—१ से २ तोले तक दोनों समय भोजनोपरान्त बराबर जल मिलाकर सेवन करें।

४—स्वप्नदोषामृत चूर्ण

इस भयंकर रोग के कारण प्रायः सभी युवक और विद्यार्थी हताश और निराश दिखाई देते हैं। यह औषधि इस रोग के दूर करने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह प्रमेह अर्थात् मूत्र में आगे पीछे या बीच में वीर्य के निकलने को बन्द कर देती है।

मूल्य २) छटांक

५—ब्राह्मी घृत

यह घृत आयुर्वेद शास्त्र की विधि के अनुसार बनाया गया है। इसका सेवन कुष्ठ (कोढ़) मृगी (हिस्टीरिया) मस्तिष्क की निर्बलता चक्कर आना, याद किये हुए पाठ तथा सुनी हुई बात का भूल जाना, रखी हुई वस्तु याद न रहना, आदि को जड़ से नष्ट कर देता है। स्कूल के विद्यार्थी दफ्तर के बाबू और वकील आदि मस्तिष्क का काम करने वालों के लिए अत्यन्त लाभदायक है। स्वप्नदोष सब प्रकार के धातु प्रमेह को दूर करता है। इसके सेवन से स्मरण शक्ति खूब बढ़ती है।

मू० आध पाव ४) चार रुपये।

सेवन विधि—६ माशे से १ तोले तक दूध में डाल कर अथवा मिश्री मिलाकर प्रातः-सायं सेवन करें।

६—कर्णरोगामृत

कान में पीप आना, बहरापन और प्रत्येक प्रकार की कर्ण पीड़ा को दूर करने के लिए यह अति-उत्तम औषधि है। प्रतिदिन सेवन करने से कानों का कोई रोग नहीं होता और मस्तिष्क की शुष्कता दूर होती है। मूल्य एक शीशी १) रुपया

७—व्रणामृत

भयंकर फोड़े फुंसी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा अनेकों वर्षों के नासूर (सरह) आदि रोगों की अद्वितीय औषधि है। दिनों का काम घण्टों में घण्टों का काम मिनटों में करती है।

मूल्य एक शीशी एक रुपया

८—स्वास्थ्यवर्धक चाय

यह चाय स्वदेशी, ताजी एवं शुद्ध जड़ी बूंटियों से तयार की गई है। वर्तमान चाय की भांति यह नींद और भूख को न मार कर खांसी, जुकाम, नजला, सिरदर्द, खुश्की अजीर्ण, थकान, सर्दी, आदि रोगों को दूर भगाती है। मस्तिष्क एवं दिल को शक्ति देती है। मूल्य १ छटांक ।~)

१०—पाचनामृत

मन्दाग्नि, अरुचि, अजीर्ण (कब्ज) पेट का फूलना, पेट का भारीपन, शूल, जी मिचलाना, वमन खट्टी डकार आदि पेट के सभी रोगों को नष्ट कर भूख को बढ़ाता है। आंतों के सब रोगों को दूर कर पाचन शक्ति को बल देता है। पुरानी से पुरानी तिल्ली जिगर की अचूक औषधि है। मूल्य एक शीशी ५)

११—ब्राह्मी आँवला तैल

इसकी मालिश से मस्तिष्क की निर्बलता और उष्णता दूर होती है। इसका निरन्तर सेवन सफेद बालों को काला करता है तथा गंज, बालों का झड़ना आदि रोगों को दूर करता है। मृगी पागलपन और स्त्रियों के हिष्ट्रिया रोग के लिए भी यह अत्युत्तम औषध है। शारीरिक दुर्बलता दूर करने के लिए इसका सारे शरीर पर मर्दन किया जा सकता है। मूल्य १) छटांक

१२—बाल रोगामृत

बालकों के हरे-पीले दस्त, अपच, अजीर्ण (कब्ज) अरुचि, दाँत निकलते समय के रोग, सूखिया मसान रोग, वमन, निर्बलता, ज्वर आदि सभी रोगों को दूर कर बालकों को मोटा करता है। अतः प्रत्येक गृहस्थी घर रखे। मूल्य एक शीशी ५)

१३—संजीवनी तैल

मूर्छित लक्ष्मण को चेतना देने वाली इतिहास प्रसिद्ध बूटी से तैयार किया गया। यह तैल घावों के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा हैं। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भर कर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शांत कर देता है दिनों का काम घण्टों और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है। मू० ॥=) नमूना

सेवन विधि—फाये में भर कर बार-बार चोट आदि पर लगायें।

१४—च्यवन प्राश

इस ऋतु के ताजे आँवले से तयार किया गया स्वादिष्ट, सुमधुर और एक दिव्य रसायन (टानिक) है। जिसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खाँसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक, सभी हृदय रोगों की अद्वितीय औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा अन्य सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका (निरंतर) सेवन समूल नष्ट करता है। यह निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है।

मूल्य ७) सेर, ५ सेर लेने पर ६) सेर

१५—बलदामृत

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आ जाता है। पीनस (सदा रहने वाले जुकाम और नजले) की महौषध है। वीर्य वर्द्धक, कास (खाँसी) नाशक, राजयक्ष्मा (तपेदिक), श्वांस (दमा) के लिये लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करती तथा अत्यन्त रक्त वर्द्धक है। निर्बलों को बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ट बनाती है। यह अपने ढंग की एक ही औषध है। मूल्य ५) बड़ी शीशी
२) छोटी शीशी

१६—ज्वरामृत

यह नये और पुराने सभी प्रकार के ज्वरों की रामबाण औषध है। बिगड़े हुए मलेरिया, विषम ज्वर को दूर करने में अद्वितीय औषध है। कुनैन भी इसके आगे तुच्छ औषध है। कुनैन का सेवन सिर दर्द, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है किन्तु यह औषध सब दोषों को दूर करती है किन्तु ज्वर की प्रत्येक अवस्था में दी जा सकती है। मलेरिया काल में सेवन की हुई मलेरिया को नहीं आने देती। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, सेवन करें और लाभ उठावें। मूल्य एक शीशी ५)

पता—आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला पो० गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक (पंजाब)

ग्राहक संख्या 2

सेवा में श्री सम्पादक जी

मु० गुरुकुल पत्रिका,

पो० गुरुकुल कांगड़ी,

जि० हरद्वार।

प्रकाशक आचार्य भगवानुदेव गुरुकुल झज्जर ने सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली में मुद्रक जगदेवसिंह शास्त्री 'सिद्धान्ती' के प्रबन्ध से छपवाया।